डा० मान

शुद्ध जन्मपत्री स्वयं बनाइए

और अपना सही फलादेश जानिए

आप इस पुस्तक की सहायता से शुद्ध जन्मपत्री बना सकते हैं और अपनी बनी हुई जन्मपत्री को खुद ही चैक कर सकते हैं कि क्या वह शुद्ध है। यदि वह अशुद्ध है तो आप स्वयं शुद्ध कर सकते हैं इस पुस्तक के द्वारा क्योंकि शुद्ध जन्मपत्री ही सही भविष्य जानने का आधार है।

शुद्ध जन्मपत्री स्वयं बनाइए

अमित पॉकेट बुक्स

जन्मपत्री
स्वयं बनाइए

और अपना सही फलादेश जानिए

लेखक
डा० मान

प्रकाशक

☎ 212696

अमित पाकेट बुक्स

सखुजा मार्किट, नज़दीक चौंक अड्डा टांडा, जालन्धर–8

मूल्य : 110

लेखक :
डा० मान हरभजन सिंह
कोठी नं 3139 सैक्टर 27 डी
चण्डीगढ़-160019

कम्प्यूटर टाईपसैटिंग :
सनशाईन कम्प्यूटर, जालन्धर

मुद्रक :
सरताज प्रिंटिंग प्रैस,
जालन्धर शहर।

प्रकाशक
अमित पाकेट बुक्स
ज्ञान मार्किट, नज़दीक चौंक अड्डा टांडा,
जालन्धर-8

समर्पण

उस महान अलौकिक शक्ति को
जो कठिन समय में मेरी रक्षा
करती है।

अनुक्रम

प्रकरण - 4 पंचांग एवं पंचांग का उपयोग

प्रकरण - 5 जन्म कुण्डली रचना

प्रकरण - 6 पंचांग द्वारा जन्मपत्री निर्माण

प्रकरण - 7 साम्पातिक काल (SIDEREAL TIME) द्वारा जन्म कुण्डली निर्माण

प्रकरण - 8 विदेश की जन्म-पत्री कैसे बनाएं?

प्रकरण - 9 उपयोगी सारणियां

अपनी बात

आधुनिक युग में ज्योतिष शास्त्र अथवा विज्ञान का बहुत प्रसार हुआ है, कई नई–नई खोजें अथवा अनुसंधान हुए हैं तथा कई नवीन ज्योतिष प्रकृतियों का विकास हुआ है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि पिछले कुछ वर्षों से आम लोगों का विश्वास ज्योतिष शास्त्र में बढ़ा है। जब किसी व्यक्ति को प्रत्येक ओर से निराशा और दुःख घेरा डाल लेता है और आशा की किरण कहीं दिखाई नहीं देती तो प्रायः प्रत्येक व्यक्ति ज्योतिष शास्त्र का ही सहारा लेता है और ज्योतिष विज्ञान उसमें पुनः आशा की किरण उजागर कर देता है। ज्योतिष शास्त्र की प्रमाणिकता एवं श्रेष्ठता इससे सिद्ध हो जाती है। इसी लिए पूरे विश्व में ज्योतिष शास्त्र का निरन्तर प्रसार हो रहा है।

आधुनिक युग को तर्क का युग भी कहा जाता है। किसी भी शास्त्र, विज्ञान तथा विद्या में तर्क के बिना विश्वास हो नहीं सकता ज्योतिष विज्ञान में प्राचीन काल से आज तक मानव की जो श्रद्धा एवं विश्वास बना हुआ है, उसका आकार केवल तर्क ही है क्योंकि ज्योतिष शास्त्र तर्कसंगत है। इसके अनेक प्रमाण देखने को मिलते हैं।

यह तो सर्वसिद्ध हो चुका है कि सूर्य के आसपास अथवा इर्द–गिर्द समस्त ग्रह परिक्रमा कर रहे हैं। यह सभी ग्रह सूर्य की आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर विशेष प्राकृतिक नियमानुसार सूर्य के इर्द–गिर्द घूमते हैं। इनमें प्रत्येक ग्रह की अपनी–अपनी अलग–अलग आकर्षण शक्ति है, जैसे पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के प्रभावाधीन खींचा हुआ पृथ्वी के निकट घूम रहा है। सूर्य की आकर्षण शक्ति से खींचे हुए चन्द्रमा एवं पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। पृथ्वी के लाखों मील दूर होते हुए भी जब पृथ्वी पर सूर्य की आकर्षण शक्ति का प्रभाव पड़ता है तो फिर यह प्रभाव मानव, मानव जीवन, जीवों तथा पशु–पक्षियों पर पड़ना स्वभाविक एवं निश्चित है। ज्योतिष शास्त्रानुसार सूर्य के विशेष राशियों में होने से ऋतुएं बदलती हैं और यह ऋतुएं मानव जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। यही नहीं, सूर्य की किरणों का दैनिक जीवन पर और चन्द्रमा के घटने–बढ़ने से मानव जीवन एवं समुद्र की लहरों पर प्रत्यक्ष प्रभाव देखा जा सकता है। क्या यह ग्रहों के प्रभाव का चमत्कार नहीं है ?

जब जिस समय बालक का जन्म होता है, उस समय के अनुसार बालक के स्वभाव, चरित्र तथा जीवन पर प्रभाव पड़ना भी स्वाभाविक एवं निश्चित ही है, क्योंकि समस्त ग्रह आकर्षण की कडी में गतिशील हैं, इस प्रकार समस्त ग्रहों का प्रभाव बालक पर अवश्यमेव पड़ेगा। यह

सर्वविदित है कि मानव शरीर पांच तत्वों से निर्मित है तथा मरणोपरान्त इन्हीं में विलीन हो जाता है। ईश्वर में दुनियां के प्रत्येक प्राणी को इन पांच तत्वों का भिन्न–भिन्न अनुपात प्रदान किया है। किसी में किसी तत्व की प्रधानता है तथा किसी में किसी अन्य तत्व की न्यूनता है और किसी में किसी अन्य तत्व की। समस्त ग्रहों का प्रभाव इन तत्वों की भिन्नता के अनुसार होता है। तभी दो सगे भाईयों तथा एक समय पर दो जुड़वाँ बच्चों का स्वभाव, चरित्र, जीवन एवं भाग्य एक जैसा नहीं होता, क्या यह ग्रहों के प्रभाव का फल नहीं।

यह तो सुस्पष्ट हो गया है कि ग्रह मानव जीवन पर प्रभाव डालते हैं। बालक के जन्म से ही उस पर ग्रह–नक्षत्रादि का प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो जाता है जो कि उसके कार्य–कलापों पर पूर्ण जीवन पर प्रभाव डालता रहता है, और उस प्रभाव को ज्योतिष शास्त्र में कुण्डली अर्थात् जन्म समय की बनाई गई जन्म कुण्डली के द्वारा सहेजरूप से जाना जा सकता है। अतः ज्योतिष शास्त्र में जन्म कुण्डली एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा किसी भी बालक एवं व्यक्ति के भूत, वर्तमान एवं भविष्य की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसीलिए जन्म–कुण्डली अथवा जन्मपत्री का निर्माण अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है, क्योंकि सम्पूर्ण ज्योतिष अथवा फल कथन का आधार जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री रचना ही है। जब तक सही रूप से जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री की रचना नहीं होती तब तक फल कथन में पूर्णतया और प्रामाणिकता नहीं आ सकती। शुद्ध जन्मपत्री होना ही वास्तव में शुद्ध फल का आधार है।

विश्व विख्यात ज्योतिष विज्ञान के महान विद्धान ऐलनहयु का कथन है कि जन्मकुण्डली तो कोई भी व्यक्ति बना सकता है, यहां तक कि एक बच्चा भी जन्मकुण्डली बना सकता है, परन्तु जन्म कुण्डली पर से फल कथन करना अत्यन्त कठिन है और उतना आसान नहीं जितना जन्म कुण्डली बनाना। हम इससे पूरी तरह समहत हैं कि जन्म कुण्डली, प्रश्न कुण्डली एवं जन्मपत्री रचना अत्यन्त आसान है परन्तु इस पर से फल कथा करना प्रत्येक व्यक्ति अथवा ज्योतिष शास्त्र के कहे जाने वाले प्रत्येक विशेषज्ञ के वश की बात नहीं है। आम जीवन में प्राय यह ही देखा जाता है कि जब कोई ज्योतिषी सही फलादेश नहीं दे पाता तो प्रायः दोष जन्म कुण्डली में ही निकाला जाता है। पिछले कुछ वर्षों में अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों एवं विषयों के सम्बन्ध में दी गयी भविष्यवाणियां गलत सिद्ध हुई हैं, इतना होने पर भी यह अखौती ज्योतिष शास्त्र के विशेषज्ञ अपने अल्प ज्ञान पर किसी प्रकार की आंच नहीं आने देते बल्कि यह दावा करते हैं कि भविष्यवाणी कुण्डली के सही न होने अथवा ठीक समय न होने के कारण गलत सिद्ध हुई है।

यदि कोई उनसे पूछे कि जब उनको पहले ही यह मालूम था कि समय अथवा कुण्डली शुद्ध नहीं है तो उन्होंने भविष्यवाणी ही क्यों की? इसका सीधा अर्थ तो यहीं निकलता है कि चल गया तो तीर नहीं तो तुक्का ही सही। यही नहीं ये स्वयं बने विशेषज्ञ ऐसा होने पर भी, ऐसा क्यों हुआ, ऐसा क्यों नहीं हुआ टिप्पणियां करके अपने अल्प ज्ञान को छुपाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। सच पूछो तो इन पर सांप निकल जाने के पश्चात् लकीर पीटने जैसी ऐसी स्थिति के सम्बन्ध में यह कहावत ठीक बैठती है, "It is easy to be wise after the event" अर्थात् घटना घटित होने के पश्चात् परामर्श देना अत्यन्त सरल होता है। यह तो कोई भी व्यक्ति कर सकता है, तो फिर यह विशेषज्ञ किस बात के हुए।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि शुद्ध जन्म कुण्डली होना ही वास्तव में शुद्ध फल का आधार है। अब प्रश्न यह है कि शुद्धता कहां तक हो? विश्व विख्यात ज्योतिष विज्ञानी ऐलनहयु के अनुसार यदि जन्म समय अर्थात् शुद्ध समय के अनुसार लग्न, भाव, भाव राशि और ग्रह अंशों तक भी यही है तों जन्मकुण्डली को शुद्ध कहा जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र का कुशल एवं अनुभवी विद्वान ऐसी कुण्डली से ही सत्य फलादेश देने में पूर्ण सक्षम होता है क्योंकि वह लग्न, भाव, राशियों एवं ग्रहों की मूक भाषा को अच्छी तरह समझता है और मिनटों में ही सत्य फलादेश कह देता है। जैसे कुशल मिस्त्री वाहन को, इंजीनियर मशीन एवं प्रजैक्ट को, चित्रकार चित्र को, सपेरा गड्ढा अथवा बिल को, विशेषज्ञ डाक्टर रोगी को तथा जौहरी रत्न को देखते ही सब कुछ जान लेता है, इसी तरह ही एक निपुण, अनुभवी, ज्योतिष शास्त्र का विशेषज्ञ, ज्योतिर्विद जो अन्य क्षेत्र के विशेषज्ञों से सर्वश्रेष्ठ माना जाता है एवं दिव्य दृष्टि का स्वामी होता है, कुण्डली देखते ही सब कुछ जान लेता है। ''नाचै न आवै अँगनवाँ टेढ़ा'' जैसी कहावत उसके इर्द-गिर्द एवं शब्दकोश में कहीं भी दिखाई नहीं देती। ऐसा दैवज्ञ जानता है कि जातक अथवा जिज्ञासु फलादेश चाहता है क्योंकि कुण्डली की शुद्धता एवं अशुद्धता जानना उसका विषय नहीं है, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई व्यक्ति फल चाहता है तो फिर उसका पेड़ गिनने का क्या सरोकार? ऐसी स्थिति में यदि फल भी सही न मिले तो पेड़ की ज़ानकारी होना अथवा प्राप्त करना भी निश्चित रूप से लाभकारी रहता है। यह पुस्तक इसी उद्देश्य को मुख्य रखकर लिखी गयी है। सरल जन्मकुण्डली अथवा जन्मपत्री निर्माता के साथ-साथ जन्मकुण्डली विचारने तथा राशियों, नक्षत्रों आदि पर आधारित शुक्र फलादेश भी दिया गया है।

यह पुस्तक अपने ही ढंग की एक नवीन कृति है। इसमें जन्मकुण्डली एवं जन्मपत्री निर्माता की सरलतम विधियां दी गयी हैं जिससे पाठक

मिनटों में शुद्ध जन्मकुण्डली एवं सम्पूर्ण जन्मपत्री का निर्माण कर सकेंगे। प्रत्येक बात अथवा विषय को सरलता अथवा जहां आवश्यकता लगी वहां उदाहरण देकर समझाया गया है जिससे जन्मपत्री का निर्माण सीखने वाले सुहृदय पाठकों को बिना किसी सहायता से विषय को समझने की सुविधा होगी तथा वह स्वयं, मित्रों सम्बन्धियों एवं प्रियजनों की जन्मकुण्डली अथवा सम्पूर्ण जन्मपत्री की रचना कर सकेंगे।

कुण्डली निर्माण के लिए पंचांग की आवश्यकता होती है। अतः पंचाग सम्बन्धी एवं पंचाग देखने की पूर्ण जानकारी दी गयी है। पारम्परिक ढंग अर्थात् प्राचीन परम्परा से पंचाग द्वारा सम्पूर्ण जन्मपत्री बनाने के साथ–साथ आधुनिक पाश्चात्य पद्धति अथवा साम्पातिक काल विधि द्वारा सम्पूर्ण जन्मपत्री रचना की सरल विधियां एवं साथ–साथ उपयोगी सारणियां भी दी गयी हैं। समय, ज्ञान, इष्ट साधन, लग्न साधन, द्वादश भाव साधन, ग्रह साधन, वर्ग साधन, दशा साधन, दशा, महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तदशा, सूक्ष्म दशा और कई प्रकार की नवीन जानकारी जैसे भाग्य बिन्दु साधन एवं भाग्य बिन्दु स्थिति का फल, प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा अनेक प्रकार की अन्य जानकारी दी गयी है।

अपने देश के साथ–साथ विदेश में पैदा होने वाले बालकों की जन्म कुण्डली एवं जन्मपत्री रचना की भी सम्पूर्ण विधि दी गयी है। कनाडा, अमेरिका, इंग्लैण्ड में पैदा हुए बालकों की जन्म कुण्डलियां अथवा जन्मपत्री की रचना करके विषय को स्पष्ट किया गया है। सारांश में यह कहना उचित होगा कि पुस्तक में उन सभी तथ्यों को भलीभांति स्पष्ट किया गया है जो कि जन्मपत्री निर्माण एवं फल कथन के लिए आवश्यक है।

अतः यह पुस्तक जहां जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री निर्माण की सम्पूर्ण जानकारी देगी वहां फलकथन में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। मुझे विश्वास है कि ज्योतिष शास्त्र के प्रेमी सुहृदय पाठक इससे अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे।

इस अद्भुत ज्ञान को सुन्दर पुस्तक का रूप प्रदान करने में अमित पाकेट बुक्स जालन्धर ने प्रशसनीय उद्यम किया है। मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। यदि विषय को समझाने अथवा अनजाने में कोई त्रुटि रह गई तो क्षमाप्रार्थी हूँ।

भवदीय

डा. मान हरभजन सिंह
कोठी नं 3139 सैक्टर 27 डी
चण्डीगढ़–160019

'ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया' अर्थात् सर्वशक्तिमान् घर–घर के अंतर्यामी, सर्वव्यापी, सृष्टि के रचईता परमेश्वर की माया बड़ी अपरंपार है और उसकी विचित्र लीला सृष्टि अथवा संसार में सब जगह देखी जा सकती है। ईश्वर की यह विचित्रता ही खोज की जन्मदाता कही जा सकती है। इसी लिए मानव स्वभाव में आदिकाल से ही परमेश्वर की ऐसी विचित्रता एवं रहस्य को समझने एवं जानने की निरन्तर लालसा रही है। इसके लिए वौद्धिक शक्ति की आवश्यक्ता होती है। जिसकी अनुभूति ज्ञान द्वारा होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसी शक्ति एवं ज्ञान सर्वप्रथम भारत के ऋषियों मुनियों तथा विद्वानों ने ही प्राप्त किया था।

आकाश में अनेक तारागण दिखाई देते हैं। आकाश में असंख्य तारागण तो साधारण दृष्टि से दिखाई नहीं देते और बड़ी शक्तिशाली दूरबीनों से ही देखे जा सकते हैं। उनके मध्य में अपना एक ही सूर्य है जिसका भेद हमारे ऋषियों मुनियों ने प्राचीन काल में ही पा लिया था। बिना दूरबीन के सहारे सौर जगत का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था। ज्योतिष विज्ञान का सम्बन्ध भी सौर जगत से है। सौर जगत क्या है ? सूर्य के इर्द–गिर्द चन्द्रमा सहित पृथ्वी, बुध, शुक्र, मंगल, गुरू, शनि आदि समस्त ग्रह परिक्रमा कर रहे हैं। इन सबकों सौर जगत अथवा सूर्य का परिवार कहा जाता है। महर्षियों, मुनियों, विद्वानों ने सूर्य आदि समस्त ग्रहों की गति, प्रभाव आदि का सम्पूर्ण अध्ययन करके एवं जो कुछ उनके अनुभव में आया को भलीभांति सोच–विचार तथा सिद्धान्तों की कसौटी पर परख कर जिस विज्ञान अथवा शास्त्र का निर्माण किया उसे ही ज्योतिष विज्ञान अथवा ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है। बौद्धिक शक्ति, ज्ञान इसका आकार है।

ज्योतिष विद्या कोई जादू का तमाशा, बाजीगरों का खेल, जादू–टोना, अन्धविश्वास, अनुमान लगाने की विद्या अथवा कल्पित विद्या नहीं है, अपितु यह एक प्राचीन विद्या है जिसे हमारे मुनी ऋषियों ने

जीवन के रहस्य को समझने, ईश्वर की विचित्रता को जानने तथा परमात्मा से जोड़ने का आधार बनाया है। यही एक विद्या है जिसका ज्ञान प्राप्त कर आत्मा को परमात्मा से जोड़ा जा सकता है। यदि एक कारण है कि मानव अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है। ज्योतिष विद्या द्वारा ही जीवन के मूल को समझने, ईश्वर की लीला को जानने तथा आत्मोन्नति के लिए मार्गदर्शन प्राप्त किया जा सकता है। ज्योतिष विद्या से ही विगत जन्मों की इस जन्म के साथ आई आंतरिक अथवा गुप्त शक्ति तथा पिछले जन्मों की साथ आई धूल जिसे भाग्य कहा जाता है का पता चलता है।

पंजाबी में मुहावरा है वाह किस्मत के वलिया, रिधी खीर तो बन गया दलिया उसके शब्दों से ही पता चल जाता है कि इसका अर्थ क्या हो सकता है जब मनुष्य करना तो कुछ और चाहता है और हो कुछ और ही जाता है, तो उसी समय या ऐसे हालात में इस मुहावरे का साधारणतया उपयोग किया जाता है। यह तो आपने देख लिया कि जब पूरी लग्न और स्वतः सिद्ध ही सब कुछ हुआ चला जाता है, जब भँवर में नाँव फंस जाती है और विपत्ति की पकड़ बढ़ जाती है तथा बिल्ली के भाग्य के छींका टूटा, अर्थात् कार्य के लिए अकस्मात् अच्छा अवसर प्राप्त हो जाता है तो ऐसे समय पर ही किस्मत अथवा भाग्य याद आता है। जब भाग्य अथवा किस्मत याद आती है तो परमात्मा की याद आती है। भाग्य, किस्मत का समबन्ध ज्योतिष से है अतः ज्योतिष विद्या मनुष्य को ईश्वर की याद दिलाता है तथा उसका आदेश मानने का एहसास कराता है। इससे प्रत्येक मनुष्य का मनोबल बढ़ता है तथा कार्य क्षमता बढ़ती है। अतः ज्योतिष को आमतौर पर एक भौतिक, तात्कालिक समस्याओं के समाधान, व्यंवसायी, लाभकारी और चमत्कार दिखलाने वाली विद्या अपने मूल अर्थ से कहीं अधिक व्यापक और उपयोगी विद्या है।

यह सुस्पष्ट हो गया है कि ज्योतिष शास्त्र केवल कल्पित अथवा अनुमान लगाने मात्र की विद्या नहीं है। ज्योतिष प्रत्यक्ष शास्त्र है। शास्त्रकारों का कथन है। ''प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र चन्द्रार्कौं यत्र साक्षिणौ'' अर्थात् चन्द्रमा और सूर्य प्रत्यक्ष ग्रह है और ज्योतिष शास्त्र ग्रहों पर आधारित है। महर्षियों व विद्वानों ने सूर्यादि समस्त ग्रहों के प्रभाव, गति आदि का सम्पूर्ण अध्ययन करके जिस शास्त्र का निर्माण किया उसे ही ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है।

आज के युग में भारत में ही नहीं बल्कि पश्चिमी देशों में भी ज्योतिष शास्त्र अथवा विज्ञान के प्रति श्रद्धा व विश्वास बढ़ा है। विश्वास के लिए तर्क का होना अति आवश्यक है। तर्क के बगैर विश्वास अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सकता। ज्योतिष विज्ञान में प्राचीन

काल से आज तक मनुष्य जाति की जो श्रद्धा और विश्वास बना हुआ है, उसका आधार केवल तर्क ही है। यह तो सर्वसिद्ध हो चुका है कि सूर्य के आसपास समस्त ग्रह परिक्रमा कर रहे हैं। यह ग्रह सूर्य की आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर विशेष प्राकृतिक नियमानुसार सूर्य के आस पास घूमते हैं। इनमें प्रत्येक ग्रह की अपनी–अपनी अलग–अलग आकर्षण शक्ति है, जैसे पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा, पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के प्रभावाधीन खींचा हुआ पृथ्वी के निकट घूम रहा है। सूर्य की आकर्षण शक्ति से खींचे चन्द्रमा एवं पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। इसी प्रकार समस्त ग्रहों के भी उपग्रह हैं जो उन ग्रहों की आकर्षण शक्ति से प्रभावित होकर सूर्य के इर्द–गिर्द घूम रहे हैं।

पृथ्वी से लाखों मील दूर होते हुए भी जब पृथ्वी पर सूर्य की आकर्षण शक्ति का प्रभाव पड़ता है तो फिर यह प्रभाव मनुष्यों, जीवों तथा पशु पक्षियों पर पड़ना निश्चित है। तभी तो जब सूर्य विशेष राशियों में होता है तब गर्मी, सर्दी, बसन्त, पतझड़ तथा वर्षा ऋतु का परिवर्तन होता है। इसी प्रकार जिस समय प्रातः, दोपहर, सन्ध्या, रात्रि तथा जिस राशि विशेष में बालक का जन्म होता है, समय, राशि एवं ग्रह अनुसार बालक के स्वभाव, चरित्र तथा जीवन पर प्रभाव पड़ना निश्चित है।

इससे तथा अन्य असंख्य तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि ज्योतिष विज्ञान तर्कसंगत है, तभी तो प्राचीन काल से आज तक जीवित है। ज्योतिष शास्त्र की प्रमाणिकता इससे ही सिद्ध हो जाती है।

ज्योतिष शास्त्र के भेद

ज्योतिष शास्त्र के मुख्य रूप से दो भेद हैं। आदि काल के अन्त में यही दो भेद स्वतन्त्र रूप से विकसित हुए। वे हैं–गणित ज्योतिष और दूसरा फलित ज्योतिष।

1. गणित ज्योतिष–गणित ज्योतिष के अर्न्तगत करण, तन्त्र व सिद्धान्त का ग्रहण होता है। पंचांग आदि इसी से बनाए जाते हैं। प्राचीन ग्रन्थों जैसे सूर्य सिद्धान्त जो महार्षियों के सूक्ष्म गणित पर आधारित पद्धति है, पर भी पंचांग बनते हैं। ग्रहज्ञाधव जैसे करण ग्रन्थों के आधार पर भी पंचांग बनाए जाते हैं। पाश्चात्य प्रणाली में दूरबीन द्वारा वेधशालाओं में नियमित रूप से ग्रहों का वेध लिपिबद्ध करके लिखित सूचना तैयार की जाती है। यह सूचना अर्थात् रिपोर्ट प्रतिवर्ष नियमित रूप से प्रकाशित होती है। इस सूचना के आधार मान कर बहुत ही पंचांग बनाए जाते हैं। आज कल तो अधिकतर पंचांगों का आधार

यही आंकड़े होते हैं। इस लिए गणित ज्योतिष को खगोल विद्या (ASTRONOMY) भी कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र का गणित भेद अति महत्वपूर्ण है। गणित द्वारा पंचांग का निर्माण होता है तथा विद्वान एवं ज्योतिषी और अंतरिक्ष के बीच पंचांग ही एक है जो सम्पर्क सूत्र का कार्य करता है। ग्रह स्थिति और अंतरिक्ष का ज्ञान पंचांग कराता है। यदि पंचांग शुद्ध होगा तो ग्रह स्थिति भी शुद्ध होगी और सही भविष्य फल प्राप्त होगा। संक्षेप में गणित ज्योतिष के अन्तर्गत गणित द्वारा ग्रहों की स्थिति आदि निकाली जाती है। इसके अर्न्तगत ऐसा गणित भी है। जिसमें गुणा, भाग, वर्गमूल, जोड़ना, घटाना, आवश्यक संस्कार गणित की जोड़–बाकी भूमि, आकाश, अंतरिक्ष आदि के नापने की विधियां वर्णन की गई हैं।

2. **फलित ज्योतिष**–फलित ज्योतिष को (Astra-logy) भी कहा जाता है क्योंकि इसके द्वारा ग्रहों पर फल–कथन किया जाता है अथवा जाना जाता है अतः फलित ज्योतिष में ग्रहों की स्पष्ट स्थिति पर से शुभाशुभ फल का विचार होता है। फलित ज्योतिष के भी कई भेद हैं परन्तु मूल रूप से फलित ज्योतिष के पांच भेद माने जाते हैं। यह है होरा, मूर्हत, ताजिक, प्रश्न व शुकन।

1. **होरा**–फलित ज्योतिष के होरा नामक भेद ने व्यक्ति की जन्म कुण्डलो बनाना तथा उस पर से दुःख–सुख का विचार करना होता है। होरा शास्त्र को जातक शास्त्र भी कहा जाता है। अतः इसके अन्तर्गत जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी भी व्यक्ति के शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है। होरा शब्द की उत्पति अहोरात्र शब्द से हुई है जिसका मतलब होता है रात दिन। अतः अहोरात्र में 24 होरा होते हैं इस तरह एक होरा घंटा की होती है। इस तरह होरा शास्त्र में मानव जीवन में जो कुछ भी रात और दिन में घटित होता है, वह सब कुछ होरा शास्त्र के अन्तर्गत आता है। यही ज्योतिष भेद वास्तव में जातक के साथ सीधा सम्बन्ध रखता है। यही भेद प्रस्तुत विषय का भी है क्योंकि फल–कथन का आधार कुण्डली होता है, और जन्मकुण्डली और जन्मपत्री की रचना कैसे करें ही हमारा विषय है।

2. **मुहूर्त**–इसके अन्तर्गत किसी भी कार्य को आरम्भ करने में तिथि, नक्षत्र, ग्रह वार आदि के प्रमाण से शुभाशुभ फल का विचार होता है। मुहूर्त अर्थात् किसी विशेष कार्य को करने का विशिष्ट निर्धारित समय। यह समय ज्योतिष शास्त्र के इस भेद के अन्तर्गत निर्धारित किया जाता है। मुहूर्त का शब्दार्थ ही उपयुक्त क्षण पर किए जाने वाले काम का क्षण होता है। इस क्षण को खोजना इस भेद द्वारा ही किया जाता है। इसके लिए वार के अनुसार चौकड़ियां विशेष महत्व रखते हैं।

3. **ताजिक**—वर्ष, मास, दिन प्रवेश आदि जानकर पूरे वर्ष भर का शुभाशुभ फल का विचार फलित ज्योतिष के इस भेद की अन्तर्गत होता है।

4. **प्रश्न ज्योतिष**—किसी भी समय प्रश्न का विचार इस द्वारा किया जाता है।

5. **संहिता**—इसमें भू—शोधन, दिक् शोधन, मेलापक, भूकम्प, सामुद्रिक, स्वरोदय, अंग स्फुरण, शरीर चिन्ह द्वारा संकेत इन्द्र धनुष का विचार होता है। शकुन भी इसी अन्तर्गत आता है।

यह तो सुस्पष्ट हो गया है कि सभी प्रकार के फल का आधार किसी—न—किसी रूप में राशि, ग्रह व नक्षत्र आदि ही हैं अतः सर्वप्रथम राशि चक्र व सौर मंडल की जानकारी आवश्यक है।

भचक्र या राशिचक्र—भचक्र को राशिचक्र भी कहा जाता है। राशिचक्र या भच्रक को ZODIAC भी कहा जाता है। वास्तव में भचक्र या राशिचक्र एक ऐसी पेटी अथवा क्षेत्र है जिसके भीतर—भीतर ही सूर्य आदि ग्रह भ्रमण करते हैं, अथवा इस चक्र से बाहर जा ही नहीं सकते। अतः भचक्र एक कलिपत वृत है। अंतरिक्ष में सूर्य जिस मार्ग से भ्रमण करते हुए हमें दिखता है। उसे क्रान्तिवृत ECLIPTIC कहा जाता है। सब ही ग्रह इस मार्ग से या इसके नजदीक सूर्य की परिक्रमा करते हैं. इसे सूर्य का पद भी कहा जाता है। क्योंकि सूर्य 12 राशियों में एक वर्ष में एक बार इसी पथ में भ्रमण करता है। सच तो यह है कि क्रान्तिवृत वास्तव में पृथ्वी का परिक्रमा करने का पथ अथवा मार्ग है और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में सभी राशियों में कर लेती है। आमतौर पर यह ही कहा जाता है कि सूर्य क्रान्तिवृत की 12 राशियों में एक वर्ष में परिक्रमा करता है। वास्तव में जो दिखाई देता है वह है नहीं!

संक्षेप में क्रान्तिवृत के उतर दक्षिण 9°—9° की चौड़ाई का एक कल्पित पेरी, पट्टा या क्षेत्र माना जाता है जिसे भचक्र राशिचक्र कहते हैं क्योंकि समस्त ग्रह इन कल्पित पेरी, यहाँ के भीतर—क्रान्तिवृत पर या इसके उतर दक्षिण होकर ही घूमा करते हैं। यह खगोल मंडल भचक्र को 12 भागों में बाँटा गया है। यह वृत 360° अंश का विस्तार रखता है। इस तरह इसके 30 अंश के 12 भाग माने गए हैं। प्रत्येक भाग को एक राशि का नाम दिया गया है। राशि स्थिर मानी गयी है परन्तु ग्रह इसमें घूमते हैं। यदि इसी पट्टे के 27 समान भाग किए जाएं तो 27 नक्षत्र होते हैं। राशि चक्र को नापने के लिए जो स्थान नियत किया गया है वह मेष राशि का आदि स्थान है,यह राशिचक्र अपनी धूरी पर दिन में एक बार पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता है। इसी भ्रमण के कारण राशियों का उदय और अस्त भी होता है।

जितने समय में किसी ग्रह का भचक्र का एक चक्कर पूरा होता है उसे भगण कहा जाता है। यह भगण प्रत्येक ग्रह का अलग–अलग होता है जैसे सूर्य यह चक्कर (अर्थात् 30 अंश) एक महीने में और गुरू 13 मास में पूरा करता है। चन्द्रमा इस एक क्षेत्र को $2^1/_4$ दिन में ही पूरा कर लेता है। इस क्षेत्र एवं राशियों की संक्षेप जानकारी इस तरह हैं।

राशियों के नाम–जैसे पहले बताया गया है कि खगोल मंडल भचक्र को समान 12 भागों में बाँटा गया हैं। प्रत्येक भाग को एक राशि कहते हैं। पूरा विस्तार 360 अंश का है, अतः एक राशि 30 अंश की होती है। इस तरह भचक्र के 30 अंश तक एक भाग को राशि कहा जाता है, और जो नापने का बिन्दु स्थान नियत किया गया है वह मेष राशि का स्थान है। अतः राशियां मेष से आरम्भ होती हैं। राशियां 12 होती हैं जो इस प्रकार हैं।

राशियों के नाम

राशि क्रम	राशि हिन्दी नाम	अंग्रेजी नाम	आकृति राशि	रंग	अंग
1	मेष	ARIES	मेड़ा	लाल	सिर
2	वृष	TAURUS	बैल	सफेद दही जैसा	मुंह, कन्धें
3	मिथुन	GEMINI	युगल	हरा	बाहें
4	कर्क	CANCER	केकड़ा	दुधिया सफेद	दिल, छाती
5	सिंह	LEO	सिंहनर	सुनहरा	पेट, दिल
6.	कन्या	VIRGO	लड़की	हरा	पेट, नाभि
7	तुला	LIBRA	तराजू	सफेद	नाभि से निचला भाग
8	वृश्चिक	SCORPIO	बिच्छू	लाल	गुप्तांग, गुदा
9	धनु	SAGITTARIUS	दरियाई गाय	पीला	जंघा
10	मकर	CAPRICORN	मगरमच्छ	काला	घुटने
11	कुम्भ	AQUARIUS	जल का घड़ा	काला	घुटने, टांगे
12	मीन	PISCES	मछली	पीला	टांगे, पैर

संक्षेप राशि ज्ञान–क्रम के अनुसार राशियों के नाम दिए गये हैं। जैसे बताया गया है कि राशिचक्र अपनी धूरी पर चलता रहता है अतः प्रत्येक राशि को रात–दिन में एक बार सामने आने अथवा उदय होने का अवसर मिलता है।

1. उदय होने वाली राशि अथवा लग्न– हमारा भचक्र सदैव चलता रहता है, चौबीस घंटे में बारह राशियों को उदित होने अर्थात् चढ़ने अथवा सामने आने का अवसर मिलता है। आमतौर की एक राशि लगभग दो घंटे रहती है और फिर उससे अगली राशि क्रमानुसारी आ जाती है। जो कार्य किसी दिए गए अथवा विशेष समय पर उदय हो रही हो वह लग्न राशि कहलाती है तथा उसे कुण्डली के पहले भाव में लिखा जाता है। सारांश यह कि जो राशि इष्टकाल समय उदय होती है वह लग्न राशि होती है।

2. जन्म राशि– जन्म समय राशि में चन्द्रमा होता है वह जन्म राशि कहलाती है। जैसे यदि जन्म की समय चन्द्र धन राशि में होगा तो जन्म राशि धन होगी। चन्द्रमा राशि ही जन्म राशि कहलाती है।

3. जन्म नक्षत्र– एक राशि 30 अंक की होती है और एक राशि में लगभग $2^1/_4$ नक्षत्र होते हैं। एक नक्षत्र 13 अंश 20 कला का होता है। जिस नक्षत्र में जन्म के समय चन्द्रमा होता है। वह जन्म नक्षत्र कहलाता है। यदि किसी व्यक्ति की राशि (चन्द्रमा राशि) धन है तो उसकी जन्म राशि धन हुई तथा यदि चन्द्रमा इस राशि में 13 अंश 20 कला जन्म नक्षत्र मूल जानना चाहिए।

4. सूर्य राशि– जिस राशि में जन्म के समय सूर्य होता है, वह सूर्य राशि कहलाती है। जातक की कौन सी सूर्य राशि होती है, सारणी वाले भाग में दे दिया गया है।

5. नाम राशि– किसी भी व्यक्ति के नाम के पहले अक्षर से यह राशि जानी जाती है। यहां जो चक्र दिया है, उससे यह पता लगाया जा सकता है कि कौन सा अक्षर यदि नाम की आरम्भ में होगा तो कौनसी राशि होगी। जन्म राशि तथा नाम राशि को लेकर कई बार भ्रम पड़ जाता है। यदि किसी का नाम चन्द्र राशि के अनुसार रखा गया है तो उसकी चन्द्र एवं नाम राशि एक हो सकती है।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण लग्न राशि होती है इसके द्वारा ही जीवन सम्बन्धी सम्पूर्ण विस्तार पूर्वक हाल जाना जा सकता है। दूसरे स्थान पर चन्द्र राशि आती है। यद्यपि यह भी लग्न की तरह महत्वपूर्ण के फिर भी यदि लग्न ज्ञात है तो लग्न राशि को ही प्रमुखता देनी चाहिए। यदि लग्न एवं चन्द्र राशि ज्ञात नहीं है तो सूर्य राशि के अनुसार भी जीवन का हाल देखा जा सकता है। सारणी वाला भाग देखने के सूर्य राशि व अन्य जानकारी सहज ही मालूम हो जाएगी।

लग्न, चन्द्रमा राशि, सूर्य राशि आपको तभी मालूम हो सकेगी यदि आपके पास जन्म समय, स्थान, तारीख, माइ व सन् आदि का विवरण होगा। यदि आपको यह सब ज्ञात नहीं तो फिर नाम राशि से फल देखा जा सकता है, ऐसा फल साधारण व आम ही होता है परन्तु कई स्थितियों में यह भी बड़ा समीचीन होता है।

पुरुष/स्त्री राशि

पुरूष राशियां	1–3–5–7–9–11
स्त्री राशियां	2–4–6–8–10–12

राशि तत्व

तत्व	क्रम राशि
अग्नि तत्व	1–5–9
पृथ्वी तत्व	2–6–10
वायु तत्व	3–7–11
जल तत्व	4–8–12

राशि वर्ण/जातियां

राशि क्रम	वर्ण/जाति	दिशा
1–5–9	क्षत्रिय	पूर्व
2–6–10	वैश्य	दक्षिण
3–7–11	शूद्र	पश्चिम
4–8–12	ब्राह्मण	उत्तर

राशि गुण

राशि क्रम	गुण
1–4–7–10	चर
2–5–8–11	स्थिर
3–6–9–12	द्विस्वभाव/दोगली

मेष

यह राशि, राशिचक्र का प्रारम्भ स्थान की बिन्दु है अतः यदि यहां लिखा ही मेष राशि सूचित करती है। क्रम से यह प्रथम राशि है। खगोल मंडल में इसकी दिशा पूर्व दिशा है। मेष चर एवं अग्नि तत्व राशि है। यह पिछले भाग से उदित होने वाली राशि है। इस राशि का रंग लाल, स्वभाव उग्र तथा प्रभाव गर्म शुष्क है। यह विषम व पुरूष तथा क्षत्रिय जाति राशि है। यह दिन वली और उसका वास पर्वत वन है। मंगल इसका स्वामी ग्रह है। सूर्य इसमें उच्च का तथा शनि नीच का होता है। गेहूँ, अलसी, मसूर इस राशि के धान्य हैं। यह ऊनी वस्त्र, भूमि पर होने वाली औषधियों की सूचक हैं।

कद मझला, शरीर पतला किन्तु सुगठित, रंग गेहुंआ व साफ परन्तु रंगरूप अधिक चिकना चुपड़ा नहीं होगा। गला एवं मुँह कुछ लम्बा भवों पर घने बाल, सिर के बाल कुछ रूखे–रुखे होते हैं। मेष राशि वाले अच्छे दवदवे वाले होते हैं और दृष्टि तेज होती है।

यह तेज़ मिजाज़ फुर्तीले व क्रोधी होते है। यह बहुत महत्वकांक्षी होते हैं। इनमें साहस कूट–कूट कर भरा होता है। हिम्मत तथा शक्ति कमाल की होतीं है। यह किसी के आधीन रहकर कार्य करना पसन्द नहीं करते। यह निडर एवं निर्भय होते हैं तथा जोखिम के कार्य बड़ी कुशलता से करते हैं। इनकी इच्छा शक्ति प्रबल होती है। जिस कार्य के पीछे पड़ जाए पूरा करके ही छोड़ते हैं। स्वतंत्र रूप से कार्य करना ही ठीक समझते हैं। खुशामद इन्हें खूब अच्छी लगती है तथा आलोचना का बुरा मानते हैं। हर कार्य में जल्दबाज करते हैं। क्रोध जल्दी आता है और धीरे–धीरे ही जाता है। कुल मिलाकर इनमें चतुराई, कुशलता, नयायिक कुशलता दृढ़ण एवं दूसरों का सामना करने का पूर्ण साहस होता है। यह पुलिस, सेना, स्वास्थ्य विभाव, डाक्टर, इन्जीनियर सफल होते हैं।

इस राशि की स्त्रियां जिद्दी होती हैं। यह चतुर, स्पष्टवादी, अनुशासन प्रिय, साहसी तथा वह सत्य के लिए संघर्ष करने को प्रयत्नशील रहती हैं। यह कुछ मनमानी भी करती हैं। जीवन में संघर्ष करना पड़ता है। यह आत्मनिर्भर भी बन जाती हैं। यह अपनी प्रशंसा सुनने की बहुत इच्छुक होती हैं। यह व्यवहार कुशल होती हैं। परन्तु जिद्धी स्वभाव के कारण हानि उठाती हैं। यह डाक्टर सर्जन बनती हैं।

वृष

इस राशि का क्रमांक 2 है। खगोल मंडल में इसकी दिशा दक्षिण मानी गई है। इसकी आकृति बैल जैसी तथा यह सम, स्त्री, स्थिर एवं पृथ्वी तत्व राशि है। इसका स्वभाव सौभ्य, बात वित प्रकृति, वैश्य जाति, रंग दही जैसा सफैद है। यह राशि रात्रि वली मनी गई है। यह सरल भूमि में विचरण करने वाली एवं इसका प्रभाव सर्द शुष्क है। इस राशि का स्वामी शुक्र ग्रह हैं। इस राशि में चन्द्रमा उच्च का होता है।

कद औसत, ललाट चौड़ा, गर्दन सुगठित, कन्धे चौड़े, सुगठित एवं मोटे, आंखे चमकदार, बाल काले तथा कई बार आगे से घुंघराले होते हैं। कई बार मुँह पतला, शरीर भारी-भरकम होता है। दुःस्वप्न, आंखों के विकार, ऊपरी वृषा का प्रकोप इसका प्रभाव माना है। ज्वार, चावल तथा बाजरा इसका धान्य है।

वृष राशि स्थिर एवं पृथ्वी तत्व राशि है। इसलिए इनमें सहनशीलता व धैर्य बहुत होता है। यह परिश्रमी होते हैं तथा लम्बे समय तक कार्य में लगे रहते हैं। यदि इनको अधिक छेड़ा जाए तो ये क्रोधित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में यह सब किया-धरा बिगाड़ देते हैं और फिर जल्दी काबू में नहीं आते। वे जिद्धी व अड़ियल भी होते हैं। इनकी स्मरणशक्ति बहुत होती है। यह इर्षालू होते हैं। भौतिक जगत में विचरण करके ये अति प्रसन्न रहते हैं। किसी बात को यह वर्षों तक मन में रखते हैं और माने मन की बात किसी को नहीं बताते जब तक इनका उद्देश्य पूरा न हो जाए। सांसारिक सुखों तथा धन एकत्र करने की ओर अधिक रूचि लेते हैं। यह विलासी एवं कार्य व्यवहार में कुशल होते हैं। घमण्डी, अभिमानी, हठधर्मी, भड़क पड़ने वाले, पेटू, अपने आप में मस्त, खाने-पीने के शौकीन तथा अपनी ही धुन में मस्त रहना इनका विशेष स्वभाव होता है। यह दयालु, भोगी, दृढ़ प्रतिज्ञ एवं ईमानदार होते हैं।

वृष राशि की स्त्रियां प्रायः सुन्दर होती है। यह मेहनती होती हैं। यह जिद्धी होती है और संघर्ष करने को तत्पर रहती है। यह कुशल गृहस्थी, सहनशील, मितव्ययी और व्यवहार कुशल होती है। यह

आत्मनिर्भर बन जाती है। इनका प्रेम निष्कपट होता है। यह भावुक भी होती है।

अभिनेता, संगीतकार, कला, नर्सिंग, शिक्षा, व्यापार, बैकिंग आदि में सफल होते है।

मिथुन

इस राशि की क्रमांक तीन है। यह विषम, पुरूष एवं द्विस्वभाव राशि है। वायु तत्व, क्रूर स्वभाव तथा खगोल मंडल में इसकी दिशा पश्चिम मानी गयी है। इसी आकृति युगल, पुरूष स्त्री तथा रंग हरा है। इसका प्रभाव उष्णतर, जाति शूद्र, दिन वली द्विपद एवं वन में विचरण करने वाली है। उसका स्वामी ग्रह बुध होता है। राहू इस राशि में उच्च फल का और केतू नीच फल का माना गया है।

इसका कद लम्बा परन्तु साधारणतया कई बार कद छोटा भी देखा गया है। शरीर संतुलित होता है तथा साधारणतया बाहें शरीर के अनुपातानुसार लम्बी होती हैं। इसके प्रभाव से रंग न अधिक गोरा होता है और न ही काला, इसके प्रभाव मे चेहरा गोल एवं नाक आगे से कई बार तोते जैसी होती है। आंखें छोंटी परन्तु दीख व दृष्टि तीक्षण होती है। जल्दी-जल्दी चलना इनका स्वभाव होता है। बाल घने काले होते हैं तथा कान छोटे होते हैं। परन्तु आकर्षक होते हैं। इसका धान्य रूई, कपास् तथा शरद के धान्य व जंगली फल आदि माने गए हैं।

ये बुद्धिमान, ज्ञानी, बलवान तथा दूसरों के साथ काम करने वाले होते हैं। यह विद्या प्रेमी, अध्ययनशील, न्यायिक बुद्धि, संगीत प्रिय, शायर, कविता लिखने आदि के प्रेमी होते हैं। इनमें विश्लेषण करने की पूर्ण सार्मथ्य होती है। यह बड़े ही प्रतिभाशाली, फुर्तीले, चतुर, राजनीतिज्ञ, व्यापारी, बहुत अच्छे वक्ता, विनम्, विनोदी, व्यंग करने व लिखने वाले होते हैं। ये समाज की ओर से सम्मानित भी होते हैं। ये मस्तिष्क पर बोझ अधिक डालते हैं तथा दिमागी चिन्ता के कारण बेचैन रहते हैं। ये हर वस्तु को शंका की दृष्टि से देखते हैं।

इस राशि के प्रभाव से स्त्रियां प्रायः चतुर, कार्यदक्ष होती है। वे अत्यधिक परिश्रमी होती है। ये काम क्रीड़ा की शौकीन व क्रोधी होती हैं उनके जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं परन्तु ये सुख चैन चाहती है।

यह वकील, बक्ता, प्रिंसीपल, मैजिस्ट्रेट, जज, नेता, व्यापारी, कुशल, अभिनेता, सम्पाद, जासूस क्लर्क, एकांउटैंट, साहित्य, सेहस तथा अर्द्ध-सरकारी संस्थाओं में सफल होते हैं। ये प्रायः स्थान तथा पद परिवर्तन करते रहते हैं और इसी कारण कई बार असफल भी रहते हैं । इनको तंतु विकार का डर रहता है।

कर्क

इस राशि का क्रमांक 4 है। यह सम, स्त्री, चर एवं जल तत्व राशि है। इनकी आकृति केकड़ा का सांकेतिक चिन्ह है। इसका स्वभाव सौम्य, दिशा उत्तर को सूचित करती है। इसका प्रभाव सर्द तर तथा यह कफ प्रधान राशि है। इसकी जाति, ब्राह्मण, रंग दूधिया सफेद, रात वली और जलचर में विचरण करने वाली है। इस राशि का स्वामी ग्रह चन्द्रमा है। इस राशि में गुरू उच्च फल का तथा मंगल नीच फल का माना गया है।

इसके प्रभाव में जातक का कद मझला तथा कई बार छोटा ही होता है। शरीर एवं शारीरिक शक्ति कोमल होती है। पुरूष जातक स्त्री की तरह कोमल होते हैं एवं स्त्री जातक अधिक कोमल व सुन्दर होती है। रंग साफ, गोरा तथा मुखड़ा गोल होता है। इनकी चाल मस्तानी होती है शरीर का ऊपरी भाग कुछ बड़ा तथा निचला भाग कुछ छोटा होता है। आयु बढ़ने के साथ–साथ ये मोटे हो जाते हैं और कई बार तोंद भी निकल आती है। चन्द्रमा हस्त नक्षत्र का भी स्वामी है जो हाथों का सूचक है, इस तरह इनका पंजा काफी मजबूत होता है। इसका असर छाती पर रहता है। ये कुँए, बाबड़ी, तालाब, जल–प्रदेश की सूचक हैं।

इनकी कल्पना शक्ति बड़ी अच्छी होती है। कल्पना में बहुत दूर–दूर की उड़ाने भर आते हैं। उनका चित चलायमान, परिवर्तनशील एवं क्रियाशील होता है। पवित्र आदर्शों पर चलने वाले होते हैं परन्तु ये मन की बात किसी को कम बताते हैं। हवाई किसे बनाना भी इनका स्वभाव होता है। स्वभाव में एवं मानसिक स्थिति में चंचलता होने के कारण दूसरों के साथ एक–सा व्यवहार करना इनके वश की बात नहीं होती। यह विचेकशील, स्वतन्त्र विचारों के स्वामी तथा अनेक कार्यों में निपुण होते हैं ये दयालु, परिश्रमी, न्यायशील, ज्ञाता तथा परिवर्तनशील होते हैं।

इस राशि की स्त्रियां परिश्रम करने वाली, शासन करने की इच्छा रखने वालीं तथा घर एवं बच्चों में अत्यधिक प्रेम करने वाली होती हैं। ये कलात्माक एवं सौन्दर्यमुक्त वस्तुएँ बनाने में भी निपुण होती हैं। ये चतुर भावुक, संवेदशील, विचारशील, जिद्दी तथा क्रियाशील होती हैं। यदि इनकों उचित समय पर प्रेरित किया जाए तो जल्द समझ जाती हैं।

डाक्टर, प्राध्यापक, नाविक, न्यायधीश, व्यापारी, राजनेता, सफल होते हैं। ये धन प्राप्ति में लगे रहते हैं। सरकारी नौकरी, तरल पदार्थों के व्यवसाय, स्वास्थ्य, जमीन–जायदाद क्रय व विक्रय तथा कपड़ा व्यापारी भी सफल होते हैं।

सिंह

इस राशि का क्रमांक 5 है। यह विषम, पुरूष स्थिर तथा अग्नि तत्व राशि है। स्वाभाव क्रूर माना गया है। खगोल मंडल में इसकी दिशा पूर्व है। इसकी आकृति सिंह पर सांकेतिक चिन्ह है। दिन बली तथा पर्वत आदि ने विचरण स्थान है। इसका स्वामी सूर्य है।

इसके प्रभाव के अधीन जातक का शानदार एवं दबदबे वाला व्यक्तित्व, मस्तक चौड़ा तथा कद औसत होता है। इनका शरीर सुगठित होता है। और हड्डियां मज़बूत होती हैं, आमतौर पर देखा गया है। यदि सूर्य कमजोर होगा तो अस्थिभंग होते रहते हैं। इसके प्रभाव में जातक के कन्धे भरे हुए व पठ्ठे मज़बूत होते हैं। आंखे चमकदार तथा दृष्टि तीक्ष्ण होती है। रंग गेहुँआ एवं सिर पर बाल कम होते हैं। आंखों की भवों के बाल भी साधारणता कम ही होते हैं। इनका स्वास्थ्य अच्छा होता है तथा जीवन शक्ति भरपूर होती है। शरीर का ऊपरी भाग कुछ स्थूल तथा निचला अर्द्धभाग कुछ पतला होता है।

सिंह राशि के जातक उदार, निडर, स्वाभिमानी, इरादे, के पक्के, साहसी, उत्साही, उच्य अभिलाषी, धैर्यवान् महत्वाकांक्षी, स्नेही, कृपालु, निष्ठावान, समय तथा ड्यूटी के बड़े पाबान्द होते हैं। ये उतम प्रबन्धक, आगू एवं विशाल हृदय होते हैं। यह अपने विचारों पर दृढ़ रहते हैं। ये दूसरों की सहायता करके बड़े प्रसन्न रहते हैं। अपने लक्ष्य प्राप्त हेतु दृढ़ इरादे एवं मजबूती के साथ चलते हैं। अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु सही ढंग अपनाते हैं। इन्हें क्रोध जल्दी आता है। किन्तु आन्तरिक्ता से किसी को हानि नहीं करना चाहते। बुराई का बदला भलाई में देते हैं। ये कुछ जल्दबाज होते हैं। प्रत्येक कार्य शीघ्रता से करना चाहते हैं तथा दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। नेता होने की उनमें पूरी सार्मथ्य होती है। इनकी आवाज़ भारी होती है। ये तेजस्वी होते हैं। प्रभावशाली व्यक्तित्व, रोबदार आवाज़ के कारण से घर, सुसाइटी या दफ्तर में आम पहचाने जा सकते हैं। इसी राशि की स्त्रियां दयालू, जिद्धी, अनुशासन प्रिय, गृहकार्य में दक्ष व संघर्षशील होती हैं, ये सन्तान का अच्छा पालन करती हैं। पति और पुत्र पर अंकुश रखना पसन्द करती हैं। ये सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणीय रहती हैं। ये स्वाभिमानी होती हैं।

ये नेता, अभिनेता, अभियन्ता, डाक्टर, सैनिक, वकील, राज्य कर्मचारी, अधिकारी तथा व्यापारी सफल रहते हैं।

कन्या

इस राशि का क्रमांक 6 है। खगोल मंडल में इसकी दिशा दक्षिण होती है। यह सम, स्त्री एवं द्विस्वभाव राशि है। पृथ्वी तत्व, सौम्य स्वभाव को सूचित करती है। उसकी प्रकृति रात है तथा प्रभाव सर्द शुष्क है। इनकी जाति अथवा वर्ण, वैश्य, रंग पांडुरंग, हरा, चितकबरा, राशि बली, द्विपद एवं सरल भूमि में विचरने वाली है। इसका स्वामी बुध है तथा यह अस्थिर स्वभाव की मालिक है।

इसके प्रभाव के अधीन पतला, कद लम्बा परन्तु कई जातक छोटे कद के भी देखे गए हैं। बाल घने होते हैं, आंखें छोटी–छोटी और नज़र तेज़ होती है। रंग साफ गेहुँआ तथा यह जल्दी–जल्दी चलते हैं शरीर चिकना व कोमल होता है। ये बड़े चुस्त होते हैं तथा सही आयु से इनकी आयु कम ही प्रतीत होती है। ये बड़े फुर्तीले और सूझवान होते हैं।

ये न्यायप्रिय दयालु होते हैं और प्रत्येक कार्य को बहुत ठण्डे दिमाग में सोचते हैं। यह बुद्धिमान, विचारशील, विवेकशील, चिंतक, ज्ञानी, ध्यानी तथा सूझवान होते हैं। उलझनों तथा समस्ताओं की गुत्थी सुलझाने की इनमें पूरी सार्मथ्य होती है। स्वभाव परिवर्तनशील होने के कारण कई बार परिजन नाराज़ हो जाते हैं। ये अति चतुर होते हैं और तुरन्त अघसर संभाल लेते हैं। इनमें सर्वगुण पाए जाते हैं। परन्तु स्वार्थ एवं भोग की प्रकृति के कारण ये अधिक मानसम्मान, प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकते। यह मानसिक रूप से बहुत उन्नत होते हैं। ये विपत्तियों में बुद्धि से काम लेते हैं और सफलता पाते हैं। इनका व्यक्तित्व रहस्मय होता है। ये जीवन की व्यवाहारिकता से जीना चाहते हैं। ये सांसारिक एवं सामाजिक कार्य में अधिक रूचि लेते हैं। ये धैर्यवान, प्रसन्नसित, सहनशील, आत्मविश्वासी व चतुर होते हैं। कन्या राशि वालों को कैसी भी चिन्ता हो परन्तु इनके चेहरे पर हर समय मधुर मुस्कान देखने को मिलेगी।

इस राशि की स्त्रियाँ उधार, परिश्रमी, चतुर, सरल व धार्मिक होती है। ये सम्मान प्राप्त करती है। ये शंकालु एवं अविश्वासी प्रवृति के कारण चिन्ता में रहती हैं। ये व्यवहार कुशल होती हैं तथा अच्छी माता व पत्नी बनती हैं।

ये व्यापारी, कवि, चित्रकार, ऑटितर, पत्रकार, राजदूत, लेखक, अध्यापक, डॉक्टर, एकांउटैंट, वकील, ज्योतिष नर्स, फार्मासिस्ट, सहायक व सैक्रेटरी सफल होते है।

तुला

इस राशि का क्रमांक 7 है। यह विषम, पुरूष एवं चर राशि है। यह वायु तत्व राशि है तथा इसका स्वभाव क्रूर माना गया है। इसकी जाति अथवा वर्ण शूद्र एन्वं रंग दही जैसा सफेद है। यह दिन में बजी मानी गयी है तथा इसका विचरण स्थान बन है। इसकी आकृति तराजू, प्रभाव उष्णतर व वादी है। इसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। इस राशि ने शनि उच्च फल का तथा सूर्य नीच फल का होता है। इसकी दिशा पश्चिम मानी गयी है।

इस की प्रभाव की अन्तर्गत कद लम्बा, एक–सा शरीर, देखने में शानदार व आकर्षक, हाथ, पैर, बाहें कुछ पतले होते हैं। रंग साफ सुन्दर, रूपवान होते हैं। सुन्दर आंखे एवं नाक कई बार तोते जैसी होती है। चेहरा गोल तथा कई वार चकौर भी होता है। इस राशि की स्त्री जातक बहुत सुन्दर होती है तथा कश्यों की आंखें नीली व बाल घुंघराले होते हैं इस राशि के जातक आयु की बढ़ने के साथ कई बार अधिक लम्बे हो जाते हैं। यह कमर पर प्रभाव डालती है। इससे सुनसान चौराहा का बोध होता है।

तुला राशि फलों में समता, दयालुता व स्नेहशीलता बहुत होती है तथा इनके विचार शुद्ध होते हैं। ये बड़ी ऊँची आशाएँ, उम्मीदें रखने वाले होते हैं और बातुनी भी होते हैं। ये सन्तुलित मस्तिष्क के होते हैं और निर्णय सोच–विचार उपरान्त करते हैं। ये न्यायप्रिय, लोकप्रिय, कलाप्रेमी, निपुण, मृदुभाषी, निडर, समाज सुधारक, ऐश्वर्यवान तथा बलिदान करने की भावना रखते हैं एवं सार्मथ्य होते हैं। ये शान्ति प्रेमी होते हैं। परन्तु अनुचित दबाव सहन नहीं करते। धमकी देकर इनमें कोई भी वस्तु प्राप्त नहीं की जा सकती। ये आलोचना रचनात्मक ढंग की करते हैं। ये शौकीन तबीयत के होते हैं। इनकी कल्पाना शक्ति भी बहुत होती है परन्तु उन विचारों को वास्तविक रूप देना इनके वश की बात नहीं होती।

इस राशि की स्त्रियां अति सुन्दर होती हैं। ये सौन्दर्य एवं स्वच्छता से बहुत लगाव रखती हैं। संगीत व ललित कलाओं में विशेष रूचि लेती है। ये सब को समान भाव से देखती है। जीवन में कई उतार चढ़ाव भी आते रहते हैं। यह शान्ति एवं न्यायप्रिय होती है।

ये व्यापारी, वकील, अभिनेता, नेता, आर्कीटैक्ट सेलमैन, लेखन, प्रापर्टी डीलर, अर्दशास्त्री, न्यायाधीश व ठेकेदार सफल होते हैं।

वृश्चिक

इस राशि का क्रमांक 8 है। यह सम, स्त्री तथा स्थिर राशि है। जल तत्व, स्वभाव सौम्य एवं खगोल मंडल में उत्तर दिशा सूचित करती है। ब्राह्मण जाति अथवा वर्ण होता है तथा इसका रंग सुर्ख लाल माना गया है। ये रात वली तथा इसका विचरण स्थान जल एवं कीटक है। इसका प्रभाव सर्द तर तथा सांकेतिक चिन्ह बिन्दु है। इसका स्वामी ग्रह मंगल है। चन्द्रमा इस राशि में नीच का होता है। इसका प्रभाव गुह्य इंद्रिय पद होता है। बिल, खड्डे, उजाड़ प्रदेश इसके सूचिक है तथा नागदोष बुद्धिमान, दाय इत्यादि इसके लक्षण माने गए हैं।

इसके प्रभावाधीन कद औसत, कई बार छोटा परन्तु सुगठित एवं संतुलित शरीर होता है। पट्ठे मज़बूत, लम्बा व चौड़ा चेहरा होता है। छोटी व मोटी गर्दन,पैर, टांगे कुछ बेढंगे, बाल काले और कई बार घुंघराले होते हैं। इस राशि के प्रभावाधीन जातक का रंग काला, सांवला व पीला अथवा गेहुंआ होता है। जातक रौबदार होता है तथा दीख आकर्षक होती है। वृश्चिक राशि वालों का व्यक्तित्व प्रभावी होता है।

इनकी बुद्धि तीक्षण, चंचल स्वभाव होता है, ये आदर्शवादी होते हैं। ये हठी अथवा अपनी धुन के पक्के होते हैं। इनकी इच्छा शक्ति प्रवल होती है। ये जोशिले होते हैं। तथा इनके विचार स्वतन्त्र होते हैं। इनमें साक्ष्ता अधिक मात्रा में होता है। ये अपनी जिद्ध अथवा हठ पूरा करते हैं तथा दूसरों के समझाने पर भी नहीं समझते। ये धैर्य से कार्य करने वाले होते हैं परन्तु स्वभाव कुछ कड़वा होता है, इनकी कल्पनाशक्ति अच्छी होती है तथा अर्न्तज्ञान प्राप्त होता है। ये परिश्रमी, आत्मविश्वासी सतर्क, कटुवक्ता तथा झगड़ालू होते हैं। इनकी अपनी ही रूचि एवं अरूचि होती है। बदला लेने की प्रबल भावना होती है।

इस राशि की स्त्रियां जिद्धी एवं हठी होती हैं। ये दूसरों के भेद जानकर लाभ लेने में निपुण होती हैं। अपने स्वार्थ के लिए ये दूसरों का हित नहीं देखती। इनमें उतावलापन् अधिक होता है। ये किसी के नियन्त्ररण में रहना पसन्द नहीं करती, ये चतुर होती हैं और व्यवसाय में सफल रहती हैं।

वृश्चिक राशि वाले राजनैतिक, आलोचक, डॉक्टर, सर्जच, सेना, अभियन्ता, हर्वाजिस्ट, रसायन शास्त्री बीमा, पुलिस रजिस्ट्रार सफल होते हैं।

धनु

इस राशि का क्रमांक 9 है। खगोल मंडल में इसकी दिशा पूर्व मानी गयी है। यह विषय, पुरूष एवं द्विस्वभाव राशि है। अग्नि तत्व तथा इसका स्वभाव क्रूर है। इसकी जाति अथवा पूर्ण क्षत्रिय, पित प्रधान राशि मानी गयी है। इसका विचरण स्थान तथा निर्जल खुला मैदान है। इसका प्रभाव उष्ण तर, रंग पीला है। अंगरोग, गुप्तरोग, योगिनीदोष तथा फीकापन इसका लक्षण है। इस राशि का स्वामी ग्रह गुरू है। ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों के अनुसार केतू इसमें उच्च फलदायक एवं राहू नीच फलदाता होता है।

इसके प्रभावाधीन कद साधारणतया लम्बा तथा शरीर सुगठित होता है। मस्तक लम्बा, नाक, कुछ लम्बी, रंग साफ व गोरा, बाल काले, भूरे, हल्के भूरे तथा व्यक्तित्व शानदार होता है। इस राशि वालों की आखों में चमक साधारणतया अधिक है। ये जातक सुन्दर स्वरूपवान होते हैं।

धन राशि वाले बुद्धिमान, ईमानदार, सत्यवादी होते हैं। ये साहसी, न्यायप्रेमी, परिश्रमी तथा महत्वाकांक्षी होते हैं। इनमें शक्ति, उत्साह एवं आत्मविश्वास उत्तम होता है। ये सतपुरूष,. धनवान होते हैं और धार्मिक कार्यों में रूचि लेते हैं। आध्यात्मिक पक्ष से भी ये सुघड़ होते हैं, यो कठिन समस्याओं की अपने धैर्य, संतोष साहस एवं परिश्रम से सुलझाते हैं। ये निर्णाय लेने से पहले काफी सोच विचार करते हैं। ये ईश्वर को मानने वाले होते हैं तथा साधारणतया सच बोलते हैं। इसी कारण जीवन में इन्हें परेशानी भी झेलनी पड़ती है। उनको भविष्य की चिन्ता एवं कल्पित दु:ख सताते रहते हैं। धनु राशि वाले अध्यनशील तथा स्वतन्त्र प्रेमी होते हैं तथा इनकी स्मरणाशक्ति तीव्र होती है। यह दयालु, प्रतिभावान व कर्त्तव्य निष्ठ होते हैं।

धनु राशि की स्त्रियां परिश्रमी व मधुर व्यवहार की होती हैं। ये दयालु एवं बुद्धिमान होती है। तथा किसी विपत्ति में कम ही घबराती हैं। ये धुन की पक्की व संवेदनशील होती है। इनका व्यक्तित्व आकर्षण होता है। ये धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में अधिक रूचि लेती है. ये कुछ हठी एवं जिद्दी स्वभाव की होती हैं।

धनु राशि वाले वकील, सेनापति, पुलिस, शिक्षा बैंकिग, प्रकाशन तथा राज्य सेवा में सफल रहते हैं। ये प्रोफेसर, अध्यापक, ज्योतिष लेखन तथा सफल नेता होते हैं।

मकर

इस राशि का क्रमांक 10 है। यह सम, स्त्री तथा चर राशि है। पृथ्वी तत्व एवं स्वभाव सौम्भ है। ये बात प्रधान है तथा खगोल मंडल में इसकी दिशा दक्षिण है। वर्ण अथवा जाति वैश्य, तथा रंग स्याह काला है। यह रात्रि बजी और इसका विचरण स्थान भूमि है। इसका प्रभाव सर्द शुष्क है तथा सांकेतिक चिन्ह मगरमच्छ माना गया है। इस राशि का स्वामी धनि होता है। इस राशि में मंगल उच्च फल की तथा गुरू नीचा फलदायक होता है।

इसके प्रभावाधीन जातक दुबले–पतले होते हैं और धीरे–धीरे बढ़ते फूलते हैं। युवा होते ही कद भी लम्बा हो जाता है। इनका शरीर पतला है तथा यह कोई विशेष सुन्दर नहीं होते। मुखड़ा लम्बा पतला होता है। एवं ठुड्डी कुछ बड़ी एवं कुछ बाहर की होती है। इनका शरीर इतना सुगठित नहीं होता। इनकी गर्दन पतली एवं कुछ मोटी होती है। इनके बाल घने काले होते हैं।

साधारणतया इनके घुटने दुर्बल अथवा कमजोर होते हैं।

ये अनुशासनप्रिय, कुछ घमण्डी, अपने सम्बन्ध में ही सोचने वाले, मितव्ययी तथा प्रत्येक कार्य में सावधानी के साथ धीरे–धीरे परन्तु फुर्ति से करते हैं। ये प्रत्येक कार्य में व्यावसायिक दृष्टि से देखते हैं। पूरी तरह सोच–विचार के पश्चात् ही कोई निर्णाय लेते हैं। ये शान्त चित, सहनशील, गहरी सोच विचार माने एवं सता के भूखे रोते हैं। ये आज्ञाकार एवं विश्वासपात्र होते हैं परन्तु इसका दिखावा नहीं करते। ये त्यागी, संयमी, ईमानदार, चतुर, परिश्रमी, सतर्क तथा धैर्यवान होते हैं। ये राजनीतिक के दाव–पेच खूब जानते हैं तथा अपने हित के लिए पलटे मारते रहते हैं। इनकी इच्छाशक्ति प्रबल होती है। एकाधिक कार्यों में ये समान रूप में माहिर होते हैं। यह बिना सोचे समझे कोई कार्य नहीं करते। एक मत के अनुसार ये कायर व लोभी होते हैं।

इस राशि की स्त्रियां महत्वाकांक्षी, विचारशील व दूरदर्शी होती हैं। ये परिश्रमी होती हैं और परिश्रम में विश्वास रखती हैं। ये पुरूषों को मूर्ख बनाने में भी पूरी चतुर होती है। ये कल्पनाप्रिया, भावुक जल्दबाज वफादार होती हैं। इनके जीवन में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं। आत्मनिर्भर होती है।

मकर राशि वाले प्रायः सरकारी, शुद्ध सरकारी सेवा, व्यापार, राजनीति, खेती, पुलिस, सेना, ठेकेदारी में सफल रहते हैं। ये कर्मचारी, अधिकारी, टीचर, इन्जीनियर व सफल डॉक्टर होते है।

कुम्भ

इस राशि का क्रमांक 11 है। यह विषम, पुरूष एवं स्थिर राशि है। यह वायु तत्व है तथा इसका क्रूर स्वभाव है। इसका वर्ण अथवा जाति शूद्र तथा खगोल मंडल में इसकी दिशा पश्चिम है। इसका रंग स्याह तथा प्रभाव उष्णतर है। यह दिन बली है तथा इसका वियरता स्थान बन है। इसका असर पाँच के तले पर होता हैं। अपुत्र स्त्री का दोष, प्रेत–पीड़ा इसके लक्षण हैं। गली, गटर, जलाश्य इसके सूचित है।

कुम्भ राशि वालों का रंग साफ व गोरा होता है कद लम्बा तथा शरीर बढ़ियां एवं अकर्षक होता है। इनके दांत कुछ खराब होते हैं परन्तु ये सुन्दर रूपवान होते हैं। इनके बाल काले तथा चेहरा गोल होता है। कईयों का कद औस्त दर्जे का होता है। साधारणतया कुम्भ राशि वाले गोल–मोल पुष्ट शरीर वाले होते हैं।

ये एकान्तप्रिय होते हैं। ये धैर्यवान एवं परिश्रमी होते हैं। इनकी इच्छाशक्ति मज़बूत व प्रबल होती है। ये बड़े समझदार होते हैं। परन्तु इन्हें अपनी बात को समझने एवं स्पष्ट करने में कठिनाई आती है। किसी भी कार्य का निर्णय यह सोच विचार कर सकते हैं। ये अच्छे चरित्र की स्वामी होते हैं। तथा इनका स्वभाव गम्भीर होता है। चूँकि ये गम्भीर होते है, इसी लिए इनके मेल–जोल का क्षेत्र कम होता है। ये चापलूसी पसन्द नहीं करते और न ही चापलूसी का उस पर कोई प्रभाव पड़ता है। यह अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहते हैं। सोसायटी, सभा में यह हर बात नाप–तौल कर करते हैं तथा लोग इनकी बात बड़े ध्यान एवं श्रद्धा से सुनते हैं। यह पारखी, ज्ञाता, चतुर, दार्शनिक अथवा बुद्धिमान होते हैं। ये बड़े परिश्रमी होते हैं तथा प्रत्येक कार्य मेहनत से करते हैं। ये ज्ञानी होते हैं तथा गूढ़ ज्ञान समझने का प्रयास करते हैं। इनमें बलिदान की भावना होती है। ये एकान्त प्रेमी होते हैं तथा ऐसी लगन इन्हें साधू–स्वभाव बना देती है। एक मतानुसार ये निम्न वृति के तथा चुगली करने वाले होते हैं।

इस राशि की स्त्रियां बुद्धिमान, गम्भीर शान्त, साहसी व धैर्यवान् होती हैं। ये अपने उतरदायित्व को अच्छी तरह समझती है। यह प्रेम की भूखी तथा सरल स्वभाव की होती है। ये मानृ–सम्मान पाती है।

यह सरकारी, अर्द्ध सरकारी, कर्मचारी, अधिकारी, नेता, अध्यापक, वैज्ञानिक, डॉक्टर, कर्मकाण्डी, ज्योतिषी, व्यापारी कला साहित्य, बिजली, अभियन्ता तथा कम्प्यूटर में सफल होते है।

मीन

इस राशि का क्रमांक 12 है। यह सम, स्त्री एवं द्विस्वभाव राशि है। ये जल तत्व राशि है और इसका स्वभाव सौम्य है। यह कफ प्रधान है तथा खगोल मंडल में यह उतर दिशा को सूंचित करती है। इसका वर्ण अथवा जाति ब्राह्मण तथा रंग पिंगल भूरा, पीला है। यह रात्रि बली है और इसका विचरण स्थान जल है। इस राशि का संकेतिक चिन्ह मछली है। इसका प्रभाव सर्द तर है। इस राशि का स्वामी ग्रह गुरू है। इसमें शुक्र उच्च फल का तथा बुध राहु नीचा फलदायक माने जाते हैं।

इस राशि के जातकों का कद मझला और कई हालतों में छोटा होता है। इनका रंग साफ एवं मस्तक चौड़ा होता है। इनकी आंखें बड़ी तथा कुछ बाहर होती हैं। मीन राशि वालों के प्रायः पट्ठे मज़बूत होते हैं। ये शरीर के अच्छे मज़बूत होते हैं परन्तु देखा गया है कि इस राशि के कई जातक ढीले व कुछ मोटे होते हैं। इनके शरीर का ऊपरी अर्द्धभाग मोटा एवं निचला भाग कुछ पतला होता है। इनकी दीख अथवा व्यक्तित्व अच्छा होता है। इनकी बाणी मधुर होती है।

मीन राशि के जातकों का आमतौर पर मन बेचैन रहता है। इनके बिचारों में परिवर्तन होता रहता है। ये ईमानदार, कल्पनाशील एवं विलासी होते हैं। ये अपने सम्मान का भी पूरा ध्यान रखते हैं। इनमें हकूमत करने की प्रबल भावना होती है। ये मिलनसार होते हैं तथा इन्हें बातचीत करने का अत्यधिक सलीका होता है। इनमें प्रतिशोध की भावना बहुत कम होती है। ये बड़े दयालु अथवा उदार होता है। और दिल खोल कर दान देते हैं। दान अथवा धन देकर ये बड़े प्रसन्न होते हैं। साहित्य में इनका पूरा लगाव होता है। अतः .ये वक्ता, कला प्रेमी, गम्भीर, शान्त, विल्म्, दयालू व सूझवान होते हैं कई बार ये अस्थिर प्रवृत्ति के करता हानि भी उठाते हैं।

इस राशि की स्त्रियां स्नेहमयी, नीति–निपुण व गुणावन्ती होती है। ये आदर्श पत्नी व माँ साबित होती है। ये कुशल गृहणी होती है। ये उत्तम शिक्षा प्राप्त करती है तथा कला एवं लेखन में मान–सम्मान पाती है। ये दान तथा सामाजिक संस्थाओं में भी योगदान देती है।

ये अभनेता, संगीतकार, डॉक्टर, मन्त्री, नेता, मैनेजर, बैंक मैंनेजर, प्रधान, आगू, अध्यापक, जल, तरल पदार्थों के व्यापारी तथा नेवी, परिवहन आदि में सफल होते है।

ग्रह परिचय एवं प्रभाव

1. सूर्य–सूर्य जीवन शक्ति का प्रतीक है। यह सब ग्रहों से बलवान है क्योंकि यह समस्त ग्रहों का चालक है। सूर्य से ही सब ग्रहों को तेज मिलता है। यह सिंह राशि का स्वामी है तथा इसकी आकृति चिन्ह कर सिंह है। यह अग्नि तत्व तथा आत्मकारक ग्रह है। इसकी जाति क्षत्रिय, धातु सोना तथा स्वभाव स्थिर है। यह उदम और जीवन शक्ति का कारक ग्रह भी है। यह व्यक्ति में अहं भाव का घोतक है, यह 24 घंटे में एक अंश से कुछ कम, परन्तु साधारणतया इसकी गति एक दिन में एक अंश होती है। एक राशि में औसतन एक मास विचरण करता है। एक वर्ष में यह पूरा राशिचक्र घूम लेता है।

इसके प्रभावाधीन जातक उदार, सद्कर्मों की कामना करने वाला, अधिकारी वाला, गरीबों पर दया करने वाला, परोपकारी होता है। यदि निर्बल हो तो घमण्डी अहं, अभिमानी, अपनी बड़ाई स्वयं करने वाला, अधिकारों का दुरूपयोग करने वाला एवं निर्दयी होता है। सूर्य बलवान हो राज्य पद, महत्वाकांक्षा, अधिकार की भावना, स्वाभिमानी, हुकूमत करने वाला, अपनी शक्ति–सामर्थ्य द्वारा ही उन्नति करने वाला, स्वयं पर भरोसा रखने वाला, सुखवीर, चतुर, बलवान, बुद्धिमान, राजकीय ठाठ–बाठ वाला, स्पष्ट बक्ता, गम्भीर, तेजस्वी, परोपकारी, उदार हृदय, विरोधी को पराजय करने वाला तथा उत्तम आचरण वाला होता है।

2. चन्द्रमा–चन्द्रमा कर्क राशि का स्वामी इसका रंग दुधिया सफेद है। यह सारे राशि चक्कर को 27.324 दिनों में पूरा कर लेता है। चन्द्रमा औसतन एक राशि में 2.273 दिन रहता है। इसकी गति सब ग्रहों से तेज होती है। इसकी प्रतिदिन चाल अथवा गति 11 अंश से 15 अंश तक है तथा औसतन इसकी गति 13 अंश प्रतिदिन के लगभग रहती है। इस प्रकार इसे एक अंश पार करने के लिए दो घंटे से कुछ कम समय लगता है। यह पृथ्वी का ही उपग्रह है और अन्य ग्रहों से सबसे अधिक पृथ्वी के नजदीक है। तीव्र गति एवं पृथ्वी के सब ग्रहों में निकटतम होने के कारण इसका कुण्डली पर प्रभाव अत्यधिक महत्व रखता है।

चन्द्रमा जितना बलवान होता है अथवा जिस तरह की इसकी स्थिति होती है, उसी के अनुरूप शरीर एवं मन पर प्रभाव डालता है। पूर्ण चन्द्रमा शुभ होता है तथा क्षीण चन्द्रमा अशुभ माना गया है। सूर्य के 72 अंश के अन्दर–अन्दर यदि चन्द्रमा हो तो अशुभ फल ही देता है। मानसिक विकास पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। समुद्र की लहरों अथवा ज्वार–भाटा इसका प्रत्यक्ष प्रमाण कहा जा सकता है।

जिसका जन्म कर्क लग्न में हो और चन्द्रमा भी कर्क राशि अथवा लग्न में हो तो उस जातक पर इसका प्रभाव विशेष देखा गया है। यदि ऐसी स्थिति हो तो आमतौर पर जन्म नानके, अस्पताल, घर से बाहर या घर में ऊपरी मंजिल पर होता है।

चन्द्रमा वृष राशि में उच्च का व वृश्चिक राशि में नीच का होता है। 24वें वर्ष में इसका उदय होता है।

3. बुध–यह मिथुन एवं कन्या राशि का स्वामी है। इसका रंग हरा है। यह राशि चक्र को घूमने के लिए लग–भग एक वर्ष समय होता है। यह साधारणतया सूर्य के निकट ही रहता है। आमतौर पर यह सूर्य के 28 अंश तक रहता है। सूर्य के इर्द–गिर्द चक्र को यह लगभग 88 दिन लेता है। आम तौर पर जब यह वक्रीय कुण्डली में होता है तो मन की क्रिया सुस्त होती है और ऐसे प्रभाव के कारण जातक कई बार उल्टी हरकतें करता है। इसकी यह स्थिति जातक को चिड़चिड़ा बना देती है। तथा जातक यूँ ही छोटी–छोटी बातों में क्रोध में आ जाता है। ऐसा जातक लापरवाही अथवा बेध्यान होने से दुर्घटना का शिकार भी हो सकता है।

यह चन्द्रमा की तरह बहुत महत्वपूर्ण ग्रह है। यह मुख्यतः मन पर प्रभाव डालता हैं। यह अपने वल के अनुसार ही मानसिक, बौद्धिक उन्नति को दर्शाता है। जब वह चन्द्रमा के साथ त्रिकोण दृष्टि सम्बन्ध करता है तो अच्छी बुद्धि होता है। चतुराई, धार्मिक रूचि, बुद्धि–विवेक, शास्त्रीय विषयों में रूचि तथा मधुर बाणी का कारण है। यह शुभ ग्रह माना गया है। परन्तु बुरे ग्रहों के साथ होने से यह भी बुरा हो जाता है जिन ग्रहों के साथ ये शुभ फलदाता हो तो चिकित्सा, शास्त्र ज्ञान, गणित विद्या, लेखा, लेखनकला, वकालत, व्यापार एवं उत्तम बुद्धि प्रदान करता है। यदि अशुभ हो तो सिर का दुखना, जबान थथलाना, दिल्लगी करना, झूठ बोलना, भेदों को गुप्त रखना, उलटे–सीधे कार्य करना तथा व्यापार आदि में असफल बनाता है।

4. शुक्र–शुक्र वृष एवं तुला राशि का स्वामी है। नैसर्गिक कुण्डली में यह दूसरे व सातवें भाव का मालिक होता है। साधारणतया यह राशि चक्र 18 मास मे पूरा करता है। अट्ठारह महीनों में यह लगभग 40 दिन व्रकीय रहता है। उस समय अवधि में भावात्मक गड़बड़ी, उतेजना में उतार–चढ़ाव, लड़ाई–झगड़ा, वियोग–विद्रोह, अलहदगी, स्थाई परिवर्तन, तबादला तथा रिश्तों ने पक्का बिगाड़ होने की प्रबल सम्भावना रहती है। साधारणतया यह सूर्य के इर्द–गिर्द 48 अंश के भीतर रहता है। सूर्य के इर्द–गिर्द घूमने में लगभग 225 दिन लेता है।

यह अन्य ग्रहों से अधिक चमकदार दिखाई देता है। यदि बुध के साथ हो अथवा शुभ हो तो यह ललित कला, चित्रकला, बाचनकला,

आदि में प्रवीणता प्रदान करता है। प्रेम–प्यार, घर सुख, पत्नी सुख, सुन्दर चेहरा, उत्तम भाषण शैली, मिलनसार स्वभाव, उत्तम, सुन्दर वस्त्र पहनने का शौकीन एवं वाहन प्रदान करता है यदि शुक्र निर्बल हो तो हकलापन, अपशब्द बोलने वाला, असुख देने वाला तथा कई प्रकार के अवगुण प्रदान करता है। यह पाप ग्रह के साथ हों अथवा दृष्ट हो तो अशुभ फल देता है।

शास्त्रों के अनुसार मिट्टी के मानव बना एवं अग्नि से देवता, इसी लिए इसकी अर्थात् शुक्र की सूर्य के साथ मित्रता नहीं होती क्योंकि शुक्र मिट्टी का कारण माना है। शुक्र जब तक शनि से कार्यों से दूर रहेगा। नेक ही रहेगा। यह भावात्मक प्रेम–प्यार का द्योतक है। सांसारिक कार्य तथा इश्क इकीकी भी इसके, प्रभावाधीन आते हैं।

5. मंगल–यह मेष एवं वृश्चिक राशि का स्वामी है। नैसर्गिक कुण्डली में वह प्रथम तथा आरम्भ भाव का स्वामी होता है। इसे राशि चक्र पूरा करने के लिए लगभग $17^1/_2$ मास लगते हैं। प्रत्येक दो वर्ष पश्चात् वह लगभग $2^1/_2$ मास वक्रीय रहता है। सूर्य के इर्द–गिर्द घूमने में यह दो वर्ष से कम समय लगाता है। जब यह जन्म कुण्डली में वक्रीय होता है तो इसका प्रभाव बुद्धि, क्रियाशीलता पर बुरा ही होता है।

यदि मंगल वक्र स्थिति में होता है तो इसके प्रभावाधीन जातक बुरी हरकतें करने लगता है। वह फसादी, अपराधी, अपंग व असामाजिक बना देता है। यदि कुण्डली में एवं यह शुभ प्रभावधीन हो तो शुभ फल देता है। ये आकार में पृथ्वी जैसा है, इसलिए इसे पृथ्वी अथवा भूमिपुत्र भी कहा जाता है। यह ताम्र रंग का चमकता हुआ ग्रह है। यह स्वभाव का क्रोधी, फसादी, चुगलखोर एवं झूठा है। यदि बलवान हो तो पराक्रमी, सच्चाई पसन्द, सहयोगी, सहायता करने वाला, सेनापति, अगुवा, बहादुर, शूरवीर तथा उत्तम डॉक्टर व सर्जन होता है। ये व्यक्ति को ऐसे ही गुण प्रदान करता है। यदि निर्बल हो तो झूठा, चुगलखोर, क्रोधी, दुष्ट, डाकू, चोर बनाता है तथा दुर्घटना कराता है।

मंगल साहस का प्रतीक माना गया है। यदि मंगल बलवान हो तो शक्ति, सामर्थय, भूसम्पति, कृषि निर्बल होने पर फसादी, क्रोधी, आलसी, धोखेबाज़ तथा कुकर्मी बनाता है।

6. गुरू–यह शुभ ग्रह है। धनु एवं मीन राशि का स्वामी है। नैसर्गिक कुण्डली में ये नवम एवं द्वादश भाव का स्वामी है। यह एक राशि में प्रायः एक वर्ष रहता है और पूरा राशि चक्र घूमने के लिए लगभग 12 वर्ष लगाता है। बारह महीनों में यह लगभग 4 मास बक्रीय भी रहता है। इसकी दृष्टि सूर्य, चन्द्र एवं शनि साथ यदि हो तो

बहुत महत्वपूर्ण होती है। इनके साथ दृष्टि सम्बन्ध होने से क्रमशः शरीर, स्व, चन्द्र के साथ दैनिक कार्य–कलाप एवं स्वास्थ्य तथा शनि के साथ काम–काज, रोज़गार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

ये सबसे बड़ा एवं शनि शुभदायक ग्रह है। केवल आकार में शनि ही उससे बड़ा माना गया है। इसके प्रभावाधीन जातक न्यायप्रिय, सच्चा सद्गुणी बनता है। यह सुख देने वाला ग्रह माना है। शास्त्रों का कथन है कि इसमें शुक्र जिसे नारी अथवा स्त्री की संज्ञा दी गई है, छुपा हुआ है। शुक्र को मिट्टी भी माना है जो समस्त बीज का पालन–पोषण करती है। इसीलिए जब बीज मिट्टी में होता है, अंकुरित होकर बाहर हवा (वायु) गुरू ढूंढने के लिए बाहर आता है। इसी प्रकार ही समस्त सृष्टि की उत्पति होती है। अतः यह सारा सामंराज गुरू का ही है।

इसके प्रभावाधीन जातक दानी, उदार, ज्ञानी, विद्वान, शान्त स्वभाव, परोपकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, राज्य अधिकारी, न्यायप्रेमी, सहनशील, गरीबों का साहयक, ईश्वर भक्त, चतुर, योगाभ्यासी तथा सहनशील बनता है। गुरू के प्रभावाधीन जातक को मान–सम्मान, धन–दौलत, सन्तान, सम्पति तथा तरक्की मिलती है। इसके लिए न तो हाथों उर्पाजन करना पड़ता है और न ही चालाकी अथवा बेशिमारी की आवश्यकता पड़ती हैं। सब काम स्वतः बनने लगते हैं। यदि गुरु बलहीन अथवा अशुभ होगा तो इश्क की ओर झुकाव, प्यार–प्रेम के कारण कार्यों में बाधा और सन्तान विहीन अथवा सन्तान सुख से वंचित करने जैसे अशुभ फल देगा।

7. शनि–शनि मकर एवं कुम्भ राशि का स्वामी है तथा नैसर्गिक कुण्डली में यह दशम व एकादश भाव का भी स्वामी होता है। दशम भाव पिता, रोज़गार, कारोबार, परिश्रम, मान–सम्मान आदि से सम्बन्धित है। शनि इन सब पर प्रभाव डालता है। शनि को सूर्य के इर्द–गिर्द चक्कर लगाने में $29^1/_2$ वर्ष लगते हैं तथा राशि मक्र को यह लगभग 29 वर्ष 40 दिन में पूरा कर लेता है. प्रत्येकग वर्ष यह लगभग $3^1/_2$ मास वक्रीय रहता है। शास्त्रों में इसे सूर्य पुत्र माना गया है। जो अधिक परिश्रम करता है, शनि उसकी सहायता करता है।

गोचर में जब भी शनि वक्रीय होता है तो महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। ऐसी स्थिति में श्रमिकों में बेचैनी आम देखी गयी है। जन्म कुण्डली में जब गोचर का शनि वक्रीय होता है तो नौकरी में परिवर्तन तथा अन्य नौकरी से सम्बन्धित घटनाएं जो परेशान करने वाली होती है, घटित होती है, शनि वक्रीय के समय मिली नौकरी भी अस्थाई सिद्ध होती है। ऐसे समय में नौकरी अथवा व्यवसाय में परिवर्तन करना भी हानिकारक रहता है।

शनि मात्र सांसारिक कार्य–कलापों नौकरी, सेवा आदि का ही द्योतक नहीं अपितु जो कार्य इस जीवन में जीव के करने हेतु ईश्वर ने भेजा है, उसका भी सूचक है। इसीलिए शनि तुला राशि में उच्च का है। तुला राशि का स्वामी शुक्र सांसारिक कार्यों का मुखिया भी है। सत्य और सत्य जीवन दोनों में सन्तुलन बनाए रखना इसी का ही कार्य है। जो इस सन्तुलन को समझ जाता है, वह दुनिया के इस भव–सागर से पार हो जाता है।

शनि बलवान हो तो कठोर, दृढ़, गम्भीर, कम बोलने वाला, हिसाब–किताब से खर्च करने वाला, उधमी तथा अच्छे स्वभाव कला वकता है। शनि निर्बल हो तो चिन्ता, कष्ट, क्रोध तथा दुष्ट स्वभाव बनाता है। शनि के भय, मृत्यु, उदासीनता जानी जाती है। जिस स्थान को देखता है हानि करता है तथा कार्य में बाधा एवं विघ्न डालता है।

8. राहू–यह राशिचक्र में कल्पित बिन्दु स्थान ही है। इसे शास्त्रों ने छाया ग्रह माना है। यह किसी राशि का स्वामी तो नहीं परन्तु जिस राशि एवं नक्षत्र में होता है, अथवा जो ग्रह इस पर दृष्टि डालता है या इससे दृष्टि सम्बन्ध बनाता है, उसके अनुसार ही फल प्रदान करता है, यह सदैव वक्रीय चलता है और राशि चक्र पूरा करने में लगभग 18 वर्ष लगाता है। यह एक राशि में लगभग 18 मास रहता है।

इसका रंग काला, नीला है। यदि बुध मस्तिष्क का ढांचा माना गया है तो राहू उसमें हरकत का कारक है। इसकी तुलना सांप से भी की गई है। यदि राहू सांप का मुँह है तो केतू को साँप ही पूंछ माना गया है। यह धूँआं, रसोई आदि का भी कारक माना गया है। यह दुष्ट ग्रह माना गया है तथा ये शनि जैसा ही प्रभाव देता है। ये डॉक्टर, जोल, विघुत, इलैक्ट्रानिक, विस्तार के विपरीत सिकुड़न, विघ्न डर,भय, भ्रम, बहम, गन्दी नाली तथा वियोग आदि का सूचक है। ये जिस भी ग्रह के साथ होता है, उसके फल में अत्यधिक वृद्धि कर देता है।

यदि ये शुक्र के साथ हो तो शुक्र के प्रभाव, फल आदि प्यार, मुहब्बत, सौन्दर्य के वृद्धि कर देगा। जातक के मन–मस्तिष्क में प्यार, मुहब्बत सुन्दर वस्तुओं की नकली–हरकत अत्यधिक में उलझ जाएगा। यह सूर्य को ग्रहण एवं चन्द्रमा को क्षीण करता है। पृथ्वी व सूर्य के बीच चन्द्र आ जाने पर सूर्य ग्रहण तथा सूर्य व चन्द्र के बीच पृथ्वी आ जाने पर चन्द्र ग्रहण हो जाता है। ऐसी स्थिति में इसका पूर्ण प्रभाव माना गया है

9. केतु–राहू की तरह यह भी छाया ग्रह है। ये जिस राशि, नक्षत्र अथवा जिस ग्रह के साथ दृष्टि सम्बन्ध बनाता है। उसी प्रकार का ही ये प्रभाव देता है। शास्त्रों के अनुसार केतू मोक्ष का कारक माना गया हैं।

यह सदैव वक्रीय रहता है। राहू, केतू एक दूसरे से सतवें रहते हैं

अर्थात् ये एक दूसरे से सदैव 180 अंश की दूरी पर रहते हैं। राहू,केतू एक दूसरे के साथ कभी नहीं छोड़ते तथा इसी स्थिति में प्रायः देखे जा सकते हैं। केतू पूर्ण राशि चक्र पूरा करने में 18 वर्ष लगाता है तथा यह एक राशि में लगभग 18 मास रहता है।

राहू को सिर तो केतू को छड़ माना गया है। राहू दिमाग की नक्लों हरकत का मालिक है तो केतू पाओं की नक्लों हरकत का मालिक है। केतू को ज्योतिष में केतू की भी संज्ञा दी गई है। ये मंगल की तरह प्रभाव करता है। ये चन्द्रमा के लिए ग्रहण होता है अतः चन्द्रमा के फल पर बुरा प्रभाव डालता है। यह अनुभव में देखा गया है कि जब जन्म कुण्डली में शुक्र केतु साथ–साथ होते हैं। तो जातक को शर्करा रोग हो जाता है। यदि यह कुण्डली के चतुर्थ भाव में होंगे तो अवश्य ही शर्करा रोग होगा।

ग्रह गुणधर्म चक्र

क्रम	गुण	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहू	केतू
1	शरीर	आत्मा	मन	शारीरिक शक्ति	वाणी विद्या	ज्ञान बुद्धि	सांसारिक सुख, काम	दु:ख	दु:ख	दुख, मोक्ष
2	पद	राजा	रानी	सेनापति	युवराज	मन्त्री	मन्त्री	सेवक	–	–
3	धातु	हड्डी	रक्त	चरबी	चमड़ी	मस्तक	वीर्य	नसें	–	–
4	तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आकाश	जल	वायु	–	–
5	त्रिदोष	पित	कफ़	पित	सम	सम	कफ़	बात	बात	बात
6	लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	स्त्री	पुरुष
7	अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	बालक	वृद्ध	युवा	वृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
8	दिशा	पूर्व	उतर, उ.पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	उत्तर पूर्व	दक्षिण पूर्व	पश्चिम	दक्षिण पश्चिम	दक्षिण पश्चिम
9	जाति	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	मिश्रित	ब्राह्मण	ब्राह्मण	शूद्र	चाण्डाल	चाण्डाल
10	धातु	सोना	चांदी	तांबा	सोना	रत्नसोना	रुपा	लोहा	लोहा	लोहा
11	रस	तिक्त	लवण	कदु	कदु	मधुर	अम्ल	तिक्त	तिक्त	तिक्त
12	स्वभाव	स्थिर	चर	उग्र	मिश्रित	नम्र	लघु	तीक्षण	तीक्षण	निम्र
13	आकार	चौकोर	स्थूल	चौकारे	गोल	गोल	अचिन्द्र	दीर्घ	दीर्घ	पूंछ

क्रम	गुण	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहू	केतू
14	रत्न	मालिक	मोती	मूंगा	पना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद फिरोजा	लसुनिया
15	स्वभाव	उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
16	चरादि	स्थिर	चर	चर	द्विस्वभाव	स्थिर	चर	स्थिर	चर	स्थिर
17	गुण	सतोगुणी	सतोगुणी	तमोगुणी	रजोगुणी	सतोगुणी	रजोगुणी	तमोगुणी	तजोगुणी	तमोगुणी
18	रंग	सुनहरा लाल	दूधिया सफेद	लाल	हरा	पीला	दही जैसा सफेद	काला	काला	धूम्र भूरा
19	इन्द्रिया	नेत्र	स्वाद जिह्वा	नेत्र	गंध नाक	कान	स्वाद जिह्वा	स्पर्श	स्पर्श	स्पर्श
20	देवता	विष्णु रूद्र	मां पार्वती शिवजी	श्रपति हनुमान	दुर्गाजी	ब्रह्मा	लक्ष्मी	यम, भैरों बली	दुर्गा	ब्रह्मा गोमाता
21	कारक	पिता	माता	भाई	माता	सन्तान	स्त्री	खर्च	मृत्यु	मोक्ष
22	पीड़ा स्थान	सिर मुंह	छाती गला	पीठ पेट	हाथ पैर	कमर	गुप्तांग	घुटना टाग	मस्तिष्क	पेशाब गाह
23	वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार	–	–
24	क्या विचारना	आत्मा पिता सम्मान	मन माता धन सम्पति	भाई पराक्रम	विद्या मित्र मामा	बुद्धि सन्तान धन सम्मान	स्त्री पत्नी गृहस्थी कामदेव	आयु मृत्यु दुःख	दादा मस्तिष्क के कार्य	नाना पैर चक्कर

क्रम	गुण	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहू	केतू
25	जड़ी बूटी पीड़ा के लिए	बेलपत्र की जड़	खिरनी की जड़	अनन्तमूल की जड़	विधारा की जड़	नरंगी अथवा केले की जड़	सरपोंरवा की जड़	बिच्छू बूटी की जड़	सफैद चंदन	असगंध की जड़
26	चेहरा पर प्रभाव	दाई आंख की पुतली	बाई आंख की पुतली	दोनों होंठ	दांत, नाक की फुनगी	नाक मस्तक	चिबुक	बाल	भवें ठोडी	कान
27	ग्रह का दिन में समय	दिन का प्रथम भाग दोपहर में पहले	चांदनी रात	दोपहर 12 से 1 तक	4–5 बजे उपरान्ह	सूर्योदय के बाद प्रथम भाग	अमावस्या की रात	काली रात बादलों का दिन	गुरूवार की शाम रात्रि से पहले	भोर, प्रातः
28	पूजन हेतु सन्तानादि	कथा हरिवंश	भरादेव पूजन	गायत्री पाठ	दूर्गा पाठ	हरि पूजन	लोगों का पालन	राजा की उपासना	क़न्यादान	दान कपिला गाय
29	उपाय सामग्री	गेंहू लाल तांबा	चावल दूध चांदी	मसूर दाल मूंगा, लाली	मूंग सालम पन्ना	दाल चना सोना, पुखराज	चरीदान	मांह साबुन, लोहा	सरसों	तिल
30	दृष्टि	7वीं	7वीं	4–8–7वीं	7वीं	5–7–9वीं	7वीं	3–7–10वीं	5–7–9वीं	–
31	भाव कारक	1–9–10	4	3–6	4–10	2–5–9 10–11	7	6–8 10–12	शनि अनुसार	मंगल अनुसार

क्रम	गुण	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहू	केतू
32	मित्र ग्रह	चन्द्र मंगल गुरू	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरू	सूर्य शुक्र राहू	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि	बुध शुक्र शनि
33	शत्रु ग्रह	शुक्र शनि राहू	राहू केतू	बुध राहू	चन्द्रमा मंगल	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र मंगल	सूर्य चन्द्र मंगल
34	सम ग्रह	बुध	शेष ग्रह	शनि शुक्र	गुरू शनि मंगल	शनि राहू	मंगल गुरू राहू	गुरू	गुरू	गुरू
35	स्व. राशि	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धन मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	– –	– –
36	मूल त्रकोण राशि	सिंह 1^0–20^0 तक	वृष 4^0–30^0 तक	मेष 1^0–10^0 तक	कन्या 16^0–20^0 तक	धनु 1^0–13^0 तक	तुला 1^0–15^0 तक	कुम्भ 1^0–20^0 तक	–	–
37	उच्च राशि	मेष 10 अंश तक	वृष 3 अंश तक	मकर 28 अंश तक	कन्या 15 अंश तक	कर्क 5 अंश तक	मीन 27 अंश तक	तुला 20 अंश तक	–	–
38	नीच राशि	तुला 10 अंश तक	वृश्चिक 3 अंश तक	कर्क 28 अंश तक	मीन 15 अंश तक	मकर 5 अंश तक	कन्या 27 अंश तक	मेंष 20 अंश तक	–	–
39	प्रकृति	उष्ण	शीतल	शुष्क	नम	नम	नम	शुष्क	–	–

नक्षत्र परिचय एवं प्रभाव

1. अश्विनी–इसकी क्रमांक संख्या एक है। इस नक्षत्र के प्रभाव में जन्म लेने वाले जातक देखने में सुन्दर होते हैं। यह कार्य में निपुण होते हैं तथा लोकप्रिय होते हैं। यह धनी होते हैं और साधारणतया भाग्यवान होते हैं। ये चतुर होते हैं तथा इनकी बुद्धि तीक्षण होती है। ये शान्त स्वभाव परन्तु होशियार होते हैं। ये कुछ खर्चीले होते हैं। ये अपने इरादे के पक्के व दृढ़ होते हैं। ये उन व्यक्तियों के बड़े आज्ञाकार होते हैं जिन्हें ये प्यार करते हैं। ये अच्छे सलाहकार होते है और उत्तम मित्र सिद्ध होते हैं।? ये प्रत्येक कार्य सोच–विचार कर करते हैं। इनके पास अथाह धन होता है। परन्तु इन्हें धन का लाभ कम ही होता है। कई बार इनके कारण परिवार में कठिनाईयां घेरा डाल लेती है। ये कई विषयों के ज्ञाता होते हैं तथा इनकी गुप्त विद्या, ज्योतिष आदि में अधिक रूचि होती है।

इस नक्षत्र की स्त्रियां सुन्दर होती हैं। इनकी आंखें सुन्दर होती हैं और व्यक्तित्व आकर्षक होता है। इनकी वाणी अति मधुर होती है तथा इनको अपने निकट ले आने की अथाह शक्ति होती है। ये दिल की साफ, स्पष्ट एवं कामुक होती हैं। ये प्रत्येक का मान–सम्मान करती हैं तथा व्यवहार कुशल होती है।

2 भरणी–इस नक्षत्र का क्रमांक 2 है। इसके प्रभावाधीन जन्म लेने वाले जातक की आखें चमकदार, मस्तक बड़ा, औसत कद होता है। कईयों का कद लम्बा भी होता है। इनका रंग गेहुँआ लम्बी गर्दन तथा मुख भी कुछ लम्बा होता है। इनका सिर आमतौर पर बड़ा होता है। स्त्री जातक बहुत सुन्दर होती है। तथा खुदा जब हुस्न देता है, नज़ाकत आ ही जाती है इन पर खूब ठीक बैठता है।

ये जातक बुद्धिमान एवं ज्ञानी होते हैं। जीवन से इन्हें अत्यधिक लगाव एवं प्रेम होता है, इनके विचार उतम होते हैं। ये सत्यवादी, दृढ़ प्रतिज्ञ, सुखी एवं धनी होते हैं। ये शौकीन मिजाज के होते हैं। ये कार्य अपने मतानुसार ही करते हैं इसी कारण वह कई बार असफल भी हो जाते हैं। ये छोटी–छोटी बातों पर परिजनों से बिगड़ जाते हैं परन्तु जल्द ही सब कुछ भूल भी जाते हैं। किसी के अधीन कार्य करना इन्हें पसन्द नहीं होता। ये दूसरों पर हर समय अनुशासन करने की भावना रखते हैं तथा अपनी आज्ञा का पालन कराते हैं। इनके जीवन में उतार–चढ़ाव आते रहते हैं।

3. कृतिका–इन नक्षत्र का क्रमांक 3 है। इसके प्रभावाधीन जन्म लेने वाले जातक सुगठित शरीर के होते हैं। इनकी आयु लम्बी एवं स्वास्थ्य अच्छा होता है। ये घमण्डी, खाने–पीने के लोभी, क्रोधी, दुःखी

तथा गुस्सैल होते हैं। ये उन्नतिशील, मान–सम्मान प्राप्त करने वाले, उपकारी, दयालु तथा सामाजिक कार्य करने वाले होते हैं। ये बुद्धिमान, एवं सूझबान होते हैं परन्तु किसी कार्य को लम्बे समय तक करने में असमर्थ रहते हैं और इसी भीतर अन्य कार्य की ओर लग जाते हैं। ये जो सोचते हैं, वही करते हैं और ये अच्छे सलाहकार होते हैं। ये गलत ढंगों से मान–सम्मान प्राप्त करना नहीं चाहते तथा सही मार्ग अपनाते हैं। ये अच्छे प्रबन्धक होते हैं तथा उत्तम लीडर होते हैं। आरम्भिक अवस्था में काफी उतार–चढ़ाव आते हैं तथा कई परिवर्तन होते हैं।

इस नक्षत्र की स्त्रियां प्रायः जिद्दी, घमण्डी होती हैं और किसी की बात कम ही सहन करती हैं। घर तथा बाहर इनका वही स्वभाव बन जाता है। ये कम विद्या ग्रहण करती हैं परन्तु आमतौर पर कई हालात में यह अच्छी विद्या, प्राप्त करती हैं। यह अधिकारी भी बन जाती है। कृतिका नक्षत्र अनुशासन प्रेमी बनाता है।

4. **रोहिणी**–इस नक्षत्र का क्रमांक 4 है। इसके प्रभावाधीन जन्म लेने वाले जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। आकर्षक आखें होती हैं। इनका शरीर पतला परन्तु कई बार स्थूल तथा कद औसत होता है। ये सुन्दर होते हैं। इनके पट्ठे सुगठित होते हैं। स्त्री जातक कोमल एवं अति सुन्दर होती है। ये जातक शीघ्र उत्तेजित हो जाते हैं। इनकों क्रोध जल्दी आता है और फिर जल्दी शान्त नहीं होता। ये अपना निर्माण कम ही बदलते हैं। ये दूसरों के दोष भी निकालते रहते हैं। ये अधिकतर अपने मन के पीछे लगे रहते हैं और अपनी बुद्धि से कम काम लेते हैं। ये अपने प्यार की खातिर सब कुछ करने को तत्पर रहते हैं एवं विरोधियों का खून लेते हैं।

यह सत्य को पहचानते हैं और झूठ के पीछे नहीं जाते। इनके जीवन में उतार–चढ़ाव अधिक आते हैं। ये किसी भी कार्य की कम ही अग्रिम योजना बनाते हैं। स्त्री जातक सुन्दर परिधान की शौकीन होती है एवं इनका व्यवहार अच्छा होता है। इनका हृदय दुर्बल ही होता है परन्तु फिर भी ये दिखावा अच्छा करती है। ये जल्दी भड़क भी पड़ती है तथा कई कठिनाईयां खड़ी कर लेती है। फिर भी ये क्रियात्मक, बात को छुपा कर रखने वाली, स्वभाव की कुछ प्रचण्ड होती है। स्वभाव में ऐसा परिवर्तन उनको उकसाने से होता है। साधारणतयः रोहिणी नक्षत्र वाले जातक बलवान, मधुरभाषी, उत्तम वक्ता, सत्यवादी, सुन्दर एवं आज्ञाकारी होते हैं। ये दानी, उदार तथा शान्त स्वभाव के स्वामी होते हैं।

5. **मृगशिरा**–इस नक्षत्र का क्रमांक 5 है। इसका स्वामी ग्रह मंगल है। इस नक्षत्र में जन्म लेते जातक की बचपन में सेहत ढीली रहती है। फिर भी इनका शरीर सुन्दर एवं सुगठित होता है। इनका रंग

साफ एवं भुजा कुछ लम्बी होती है। इनकी टांगे आमतौर पर पतली होती हैं। स्त्री जातक पतली व सुन्दर होती है। इनका व्यक्तित्व बड़ा सुन्दर होता है। तथा वे कुछ लम्बी होती हैं।

मृगशिरा नक्षत्र वाले जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, कुछ स्वार्थी एवं घमण्डी होते हैं। ये मन में ईर्ष्या की भावना रखने वाले व धीरे-धीरे काम करने वाले होते हैं। धन स्वयंमेव आता है। यात्रा भ्रमण में ये विशेष रुचि रखते हैं। प्रत्येक वस्तु एवं व्यक्ति को ये शंका की दृष्टि से देखते हैं। कार्य व्यवहार के उचित व सही होते हैं, इसी लिए ये कई बार धोखा भी खा जाते हैं। ये सादा जीवन पसन्द करते हैं। ये कई बार अशान्त हो जाते हैं और छोटी-छोटी बातों से चिढ़ने लगते हैं। ये सहायक एवं साहसिक जो जन्मजात से होते हैं। इनका जीवन का प्रथमार्द्ध उतार-चढ़ाव वाला होता है। ये किसी कार्य को निरन्तर अथवा लगातार जारी नहीं रख सकते। ये अच्छे आर्थिक सलाहकार भी होते हैं। इनमें प्रत्येक कार्य को करने की पूर्ण शक्ति होती है परन्तु इन्हें जीवन में कठिनाईयां भी झेलनी पड़ती है। इसी कारण ये कई बार चिन्ता में रहने लगते हैं। और जीवन के अन्धेरे पक्ष की ओर देखने लगते हैं। इन्हें सन्तान और मित्रों से लाभ मिलता है। स्त्री जातक विवाहोपरान्त भी अपने-आप को किसी-न-किसी कार्य में लगाए रहती है। ये इन्जीनियर, टी.वी, कम्प्यूटर में भी कार्य करती है।

6. भाद्री-इस नक्षत्र का क्रमांक 6 और इसका स्वामी राहू है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक मोटे और आमतौर पर पतले देखे गए हैं। इनकी आखें कुछ मोटी तथा नाक कुछ बड़ी होती है। स्त्री जातक सुन्दर होती है। ये कृतन्ध-गौरव वाले, झूठे तथा आमतौर पर पापी एवं धनहीन होते हैं। इन पर भरोसा नहीं किया जा सकता तथा ये आमतौर पर विश्वासपात्र नहीं होते। ये दूसरों के धन पर मौज करने वाले होते हैं। ये अंहकारी, पापबुद्धि, कृतध्न, निर्धन होते हैं। ये प्रदर्शन प्रिय होते हैं और सदैव नीच बिचारों में ग्रस्त रहते हैं। इसलिए ये विश्वसंनीय नहीं होते।

ये घमण्डी और अपने आप में ही रहने वाले, होते हैं, इनका स्वभाव कुछ तेज़ व उग्र होता है। ये बड़े चुस्त होते हैं और दूसरों को तुरन्त मांप लेते हैं। ये नाशुक्रे भी होते हैं। ये जातक दीर्घायु वाले होते हैं परन्तु इनकी सन्तान कम ही होती है। ये साहित्य क्षेत्र में रुचि कम रखते हैं परन्तु वह देखा गया है कि इनका दिमाग प्रायेक क्षेत्र में काफी तेज़ चलता है। परेशानियां इनके जीवन में आती रहती हैं। ये स्वयं भी कठिनाईयों के कल्पित हवाई किले बनाते रहते हैं और इस तरह दुखी होते हैं। इन्जीनियरिंग कार्यों में ये जातक अधिक रुचि रखने वाले होते हैं।

7. पुनर्वसु—इस नक्षत्र का क्रमांक 7 है और इसका स्वामी गुरु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक सुन्दर होते हैं। उनका मुखड़ा कुछ लम्बा एवं मस्तक बड़ा होता है। मुँह व सिर पर अथवा सिर के पृष्ठभाग पर कई बार कोई निशान भी होता है। इनकी शक्ल भोली सी होती है और चेहरे पर निराशा झलकती है।

ये जातक शान्त, सुखी एवं लोगों में भी लोकप्रिय होते हैं, इनमें बड़ी नम्रता होती है परन्तु वह बड़े होशियार और चुस्त होते हैं। यह काफी अच्छे–अच्छे दाव–पेच जानने वाले होते हैं। ये जातक सज्जन व साहसी होते हैं। ये पुत्र तथा मित्रादि से मुक्त होते हैं। आमतौर पर यह शान्त होते हैं परन्तु यदि इन्हें भड़काया अथवा उकसाया जाए तो ये नियंत्रण में नहीं रहते। इन्हें ईश्वर में पूर्ण विश्वास होता है और ये धार्मिक रुचि रखते हैं। ये सच्चाई पसन्द होते हैं और दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। ये अनुशासन प्रिय होते हैं। इनका जीवन सादा व सामान्य होता है। ये भक्त, कुशाग्र–बुद्धि और साहित्यानुरागी होते हैं। ये स्वार्थी भी होते है तथा रोग व काम–वासना में ग्रस्त रहते हैं। इनका जीवन आनन्दमय तथा धार्मिक रहता है। किसी विशेष स्थिति में ये शराब एवं नशीली दवाओं आदि का सेवन भी करने लगते हैं। फिर भी प्रायः इनका जीवन सुखी होता है। स्त्री जातक को सुन्दर पति प्राप्त होता है। ये सभी कार्यों में समान रुप से सफलता प्राप्त करते हैं।

8. पुष्य—इस नक्षत्र का क्रमांक 8 है और इसका स्वामी शनि है। इनका रंग साफ होता है। परन्तु आमतौर पर रंग अधिक कोरा नहीं होता। इनके चेहरे पर कोई निशान अथवा तिल आदि का भी निशान होता है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक शीघ्र क्रोध मे आ जाते हैं। परन्तु ये सुन्दर व सुखी होते हैं।

ये धर्म परायण, धनवान, पंडित, ज्ञानी और शान्त स्वभाव के होते हैं। ये मितव्ययी, संयमी, दूरदर्शी, समझदार व आत्मनिर्भर होते हैं। ये शान्त चित वे धैर्यवान होते हैं। ये अर्न्तध्यानी, विचारशील होते हैं व प्रत्येक कार्यों में बुद्धि से काम लेते हैं। ये ध्यानपूर्वक चलने व कार्य करने वाले होते हैं। कई बार यह ठीक निर्णय न लेने के कारण कठिनाई में भी फंस जाते हैं। ये स्वार्थी होते हैं। वे दोस्तों, मित्रों की बुरी संगत में फंस जाते हैं। ये सुखी होते हैं और यह स्वतन्त्र विचार रखते हैं। ये बुद्धिमान तथा धनवान होते हैं। ये बहुत चतुर होते हैं। ये कुटुम्ब प्रेमी होते हैं और प्रत्येक वस्तु अपने गृह की ओर ही खींचते हैं।

स्त्री जातक शर्मीली होती है तथा खुल कर बात कम ही करती है। गृहस्थ जीवन में कई कठिनाईयां आती हैं। एक मत के अनुसार पुण्य नक्षत्र में जन्म लेने वाली स्त्री जातक अति होशियार, चुस्त–चालाक

होती है और वह अपने पति को अंगुलियों पर नचाती है। पुण्य नक्षत्र वाले, कवि, लेखक, वकील तथा प्रशासनिक कार्यों में रुचि रखते हैं।

9. अश्लेषा–इस नक्षत्र का क्रमांक 9 है और इसका स्वामी बुध है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक क्रूर स्वभाव, सर्वभक्षी, धूर्त, दुष्ट व स्वार्थी होते हैं। ये जातक जल्दी–जल्दी चलते हैं तथा तुरन्त पहचाने जाते हैं। ये कई बुरे कार्य करने लग जाते हैं परन्तु साधारणतया: ये स्वस्थ व खुशमिजाज होते हैं। ये कुछ कम आज्ञाकारी भी होते हैं।

अश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का स्वभाव व्यापारियों जैसा होता है। इनकी बुद्धि तीक्षण होती है तथा ग्रहण करने की शक्ति प्रबल होती है। ये कुशल, चतुर, प्रवीण व समझदार होते हैं। ये अनेक कार्यों में माहिर होते हैं। इनका व्यवहार उचित एवं न्यायपूर्ण होता है। ये बहुत बोलने वाले, नकलची, स्वांगी भी होते हैं। ये आभारी कम ही होते हैं। ऊपर के ये बड़े भोले व आज्ञाकार लगते हैं परन्तु भीतर से ऐसे नहीं होते वरन् चालाक होते हैं। ये बातूनी भी होते हैं और अन्य लोगों को भी खूब हंसाते हैं। ये देखा जाए तो बातों की कमाई खाते हैं। ये अति भोगी तथा कामी होने पर भी औषधि व्यापार से धन संचय करते हैं।

स्त्री जातक बड़ी शर्मीली होती है। इनका चरित्र बढ़िया होता है। परिगन व सम्बन्धी इनका अच्छा आदर करते हैं। ये गृहकार्यों में बहुत दक्ष होती हैं। इन्हें गृहस्थ चलाने का पूर्ण ज्ञान होता है।

10. मघा–इस नक्षत्र का क्रमांक 10 है तथा इसका स्वामी केतू है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का आमतौर पर कद औसत दर्जा होता है। इनकी गर्दन कुछ ऊंची तथा शरीर पर लाने तथा बाल काफी होते हैं। इनके हाथों अथवा कन्धों के निकट तिल भी होता है। स्त्री जातक बहुत सुन्दर होती है।

मघा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक देखने में भोले–भाले लगते हैं परन्तु ये महत्वाकांक्षी होते हैं। ये उद्यमी, समाज के अगुआ, धनवान और साहसी होते हैं। ये बहुत नौकर चाकरों वाले, भोगी व पिता के आज्ञाकार होते हैं। ये शान्तमय जीवन पसन्द करते हैं। अच्छी व सुन्दर वस्तुओं के शौकीन होते हैं, तथा फूलों वाले बगीचे में बैठकर आनन्द लेना अति पसन्द करते हैं। ये स्पष्टवादी, खरी बात कहने वाले, व्यवहार, कुश्ल, कुछ झगड़ालू, अपनी सुरक्षा के सम्बन्ध में चौकस, दृढ़, प्रतिभाशाली, साहसी, बहादुर, विलासी एवं इन्द्रियों के गुलाम होते हैं, फिर भी ये परिश्रम एवं चतुराई में बड़े–बड़े कार्य संपादित कर लेते हैं। मनोदशा अथवा स्वभाव चिड़चिड़ा परन्तु उत्साही होता है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले परिश्रमी, उद्यमी तथा परोपकारी होते हैं।

स्त्री जातक उद्यमी व चतुर होती है। वे साहसी और प्रतिभाशाली होती हैं। स्त्री जातक ससुराल में कलह–कलेश का कारण बन जाती है।

11. पूर्वाफल्गुनी—इस नक्षत्र का क्रमांक 11 है और इसका स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का शरीर सुगठित तथा व्यक्तित्व बढ़िया होता है। इनका रंग साफ तथा ये नाक की विशेषता के कारण तुरन्त पहचाने जाते हैं।

ये ज्ञानी, पंडित, विद्वान, गम्भीर, सुखी, जनता में लोकप्रिय, स्त्रियों के प्रिय व रसिया एवं धनी होते हैं। ये मधुरभाषी, साहसी व चालाक भी होते हैं। ये अपव्ययी, सुन्दर व्यक्तित्व के मालिक, स्त्री के प्रति विशेष झुकाव रखने वाले होते हैं इनमें पूर्ण योग्यता व कुशलता होती है। ये सज्जन, उदार व दानी होते हैं। पूर्वाफल्गुनी नक्षत्र वाले व्यक्ति, मुक्त हृदय होते हैं। ये हर किसी से प्रेम करने वाले होते हैं। ये सावधान, चौकस तथा अनुमान लगाने में दक्ष होते हैं। ये चुस्त, होशियार, मिलनसार, धीर–गम्भीर तो होते ही हैं। ये कई बार अस्थिर मन व विचारों से पीड़ित रहते हैं।

स्त्री जातक सुन्दर होती है। वे अच्छी विद्या प्राप्त करती हैं। उनकी विज्ञान में बहुत रुचि होती है इन्हें वाहन सुख प्राप्त होता है। पूर्वाफल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक मान–सम्मान पाते हैं। भ्रमण, तीर्थाटन तथा संगीत में इनकी विशेष रुचि होती है।

12. उतराफल्गुनी—इस नक्षत्र का क्रमांक 12 है और इसका स्वामी सूर्य है। साधारणतया ये जातक लम्बे एवं मोटे होते हैं। इनकी नाक कुछ लम्बी होती है। इनके गले की दाईं ओर काला तिल भी देखा गया है। स्त्री जातक का भी रंग साफ होता है। साधारणतया चेहरे पर तिल पाया जाता है।

उतराफल्गुनी में जन्म लेने वाले जातक लोगों में लोकप्रिय होते हैं। ये योद्धा, शूरवीर, शस्त्र विद्या में प्रवीण एवं मधुरभाषी होते हैं। वे कामुक व सुन्दर व्यक्तित्व के मालिक होते हैं। ये आज्ञाकार, मन के सच्चे परन्तु शीघ्र भड़क पड़ते हैं। ये उपद्रवी, ऊँचे उठने के इच्छुक, शेखीखोर, स्वप्रशंसक, धौंस जताने व देने वाले होते हैं। ये आशावादी, उदार, विनीत, नास्तिक, होशियार, मुक्तिपूर्ण, बुद्धिजीवी तथा ध्यानपूर्वक कार्य करने वाले होते हैं। ये पुरुषार्थी होते हैं एवं विद्या द्वारा धनोपार्जन करते हैं परन्तु फिर भी इनका गृहस्थ जीवन गृह–क्लेश, व्यर्थ की मुक्द्दमेबाजी तथा मानसिक तनाव से पीड़ित रहता है। इस नक्षत्र की स्त्री जातक गृहस्थी चलाने में होशियार होती है। इस नक्षत्र वाले दिमागी तथा वौद्धिक होते हैं।

13. हस्त—इस नक्षत्र का क्रमांक 13 है और इसका स्वामी चन्द्रमा है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक शरीरिक पदा से पुष्ट एवं लम्बे होते हैं। इनका रंग साफ होता है तथा शरीर की अपेक्षाकृत हाथ कुछ छोटे होते हैं।

ये जातक दानी, बहादुर व अनुशासन प्रेमी होते हैं। ये मद्यपी, कामातुर, बन्धु–हीन, निरंकुश, चोर और परस्त्री–गामी होतें हैं। इनका जीवन प्रायः कलह–पूर्ण बना रहता है। ये जातक जालिम प्रवृति के होते हैं। ये बड़े ढीठ व बेअदव तथा बेगरम होते हैं। इनका पारिवारिक जीवन दुखी, पत्नी रुग्णा तथा मन अशान्त रहता है। ये शान्त स्वभाव भी होते हैं तथा हंसी से दूसरों को आकर्षित करने वाले तथा दूसरों की सहायता करने वाले होते हैं। ये शत्रुनाशक, शिकार के प्रेमी तथा नौकरी में उच्च पद पाने में समर्थ रहते हैं। इनके जीवन में उतार–चढ़ाव बहुत आते हैं। एक समय तो ये शिखर पर पहुँच जाते हैं तथा दूसरे समय कई बार ये कहीं के भी नहीं रहते। स्त्री जातक बड़ी शर्मीली होती है। वे किसी की दास बनकर रहना पसन्द नहीं करती और अधिकार प्राप्त करने की इच्छा रखती हैं। इन्हें जीवन में आलोचना का भी सामना करना पड़ता है।

14. चित्रा–इस नक्षत्र का क्रमांक 14 है और इसका स्वामी मंगल है। जिन व्यक्तियों का इस नक्षत्र में जन्म होता है इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। इनके नैन–नक्श तीखे विशेषकर आंखें आकर्षक होती हैं। इनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। अपने व्यक्तित्व एवं बोलचाल से ये अनायास पहचाने जाते हैं।

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक संतोषी, धनवान एवं देवता सदृश होते हैं। ये देवी–देवताओं, गुरुओं पीरों, के भक्त होते हैं। ये प्रसन्न चित रहते हैं तथा इनका स्वभाव मधुर होता है। ये अपने जन्म स्थल से दूर रहते हैं। ये चतुर, उत्साही, निडर, साहसी, बहादुर व व्यंग्य पसंद एवं रुचि रखते हैं। इनके स्वभाव में उतावलापन तथा व्यवहार रोषपूर्ण होता है। ये जातक अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाले होते हैं। ये आशावादी, उत्साही, विद्याप्रेमी, औषधि व लेखन के अर्थोपार्जन करने वाले होते हैं। ये अपने मन की बात किसी को नहीं बताते। स्त्री जातक आमतौर पर विज्ञान में अधिक रुचि लेती है।

15. स्वाती–इस नक्षत्र का क्रमांक 15 है और इसका स्वामी राहू है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का कद औसत दर्जा होता है। इनका रंग साफ होता है तथा गेहूँआ झलक देता है। ये जब स्थूल होते है परन्तु व्यक्तित्व अच्छा होता है। स्त्रियां इनकी ओर अधिक आकर्षित होती हैं। ये टखनों से भी पहचाने जाते हैं।

स्वाती नक्षत्र में जन्मे जातक कृपालु, धर्मात्मा, भक्त, सुशील, लोकप्रिय एवं परमात्मा को मानने वाले होते हैं। ये चुस्त होते हैं। ये सहानुभूति रखने वाले, उचित समय पर उचित, सही बात करनें वाले होते हैं ये बौद्धिक, सहज ज्ञान रखने वाले, अनुबोधक एवं न्यायपूर्ण

होते हैं। बौद्धिक कार्यों से लाभ और वश प्राप्त करते हैं। प्रायः शिक्षा अधूरी भी रह जाती है। ये परिवर्तनशील, संवेदनशील, चंचल, त्यागी, तपस्वी व साधक होते हैं। ये होशियार एवं मुक्तिमुक्त होते हैं। इनका स्वभाव अच्छा होता है तथा इनमें पूर्ण आत्मविश्वास होता है। ये अच्छे प्रबन्धक भी होते हैं। ये जातक साधारणतया शांतिप्रिय, कानून को मानने वाले तथा अच्छे नागरिक होते हैं। स्त्री जातक गृहस्थ जीवन से संतुष्ट नहीं होते स्त्री जातक नौकरी में सफल होती है। देश से बाहर किस्मत चमकती है।

16. विशाखा—इस नक्षत्र का क्रमांक 16 हैं तथा इसका स्वामी गुरु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का चेहरा गोल व रंग साफ होता है। इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है, ये कुछ मोटे होते हैं परन्तु साधारणतया लम्बे एवं पतले होते हैं।

ये जातक नेता, प्रधान, कवि, पण्डित, अच्छे कर्म करने वाले तथा साधारणजनों द्वारा सम्मान प्राप्त होते हैं। ये ईमानदार होते हैं। प्रयत्नशील रहते हैं तथा दानी भी होते हैं। ये परमात्मा को मानने वाले होते हैं। ये इर्ष्यालु भी होते हैं तथा स्वभाव में प्रायः कड़वाहट भी आ जाती है। ये आज्ञाकार होते हैं इनके विचार स्वतन्त्र होते हैं। ये चिन्तनप्रिय होते हैं तथा नम्र, सम्य, प्रत्येक से प्रेम करने वाले होते हैं। उनकी बुद्धि तीक्षण होती है। ये पुरातनपंथी, स्पष्टवादी, निष्कपट एवं सम्मानित होते हैं। ये जातक उग्रपंथी भी देखे गए है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक कंजूस, धनी, चालाक, लोभी व वेश्यागामी होते हैं। ये जन्म स्थल से दूर रहते हैं। जुआ, सट्टा तथा लौटरी में भी पड़ जाते हैं तथा हानि उठाते हैं। कई बार ऐसे कार्यों में अकस्मात् लाभ होने से यह इनमें पड़े रहते हैं। ये धर्म की उपेक्षा करते हैं ये अहंकारी, शत्रु—हन्ता, कलह—कलेश से भरपूर जीवन में भी स्त्री—पक्ष से धन लाभ पाते हैं

ये अच्छे वक्ता होते हैं तथा अच्छी विद्या प्राप्त करने में सफल रहते हैं। इनमें कुछ सीखने की प्रवल इच्छा होती है।

17. अनुराधा—इस नक्षत्र का क्रमांक 17 है और इसका स्वामी शनि है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का कद औसत दर्जा का एवं चेहरा गोल व सुन्दर होता है। इनकी आंखें छोटी परन्तु चमकदार होती हैं। साधारणतया इनकी भवों पर बाल बहुत होते हैं। कई बार यदि ग्रह स्थिति जन्म समय कुछ प्रतिकूल हो तो शक्ल—सूरत इतनी अच्छी भी नहीं होती।

ये जातक बहनों—भाईयों के कार्य करने वाले तथा सहयोगियों की सहायता करने वाले होते है। ये विदेशों में भ्रमण करते हैं। ईश्वर भीरु एवं ड्यूटी पाबन्द होते हैं। ये दयालु, मिलनसार, यशस्वी, सुन्दर व्यक्तित्व के धनी होते हैं। इनको स्त्री पक्ष से लाभ प्राप्त होता है। ये

पुरूषार्थी होते है तथा प्रसन्नचित रहते हैं। यह प्रशंसा के लोभी होते है। ये स्वार्थ–पूर्ति हेतु छल–प्रवंचना भी करते हैं। इनकी मनोवृति अस्थिर होती है। तथा विपरीत सैक्स के प्रति आकर्षण रखते हैं।

ये धनवान, सम्मान, उच्च पद वाले होते हैं। ये बडों से आदर लेते हैं। ये जातक दृढ़ इरादे वाले, क्रियाशील, उद्यमी एवं प्रभावशाली होते हैं। इनका स्वभाव प्रभुतापूर्ण होता है। ये कुछ रूखें, नीरस, उपद्रवी तथा समय पर हिंसक भी होते हैं। ये अत्याचारी भी देखे गए हैं और इनमें प्रतिशेष की भावना भी होती है कहा गया है ये झूठे, बेईमान भी हो सकते हैं। ये अनैतिक कार्य करने से भी नहीं झिझकते जहां इनका अपना स्वार्थ हो, फिर भी ये उत्साही एवं क्रियात्मक होते हैं। इनमें अन्वेषण की बड़ी शक्ति होती है। इस नक्षत्र की स्त्रियां प्रायः अति चालाक होती हैं।

18. ज्येष्ठा–इस नक्षत्र का क्रमांक 18 है और इसका स्वामी बुध है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का रंग गेहुंआ एवं कद औसत दर्जा परन्तु साधारणतया छोटा होता है। इनके दांत कुछ बाहर को निकलने हुत अथवा दांतों के भीतर अन्तर काफी होता है।

ये जातक बहुत मित्रों वाले, नेता, प्रधान तथा कवि होते हैं। ये दानी, ज्ञानी, पंडित, धर्मात्मा तथा लोगों द्वारा पूजित होते हैं। इन्हें लोगों द्वारा मान–सम्मान तथा आदर मिलता है। ये अध्यनशील, कार्य करने में होशियार, उदार, क्रोधी, कठोर व बुद्धिमान होते हैं। ये समाज में अच्छा स्थान पाते हैं तथा अगुवा होते हैं। ये सन्तान की ओर से भाग्यशाली परन्तु गृहस्थ के सुख से साधारणतया वंचित रहते हैं। ये पत्नी–पक्ष से पीड़ित व व्यवसाय में अस्थिर रहते हैं।

इस नक्षत्र के जातक हंसी मज़ाक करने वाले, विदूषक, निडर, कोरी बात कहने वाले, सूझवान होते हैं। ये अथक कार्यकर्त्ता, सत्यवादी, तथा बात को विस्तारपूर्वक करने वाले होते हैं। ये चिड़चिड़े स्वभाव भी हो जाते हैं। ये जातक नाम एवं सम्मान वाले होते हैं। यदि बुरी संगत में फंस जाएं तो सभी कुछ ही बदल जाता है। स्त्री जातक का गृहस्थ प्रायः अशान्त सा होता है परन्तु यह सहायक, नर्सिंग आदि से धन अर्जित करती है।

19. मूल–इस नक्षत्र का क्रमांक 19 है और इसका स्वामी केतू है। इस नक्षत्र में जन्म जातकों का शारीरिक गठन अच्छा होता है। इनकी आंखें कुछ छोटी परन्तु बढ़िया व चमकदार होती हैं। परिवार में ये प्रायः सबसे व्यक्तित्व वाले होते हैं परन्तु ये किसी पुरानी बीमारी से पीड़ित भी रहते हैं।

ये जातक सुखी, धन तथा बाहन वाले होते हैं। ये उपद्रवी, हिंसक परन्तु बलवान होते हैं। ये अहंकारी, धनी, धूर्त, चतुर, ईर्ष्यालु, प्रकृति,

आडम्बरकारी तथा प्रकृति प्रेमी होते हैं। ये समझदार, सूझवान, ज्ञानी एवं पंडित होते हैं। ये घमण्डी होते हैं। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। ये टिक कर कार्य करने वाले, कठोर स्वभाव वाले होते हैं। इसी कारण परिजनों, मित्रों आदि के साथ इनकी कम ही बनती है। ये परोपकारी होते हैं ये किसी भलाई के बदले कुछ भी न चाहने वाले होते हैं। इनका मन स्थिर होता है एवं ये अनुशासनप्रिय होते हैं। मूल नक्षत्र वाले जातक ड्यूटी पर खरे उतरते हैं। ये उदार, दानी, ईमानदार, मान–मर्यादा वाले तथा नियंत्रण अथवा कमान करने में प्रभावशाली होते हैं।

मूल नक्षत्र के जातक दूसरों का आदर करते हैं। यद्यपि बाहर से कठोर लगते हैं परन्तु वे ऐसे होते नहीं हैं, वे भीतर से अथवा हृदय से अति कोमल होते हैं। ये मिलनसार, हंसमुख, कानून का पालन करने वाले तथा बहमी भी होते हैं। भूल को क्षमा कर देना भी इन्हीं का काम है। ये समाज सेवक भी देखे गए हैं। ये विचारशील तथा अंर्तज्ञानी होते हैं। ये विलासी और ऐश्वर्यप्रसत भी होते हैं। ये बड़े खोजी होते हैं। अर्न्तज्ञान परमात्मा की इनके लिए अद्धितीय देन है, ये सहज ही जो कह दे वह सत्य होता है। स्त्री जातक दयालू तथा सूझवान होती है। गृहस्थ जीवन प्रायः अशांत रहता है। ये सफल सरकारी कर्मचारी व अधिकारी होते है। ये इन्जीनियर, ज्योतिषी, डॉक्टर व फल–विक्रेता होते हैं। इनके जीवन में आकस्मिक दुर्घटना की प्रबल शंका रहती है।

20. पूर्वाषाढ़ा–इस नक्षत्र का क्रमांक 20 है और इसका स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक लम्बे एवं पतले हैं। इनकी भुजाएं लम्बी तथा दाँत चमकीले व आकर्षक होते हैं। इनकी आखें सुन्दर होती हैं और रंग आमतौर पर गोरा होता है। इनका व्यक्तित्व सुन्दर, प्रभावशाली एवं आकर्षक होता है।

ये धनी, सम्पन्न, भाग्यवान, लोगों में लोकप्रिय तथा सब कार्यों में चतुर होते हैं। ये मन के अच्छे, सच्चे परन्तु घमण्डी होते हैं। ये उपकारी होते हैं तथा इनका व्यवहार लोगों के साथ नम्रंतापूर्ण होता है। यह गरीबों व जरूरतमंदों के सदैव सहायक होते हैं। ये बहुत अच्छे मित्र होते हैं। परन्तु साथ ही ये बहुत बुरे शत्रु भी होते हैं। साधारणतया ये लोक–प्रिय, हितैषी, आस्तिक,कार्य–दक्ष तथा शरणागत होते हैं। धन की कमी होने पर भी इनका कोई कार्य रूकता नहीं हैं।

ये उदार चित, मुक्तहृदय, नम्र, सहानुभुति भाव रखने वाले, संयमी, आशावादी, स्नेही, हंसमुख तथा कोमल हृदय होते हैं। गृह सुख मिलता है तथा गृह युक्त होता है। प्रेम सम्बन्धों के कारण कई बार परेशानी भी होती है।

21. उतराषाढ़ा–इस नक्षत्र का क्रमांक 21 है तथा इसका स्वामी सूर्य है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक सुन्दर होते हैं तथा उनका

व्यक्तित्व बढ़िया होता है। इनका कद लम्बा, साधारणतया कद औसत ही होता है। इसका शारीरिक गठन अच्छा, सिर बड़ा, अंगुलियां प्रायः बड़ी तथा आखें चमकीली व सुन्दर होती है। ये जातक लम्बे शरीर वाले भी होते हैं।

ये जातक सुखी, शूरवीर, विजेता, नम्र, एवं बहुत मित्रों वाले होते हैं। ये शान्त, विनम्र, धार्मिक होते हैं। इनकी सुसाइटी उतम होती है तथा इनका आहार–व्यवहार उतम होता है। ये अच्छे व्यक्तित्व के कारण सुसाइटी में आन पहचाने जाते हैं। ये ऊँचे विचारों वाले होते हैं। ये दयावान एवं जनहतैषी होते हैं। ये मज़ाकिया स्वभाव भी कहे जा सकते हैं। ये सभी कार्य सलीके अथवा ढंग के साथ करते हैं। तथा यह दूर दृष्टि रखते हैं। ये कुशल नीतीवान, समझदार, दूरदर्शी व सूझवान होते हैं। ये कम खर्चीले तथा किसी के दवाव में न आने वाले होते हैं। ये प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर परखते हैं। ये प्रसन्नचित रहते हैं। तथा इनका आचरण अच्छा होता है। ये सन्तान प्रेमी व वैचारिक होते हैं। इन जातकों को अनायास धन लाभ होता है।

स्त्री जातक विनम्र होती है। यह अच्छी पढ़ी–लिखी होती है तथा नौकरी अच्छा पद पसन्द करती है। पत्नी–पति स्वभाव के अन्तर के कारण कई बार पारिवारिक जीवन अशान्त हो जाता है।

22. **श्रवण**–इस नक्षत्र का क्रमांक 22 है। इसका स्वामी चन्द्र है। उतराषाढ़ा नक्षत्र से अगला नक्षत्र साधारणतया अभिजित आता है। जिसका क्रमांक गिनती से 22 आता है। परन्तु फल कथन से प्रायः 27 नक्षत्र लिए जाते हैं। अतः श्रवण का क्रमांक 22 आता है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक औसत कद के होते हैं। उनका कद छोटा हो जाता है। इनका व्यक्तित्व सुन्दर होता है। प्रायः चेहरे पर तिल भी देखा गया है।

ये जातक सर्वगुणसम्मान होते हैं। इसमें अत्यधिक गुण होते हैं। ये कार्य कुशल, यशस्वी, धर्म परायण, सुन्दर, बुद्धिमान, कला तथा विज्ञान में प्रवीण होते हैं। ये बहुत उन्नतिशील तथा जन्म स्थल से दूर रहने वाले होते हैं। ये धार्मिक कार्यों के बढ़–चढ़ कर भाग लेने वाले, चतुर, धनी तथा व्यापारिक बुद्धि वाले होते हैं। ये अनुशासन प्रिय तथा भ्रमणशील होते हैं। ये अच्छी संगत वाले शत्रु नाशक तथा शास्त्रों के जानकार होते हैं। इनमें जीवन जीने की प्रवल चाहत होती है। ये संयमी, शान्त धैर्यवान, सचेत, अच्छे सलाहकार, विचारशील प्रयत्न करते रहते हैं। ये सच्चाई पसन्द तथा ज्ञानी होते है।

इनकी वाणी मधुर होती है तथा प्रत्येक कार्य सही ढंग से करते हैं। इनको पत्नी अच्छी मिलती है परन्तु फिर भी वे कई भटक जाते हैं। ये संगीत के शौकीन, प्रशासनिक–कार्यों में विशेष सफल होते हैं।

स्त्री जातक सुशील, उदार हृदय तथा सौभाग्य शालिनी होती है। ललित कलाओं में विशेष रुचि होती है। तथा वह सुखी प्रतिमा की धनी होती है। गृहस्थ जीवन अच्छा होता है। पति व्रत, लोकप्रिय तथा प्रतिप्रिय होती है। ससुराल इन पर गर्व करता है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले अभिनय व संगीत के भी शौकीन होते हैं।

23. धनिष्ठा—इस नक्षत्र का क्रमांक 23 है। इसका स्वामी मंगल होता है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का रंग साफ एवं गेहुँआ होता है। इनका शरीर पतला, कद लम्बा परन्तु कई बार औसत दर्जा का तथा अंगुलियां कुछ लम्बी होती हैं।

ये संगीत प्रेमी तथा जनहतैषी व पालक होते हैं। ये धनवान, साहसी, शक्तिशाली होते हैं परन्तु ये देखने में भोले—भाले लगते हैं। इनकी विचारधारा आशावादी होती है। ये प्रत्येक कार्य को जल्दबाजी में निपटाते हैं। इनमें स्वाभिमान बहुत होता है तथा साहस असीम होता है। यह दृढ़ इच्छा प्रभावशाली, सावधान, बहादुर, हौसलामंद, स्वार्थी, प्रतिशोध भाव रखने वाले, हिंसक, उपद्रवी, खर्चीले, ऊँचे उठने के इच्छुक, लोभी किन्तु उदार व धनी होते हैं। इस नक्षत्र के प्रधान पद में जन्म लेने वाले जातक झगड़े को टालने वाले तथा शान्तिप्रिय होते हैं। दूसरे, तीसरे तथा चतुर्थपद में जन्म लेने वाले जातक ऐसे स्वभाव के नहीं होते, वे झगड़ालू होते हैं। ये शीघ्र क्रोध में आ जाते हैं। ये सच्चे प्रेमी तथा चंचल होते है। इनके मित्र परिवर्तनशील होते हैं। वे कई संस्थाएं तथा क्लब बनाते हैं।

ये लेखन—प्रकाशन कार्य में पूर्ण समर्थ होते हैं। ये लोभी एवं क्रोधी होते हैं तथा धन की इन्हें चिन्ता लगी रहती है। क्रोध के कारण इन्हें धन हानि का सामना भी करना पड़ता है।

स्त्री जातक गृह प्रबन्ध में पूर्ण कुशल होते है। ये धैर्यशील और पति को प्रिय होती हैं। ये अभिमानी, स्पष्ट वक्ता तथा संगीत में रुचि रखती है। ये भी लोभी एवं क्रोधी होती है और इसी कारण बेचैन रहती है। इस नक्षत्र की स्त्रियां कला एवं लेखन में विशेष रुचि लेती है।

24. शतभिषा—इस नक्षत्र का क्रमांक 24 है तथा इसका स्वामी राहू है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का व्यक्तित्व आकर्षण होता है। इनका कद औसत एवं रंग साफ होता है। इनका आमतौर पर सिर बड़ा, मस्तक चौड़ा, आकर्षक आखें तथा शरीर स्निग्ध होता है। आयु के बढ़ने के साथ—साथ पेट बाहर को निकला आता है। इनका व्यक्तित्व राजसी होता है।

ये जातक कृपालू व विदेशों में रहने की इच्छा रखने वाले होते हैं तथा विलासी होते हैं। ये क्रोधी, झगड़ालू, परस्त्री—गामी और जैसे लिखा है विदेश—गामी होते हैं। इनकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं

होते। ये बुरा से बुरा कार्य करने को तैयार रहते हैं तथा सामाजिक संस्कारों तथा विधि–विधान को न मानने वाले होते हैं। ये असत्य सिद्धान्तों को अपनाने वाले होते हैं और धोखें से दूसरों का धन–माल हड़प कर जाते हैं। ये असंतोषी होते हैं तथा अपने लाभ के लिए दूसरों को कष्ट देते हैं।

शतभिषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों में अच्छे बुरे गुण मिले–जुले होते हैं। ये बुद्धिमान, सच्चे प्रत्येक के प्रिय एवं उतम व्यवहार करने वाले भी होते हैं। ये ईमानदार भी होते हैं। इनके विचार स्वतन्त्र, मौलिक होते हैं। वे धैर्यवान भी होते हैं। परन्तु ये आलसी तथा एकाकी कार्य करने को प्राथमिकता देते हैं। ये संगीत में विशेष रुचि रखते हैं।

इस नक्षत्र की स्त्रियां चतुर,साहसी, धर्म भीरू, बातूनी, शत्रु हन्ता, ईश्वर भक्त, स्पष्टवादी तथा परिवार में आदरणीय होती है। ये प्रायः कंजूस होती है। स्त्री जातक डॉक्टर बन जाती है।

यद्यपि ये सबकी सहायता करते हैं परन्तु इनको सहयोग कम ही मिलता है।

25. **पूर्वा भाद्रपद**–इस नक्षत्र का क्रमांक 25 है और इसका स्वामी गुरु है। इन नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का रंग गोरा होता है। इनका कद औसत एवं शरीर का गठन भी औसत होता है। इनकी गालें बड़ी मांसल होठ, तथा पैरों के टखनों से पहचाने जाते हैं।

ये साधारणतया शान्ति प्रेमी होते हैं। ये अच्छे वक्ता, धनी एवं सुखी होते हैं। ये समय को यूँ ही गंवा देने के आदि होते हैं। ये इर्ष्यालु तथा लोभी होते हैं। परन्तु ये अपने काम की ओर अधिक ध्यान रखते हैं। ये कोमल व्यवहार वाले, आशावादी, दार्शनिक, मित्रों के प्रिय,ईमानदार, विश्वासनीय तथा चंचल होते हैं। ये किसी से कम ही डरते हैं, ये सत्य बोलने वाले तथा निःस्वार्थ काम करने वाले होते हैं। ये स्वच्छता पसन्द, गुरु भक्त, तेजस्वी, विद्या प्रेमी तथा क्षमा कर देने वाले होते हैं। ऐसे जातक घूमने फिरने के शौकीन होते है। तथा ये अपने बल–बूते पर ही सब कुछ बनते हैं। लोभी तथा क्रोधी भी होते हैं। इसी कारण हानि भी उठाते हैं। ये सामाजिक व धार्मिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। ये घरेलू कार्यों में पूर्ण रुचि रखते हैं तथा धन अर्जित करने वाले होते हैं।

ये दर्शनशास्त्र, नक्षत्रज्ञान, ज्योतिष, साहित्य में रुचि लेने वाले होते है। इन्हें अलोचना करने की आदत होती है परन्तु ये प्रत्येक कार्य किस ढंग से करते हैं। लोगों से कार्य लेने में ये निपुण होते हैं। यदि लग्न पर प्रतिकूल प्रभाव हो तो ये चोर, डाकू, हत्यारे, नास्तिक, झगड़ालू, जोरू के गुलाम, कंजूस एवं चुस्त–चालाक बन जाते हैं। यदि किसी जातक का जन्म इस नक्षत्र के चौथे चरण में हुआ हो, तो ऐसे जातक

उदार, मुक्तहृदय, दानी, सच्चाई पसन्द, गाने बजाने के शौकीन होते हैं। कला, दर्शनशास्त्र, साहित्य में भी रुचि रखते हैं। ये कानून का पालन करने वाले होते हैं। ये दुविधा में भी फंस जाते है, फिर भी इनका स्वभाव नम्र रहता है।

स्त्री जातक अच्छी विद्या प्राप्त करती है। वे मान–सम्मान प्राप्त करती है। ये लज्जा शील मुक्त होती है। ये पति को वश में रखने वाली होती है। ये आमतौर पर लोभ तथा सन्देह के कारण बेचैन रहती है। ये उदार, तार्किक, बुद्धिमान तथा भ्रमण की शौकीन होती है। ये धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में बढ़–चढ़ कर भाग लेती है। इनका स्वभाव सुखदायी होता है।

26. **उतरा भाद्रपद**–इस नक्षत्र का क्रमांक 26 है तथा इसका स्वामी शनि है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। ये देखने में बहुत भोले–भाले लगते हैं, उनका रंग गोरा व साफ, तथा कद औसत होता है। ये जातक प्रायः लम्बे भी होते है। इनकी मुस्कान बड़ी आकर्षक होती है, इस तरह ये तुरन्त पहचाने जाते है।

ये बलवान, बहादुर, धर्मात्मा व साहसी होते हैं। ये तार्किक व बातूनी होते हैं। ये धार्मिक, परोपकारी व कर्मनिष्ट होते हैं। ये होशियार, दानी एवं सत्य पुरुष होते हैं। इनका चरित्र साफ, विचार स्वतन्त्र व मौलिक होते हैं। ये कुछ घमण्डी होसे है। ये दार्शनिक, कृपालु, बुद्धिमान तथा सभा, सुसाइटी के प्रेमी होते है। ये गरीबों, अपाहिजों की अच्छी सहायता करते हैं। ये एकांत पसन्द करते हैं तथा ये किसी तरह की अशान्त, खलबड़ी और गड़बढ़ से बेचैन हो जाते हैं। ये सबसे समान रुप में व्यवहार करते हैं परन्तु शीघ्र बिगड़ भी जाते हैं। ये अच्छे वक्ता होते हैं और इसी गुणा एवं शक्ति के कारण विरोधियों को भी जीत लेते हैं। ये अनेक विषयों के विशेषज्ञ होते हैं। इनका गृहस्थ जीवन उत्तम होते हैं। इनको पत्नी मधुर भाषा मिलती है तथा इन्हें धन की कमी नहीं होती।

स्त्री जातक धार्मिक विचारों वाली होती है। ये सुखी तथा धन–धान्य मुक्त होती है। ये वाकपटु तथा लोक प्रिय होती है। तथा समाज में मान–सम्मान पाती है।

27. **रेवती**–इसका क्रमांक 27 है तथा इस नक्षत्र का स्वामी बुध है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का कद लम्बा होता हैं। प्रायः देखा गया है। ये मझले एवं छोटे कद से भी होते हैं। इनका रंग गेहूँआ होता है तथा ये बहुत जल्दी–जल्दी चलते है। इनकी आंखें छोटी परन्तु चमकीली होती है। ये शीरर के हट्टे–कट्टे भी देखे गए हैं।

ये लोकप्रिय, बहादुर, युक्तियुक्त, डिप्लोमैटिक, विरोधी लिंग के

प्रति आकर्षण रखने वाले तथा समझदार होते हैं। ये सुन्दर, स्वस्त तथा पवित्र कार्यों मे दक्ष होते हैं। ये ऐसे कार्य नहीं करते जिनको लेकर बाद में पछताना पड़े। इनकी बातें तथा व्यवहार व्यापारियों जैसा होता है तथा ये प्रत्येक चीज़ को इसी दृष्टि से देखते हैं ये धनी व सम्पन्न होते है तथा इनका घर वाहन युक्त होता है। गृह में गाने–बजाने के सभी साधन मौजूद होते हैं। ये पवित्र, सादा, सूझबूझ वाले एवं पंडित होते हैं। ये परिवर्तनशील दूसरों का प्रभाव सहज ही ग्रहण करने वाले, कोमल, हमदर्द, चतुर कुशाग्र–बुद्धि, कवि, लेखक, पत्रकार, प्रतिभाशाली तथा यशस्वी होते हैं। इनकी सन्तान सौभाग्याशाली, योग्य व प्रतिमा–सम्पन्न होती है।

स्त्री जातक का ग्रहस्थ जीवन सुखद होता है। ये देखने में सुन्दर, उदार हृदय व मधुर भाषी होती है। ये पति को प्रिय होती हैं। इन्हें भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

जन्म कुण्डली के द्वादश भाव
कुण्डली के द्वादश भाव! क्या-क्या बताते हैं?

कुण्डली के द्वादश भावों से जातक के जीवन सम्बन्धी जानकारी प्रप्त होती है। इन भावों से क्या–क्या पता लगता है। अथवा यह भाव क्या–क्या सूचित करते हैं, इस प्रकार है–

प्रथम भाव–प्रथम भाव लग्न का होता है। प्रथम भाव से आदि रंग–रूप, स्वभाव, शारीरिक गठन, स्वास्थ्य, सम्वृद्धि आदि ज्ञात होता है। यह भाव कुण्डली में अति महत्वपूर्ण माना गया है। जातक के जीवन के सम्बन्ध में सब कुछ इस भाव मे ही जाना जाता है। आयु, शरीरिक दुख–सुख, रोग, स्वास्थ्य, जीवन–शक्ति, जीवन का प्रारम्भ, शरीर पर लहसुन, विचार–शक्ति, सफलता–असफलता, उच्च शिक्षा, लम्बी यात्रा, शत्रु की बीमारी, बच्चों की यात्रा, बड़े भाई के पड़ोसी तथा यात्रा, नाना, सिर, चेहरे का ऊपरी भाग मस्तक आदि का पता चलता है।

दूसरा भाव–इसको धन स्थान भी कहा जाता है। सम्पत्ति, खज़ाना, लाभ–हानि, गहने, रत्न, धन, मूल्यवान वस्तुएं, धन सम्बन्धी दस्तावेज, पाक शक्ति, कुटुम्ब, धन संग्रह, नेत्र दृष्टि, दांई आंख, स्मरण शक्ति, कल्पना शक्ति, सम्वृद्धि, लाभ, हानि, पत्नी की आयु, मृत्यु, भाग्य, बैंक बैलेंस, वाणी, खाद्य पदार्थ आदि का पता चलता है। इसका प्रभाव जीभ, नाक, दांत, ठोढ़ी, नाखुन एवं मुख्य प्रभाव गले, नेत्र व चेहरे पर होता है। यह मारक स्थान भी माना गया है।

तीसरा भाव–इसको सहज, भ्राता तथा पराक्रम स्थान भी कहा

जाता है। इससे छोटे भाई, बहन, भाईयों का सुख, निकट सम्बन्धियों का मुख, पड़ोसी, छोटी यात्राएँ, साहस मानसिक झुकाव, योग्यता, स्मरण शक्ति, वृद्धि, वीरता, पत्र–व्यवहार, परीक्षा में बैठना, प्रतियोगता आदि का मुख्य तौर पर पता लगता है। इसका मुख्य प्रभाव हाथ गला,कन्धा, भुजा पर होता है।

चौथा भाव–इसे माता स्थान भी कहते हैं। माता, अपना घर, घर का सुख, घर का वातावरण, जीवन का अन्त कब्र, गुप्त जीवन, बाहन, खेती की जमीन, मैदान पैतृक सम्पत्ति, गुप्त खजाना, विद्या व जल–स्त्रोत की जानकारी मिलती है। इसका मुख्य प्रभाव छाती तथा पीठ पर होता है।

पांचवां भाव–इस भाव में मुख्य तौर पर सन्तान के सम्बन्ध में बिचारा जाता है। इस भाव से स्वभाव, मन का झुकाव, सुख, आनन्द, कला, योग्यता, मनोरंजन, खेल तमाशे, सट्टा, लाटरी, प्रेम, जुआ, मंत्र–तंत्र, बुद्धि, आध्यात्मिक विद्या, धार्मिक अवस्था, उच्च विद्या, गर्भ, उपासना, यश, अपयश, सुसाइटी, गाना–बजाना, शेयर, धन वाणिजय, खरे–खोटे की पहचान सम्बन्धी विचार होता है। इसका मुख्य प्रभाव दिल, पेट पर होता है।

छठा भाव–इसको रिपु स्थान भी कहा जाता है। इससे शत्रु, मामा, मौसी, रोग, बीमारी, नौकरी, सेवक, अधीनस्थ कर्मचारी, पशु, बुरे कर्म, बंधन, डर, हानि, अपयश, चिन्ता, झगड़ा, उधार कंजूसी व किराएदार का विचार होता है। कार्य की रुकावट, स्वास्थ्य एवं सफाई सम्बन्धी विचारा जाता है। इसका प्रभाव कमर, आंतड़ियों नाभि एवं पेट पर होता है।

सातवां भाव–इसको अस्त अथवा कलत्र अथवा जाया स्थान भी कहा जाता है। इससे पत्नी, पत्नी सुख, शादी–विवाह, व्यापार, अदालती झगड़े, सांझेदारी, प्रत्यक्ष शत्रु अथवा विरोधी, झगड़ा, विवाद, विदेश से प्राप्त मान–सम्मान, जीवन को खतरा विचारा जाता है। पत्नी का पति सुख (स्त्री जातक की कुण्डली में) सांसरिक सम्बन्ध, अर्न्तराष्ट्रीय व्यापार विचारे जाते हैं। इसका प्रभाव कमर, मूत्र प्रणाली आदि पर होता है।

आठवां भाव–इसको आयु अथवा मृत्यु स्थान भी कहा जाता है। इस भाव से मृत्यु, मृत्यु का कारण, आयु, संकट, शास्त्र भाव, अचानक लाभ, पत्नी द्वारा धन प्राप्ति, कर्जा, शत्रु भय, विरासत में धन–सम्पत्ति की प्राप्ति, बीमा, वसीअत, पैन्शन, दुर्घटना, आत्म हत्या, दुःख–संताप, रुकावटें, राधा, झगड़ा परेशानी, दुर्भाग्य, चोरी, डकैती, शमशान–मार्ग, दहेज, बिना कमाई की सम्पत्ति तथा भय सम्बन्धित बातों का विचार होता है। गुप्तांगों जनेन्द्रियों का विचार भी इस भाव से होता है।

नवम भाव–इसे धर्म–स्थान भी कहते हैं। इस भाव से धार्मिक प्रवृति, तप, धार्मिक विश्वास, तीर्थ यात्रा, लम्बी यात्रा, विदेश यात्रा,

भाग्य, साधन, वृद्धि, अर्न्तदृष्टि, सहज जार, उपासना, पिता गुरु, विद्या, आयात–निर्यात आदि का विचार होता है। इससे जांघों तथा घुटनों का भी विचार होता है।

दशम भाव–इसे कर्म स्थान भी कहा जाता है। इसके द्वारा कारोबार, व्यवसाय, रोजगार, बाणिज्य, पद, मान–सम्मान, उद्योग, सरकार से मान–सम्मान, राज्य सेवा, नौकरी, उन्नति, आचरण, सफलता, सांसारिक गतिविधियां, धार्मिक उत्सव, प्रबन्ध, शासन, हुकूमत करना, तीर्थ मात्रा लाभ, मात–पिता की क्रिया, खेतबाड़ी, सम्वृद्धि, छोटे भाई को संकट आदि का विचार होता है। इसका मुख्य प्रभाव घुटनों पर होता है।

एकादश भाव–इसे ग्यारहवां भाव कहते हैं और इसे आय अथवा लाभ का भाव अथवा स्थान भी कहा जाता है। अनेक प्रकार का लाभ इच्छापूर्ति, उत्साह, उम्मीद, आशा, आभूषण, स्थाई मित्र, मित्र सुख, विद्या लाभ, सामाजिक स्थिति, मनोकामना, कारोबार, तरक्की, उन्नति, रोगों व बीमारी से मुक्ति, बड़े भाई–बहन, मान–सम्मान, सम्वृद्धि पिता की यात्राएं, पत्र–व्यवहार, लाभ आदि का विचार होता है। उसका प्रभाव बाएं कान, दाहिने पैर तथा पिंडलियों पर होता है।

द्वादश भाव–इसे बारहवां भाव कहते हैं। इससे मोक्ष प्राप्ति, गुप्त विद्या, आध्यात्मिक विद्या, क़ैद, जुर्माना, शत्रु, व्यय, शनि, घाटा, नुक्सान, गृहस्थी पर व्यय, पाखंड, गुप्त कार्य, दुःख, धोखा, राज्य भय व सज़ा, कर्जा, ठगी, विदेश भ्रमण, दुर्भाग्य, अस्पताल, जेलखाना, पागल खाना, हत्या रात्रि विश्राम, शय्या सुख, विदेश में जीवन, कुटम्ब से अलग होना अकस्मात् घटनाएं, बीमारी, गुप्त योजनाएं, स्कैंडल आदि का विचार होता है। इसका मुख्य प्रभाव बाई आंख, बाएं कान, पैर, पैर के पंजे, अंगुली एवं तलवे पर होता है।

इस कुण्डली से द्वादश भावों से मुख्य क्या–क्या विचार होता है, जाना जा सकता है।
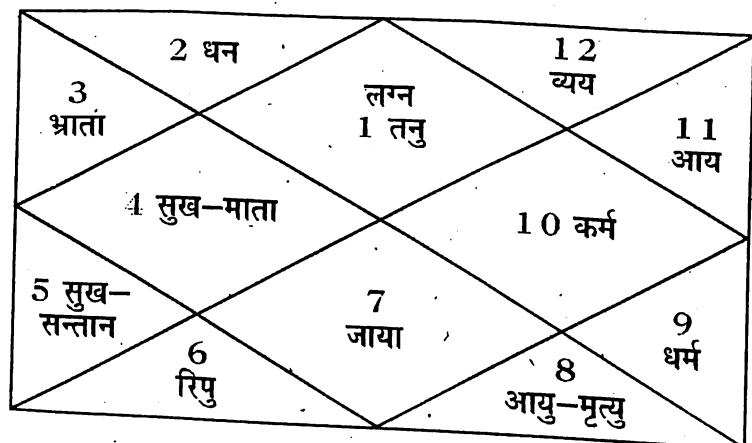
जन्म कुण्डली रचना अपेक्षित आधार सामग्री विचार

अमित पाकेट बुक्स

जन्म कुण्डली आकाशीय मानचित्र होता है जो किसी खास समय की ग्रह स्थिति दर्शाता है। अतः यह आवश्यक होता है कि प्रश्न कुण्डली हो या जन्म कुण्डली, उसकी रचना का आधार सही हो। अतः इसके लिए तीन चीज़ों का सही ज्ञान अति आवश्यक होता है। यदि यह ज्ञान सही नहीं होगा तो शुद्ध इष्टकाल नहीं बनाया जा सकेगा और जन्म कुण्डली प्रायः गलत साबित होगी। यह तीन आवश्यक बातें है–

1. जन्म स्थान–जन्म स्थान का अक्षांश, रेखांश जाने बिना शुद्ध लग्न जाना नहीं जा सकता क्योंकि इसको आधार मानकर ही जन्म लग्न निकाला जाता है। अतः जिस स्थान का जन्म हो उसकी तथा उसके अक्षांश, रेखांश की जानकारी अत्यावश्यक होती है।

2. जन्म तारीख–जन्म कुण्डली के लिए तारीख एवं विधिं का ज्ञान होना अति जरूरी है। यदि जन्म तारीख, मास, वर्ष का पूर्ण विवरण होगा तो ही कुण्डली की रचना की जा सकेगी।

3. जन्म समय–जन्म समय का ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है। यदि जन्म समय का ठीक–ठीक ज्ञान नहीं होगा तो जन्म कुण्डली बनाना असम्भव ही होगा।

अतः यह आवश्यक है कि जन्म कुण्डली के इन महत्वपूर्ण अंगों का यहां विशेष रूप से विचार किया जाए ताकि जन्म कुण्डली शुद्ध रूप से बनाई जा सके। यहां प्रत्येक अंग के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

1. जन्म स्थान–जैसे यहां कहा गया है कि जन्म कुण्डली निर्माण अथवा रचना के लिए जन्म स्थान का ज्ञान होना अति जरुरी है। जब तक जन्म स्थान की अक्षांश व रेखांश का सही ज्ञान नहीं होगा, जन्म कुण्डली सही बन हीं नहीं सकती। इसलिए वह जानना जरूरी है कि अक्षांश, रेखांश क्या है ?

अक्षांश–यह तो सब जानते ही हैं कि जमीन अथवा पृथ्वी गोल है और ये नारंगी जैसी है तथा दोनों सिरों से कुछ चपटी है। इन दोनों

सिरों को ध्रुव कहा जाता है। वह दोनों ध्रुव उत्तर और दक्षिण ध्रुव है। उत्तर के किनारे का उत्तर ध्रुव कहलाता है और जो इसके ठीक नीचे का ध्रुव है, उसे दक्षिण ध्रुव कहते हैं। इन दोनों ध्रुवों से समानान्तर दूरी पर जो एक कल्पित रेखा पूर्व, पश्चिम पृथ्वी पर बनाई गई है उसे भूमध्य रेखा कहा जाता है। यह कल्पित रेखा भीतर है तथा इससे उतर का दक्षिण ध्रुव समानान्तर दूरी पर है। अतः इसी रेखा को भूमध्य रेखा कहा जाता है।

अक्षांश, भूमध्य रेखा से दूरी बतलाता है। भूमध्य रेखा से पृथ्वी पर उत्तर या दक्षिण को समानान्तर दूरी पर जो कल्पित रेखाएं पृथ्वी पर पूर्व–पश्चिम खींची गई है। वे रेखाएं अकांक्ष कहलाती हैं। वह रेखाएं यह ज्ञान कराती है। कि कोई स्थान, उत्तर या दक्षिण में भूमध्य रेखा से कितनी दूरी पर है। यदि हमें वह पता चल जाए कि कोई स्थान भूमध्य रेखा से इतने–इतने अंश की दूरी पर है तो आसानी से उस स्थान का पता चल जाता है, इस तरह भूमध्य रेखा का अक्षांश माना गया है। यदि इससे उत्तर या दक्षिण की ओर जाएंगे तो अक्षांश बढ़ता ही जाएगा। स्कूल के नक्शों अथवा किसी एटलस से अक्षांश तथा यह कल्पित खींची गई रेखाएं भलीभांति जानी जा सकती है।

रेखांश या देशान्तर–यह भूमध्य रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी बतलाता है। यह भी कल्पित रेखाएं उतरी व दक्षिणी ध्रुव को मिलाती हुई खीची गयी है। इस तरह इन रेखाओं का एक किनारा उतरी ध्रुव को और दूसरा किनारा दक्षिणी में होता अथवा जाता है। यदि नक्शा देखा जाए तो पता चलेगा कि ये रेखाएं भू–मध्य रेखा को काटते हुए उत्तर और दक्षिण को जाती है। इसे मध्यान्ह रेखा भी कहा जाता है क्योंकि किसी प्रधान रेखा से पूर्व या पश्चिम में किसी स्थान का अन्तर इससे ही नापा जाता है। वेशक रेखांश, रेखाएं उत्तर दक्षिण है परन्तु इससे किसी स्थान का पूर्व पश्चिम अन्तर प्रधान मध्यान्ह रेखा के स्थान से पता चलता है। जब सूर्य इस रेखा पर आता है तो उन सभी स्थानों पर एक ही समय होता है अर्थात् दोपहर होती है। यहां से यह रेखा जाती है, उसके बिल्कुल नीचे वाले देशों में उस समय अर्द्धरात्रि होती है। इस लिए इसको मध्यान्ह रेखा भी कहा जाता है।

जैसे बताया गया है कि इसे मध्यान्ह रेखा भी कहा जाता है, क्योंकि किसी प्रधान रेखा से पूर्व या पश्चिम में किसी स्थान की दूरी इसी से नापी जाती है। अतः प्रधान मध्यान्ह वह है जहां को आदि स्थान मानकर पूर्व–पश्चिम अन्तर नापा जाता है। भारत में यह स्थान पहले उज्जैन को माना गया था और अब यु.के. में ग्रीनविच को प्रधान मध्यान्ह रेखा मान कर अर्थात् ग्रीनविच से देशान्तर नापा जाता है।

भूमध्य रेखा पर अक्षांश 0 है और इससे उत्तर ध्रुव तक 1 से 90 अंश तक अक्षांश होता है। इसी तरह दक्षिण ध्रुव की ओर भी 1

से 90 अंश तक अक्षांश होते है। यह इसलिए है क्योंकि एक वृत के 90 अंश होते हैं। उत्तर की ओर अक्षांश को उत्तर अक्षांश और दक्षिण की ओर अक्षांश को दक्षिण अक्षांश कहा जाता है। अतः भू-मध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण में कोई स्थान कितने अंश की दूरी पर है वही उस स्थान का उतरी व दक्षिणी अक्षांश होगा। यदि कोई स्थान ग्रीनविच जिसे प्रधान मध्यान्ह रेखा माना है, से पूर्व या पश्चिम में जितने अंश की दूरी पर होगा, यदि वह पूर्व में होगा तो पूर्व रेखांश अथवा देशान्तर होगा और यदि पश्चिम में होगा तो पश्चिम देशान्तर होगा। अतः शुद्ध जन्म कुण्डली रचना के लिए यह जानना अति जरूरी है कि जन्म स्थान ग्रीनविच से कितने अंश पूर्व या पश्चिम में स्थित है। जन्म स्थान, भू-मध्य रेखा से कितने अंश उत्तर या दक्षिण में है अर्थात् उस स्थान का अक्षांश क्या है यह भी ज्ञान होना आवश्यक है। यह ज्ञान इसलिए जरूरी है क्योंकि भारतीय मानक समय जो 82°.30' रेखांश पूर्व पर अधारित है, से जन्म स्थान का स्थानीय समय जो लग्न के लिए अति आवश्यक होता है, उस स्थान के रेखांश का स्टैंन्डर्ड अन्तर जान कर ही जाना जा सकता है। यह प्रति अंश 4 मिनट माना गया है। जो रेखांश पूर्व या पश्चिम के अनुसार घटाया या बढ़ाया जाता है तथा स्थानीय समय प्राप्त किया जाता है। जैसे मान लो किसी बालक का जन्म चण्डीगढ़ में 10-15 भारतीय मानक समय (I.S.T) प्रातः हुआ। चण्डीगढ़ का अक्षांश 30°-44' और रेखांश अथवा देशान्तर 76°-52' है। स्थानीय. समय जानने के लिए यहां पर भारतीय मानक समय आधारित है, उसके रेखांश जानने होंगे। भारतीय मानक समय स्थान के रेखांश तथा चण्डीगढ़ रेखांश का अन्तर जान कर प्रति 4 मिनट एक अंश के अनुसार चण्डीगढ़ के जन्म समय में घटाने, बढ़ाने से चण्डीगढ़ में शिशु के जन्म समय का स्थानीय समय प्राप्त हो जाएगा।

1. जन्म समय चण्डीगढ़ 10 घंटे 15 मिनट I.S.T
2. चण्डीगढ़ रेखांश 76°.52'
3. स्टैंडर्ड रेखांश 82°.30'
4. दोनों रेखांश का अन्तर

82°-30'
76 -52
―――――――
5 -78 अन्तर 5 अंश 78 कला

5. प्रति अंश 4 मिनट के हिसाब से समय अन्तर 5°-38' ×4 मिनट = 22 मिनट 32 सैकण्ड।

6. जन्म समय 10 घंटा 15 मिनट I.S.T (भारतीय मानक समय) में से 22 मिनट 32 सैकण्ड घटाने से चण्डीगढ़ में बालक के

जन्म समय का स्थानीय अर्थात् चण्डीगढ़ का समय मालूम ही जाएगा जो लग्न निकालने के लिए उपर्युक्त होगा। इस तरह 10 घंटा 15 मिनट (–) 22 मिनट 32 सैकण्ड= 9 घंटे 52 मिनट 28 सैकण्ड स्थानीय समय प्राप्त हुआ। इससे ही शुद्ध लग्न निकाला जा सकता है।

गणित से बचने एवं आसानी से सही अक्षांश, रेखांश व समय अन्तर की सारणी पुस्तक के आखिरी भाग में दी गई है. सुहृदय **पाठकगणः** इस सारणी से किसी भी स्थान का अक्षांश रेखांश जान सकेंगे तथा साथ ही स्टैंडर्ड अन्तर भी ज्ञात हो जाएगा जिससे किसी भी स्थान से भारतीय मानक समय को स्थानीय समय परिवर्तन करने में आसानी होगी। जैसे सारिणी में लिखा है।

नाम स्थान	अक्षांश अंश कला	रेखांश अंश कला	अन्तर मि. सैं.
चण्डीगढ़	30–44	76–52	–22–32
जालंधर	31–19	75–74	–27–44

उदाहरण–किसी बालक का जन्म चण्डीगढ़ में 10–15 प्रातः हुआ। इसका स्थानीय समय जानना है। दी गयी सारणी से चण्डीगढ़ का अक्षांश, रेखांश भी पता चल जाएगा तथा 10–15 में से 22–32 घटाने से तुरन्त स्थानीय समय भी ज्ञात हो जाएगा। इसी तरह आप किसी शहर/स्थान का समय अन्तर जान सकते हैं।

2. **जन्म तारीख**–जन्म कुण्डली रचना के लिए दूसरा अति महत्वपूर्ण ज्ञान तिथि, तारीख अथवा सम्पूर्ण जन्म तारीख का होना अनिवार्य है। यदि जन्म तिथि व तारीख आदि ही ज्ञात नहीं होगी तो जन्म कुण्डली का निर्माण कैसे किया जा सकता है। जन्म तिथि/तारीख, मास एवं वर्ष का ज्ञान होना भी जरूरी हो। इसलिए यहां इनसे सम्बन्धित जानकारी दी जाती है।

जन्म–तिथि–यहां जो तिथि के सम्बन्ध में बताया जा रहा है वह भारतीय मत के अनुसार है क्योंकि पाश्चात्य मत के अनुसार रात्रि को 12 बजे तिथि अथवा तारीख बदल जाती है परन्तु भारतीय मत के अनुसार ऐसा नहीं है। भारतीय मत के अनुसार जिस तिथि पर सूर्य उदय होता है, वही तिथि अगले सूर्य उदय तक मानी जाएगी, यानि तिथि के विस्तार आदि का आधार सूर्योदय माना गया है। इसीलिए प्रायः पंचांगों में पहले तिथि ही दे रखी होती है। अतः सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक वार माना जाता है तथा इस तरह गणित कामों के लिए एक ही तिथि रहेगी। अतः जो सूर्योदय के समय तिथि होती है वही लिखी होती है और उसके अनुसार ही गणना करके तिथि का विस्तार आदि जाना जाता है।

अंग्रेज़ी जन्म तारीख का निर्णय तो तुरन्त हो जाता है क्योंकि यह रात्रि 12 बजे बदल जाती है तथा इस मत के अनुसार तारीख का विस्तार रात्रि 12 बजे से अगली रात्रि 12 बजे तक होता है। यदि इसी तारीख को लेकर गणना की जाए तो किसी तरह का भ्रम नहीं पड़ता परन्तु जब इसके अनुसार तिथि व वार लिखा जाता है तो अन्तर आ जाता है। अंग्रेज़ी तारीख बदलती है तो वार भी बदल जाता है परन्तु भारतीय मत में ऐसा नहीं है। जन्मपत्री भारतीय मत के अनुसार जब बनाई या लिखी जाती है तो इस तरह अन्तर पड़ जाता है। इस लिए जन्म तिथि या तारीख का निर्णय करना अति आवश्यक है।

भारतीय मत के अनुसार सूर्योदय पर जो तिथि होती हैं। वह दी होती है। वार एक सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक गिना जाता है। इस तरह देखा जाए तो तिथि परिवर्तन का आधार रात्रि 12 बजे है इसी आधार पर बार का निर्णय किया जाता है। सूर्योदय के समय का वार ही जन्म वार माना जाएगा। जैसे किसी का जन्म 26 अक्तूबर मंगलवार 1999 को 4–15 प्रातः (अर्द्धरात्रि के पश्चात) हुआ तो वार तो मंगलवार ही रहेगा क्योंकि वार सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक लिया जाता है। अतः जन्म वार मंगलवार होगा क्योंकि तिथि सूर्योदय पर द्वितीय थी अतः जन्म तिथि कार्तिक कृष्णा द्वितीय लिखी जाएगी। अंग्रेज़ी मत के अनुसार क्योंकि तारीख 12 बजे रात्रि को बदल जाती है। अतः जन्म तारीख या तिथि अंग्रेजी मत से अनुसार 27 अक्तूबर मानी जाएगी क्योंकि जन्म तारीख बदलने के पश्चात् हुआ है। भ्रम से बचने के लिए वह लिखा जाता है। कि जन्म 26/27 अक्तूबर की मध्याराशि को हुआ यदि यह लिख दिया जाए कि जन्म 27 अक्तूबर 4–15 A.M. पर हुआ था तो यह भ्रम हो सकता है कि 27–28 अक्तूबर की मध्यरात्रि 4–15 बजे जन्म हुआ। इस लिए यह अति जरूरी है कि जन्म कुण्डली निर्माण के लिए जन्म तिथि का अवश्य सही निर्णय कर लेना चाहिए

वार–भारतीय पद्धित के अनुसार बार एक सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक माना जाता है। यदि किसी का जन्म बुधवार 27 तारीख को 5.10 प्रातः होगा तो दिन बुधवार अथवा जन्म वार बुधवार ही गिना जाएगा क्योंकि जन्म अगला सूर्य निकलने से पहले का है, बेशक 27 तारीख की रात्रि 12 बजे के पाश्चात् तारीक बदलकर 28 हो गयी है। इस तरह भारतीय मत के अनुसार वार सूर्योदय से सूर्योदय तक लिया जाता है। तिथि तथा वार के सम्बन्ध में अधिक जानकारी पचांग वाले भाग में दे दी गयी है।

मास–भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मास का आधार मुख्य

रूप से सूर्य व चन्द्रमा को ही माना गया है। चन्द्र व सूर्य की गति के अनुसार ही मास का समय माना जाता है। इस तरह भारतीय मत के अनुसार मास 4 प्रकार के हैं। ये 4 प्रकार के मास हैं।

1. चान्द्रमास
2. सौरमास
3. सावन मास
4. नाक्षत्र मास

प्रत्येक प्रकार के मास के सम्बन्ध में संक्षेप जानकारी दी जाती है ताकि मास का निर्धारण सही हो सके।

1. चान्द्रमास—चान्द्रमास 29 दिन 12 घंटा का माना गया है। प्रत्येक मास में दो पक्ष होते है। एक शुक्ल पक्ष और दूसरा कृष्ण पक्ष इन पक्षों को सुदी व बदी भी कहा जाता है। कृष्ण पक्ष अमावास्या पर और शुक्ल पक्ष पूर्णिमा पर समाप्त होता है। चान्द्रमास का भारत में व्रत् उत्सव आदि कार्यों में उपयोग किया जाता है। शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक एक चान्द्रमास है।

2. सौरमास—सौर मास सूर्य की एक संक्राति से दूसरी संक्राति तक होता है। सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में जाता है तब दूसरी राशि की संक्राति होती है। जैसे जब मिथुन राशि के बाद सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करेगा तो उस दिन कर्क की संक्राति होगी। इस तरह मेष की संक्राति अथवा मेष राशि में निरयन सूर्य के प्रवेश समय अर्थात् दिन से बैशाख मास प्रारम्भ होता है तथा कुछ प्रान्तों जैसे पंजाब आदि में सौर वर्ष भी आरम्भ हो जाता है। इस तरह 12 सौर मास होते हैं और इनसें एक वर्ष बनता है। सौर वर्ष में बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण तथा भाद्रपद की 31–31 दिन होते हैं और आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन और चैत्र के 30–30 दिन होते हैं वह वर्ष 365.242 सावन दिन का एक वर्ष माना गया है । सौर मास भारतीय 30 दिन 10 घंटे का होता है। दुनिया के सभी कार्यों अर्थात् राजनीतिक कार्यों में इसी मास का उपयोग होता है।

3. सावनमास—सावन मास 24 घंटे वाले दिन से 30 दिन का एक सावन मास माना जाता है। इस तरह सावन मास 30 दिन का होता है। सूर्य के एक उदय से दूसरे उदय तक के समय को एक सावन दिन कहते हैं। और इस तरह 30 दिन का एक सावन मास होता है। सावन दिन का मान समान नहीं होता, इस लिए मध्यम सावन दिन का मान लिया जाता है और उसी का समय घड़ियों से जाना जाता है। इस मास का उपयोग आमतौर पर व्यावहारिक कार्यों में किया जाता है।

4. नक्षत्र मास—जब चन्द्रमा सभी 27 नक्षत्रों में एक बार भ्रमण

कर लेता है तो उस समय अवधि को नाक्षत्र मास अथवा चन्द्र मास कहते हैं। एक वर्ष में 12 मास होते हैं। इन बारह मासों के नाम इस तरह हैं।

क्रम	नाम मास
1.	चैत्र, चेत
2.	बैशाख
3.	ज्येष्ठ, जेठ
4.	आषाढ़, आसाढ़
5.	श्रवण, सावन
6.	भ्रद्रपद, भादों
7.	आश्विन
8.	कार्तिक, कातिक
9.	मार्गशीर्ष, मधर
10.	पौष, पूस
11.	माघ
12.	फाल्गुन, फागुन

यदि ध्यान से देखा जाए तो ऐसा लगता है कि मास के नाम नक्षत्रों के नामों से मिलते जुलते हैं। यह बात है भी सत्य। चन्द्रमा एक नक्षत्र को एक दिन में पार कर जाता है। इस तरह एक पूर्णिमा के बाद दूसरी पूर्णिमा पर जो नक्षत्र आता है, उसी नक्षत्र के नाम पर उस मास का नाम पड़ा हुआ है। जैसे पोष की पूर्णिमा की पुष्य नक्षत्र होता है तो पौष की पूर्णिमा को पोष मास का नाम दिया गया है।

अतः चन्द्र मासों की पूर्णिमा के लगभग यह नक्षत्र होते हैं।

क्रम	चन्द्रमास का नाम	लगभग नक्षत्र नाम
1.	चैत्र	चित्रा
2.	बैशाख	बिशाखा
3.	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा
4.	आषाढ़	आषाढ़ा
5.	श्रवण	श्रवण
6.	भाद्रपद	भाद्रपद
7.	आश्विन	अश्विनी
8.	कार्तिक	कृतिका
9.	मार्गशीर्ष	मृगशिर
10.	पोष	पुष्य
11.	माघ	मघा
12.	फाल्गुन	फाल्गुनी

चन्द्र मास दो प्रकार के माने गए है। यह हैं।

1. **अमान्त मास**—यह मास शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक होता है। यह मास आमतौर पर दक्षिण और महाराष्ट्र में माना जाता है।

2. **पूर्णिमांत मास**—यह मास कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा तक होता है। यह मास उत्तर भारत में माना जाता है यदि देखा जाए तो दोनों तरह की मास में कोई अन्तर नहीं है क्योंकि एक स्थान पर पूर्णिमा या अमावस्या हुई तो सब जगह ही उस दिन पूर्णिमा या अमावस्या होगी। केवल मास की गणना में कृष्ण पक्ष में एक मास का अन्तर पड़ जाता है। जैसे यहां चैत्र कृष्ण पक्ष हुआ तो दक्षिण में फाल्गुन कृष्ण पक्ष कहा जाएगा। शनि कृष्ण पक्ष में मास से एक मास कम दक्षिण का मास होता है।

ज्योतिष कार्य के लिए अधिकतर सौर मास का ही उपयोग किया जाता है।

सन् ईस्वी का मास—यह मास प्रचलित अंग्रेजी मास है। यह जनवरी से दिसम्बर तक होते हैं। यह भी 12 मास से एक वर्ष बनता है। मास के नाम तो सभी पाठक जानते ही हैं। फिर भी चन्द्रमास के समान अथवा अंग्रेजी मास के समान कौन का चन्द्रमास हो सकता है दिया जा रहा है।

क्रम	अंग्रेजी मास	चान्द्र मास
1.	जनवरी	पूस, पौष
2.	फरवरी	माघ
3.	मार्च	फाल्गुन
4.	अप्रैल	चैत्र
5.	मई	बैशाख
6.	जून	ज्येष्ठ
7.	जुलाई	आषाढ़
8.	अगस्त	श्रावण
9.	सितम्बर	भद्रपद
10.	अक्तूबर	अश्विन
11.	नवम्बर	कार्तिक
12.	दिसम्बर	मार्गशीर्ष

अंग्रेजी वर्ष में लीप वर्ष में फरवरी 29 दिन की होती है। जिस सन् ईस्वी में 4 का पूर्ण भाग हो या सदी में 400 का पूर्ण भाग हो जाए तो उसे लीप साल अथवा वर्ष कहा जाता है। इस वर्ष में फरवरी के 29 दिन होंगे।

वर्ष—जन्मपत्री रचना के लिए जन्म तिथि आदि में वर्ष का यदि विवरण नहीं होगा तो जन्म तिथि मास आदि जानकारी अधूरी ही रहेगी। अतः वर्ष के सम्बन्ध में भी यहां विचार किया जाता है। यह तो सर्वविदित है कि सूर्य की परिक्रमा करने के लिए पृथ्वी जितना समय लेती है वह सौर वर्ष होता है। इसी तरह चन्द्रमा को पृथ्वी की बारह परिक्रमा करने में जो समय लगता है उसे एक चान्द्र वर्ष कहा जाता है।

वर्ष अनेक प्रकार के हैं। सावन वर्ष, 360 सावन दिन का एक वर्ष होता हैं। 354 सावन दिन का एक चन्द्र वर्ष माना गया है। 359 सावन दिन का एक नक्षत्र वर्ष होता है और 365.24 सावन दिन का एक सौर वर्ष होता है।

विक्रम सम्वत्–सौर–चन्द्र वर्ष भारत में विक्रम सम्वत् के रूप में माना जाता है। भारत में विक्रम सम्वत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होता है। ऐसा सम्बत् उतरी भारत में आरम्भ होना माना गया है परन्तु महाराष्ट्र आदि में कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होना माना जाता है। यह मान्यता है कि विक्रमादित्य ने 57 बी.सी में विक्रम सम्वत् चलाया था। इस तरह यदि सन् ईस्वी में 57 जोड़ दिए जाएं तो सम्वत् प्राप्त हो जाता है। जैसे यदि 1997 सन् ईस्वी का सम्वत् जानना हो तो इस प्रकार जाना जाएगा।

सन् ईस्वी 1997
जोड़ा +
57 57

= 2054 इस तरह सन् ईस्वी का 2054 सम्वत् प्राप्त हुआ। जन्मपत्री में प्रायः सम्वत् लिखा जाता है, अतः यह अति महत्वपूर्ण है कि ठीक–ठीक सम्वत् का ज्ञान हो। इस तरह सम्वत् जानने में यह ध्यान रखना चाहिए कि सम्वत् मार्च के मास में बदल जाता है और पोष मास में सन् बदल जाता है। इस तरह यदि देखा जाए तो एक सम्वत् में दो सन् या एक सन् में दो सम्वत् आ जाते हैं। इसलिए काल को ध्यान में रखते हुए सम्वत् का विचार एवं निर्णय करना चाहिए। जैसे सम्वत् में 57 के घटाने पर जो सन् आता है वह वर्ष प्रारम्भ का सन् होता है और आगे पोष में सन् बदला कर दूसरा सन् लग जाता है। जैसे पहले बताया गया है। सन् ईस्वी 1997 में 57 जौड़ने से 2054 सम्वत् प्राप्त हुआ। यदि सम्वत् 2054 सम्वत् से 57 घटा दें तो वही सन् ईस्वी प्राप्त हो जाएगा अर्थात् 1997 सन् ईस्वी होगा। यह ध्यान रखें कि यह सन् इस तरह से प्राप्त सम्वत् के प्रारम्भ में होगा और 2055 के पूस अर्थात् पोष मास में सन् बदल कर 1998 सन् जाना जाएगा।

इस तरह सम्वत् से 57 घटाने पर सन् ईस्वी तथा सन् ई० में 57 जोड़ने पर सम्वत् जाना जा सकता है।

शालिवाहन शाके सम्वत्–विक्रम सम्वत् और शाके सम्वत् प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होते है। यह भी ध्यान रहे कि प्रति वर्ष का पंचांग भी इसी दिन से प्रारम्भ होता है। यह भी चान्द्र वर्ष पर ही आधारित होता है। यह विक्रम सम्वत् से 136 वर्ष पीछे होता है।

सम्वत् से शालिवाहन शाका सम्वत् जानने के लिए विक्रम सम्वत् से 135 वर्ष घटाने से शालिवाहन शाका सम्वत् प्राप्त हो जाता है। जैसे सम्वत् 2054 के 135 घटाए तो शालिवाहन शाका सम्वत् 1919 प्राप्त हुआ। यदि शालिवाहन शाका सम्वत् से सन् ईस्वी जानना हो तो शाके सम्वत् में 78 जोड़ने से सन् ईस्वी प्राप्त हो जाता है। जैसे 1919 शालिवाहन शाका सम्वत् में 78 जोड़े तो पुनः

1997 सन् ईस्वी प्राप्त हो गया। शाका सम्वत् भी जन्मपत्री में लिखा होता है अतः इसको भी ध्यान में रखना चाहिए।

ईस्वी सन्—इसको तो सभी जानते ही हैं। यह प्रथम जनवरी से प्रारम्भ होता है तथा 31 दिसम्बर तक रहता है। यह सन् ईस्वी ईसामसीह के जन्म दिन से सम्बन्धित है तथा ईसामसीह के जन्म दिन से प्रारम्भ हुआ माना गया है। जैसे पहले बताया गया है इसमें 365 दिन होते हैं।

यदि शाके तथा विक्रम सम्वत् से सन् ईस्वीं जानना हो तो शाके तथा सम्वत् में क्रमशः 78 जोड़ने व 57 घटाने से सन् ईस्वी प्राप्त हो जाएगी।

राष्ट्रीय कलैण्डर—राष्ट्रीय कलैण्डर National Calender के नाम से जाना जाता है। यह भारत सरकार द्वारा मान्य है। इसका आरम्भ सायन मेष संक्राति अर्थात् सायन सूर्य के मेष राशि में प्रवेश के दिन से आरम्भ होता है। यह सायन संक्राति साधारणतयः प्रत्येक वर्ष 22 मार्च को तथा तीन वर्ष में प्रायः 21 मार्च को होती है। अतः इसी दिन से यह कलैण्डर प्रारम्भ होता है। यह भी प्रायः पंचांग में दिया रहता है। यह एक तरह से यदि देखा जाए तो शाका सम्वत है। वर्ष संख्या, शालिवाहन शाका सम्वत् बाली ही होती है।

सम्वत्सर—यह भी पंचांग में दिया रहता है। सम्वत्सर गुरु की गति के अनुसार गणित करके जाने जाते हैं। पहला सम्वत्सर गुरू की मध्यम गति से कुम्भ राशि में प्रवेश के दिन से आरम्भ होता है तथा अन्य. सम्वत्सर गुरु के इससे अगली राशियों में प्रवेश से जाने जाते हैं।

सम्वत्सर 60 माने गए हैं। इनके नाम क्रमानुसार इस तरह हैं।

क्रम	नाम	क्रम	नाम	क्रम	नाम	क्रम	नाम
1	प्रभव	16	चित्रभानु	31	हेमलम्बी	46	परिधावी
2	विभव	17	सुभानु	32	विलंबी	47	प्रमादी
3	शुक्ल	18	तारण	33	विकारी	48	आनन्द
4	प्रमोद	19	पार्थिव	34	शार्वरी	49	राक्षस
5	प्रजापति	20	व्यय	35	प्लव	50	नल
6	अंगिरा	21	सर्वजित्	36	शुभकृत्	51	पिंगल
7	श्रीमुख	22	सर्वधारी	37	शोभन	52	कालयुक्त
8	भाव	23	विरोधी	38	क्रोधी	53	सिद्धार्थी

क्रम	नाम	क्रम	नाम	क्रम	नाम	क्रम	नाम
9	युवा	24	विकृति	39	विश्वावसु	54	रौद्र
10	धाता	25	खर	40	पराभव	55	दुर्मति
11	ईश्वर	26	नन्दन	41	प्लवंग	56	दुदुभि
12	बहुधान्य	27	विजय	42	कीलक	57	रुधिरोद्गारी
13	प्रभाथी	28	जय	43	सौग्य	58	रक्ताक्षी
14	विक्रम	29	मन्मथ	44	साधारण	59	क्रोधन
15	वृष	30	दुमुर्ख	45	विरोधकृत	60	क्षय

जैसे कहा गया है कि सम्वतसर गुरू की गति के अनुसार जाना जाता है। गुरु मध्यगति से जितने समय में एक राशि चलता है उसे सम्वतसर कहते हैं। गुरू के एक भगण में 12 सम्वतसर या 4332.3 सावन दिन होते हैं। एक सम्वतसर में 361.02 सावन दिन होते हैं। यदि स्थूल रूप से सम्वतसर जानना हो तो सम्वत् में 9 जोड़ कर 60 पर भाग देने से शेष सम्वतसर प्राप्त होता है। इसमें एक और जोड़ देने से सम्वतसर का क्रमांश प्राप्त हो जाएगा। जैसे सम्वत् 2055 का सम्वत्सर जानना है तो इस तरह जाना जाएगा।

1. सम्वत् = 2055
2. 9 जोड़ा = 9
   = 2064
3. 2064 को 60 पर भाग दिया।

   = 60|2064

   34–24 शेष

4. शेष 24+ 1 = 25 क्रमांक सम्वतसर। इस तरह क्रमांक 25 सम्वतसर खर है।

ऋतुएं–सूर्य जब विशेष राशियों में आता है तो एक निश्चित ऋतु मानी जाती है। इस तरह ऋतुओं का सीधा सम्बन्ध सूर्य के भ्रमण से है। सायन सूर्य संक्रान्तियां प्रत्येक मास लगभग 21–23 तारीखों को होती है, इसलिए ऋतुओं का परिवर्तन भी इन तारीखों से होता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में 6 ऋतुएं मानी गई हैं। सायन सूर्य संक्रान्तियों के अनुसार 12 मास में 6 ऋतुओं का विवरण इस प्रकार है।

सायन सूर्य की राशि	राशि प्रवेश की सामान्य तारीख अथवा संक्रान्ति	सामान्य चान्द्रमास	ऋतु
मीन–मेष	20 फरवरी	चैत्र–बैशाख	बसन्त
वृष–मिथुन	21 अप्रैल	ज्येष्ठ–अषाढ़	ग्रीष्म
कर्क–सिंह	22 जून	श्रवण–भाद्रपद	वर्षा
कन्या–तुला	23 अगस्त	आश्विन–कार्तिक	शरद
वृश्चिक–धनु	23 अक्तूबर	मार्गशीर्ष–पौष	हेमंत
मकर–कुम्भ	23 दिसम्बर	माघ–फाल्गुन	शिशिर/ शीत

ऋतुओं का सीधा सम्बन्ध उतरायन और दक्षिणायन सूर्य से है यहां दिया गया क्रम उतरी गोलार्द्ध का है। दक्षिणी गोलार्द्ध का क्रम इसके विपरीत होगा। संक्रान्ति की जो तारीखें यहां दी गई हैं वह राशि प्रवेश की लगभग तारीखें हैं। ठीक तारीख का सम्बन्धित वर्ष की ऐफेमरीज से पता लगाया जा सकता है। इसी तरह सूर्य के सायन राश्यंश जानकर किस दिन क्या ऋतु हो सकती है, सरलता से जाना जा सकता है।

ऐफेमरीज में प्रायः निरयन सूर्य के राश्यंश लिखे होते हैं। जिस तारीख की ऋतु जाननी है, ऐफेमरीज के उस तिथि/तारीख के निरयन राश्यंश नोट कर लें। उनमें उस वर्ष अथवा मान का अयनांश जोड़ दें तो सूर्य के सायन राशि अंश प्राप्त हो जाएंगे। इन सायन राशि अंश को नोट कर लें। यहां जो सारणी दी गई है उसके अनुसार देख लें कि सायन राश्यंश के अनुसार कौन सी ऋतु हैं।

उदाहरण–21 दिसम्बर 1999 को ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कौन सी ऋतु होगी। यह जानने के लिए ऐफेमरीज 1999, 21 दिसम्बर के सूर्य के निरयन राश्यंश नोट किए। वह इस प्रकार है।

	8 राशि	5 अंश	3 कला	2 बिकला
अयनांश जोड़ा		23 अंश	50 कला	20 बिकला
तारीख 21 को सायन सूर्य राश्यंश	8 राशि	28 अंश	53 कला	22 बिकला

इस तरह सायन सूर्य की धन राशि 28 अंश 53 कला 22

बिकला प्राप्त हुई। सारणी देखी तो हेमन्त ऋतु प्राप्त हुई. इस तरह हेमन्त ऋतु ज्योतिष शास्त्र के अनुसार होगी जो जन्मपत्री में प्रायः लिखी जाती है। एक अन्य उदाहरण देकर ऋतु स्पष्ट की जाएगी।

उदाहरण—किसी बालक का जन्म 25 मई 1999 को हुआ तो कौन सी ऋतु होनी चाहिए।

25 मई, 1999 निरयन सूर्य	1 राशि	9 अंश	46 कला	13 बिकला
आयनांश जोड़ा 25 मई 1999		23 अंश	49 कला	54 बिकला
25 मई, 1999 को सायन सूर्य राश्यंश	2 राशि	3 अंश	36 कला	07 बिकला

इस तरह मिथुन राशि 3 अंश 36 कला 7 बिकला प्राप्त हुई। सारणी के अनुसार ग्रीष्म ऋतु होगी। इसी तरह ऋतु का ज्ञान बड़ी सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।

अयन क्या है?—अयन का अर्थ सूर्य की गति की दिशा से सम्बन्धित है। सर्यू भचक्र की एक परिक्रमा आमतौर पर 365 दिन 6 घंटे में पूरी कर होता है। इस परिक्रमा के दो भाग उतरायण व दक्षिणायन माने गए हैं। पृथ्वी की धूरी के झुकाव के कारण रवि का कर्क रेखा से दक्षिण की तरफ तथा मकर रेखा से उत्तर की तरफ भ्रमण आरम्भ करना क्रमशः दक्षिणायन व उतरायन होता है। इस तरह सूर्य की कर्क राशि के प्रारम्भ से धनु राशि के अन्त तक भ्रमण करके अर्थात् संक्रमण करने के समय को दक्षिणायन तथा मकर संक्रान्ति से मिथुन संक्रान्ति तक के समय को उतरायण कहा जाता है। इस तरह एक अयन 6 मास के लगभग होता है।

प्रतिवर्ष सायन सूर्य 23 दिसम्बर को मकर राशि में प्रवेश करता है और 21 जून तक भ्रमण करता हुआ मिथुन राशि पर आ जाता है। इस तरह से 23 दिसम्बर से 21 जून तक का समय उतरायण का होता है अर्थात् सायन सूर्य 23 दिसम्बर से 21जून तक उतरायण रहता है। तारीख 22 जून को सायन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है। इस तरह 22 जून से 23 दिसम्बर तक के समय को दक्षिणायन कहते हैं अर्थात् सायन सूर्य 22 जून से 23 दिसम्बर तक दक्षिणायन रहता है। संक्षेप में:—

1. **उतरायण**—मकर संक्रान्ति से शुरु होता है और मिथुन संक्रान्ति की समाप्ति तक जाता है। इसमें दिन क्रम क्रम से बढ़ता है यह 23 दिसम्बर से 21 जून तक का समय है।

2. **दक्षिणायन**—कर्क संक्रान्ति से शुरू होता है और धन संक्रान्ति

की समाप्ति तक जाता है। इसमें रात्रि क्रम–क्रम से बढ़ती है। यह 22 जून से 23 दिसम्बर तक का समय है।

गोलार्द्ध विचार–भू–मध्य रेखा से पृथ्वी के 2 भाग हो जाते हैं। एक भूमध्य रेखा से उत्तर का और दूसरा भूमध्य रेखा से दक्षिण का आधा भाग। भूमध्य रेखा से जो उत्तर का भाग है उसे उत्तरी गोलार्द्ध व जो दक्षिण का भाग है उसे दक्षिणी गोलार्द्ध कहा जाता है। यदि आकाश के दो भागों की इस प्रकार कल्पना की जाए कि ऊपर भाग के मध्य में आकाश का उत्तर ध्रुव हो और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिण ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोलार्द्ध और दूसरे को दक्षिण गोलार्द्ध कहा जाएगा।

सायन, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह तथा कन्या, ये 6 राशियां उत्तरी गोलार्द्ध में है और बाकी 6 राशियां सायन तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ और मीन दक्षिण गोलार्द्ध में है। ध्रुव तारा उत्तर में है, यही वजह है कि यह उत्तरी गोलार्द्ध वालों को दिखाई देता है और दक्षिणी गोलार्द्ध वालों को दिखाई नहीं देता।

3. **जन्म समय**–अभी तक जन्म स्थान और जन्म तिथि अथवा तारीख से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी प्राप्त की है। बेशक यह सब समय की ही इकाइयां हैं परन्तु इन सबका अपना–अपना महत्व है। जन्म तारीख एवं तिथि आदि का सही ज्ञान व निश्चय हो जाने पर भी यदि जन्म समय ठीक–ठीक अथवा सही ज्ञान नहीं है तो कुण्डली बन ही नहीं सकेगी। कुण्डली रचना के लिए सभी बातें महत्वपूर्ण हैं परन्तु समय का सही ज्ञान अति महत्वपूर्ण है। इसलिए अक्षांश, रेखांश व तारीख, तिथि को निश्चित करने के उपरान्त समय निश्चित करना चाहिए।

जैसे कहा गया है कि जन्म समय निश्चित करना अति महत्वपूर्ण है। सबसे अधिक गलती व अशुद्धि समय में ही होती है। ठीक–ठीक जन्म समय जानने के लिए दाई, सहायक नर्स, नर्स अथवा प्रसव के समय प्रसूता के साथ रहने वाली महिलाओं पर निर्भर होना पड़ता है। ग्रामों में तो ठीक–ठीक जन्म समय जानना अति कठिन लगता है। क्योंकि जो दाई आदि प्रसव के समय होती है, उसके पास घड़ी नहीं होती, यदि होती भी है तो वह ठीक–ठीक समय नोट करने की आवश्यकता ही नहीं समझती। यदि वह समय नोट भी कर लेती है तो प्रायः जन्म समय और नोट किए हुए समय में अन्तर होता है। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है। कि जिस घड़ी पर से समय नोट किया गया होता है, वही घड़ी सही नहीं होती अथवा आगे पीछे होती है।

समय का महत्व–ग्रामों में ही नहीं अस्पतालों में भी यही हालत देखी गयी है। नर्स समय कुछ बताती है, रिकार्ड में दर्ज कुछ होता है

और यदि प्रमाण पत्र लिया जाए तो उस पर कुछ और समय होता है। यदि देखा जाए या उनसे उसका कारण पूछा जाए तो उनकी अपनी कठिनाईयां होती हैं। जब अस्पताल में प्रसव होता है तो शंका के घेरे में आ जाता है। हालाकि आजकल के युग में यह साधारण सी बात हो गई है। फिर भी ऐसे हलात में प्रसव होने के कारण डाक्टरों व नर्सों का अधिक ध्यान प्रसुता व शिशु की सुरक्षा पर होता है. अतः बच्चा–जच्चा की ओर अधिक ध्यान होने के कारण इस ओर ध्यान कम जाता है। इस तरह बाद में जब बच्चे से सम्बन्धित विवरण लिखा जाता है। तो अनुमान से लगभाग समय ही लिख दिया जाता है। ऐसे समय से जन्म कुण्डली की रचना अति कठिन तथा भ्रम ही पैदा करती है।

यह भी विवाद का विषय है कि शिशु के जन्म का समय कौन सा हो ? इस सम्बन्ध में भी कई मत है और प्रत्येक मत अपने आप में कई बार सही भी लगता है। जन्म समय कौन सा नोट किया जाए, इस सम्बन्ध में कुछ मत इस तरह हैं।

1. जब शिशु का कोई अंग बाहर दिखे तो वह जन्म समय होता है।

2. जब शिशु पूर्ण रूप से बाहर आ जाए तो वह समय नोट करना चाहिए, वही जन्म समय होगा।

3. जब शिशु बाहर आकर रोना प्रारम्भ करे या कोई भी शब्द करे तो यही जन्म समय मानना चाहिए। अधिक विद्वानों ने इस मत पर ही अधिक जोर दिया है।

4. जब शिशु की नाल काटकर उसे मां से पूर्णतया अलग कर दिया जाता है, वह जन्म समय मानना चाहिए।

यहां जितने भी विकल्प हैं, यदि इनमें से किसी एक को मान भी लिया जाए तो भी कठिनाई ही रहेगी और सही जन्म समय जानना कठिन ही होगा, जब तक प्रसव के समय देख–भाल करने एवं उपस्थित डाक्टर, नर्स व अन्य महिलाएँ जन्म समय की गम्भीरता को नहीं समझती और उचित समय पर सही समय नोट नहीं करती।

बहुत से विद्वान शिशु के आवाज़ किए जाने अथवा रोने के समय को ही जन्म समय मानते हैं। अतः शिशु जब पहली बार आवाज करता अथवा रोता है। तो ये समय ही जन्म समय माना जाना चाहिए। यदि किसी कारणवश शिशु जन्म के उपरान्त शब्द करने अथवा रोने में विलम्ब करे तो नाल काटने के समय को जन्म समय मानना चाहिए। इसका मतलब यह हुआ कि शब्द करने, रोने व नाल काटने में जो भी समय पहले हो, उस समय को सही जन्म समय जानना चाहिए। यदि इस विचार को मान भी लिया जाए तो भी यह विकल्प दुविधा में डालने

वाला है तथा इससे भी सही जन्म समय जानने में कम ही सहायता मिलेगी क्योंकि मत एक होना चाहिए जो सभी को मान्य हो।

जैसे यहां कहां गया है कि रोने, शब्द करने व नाल काटने में जो समय पहले, हो, उसे जन्म समय मानना चाहिए, तो इससे यही पता चलता है कि सबसे सही, उपयुक्त एवं तर्कसंगत जन्म समय वह है जब शिशु का नाल काटा जाता है। यही समय होता है जब बालक एवं माता का परस्पर सम्पर्क टूटता है और शिशु का स्वतंत्र अस्तित्व शुरू होता है। अतः वही समय सही जन्म समय हो सकता है। अधिकतर विद्वान इसी मत का अनुसरण करते हैं तथा इसी मत को सही मानते हैं। अतः वह स्पष्ट हो गया है कि शिशु का जब नाल काटा जाता है। वह ही सही जन्म समय होता है और वह समय ध्यानपूर्वक नोट कर लेना चाहिए, वही सही जन्म समय होगा।

जन्म कुण्डली रचना के लिए ऐसे ही शुद्ध व सही जन्म समय की आवश्यकता होती है शुद्ध एवं सही जन्म समय से ही सही व शुद्ध जन्म कुण्डली का निर्माण करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है। अन्यथा कुण्डली परेशानी व मानसिक तनाव का कारण बन सकती है। उपलब्ध सही जन्म समय को लेकर अन्य प्रक्रियाएं विश्वास के साथ आसानी से की जा सकती हैं।

समय अथवा काल विचार—पृथ्वी अपनी धूरी जितने समय में पश्चिम से पूर्व चक्कर लगाती है, उस समय को एक अहोरात्र कहते हैं। अक्षांश के अनुसार भी प्रत्येक स्थान में दिन छोटा बड़ा होता है।

ग्रीनविच मध्यम समय—इंग्लैण्ड के ग्रीनविच स्थान को प्रधान मध्यान्ह (PRIME MERIDIAN) रेखा मान कर ग्रीनविच से पूरी दुनिया में देशान्तर नापा जाता है और आजकल प्रायः सब नक्शों में देशान्तर इसी के अनुसार बताया जाता है। कोई स्थान ग्रीनविच से पूर्व या पश्चिम में कितने अंश पर है से ज्ञात होता है कि कोई देश पूर्व या पश्चिम में कितनी अंशों की दूरी पर हैं, वही उस देश का देशान्तर होगा। यदि ग्रीनविच से देश पूर्व में होगा तो पूर्व देशान्तर होगा यदि पश्चिम में होगा तो पश्चिम देशान्तर होगा क्योंकि ग्रीनविच को प्रधान मध्यान्ह स्थान होने के कारण शून्य रेखांश मान लिया गाया है। इस तरह ग्रीनविच के मध्यम समय के अनुसार जो समय जाना जाता है वह ग्रीनविच मध्यम समय होता है। इस तरह ग्रीनविच समय से किसी भी देश का समय जानने तथा किसी भी देश से ग्रीनविच का समय जानने के लिए रेखांश को आधार मान कर थोड़ा गणित करके जाना जा सकता है। जैसे भारत का मानक समय अर्थात् भारतीय स्टैण्डर्ड समय देशान्तर $82^{0}-30'$ पर आधारित है। भारत ग्रीनविच से पूर्व में है। इस तरहः—

इस तरह ग्रीनविच में भारत का मानक समय अर्थात् स्टैण्डर्ड समय 5 घंटे 30 मिनट आगे हैं। यदि ग्रीनविच यु.के. में रात्रि के 12 बजे होंगे तो भारत में सुबह के $5^1/_2$ बजे होंगे। यदि यु.के. में दोपहर के 12 बजे होंगे तो भारत की घड़ियों में समय शाम के $5^1/_2$ बजे का होगा।

स्पष्ट एवं दृष्ट समय (APPARENT TIME)—सूर्य को देखकर जो स्पष्ट होता है, वही स्पष्ट अथवा दृष्ट समय होता है। प्राचीन काल में इसी विधि से समय जाना जाता है। इसके लिए धूपघड़ी का उपयोग होता था। जब धूपघड़ी के अनुसार सूर्य सिर पर आ जाता था उस समय वहां 12 बजे का समय अथवा मध्याह्न मान लिया जाता था। धूपघड़ी उस स्थान का समय ज्ञान कराती थी अतः इस समय को स्थानीय स्पष्ट अथवा दृष्ट समय (LOCAL APPARENT TIME) कहा जाता था।

स्थानीय मध्यम समय (LOCAL MEAN TIME)—सूर्य की गति प्रतिदिन एक समान नहीं होती। इस तरह गति एक समान न होने के कारण दिन में अन्तर आ जाता है, यद्यपि दिन—रात मिलाकार चौबीस घंटे होते हैं परन्तु यह जरूरी नहीं कि दिन ठीक बारह घंटे का ही हो। इस तरह प्रतिदिन धूपघड़ी के मध्यान्ह के समय सिर पर नहीं आता है। फिर भी दिन—रात को 24 घंटे का मान लिया है। इसीलिए सूर्य की मध्यम गति मानकर जो प्रायः 59'–8" ली जाती है, इस समान गति से प्रतिदिन ठीक 12 बजे मध्यान्ह होना माना जाता है। इस तरह एक बार मध्यान्ह से दूसरे दिन के मध्यान्ह में फिर आने तक मध्यम मान से 24 घंटे लगते हैं। इसी समय को मध्यम काल कहा जाता है। सारांश यह है कि मध्यम सूर्य के अनुसार माने जाने वाले समय को स्थानीय मध्यम समय कहा जाता है। इस तरह स्थानीय समय व स्थानीय मध्यम समय में भेद हैं। इस भेद अथवा अन्तर को बेलान्तर कहा जाता है। इस लिए लग्न निकालने से पहले बेलान्तर संस्कार भी करना पड़ता है। पृथ्वी की गति, सूर्य की गति के सामंजस्म से पूरे 24 घंटों की न

होकर कुछ कम अथवा नयूनाधिक होती है, उसे बेलान्तर कहा जाता है। अगले पृष्ठों में बेलान्तर विचार दिया गया है और साथ ही बेलान्तर सारणी भी दे दी गयी है।

मानक समय (STANDARD TIME)—देश के काम काज व व्यवहारों में समानता लाने के लिए प्रत्येक देश का अपना मानक समय होता है। इस तरह प्रत्येक देश किसी एक निश्चित स्थान के स्थानीय मध्यम समय को स्टैण्डर्ड समय, मानक समय मान लेता है। उस सटैण्डर्ड समय से देश के अन्य स्थानों का रेखांश के अनुसार स्थानीय समय प्राप्त हो जाता है।

भारतीय मानक समय (I.S.T.) $82^0-30'$ रेखांश पूर्व पर आधारित है तथा यह ग्रीनविच से $5^1/_2$ घंटे आगे है। यहां वह स्मरण रहे कि $82^0-30'$ के स्थान का यह स्थानीय मध्यम समय भी है। भारत में इस मानक समय से किसी स्थान का भी रेखांश जान कर स्थानीय मध्यम समय जाना जा सकता है। यही स्थानीय मध्यम समय लग्न निकालने के लिए महत्वपूर्ण होता है। इस गणित से बचने के लिए मानक समय (घड़ी का समय) को मध्यम समय यहां की जन्म कुण्डली की रचना करनी है जानने के लिए प्रायः ऐफेमरीज में सारणियां दी रहती हैं। यहां भारतीय मानक समय को वहां की कुण्डली रचना करनी है। किस तरह मध्यम समय में परिवर्तित किया जाता है एक उदाहरण देकर समझाया जाता है। ध्यान रहें कि स्थानीय मध्यम समय ही लग्न निकालने के लिए उपयुक्त व उपयोग होता है।

उदाहरण—किसी शिशु का जन्म 10–15 प्रातः चण्डीगढ़ में हुआ। चण्डीगढ़ का अक्षांश रेखांश व समय अन्तर ऐफेमरीज में इस तरह दिया गया है।

चण्डीगढ़ का अक्षांश $30^0-44'$ रेखांश $76^0-52'$ समयस्तर 22–32 है। अब जन्म का समय 10 बजकर 15 मिनट भारतीय मानक समय है अथवा घड़ी का समय है क्योंकि लग्न के लिए तो जन्म स्थान अथवा स्थानीय समय बांछित है तो यह जानने के लिए जो समयान्तर 22 मिनट 32 सैकण्ड दिया है, घटाने से चण्डीगढ़ का स्थानीय समय प्राप्त हो जाएगा जो लग्न के लिए उपयोग किया जाएगा। इस तरह

	घं.	मि.	सैं.
जन्म का मानक समय (I.S.T.) =	10	15	0
समयान्तर घटाया –		22	32
=	9	52	28

इस तरह चण्डीगढ़ का स्थानीय समय 9 बजकर 52 मिनट 28 सैकण्ड प्राप्त हुआ। इस समय का ही उपयोग किया जाएगा।

यदि किसी स्थान का रेखांश ज्ञात हो तो सरल गणित से समयान्तर तुरन्त जाना जा सकता है। मान लो चण्डीगढ़ का समयान्तर जानना है तो वह इस तरह जाना जाएगा।

भारतीय सटैण्डर्ड रेखांश	=	82° – 30'
चण्डीगढ़ का रेखांश	=	76° – 52'
	= (–)	5 – 38

रेखांश घटाने से 5°–38' प्राप्त हुए। नियमानुसार 4 मिनट प्रति रेखांश अनुसार समय घटाया बढ़ाया जाता है। यदि सटैण्डर्ड रेखांश से स्थान पश्चिम में है तो प्रति रेखांश 4 मिनट घटाया जाएगा, और यदि पूर्व में है तो प्रति रेखांश 4 मिनट बढ़ाया अथवा अधिक होगा। इस तरह 5°–38' को 4 से गुणा किया।

5°–38'
× 4

मिनट सैकण्ड

मिनट 20 – $\frac{152}{60}$ = 2 – 32 = 2 मिनट 32 सैकण्ड

= 20+ 2–32=22–32 अर्थात 22 मिनट 32 सैकण्ड। सारणी में भी यही अन्तर लिखा हुआ है। इस तरह यदि किसी भी स्थान का रेखांश का ज्ञान हो तो सटैण्डर्ड रेखांश 82°–30' से अपने स्थान का समयान्तर तुरन्त जाना जा सकता है और अपने स्थान का स्थानीय मध्यम समय प्राप्त किया जा सकता है। किसी भी स्थान का स्थानीय मध्यम समय ग्रीनविच समय से भी थोड़ा गणित करके तुरन्त जाना जा सकता है। यदि चण्डीगढ़ का स्थानीय मध्यम समय अथवा किसी भी स्थान का स्थानीय मध्यम समय जानना हो तो इस तरह सरलता से जाना जा सकता है।

1. ग्रीनविच सटैण्डर्ड रेखांश	0° 0'
2. भारत का सटैण्डर्ड रेखांश पूर्व	82° 30'
3. रेखांश अन्तर	82° 30' घं मिं
	82° 30'×4=5–30
प्रति अंश 4 मिनट	
समय प्राप्त हुआ	5 घंटे 30 मिनट

4. यह 82°–30' के स्थान के लिए स्थानीय मध्यम समय है तथा भारत के लिए भारतीय मानक समय है।

1. ग्रीनविच सटैण्डर्ड रेखांश = $0^\circ-0'$
2. चण्डीगढ़ का रेखांश पूर्व = $76^\circ-52'$
3. रेखांश अन्तर = $76^\circ-52'$
4. प्रति अंश 4 मिनट से समय प्राप्त हुआ = 76–52×4=5घंटे 7 मिनट 28 सैं।

ग्रीनविच से $82^\circ-30'$ पर स्थानीय समय 5 घंटे 30 मिनट हैं, यही भारत अथवा समस्त भारत के लिए मानक समय भी हैं अतः चण्डीगढ़ का ग्रीनविच से स्थानीय समय 5 घंटे 7 मिनट 28 सैं है। यदि दोनों का अन्तर देखें तो वही होगा जो भारतीय मानक समय से चण्डीगढ़ का था जैसेः—

		घं.	मि.	सैं.
1. मानक समय व स्थानीय समय	=	5	30	0
2. चण्डीगढ़ का स्थानीय समय	=	5	7	28

3. अन्तर 22 मिनट 32 सैं.। इस तरह भी वही अन्तर प्राप्त हुआ है।

यदि चण्डीगढ़ के शीशु के जन्म समय 10–15 I.S.T. को ग्रीनविच समय में परिवर्तन करके, उसमें जो ग्रीनविच से चण्डीगढ़ का सीधा मध्यम प्राप्त किया है जोड़ने से तुरन्त चण्डीगढ़ में उस शिशु की जन्म कुण्डली रचना के लिए स्थानीय मध्यम समय प्राप्त हो जाएगा।

1. जन्म समय I.S.T. 10 घंटे 15 मिनट प्रातः काल।

2. ग्रीनविच समय 10–15 (–) 5–30 क्योंकि ग्रीनविच से भारत का समय आगे है अतः अब घटाएंगे तो फल प्राप्त हुआ 4 घंटे 45 मिनट। जब चण्डीगढ़ में 10–15 प्रातः I.S.T. था तो ग्रीनविच में समय 4–45 था। अब इसमें चण्डीगढ़ का जो स्थानीय समय प्राप्त किया था जोड़ा तो जन्म समय चण्डीगढ़ के लिए स्थानीय मध्यम समय प्राप्त हुआ 4–45+5–7–28=9–52–28 प्राप्त हुआ। तुरन्त स्थानीय मध्यम समय जानने के लिए इस पुस्तक के आखिरी भाग में सारणी दी गयी है। जिससे किसी भी स्थान का समयान्तर जाना जा सकता है तथा तुरन्त मानक समय से स्थानीय मध्यम बनाया जा सकता है जिसका उपयोग लग्न निकालने के लिए किया जाता है। इसलिए ध्यान रहें कि सर्वप्रथम मानक समय से स्थानीय मध्यम समय बनाना पड़ता है।

संक्षेप में भारत में स्थित $82^\circ-30'$ से स्थान जो ग्रीनविच से पूर्व में हैं के स्थानीय मध्यम समय को समस्त भारत में माना जाता है।

यही समय पूरे भारत में है। यह घड़ीयों का समय है। इसके अनुसार पूरे भारत में घड़ी के अनुसार एक ही सटैण्डर्ड I.S.T. समय होगा। आज के युग में सभी काम–काज, व्यवहार इसी समय से चलाए जाते हैं ताकि किसी तरह की भ्रांति न हो। आजकल सूर्यास्त, बालक के जन्म का समय , ग्रह स्थिति सभी भारतीय मानक समय में होता है। प्रायः ऐफेमरीज में भी आमतौर पर यही समय दिया रहता है। जन्म समय यदि भारतीय मानक समय (I.S.T.) में होगा अथवा घड़ी के अनुसार होगा तो लग्न आदि जानने व जन्मपत्री रचना के लिए, इससे स्थानीय मध्यम समय जाना जा सकता है। इसलिए अंर्थात् भारतीय मानक समय को स्थानीय मध्यम में परिवर्तन करने का अभ्यास करना चाहिए। यहां समयान्तर की एक और उदाहरण दी जाती है।

उदाहरण–दिल्ली का पूर्व रेखांश 77°–13' है। समान्तर क्या हो सकता है। यह इस तरह जाना जाएगा

भारतीय सटैण्डर्ड रेखांश	=		82° –30'
दिल्ली का रेखांश	=	(–)	77 –13'
	=		5 –17
	=		5–17×4=21 मिनट 8 सैं.

क्योंकि दिल्ली भारतीय स्टैण्डर्ड रेखांश से पश्चिम है, इसलिए –21 मिनट 8 सैकण्ड होगा। यह ध्यान रखा जाए कि यदि भारतीय स्टैण्डर्ड रेखांश में जिस स्थान का अन्तर जानना है पश्चिम में स्थित है तो 4 मिनट प्रति रेखांश समय कम तथा यदि पूर्व में स्थित हो तो प्रति रेखांश 4 मिनट समय अधिक होगा।

साम्पातिक काल अथवा साइडरियल टाइम (SIDEREAL TIME)– इस समय को कई नामों से जाना जाता है। ऐफेमरीज में आमतौर पर साइडरियल टाइम 12 बजे का और कई में $5^1/_2$ बजे का दिया रहता है और लिखा होता है SIDEREAL TIME। इसे विषुव काल या नक्षत्र काल भी कहा जाता है। इसी के आधार पर मध्यान्ह सौर दिन 24 घंटे का माना जाता है। एक मध्यम दिन और एक नक्षत्र दिन से 3 मिनट 56 सैकण्ड बड़ा होता हैं। लग्न निकालने में सामपातिक काल की अति महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

हमारी घड़ियां वास्तविक समय दर्शाती हैं जो देश का मानक समय होता है। यह मानक समय जैसे पहले बताया जा चुका है उस देश के किसी विशेष स्थान पर निर्धारित किया हुआ होता है और उसी के अनुसार उस देश में मानक समय अथवा घड़ियों का समय होता है। भारत में मानक समय ग्रीनविच के पूर्व में 82°–30' के रेखांश पर निर्धारित है और इस तरह यह 5 घंटे 30 मिनट का अन्तर है। पूर्व उदाहरण को पुनः लेते हैं। चण्डीगढ़ का रेखांश 76 अंश 52 कला है और भारतीय मानक समय रेखांश 82 अंश 30 कला पर आधारित

है। दोनों का अन्तर 5 अंश 38 कला हुआ। अब 5 अँश 38 कला को समय में बदलने परः–

5 अंश–38 कला ×4 =22 मिनट 32 सैकण्ड अर्थात् भारतीय मानक समय से चण्डीगढ़ का 22 मिनट 32 सैकण्ड का अन्तर है। पश्चिम होने से यह अन्तर ऋण होगा। बालक का जन्म 10–15 I.S.T. पर हुआ था अतः

		घं.	मि.	सै.
घड़ी का समय	=	10	15	0
चण्डीगढ़ का स्थानीय समय (–)	=		22	32
	=	9	52	28 होगा

साम्पातिक अथवा साइडरियल टाइम या नक्षत्र समय को एक काल्पनिक वास्तविक घड़ी की सहायता से इस कारण आंकते हैं कि भ्रमण करते ग्रह अथवा घूमते हुए ग्रहों के बीच घूमती पृथ्वी की वास्तविक स्थान जानने से ही सही लग्न आदि सही ढंग से निकाले जा सकते हैं। साधारण घड़ी और नाक्षत्र घड़ी का समय प्रत्येक वर्ष 21 सितम्बर को निश्चित समय पर ठीक करके रखा जाता है। नाक्षत्र घड़ी प्रतिदिन औसतन 4 मिनट आगे चलती है और अगले वर्ष 21 सितम्बर को दोनों घड़ियां उसी निश्चित समय 12 बजे या 5.30 बजे ठीक वही समय दिखाती है।

संक्षेप में पृथ्वी अपनी धूरी पर जितने समय में एक परिक्रमा पूरी करती है उस समय को साम्पातिक काल कहते हैं। यह तो आप अब तक जान ही गए होंगे कि यह समय दिन–रात के मान के अन्तर के कारण सदैव ठीक 24 घंटे नहीं होता है। इसकी ठीक–ठीक जानकारी साम्पातिक काल से मिलती है। पृथ्वी की गति एक अंश के स्थान बदलने पर 3–40 से 4–22 तक आगे पीछे रहती है। साधारण घड़ी जिसका हम प्रतिदिन उपयोग करते हैं की तरह स्थायी नक्षत्र घड़ी का निर्माण तो किया नहीं जा सकता क्योंकि पृथ्वी की गति के कारण प्रतिदिन आगे पीछे करनी पड़ेगी परन्तु इसको प्रतिदिन 12 बजे दोपहर या सुबह 5.30 बजे या किसी और अन्य समय के लिए तो सारणीबद्ध किया जा सकता है। इस तरह यह समय प्रायः पचांग व ऐफेमरीज में दिया गया रहता है। जो साम्पातिक समय ऐफेमरीज में किसी विशेष समय के लिए दिया होता है उसको जन्म कालिक स्थानीय साम्पातिक काल बना कर लग्न आदि जानने के लिए उपयोग करना होता है। जैसे बताया गया है। ऐफेमरीज में प्रतिदिन का साम्पातिक काल दिया होता है। जो उस दिन का 12 बजे का मध्यम साम्पातिक काल (MEAN SIDEREAL TIME) होता है। उससे जन्म कालिक

स्थानीय साम्पातिक काल जाना जाता है। यह सदैव याद रखें कि साम्पातिक काल निकालने से पूर्व पहले स्थानीय मध्यम समय निकाला जाता है। इसी लिए बार–बार कहा गया है कि लग्न निकालने के लिए स्थानीय समय अति महत्वपूर्ण होता है। अतः स्थानीय मध्यम समय सही होना अति जरूरी है।

जैसे बताया गया है कि पंचांगों में साम्पातिक काल प्रायः 12 बजे दोपहर या 5.30 सुबह का दिया होता है। अंग्रेजी पंचांगों में तो आमतौर पर होता ही है परन्तु बहुत से अन्य पंचांगों में यह नहीं होता। यदि पंचांग में साम्पातिक काल न दिया हो तो यहां दी गई विधि से जाना जा सकता है। एक सारणी भी दी है। जिसके द्वारा किसी भी तारीख का साम्पातिक काल जानने में सहायता मिलेगी क्योंकि ऐफेमरीज में इसको अति महत्वपूर्ण समझा गया है।

भूमध्य रेखा (EQUATOR) या विषुववृत के 360 अंशों को यदि 24 घंटों में बांटा जाये तो बांटने पर 1 घंटा बराबर 15 अंश या 4 मिनट बराबर आया। इस तरह विषुवांश को अंश कला में न लिख कर उनके मिनट, घंटे का बना कर प्रति दिन पंचांग में लिख देते हैं और पंचांग या ऐफेमरीज में प्रतिदिन किसी विशेष समय अर्थात् दोपहर 12 बजे या 5.30 बजे का वही नाक्षत्र काल घंटा, मिनटों, सैकण्डों में दिया होता है। यदि इस दिए काल को अंशों में परिवर्तित कर दिया जाए तो सूर्य का होरात्मक विषुबांश होगा।

जैसे पहले बताया जा चुका है कि होरात्मक नाक्षत्र काल प्रतिदिन (SIDEREAL TIME) आमतौर पर लगभग 4 मिनट बढ़ता है और 22 मार्च को नाक्षत्र काल शुन्य होता है। यदि ऐफेमरीज में साम्पातिक काल न दिया हो और साम्पातिक काल जानना हो तो यहां दी गई विधि द्वारा जाना जा सकता है। यह ध्यान रखें कि यहां दी गई विधि यदि साम्पातिक काल पंचांग व ऐफेमरीज में उपलब्ध न हो, तभी उपयोग करनी चाहिए क्योंकि यह स्थूल विधि ही है। यदि ठीक–ठीक और सूक्ष्म रूप से नाक्षत्र काल अथवा साम्पातिक काल किसी तारीख का देखना हो तो उस वर्ष एवं तारीख के पंचांग या ऐफेमरीज से देखना चाहिए। अंग्रेजी पंचांगों में तो साम्पातिक काल (SIDEREAL TIME) प्रायः 12 बजे दोपहर का दिया होता है। यदि किसी तरह भी साम्पातिक काल पंचांग से प्राप्त न हो तो ऐसी पुरानी अंग्रेजी ऐफेमरीज से भी काम लिया जा सकता है। क्योंकि नक्षत्र काल में प्रत्येक वर्ष किसी तारीख व मास को कोई विशेष अन्तर नही होता। अतः किसी भी पुराने पंचांग या जिस भी पंचांग में जिस महीने तारीख का साम्पातिक काल चाहिए उसी पंचांग से लेकर आगे की गणना की जा सकती है। फिर भी नक्षत्र काल जानने की विधि यहां दी जा रही है।

नक्षत्र काल जानने की विधि

सारिणी

दोपहर 12 बजे का साम्पातिक काल	मास	तारीख	सं: काल घंटा में	मास	तारीख	सं: काल घंटा में
दोपहर 12 बजे का साम्पातिक काल	जनवरी	5	19	जुलाई	7	7
	जनवरी	20	20	जुलाई	22	8
	फरवरी	4	21	अगस्त	6	9
	फरवरी	20	22	अगस्त	21	10
	मार्च	7	23	सितम्बर	5	11
	मार्च	22	24/0	सितम्बर	20	12
	अप्रैल	6	1	अक्तूबर	6	13
	अप्रैल	21	2	अक्तूबर	21	14
	मई	7	3	नबम्बर	5	15
	मई	22	4	नबम्बर	20	16
	जून	6	5	दिसम्बर	6	17
	जून	21	6	दिसम्बर	21	18

मान लो दोपहर 4 सितम्बर का साम्पातिक काल जानना है। यह इस तरह जाना जाएगा।

1. सारणी में 21 अगस्त का सं: काल = 10 घंटे 0 मिनट
2. 21 अगस्त से 4 सितम्बर तक का समय=14 दिन = 14 दिन
3. प्रति दिन 4 मिनट में हिसाब से 14 दिन का समय 14×4 = 0 घंटे 56 मिनट

4\. 21 अगस्त के 12 बजे के स: काल में 14 दिन के समय का अन्तर = 10 घंटे 0 मिनट
जोड़ा + 0 घंटे 56 मिनट

= 10 घंटे 56 मिनट

इस तरह 4 सितम्बर को 12 बजे दोपहर सम्पातिक काल 10 घंटे 56 मिनट प्राप्त हुआ। सूक्ष्म सम्पातिक काल अपने वर्ष, मास, तारीख का, ऐफेमरीज से लेना चाहिए।

जैसे पहले कहा गया है कि आजकल प्रायः सम्पातिक काल ही लग्न आदि जानने के लिए उपयोग होता है। इससे लग्न निकालना सरल व शुद्ध होता है। सम्पातिक काल द्वारा इष्टकाल जानने अथवा गणना करने के लिए सूर्योदय समय की आवश्यकता नहीं पड़ती जो सदैव तथा प्रत्येक हालत में भिन्न पाया जाता है तथा पूर्णतयः शुद्ध सूर्योदय जानने में अति कठिनाई होती है। सम्पातिक काल समय ऐफेमरीज से लेकर, जन्म समय को संशोधित करके जन्म कालीन सम्पातिक काल जान कर इष्ट काल प्राप्त हो जाता है जैसे सूर्योदय से जन्म समय तक के लिए इष्ट काल बन जाता है इसी तरह परन्तु शुद्ध इष्ट काल बन जाता है। इसे लग्न निकालने तथा अन्य भाव स्पष्ट करने में सरलता से उपयोग किया जा सकता है।

मानक समय हो या मध्यन समय या फिर स्थानीय इष्ट समय इनको परस्पर एक दूसरे में बदला जा सकता है तथा इसके लिए बेलान्तर व रेखांश संस्कार करने की जरूरत पड़ती है। स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय समय बनाने के लिए सर्वप्रथम स्थानीय मध्यम समय बनाया जाता है और उसके पश्चात् स्थानीय समय इसी तरह स्थानीय समय से स्टैण्डर्ड समय बनाने के लिए सर्वप्रथम स्थानीय मध्यम समय निकाला जाता है और उसके पश्चात् स्थानीय मध्यम समय से स्टैण्डर्ड समय बनाया जाता है।

सूर्योदय, सूर्यास्त विचार एवं गणना का आधार

भारत में लग्न निकालने के लिए मूल रूप से सूर्योदय को ही आधार माना गया है। सूर्योदय को लेकर प्रत्येक गणना की जाती है। सूर्योदय विभिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न होता है। प्रायः पंचांगों में भिन्न–भिन्न स्थानों पर अक्षांश वे रेखांश के अनुसार किस समय सूर्योदय होगा दिया रहता है। प्रत्येक पंचांग में भिन्न–भिन्न अक्षांश रेखांश पर सूर्योदय, सूर्योस्त आदि सारणियां दी रहती हैं। पंचांग भी जिस स्थान अथवा जिस अक्षांश, रेखांश की आधार मान कर बनाया

जाता है, उसका भी सूर्योदय सूर्योस्त पंचांग में दिया होता है। यदि बालक का जन्म इस अक्षांश रेखांश का है या अति नजदीक का है तो वही सूर्योदय, सूर्योस्त लिया जा सकता है। तथा उसी से लग्न आदि निकाला जा सकता है। यदि ऐसा नहीं हो तो अपने यानि बालक के जन्म स्थान के अक्षांश, रेखांश के अनुसार सूर्योदय, सूर्योस्त जानना पड़ता है। सूर्योदय, सूर्योस्त जानकर ही लग्न निकाला जा सकता है। अतः पंचांग पर से जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री रचना के लिए सूर्योदय, सूर्योस्त जानना अनिवार्य है तभी शुद्ध जन्मपत्री की रचना की जा सकेगी। इस तरह सूर्योदय के आधार पर लग्न जानने, जन्म कुण्डली बनाने अथवा जन्मपत्री रचना के कुछ तथ्यों अथवा अनिवार्य आधार ज्ञात होना अति आवश्यक है। अगले कुछ पृष्ठों में यह जानकारी देने के प्रयास किया जाएगा। पाठकों को पुनः स्मरण कराया जाता है। कि साम्पातिक काल विधि द्वारा लग्न जानने के लिए सूर्योस्त आदि जानने की आवश्यकता नहीं पड़ती और सम्पातिक काल ज्ञात करके ही शुद्ध और तुरन्त लग्न निकाला जा सकता है। आजकल भी जन्मपत्री की रचना अथवा सूर्योदय को आधार मान कर इष्ट काल बनाया जाता है, अतः इस सम्बन्ध में तथा गणना के इन आधारों पर भी विचार करना अति आवश्यक है। सर्वप्रथम यहां उतरी अक्षांश की सूर्योदय सारणी दी जा रही है ताकि आप किसी भी शहर/नगर का सूर्योदय जान सकें।

उतरी अक्षांश की सूर्योदय बोधक (स्थानीय समय) सारणी (क)

अक्षांश		0°		10°		15°		20°		25°		30°		35°		40°		45°		50°	
मास	तारीख	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं	घं	मिं
जनवरी	1	5	59	6	16	6	26	6	35	6	45	6	56	7	08	7	22	7	38	7	59
	11	6	04	6	20	6	29	6	38	6	48	6	57	7	09	7	22	7	37	7	56
	21	6	07	6	22	6	30	6	38	6	47	6	56	7	06	7	18	7	32	7	48
फरवरी	1	6	10	6	23	6	29	6	36	6	44	6	51	6	59	7	09	7	21	7	35
	11	6	11	6	21	6	26	6	32	6	38	6	43	6	51	6	58	7	07	7	18
	21	6	10	6	18	6	22	6	26	6	30	6	34	6	40	6	46	6	53	7	01
मार्च	1	6	09	6	15	6	18	6	20	6	24	6	27	6	31	6	35	6	39	6	45
	11	6	07	6	10	6	11	6	13	6	15	6	16	6	17	6	19	6	21	6	23
	21	6	04	6	04	6	04	6	04	6	04	6	03	6	03	6	03	6	02	6	02
अप्रैल	1	6	00	5	57	5	56	5	54	5	52	5	49	5	47	5	44	5	42	5	38
	11	5	58	5	52	5	49	5	46	5	43	5	39	5	35	5	30	5	24	5	17
	21	5	55	5	46	5	43	5	37	5	32	5	27	5	21	5	15	5	06	4	57
मई	1	5	54	5	43	5	38	5	32	5	25	5	18	5	10	5	01	4	50	4	38
	11	5	53	5	40	5	33	5	25	5	17	5	09	5	00	4	49	4	36	4	21
	21	5	53	5	38	5	30	5	22	5	13	5	04	4	53	4	40	4	25	4	07

जून	1	5 54	5 38	5 30	5 20	5 10	4 59	4 47	4 33	4 17	3 56
	11	5 56	5 38	5 30	5 20	5 09	4 58	4 45	4 30	4 12	3 51
	21	5 58	5 40	5 30	5 21	5 10	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50
जुलाई	1	6 00	5 42	5 33	5 24	5 13	5 02	4 59	4 34	4 16	3 54
	11	6 03	5 45	5 36	5 27	5 17	5 06	4 54	4 40	4 23	4 02
	21	6 03	5 47	5 39	5 31	5 22	5 12	5 00	4 47	4 32	4 13
अगस्त	1	6 03	5 49	5 42	5 35	5 26	5 18	5 09	4 58	4 45	4 29
	11	6 02	5 51	5 46	5 39	5 31	5 25	5 16	5 07	4 56	4 42
	21	6 00	5 51	5 46	5 41	5 35	5 30	5 24	5 17	5 08	4 57
सितम्बर	1	5 57	5 51	5 48	5 44	5 40	5 36	5 32	5 27	5 21	5 14
	11	5 44	5 50	5 48	5 46	5 44	5 42	5 39	5 36	5 32	5 29
	21	5 50	5 49	5 49	5 48	5 48	5 47	5 46	5 46	5 45	5 44
अक्तूबर	1	5 47	5 49	5 50	5 50	5 52	5 53	5 54	5 56	5 57	5 59
	11	5 44	5 48	5 50	5 53	5 56	5 59	6 02	6 06	6 10	6 14
	21	5 42	5 49	5 53	5 57	6 01	6 05	6 10	6 16	6 23	6 31
नवम्बर	1	5 40	5 50	5 55	6 01	6 07	6 14	6 21	6 28	6 38	6 44
	11	5 41	5 53	5 59	6 06	6 14	6 21	6 30	6 40	6 51	7 02
	21	5 42	5 57	6 05	6 12	6 20	6 30	6 40	6 51	7 05	7 22
दिसम्बर	1	5 46	6 02	6 10	6 19	6 28	6 38	6 49	7 02	7 18	7 36
	11	5 49	6 06	6 15	6 24	6 34	6 46	6 58	7 11	7 28	7 48
	21	5 55	6 12	6 21	6 31	6 40	6 52	7 04	7 19	7 35	7 56

अक्षांश के प्रत्येक अंश के लिए परिवर्तन सारणी (ख)

परिवर्तन प्रत्येक 10 अंश या दिनादि के लिए	अंश या दिन												
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	15'	30'	45'
मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट	मिनट
1	0.1	0.2	0.3	0.4	0.5	0.6	0.7	0.8	0.9	1.0	--	--	--
2	0.2	0.4	0.6	0.8	1.0	1.2	1.4	1.6	1.8	2.0	--	--	--
3	0.3	0.6	0.9	1.2	1.5	1.8	2.1	2.4	2.7	3.0	--	--	--
4	0.4	0.8	1.2	1.6	2.0	2.4	2.8	3.2	3.6	4.0	--	--	--
5	0.5	1.0	1.5	2.0	2.5	3.0	3.5	4.0	4.5	5.2	0.1	0.3	0.4
6	0.6	1.2	1.8	2.4	3.0	3.6	4.2	4.8	5.4	6.0	0.2	0.3	0.5
7	0.7	1.4	2.5	2.8	3.5	4.2	4.9	5.6	6.3	7.0	0.2	0.4	0.5
8	0.8	1.6	2.4	3.2	4.0	4.8	5.6	6.4	7.2	8.0	0.2	0.4	0.6
9	0.9	1.8	2.7	3.6	4.5	5.4	6.3	7.2	8.1	9.0	0.2	0.5	0.7
10	1.0	2.0	3.0	4.0	5.0	6.0	7.0	8.0	9.0	10.0	0.3	0.5	0.8
11	1.1	2.2	3.3	4.4	5.5	6.6	7.7	8.8	9.9	11.0	0.3	0.6	0.8
12	1.2	2.4	3.6	4.8	6.0	7.2	8.4	9.6	10.8	12.0	0.3	0.6	0.9
13	1.3	2.6	3.9	5.2	6.5	7.8	9.1	10.4	11.7	13.0	0.3	0.7	1.0
14	1.4	2.8	4.2	5.6	7.0	8.4	9.8	11.2	12.6	14.0	0.4	0.7	1.1
15	1.5	3.0	4.5	6.0	7.5	9.0	10.5	12.0	13.5	15.0	0.4	0.8	1.1

उदाहरण—यदि किसी शहर या नगर का अक्षांश ज्ञात हो तो सारणी (क) एवं (ख) की सहायता है सूर्योदय जाना जा सकता है। जैसे चण्डीगढ़ का अक्षांश 30 अंश 44 कला है, और 5 जून–2000 का सूर्योदय स्थानीय जानना है। चण्डीगढ़ का अक्षांश 30°–44, सारणी में दिए अक्षांश 30 से केवल 44 कला अधिक है और अक्षांश 30° व 40° के भीतर आता है। सारणी में सूर्योदय दिनांक 1 और 11 जून का दिया गया है और हमने 5 जून का जानना है। यह उदाहरण समझने के लिए दी गयी है, हालांकि 11 दिन में अन्तर केवल एक मिनट का पड़ता है और दिया गया समय ही स्थानीय समय लिया जा सकता है।

(क)

		घंटे	मिनट
1. 1 जून की 30 अंश उत्तर पर सूर्योदय	=	4	59
2. 1 जून को 40 अंश उत्तर पर सूर्योदय	=	4	33
3. समयान्तर दोनों का घटा	=	0	26
4. चण्डीगढ़ का अक्षांश 30°–44' है और दिये गए अक्षांश 30° से 44 कला अधिक है, अतः 10 अंश के लिए 26 मिनट घटा तो 44 कला के लिए कितना? सारणी (ख) से	=	1.9 मिनट	
5. अतः 30 अंश 44 कला का सूर्योदय	=	4 घंटे	59 मिनट
	= (–)		1.9 मिनट
	=	4 घंटे	57.1मि.
		4 घंटे	57मि., लिए

(ख)

1. 11 जून को 30 अंश उत्तर का सूर्योदय	=	4	58
2. 11 जून को 40 अंश उत्तर का सूर्योदय	=	4	30
अन्तर (–)	=	0	28 मिनट

3. 10 अंश के लिए 28 तो 44 कला
के लिए सारणी (ख) से = 2.1 मिनट
4. 30 अंश 44 कला
का सूर्योदय = 4 58
(–) 2.1
= 4 55.9
= 4 56 लिया
5. 1 जून को चण्डीगढ़
30^0–44 का सूर्योदय = 4 57
6. 11 जून को चण्डीगढ़
30^0–44 का सूर्योदय = 4 56
7. अन्तर ऋणात्मक = 0 1 मिनट
8. 10 दिन में 1 मिनट तो
4 दिन में 5 जून का जानने
के लिए सारणी (ख) = 0.4 मिनट
9. 1 जून का चण्डीगढ़ का
सूर्योदय में से 4 दिन = 4 57
का संशोधन किया (–) 0.4
= 4 56.6
= 4 57 लिया

अतः चण्डीगढ़ में दिनांक 5 जून 2000 को स्थानीय सूर्योदय 4 घंटे 57 मिनट पर होगा। यदि चण्डीगढ़ में सूर्योदय का भारतीय मानक समय (I.S.T.) जानना हो तो 22.5 मिनट अर्थात् जो स्टैंडर्ड अन्तर 22 मिनट 32 है ऋण होने से जोड़नें पर सूर्योदय का I.S.T. प्राप्त हो जाएगा जैसे = 4 57
= + 22.5
= 5 – 19.5
= 5 – 20 लिया

5 जून को चण्डीगढ़ में 5 घंटा 20 मिनट पर सूर्योदय होगा। यह सूर्योदय हम देख सकते हैं। जो आप व्यवहार एवं कारोबार के लिए उपर्युक्त होता है। खगोल–शास्त्रीय अथवा ज्योतिष सम्बन्धी गणना के लिए सूर्योदय में 3.5 मिनट जोड़ने व सूर्यास्त मं 3.5 घटाने से I.S.T. प्राप्त होगा। जैसे 5–20+3.5 मिनट = 5–23.5 मिनट अर्थात् चण्डीगढ़ में सूर्योदय I.S.T. 5 घंटे 24 मिनट पर दिनांक 5 जून 2000 को होगा। इससे लग्नादि जानना चाहिए।

गणना के आधार–अगले मुख्य आधार जानने से पहले सायन

और निरयन के सम्बन्ध में जान लेना जरूरी है क्योंकि इसका अधिकतर उपयोग एवं उल्लेख आता है। राशि और ग्रह आदि दो प्रकार के हैं। एक सायन और दूसरा निरयन। भारत में प्रायः निरयन पद्धति का ही उपयोग होता है और पाश्चात्य मत सायन पद्धति का प्रायः उपयोग करता है। सायन में राशि ग्रह अयन सहित होते हैं और निरयन में राशि ग्रह आदि अयन रहित होते हैं। इस तरह सारांश में कहा जा सकता है। कि

सायन = अयन सहित राशि ग्रह आदि।

निरयन = अयन रहित राशि ग्रह आदि।

जो पद्धति अयन सहित राशि ग्रह आदि को लेकर गणना करती हैं उसे सायन पद्धति कहा जाता है। वह इसी को मानते हैं।

जो पद्धति अयन रहित राशि ग्रह आदि को लेकर गणना करते हैं उसे निरयन पद्धित कहा जाता है.

अतः सायन और निरयन में अयन (Procession) ही भेद है जो एक दूसरी को अलग करता है। अतः अयन को जानना अति जरूरी है।

अयन क्या है?—नाड़ीवृत और क्रान्तिवृत एक दूसरे को जगह—जगह काटते हैं इन्हें सम्पाताबिन्दु कहा जाता है अथवा यह EQUINOCTICAL POINTS कहलाते हैं। इनमें एक शरद सम्पात और दूसरा बसंत सम्पात (AUTUMNAL व VERNAL) है। इन्हीं दोनों बिन्दुओं को अयन कहा जाता है। इन्हीं दोनों बिदुओं पर सूर्य आने से दिन रात बराबर होता है। जिस प्रकार राहू केतू चलते हैं, इन सम्पात बिन्दुओं की भी ऐसी चाल होती है अर्थात् यह वक्र गति से अथवा उल्टे चलते हैं। पहले बिन्दु बसन्त सम्पात से दूसरा बिन्दु जो 180 अंश की दूरी पर होता है शरद सम्पात बिन्दु होता है।

सम्पात बिन्दु की पूर्व स्थिति रेवती नक्षत्र से मानी गयी है परन्तु भचक्र अथवा राशिचक्र में सम्पात बिन्दु मेष राशि के पहले अंश से माना गया है। सम्पात बिन्दु की सालाना गति होती है और इसी वार्षिक गति के कारण इसे गति अयन चलन कहा जाता है। यहां इसका उपयोग होता है उसे सायन (MOVEABLE ZODIAC) कहते हैं। निरयन अर्थात् अयन रहित में स्थिर मेष के पहले अंश से यह सम्पात बिन्दु शुरू होता माना जाता है और इसमें अयन का उपयोग नहीं होता अतः इसे निरयन अथवा (FIXED ZODIAC) कहा जाता है।

अयनांश—इस तरह अयनांश अर्थात् अयन के अंश भारतीय ज्योतिष के अनुसार माना हुआ प्रथम बिन्दु और शरद सम्पात के बीच जी अन्तर है वह निश्चित बिन्दु से नापा जाता है, उसे ही अयनांश कहा जाता है।

जैसे बताया गया है कि निरयन में स्थिर मेष के पहले अंश से यह

सम्पात बिन्दु प्रारम्भ होता है और इससे अयन का उपयोग नहीं होता। इसी सम्पात की गति को अयनांश (PROCESSION) कहते हैं। इस सम्पात का पूरा चक्र लगभग 26000 वर्ष में पूरा होता माना गया है। इसलिए इसकी गति 72 वर्षों में एक अंश हुई। इस तरह एक वर्ष में लगभग 50 बिकला अयन की गति हुई। इस तरह जो राशि ग्रह अयनांश सहित होते हैं वह चलित राशि ग्रह या सायन राशि ग्रह या फिर सायन मत या सायन पद्धति कहलाती है। अयनांश रहित राशि ग्रह, स्थिर ग्रह या निरयन ग्रह या निरयन मत अथवा पद्धति कहलाती है।

सायन मत पाश्चात्य में भविष्य कथन के लिए उपयोग होता है और भारत में निरयन मत का उपयोग किया जाता है। ग्रह में किसी वर्ष का अयनांश जोड़ कर निरयन से सायन बनाया जा सकता है और सायन में से अयनांश निकालकर उसे निरयन बनाकर उपयोग किया जा सकता है।

अयनांश का उपयोग प्रायः जन्म कुण्डली रचना हेतु आवश्यक है। अतः इसकी जानकारी अवश्य होनी चाहिए। भारत में कई अयनांश प्रचलित है जो एक दूसरे से भिन्न हैं। कौन सा सही है या कौन सा अधिक सही है का निर्णय तो जन्मपत्री के उपरान्त फलादेश ही करेगा। अतः जो अयनांश सही फलादेश देता है। वही उपयोग करना चाहिए। पंचांग या एफेमेरीज में प्रायः अयनांश प्रति वर्ष का, मास व दिन का होता है, उसका उपयोग बिना झिझक किया जा सकता है। क्योंकि अयनांश और अन्य गणित की प्रक्रिया बड़ी जटिल है और कहीं भी गलती की सम्भावना हो सकती है परन्तु ध्यान रहे पंचांग या एफेमेरीज में अयनांश या अन्य जानकारी विधि द्वारा जांच अवश्य लेनी चाहिए। जाँच तभी हो सकती है जब विधि की जानकारी होगी अतः यहां अयनांश व जन्मपत्री के अन्य आधारों की चर्चा करेंगे।

अयनांश जानने की विधि। अयनांश जानने की कई विधियां है। यहां एक ही सरल विधि बताई जा रही है। शाक सम्बत् 1922 का अयनांश जानना है। इस विधि का आधार शाके 444 से है। शाके 444 में रेवती नक्षत्र अथवा रेवती का तारा सम्पात् बिन्दु पर था। उसी को आधार बना कर यहां अयनांश जानने की विधि दी है।

इस विधि द्वारा जिस भी वर्ष का अयनांश जानना हो, उस वर्ष के शाका से 444 घटाने चाहिए। इस तरह घटाने पर जो बाकी बचे, वही अयनांश की कला आदि होगी और वह उस वर्ष का अयनांश होगा। जो कलाएं आदि प्राप्त हो उनके अंश आदि बना लेने चाहिए।

हमने शाक सम्वत् 1922 का अयनांश जानना है तो यह इस विधि द्वारा इस तरह जाना जा सकता है।

इष्ट शाक 1922–444 ÷ 60= अयनांश

इष्ट शाका = 1922

444 घटाए(–)= 444

शेष = 1478 कलाएं

अब 1478 कलाओं के अंशादि जानने के लिए 60 पर भाग दिया।

```
60 ) 1478 ( 24
     120
     ----
      278
      240
     ----
       38        24 अंश 38 कला
```

इस तरह शाक 1922 का अयनांश 24 अंश 38 कला प्राप्त हुआ।

दूसरी विधि–इस विधि द्वारा जिस वर्ष अथवा शाक सम्वत् का अयनांश जानना हो उसमें से 1800 निकाल अथवा घटा दें। जो शेष बचे उसे दो स्थानों पर रखें। पहले स्थान वाली शेष रखी संख्या को 70 पर भाग दें और जो लब्धि प्राप्त होगी वह अंश होंगे। इसके पश्चात् जो शेष बचे उसे 60 से करके पुनः 70 से भाग दें, जो लब्धि में आए वह कला होगी, यदि शेष बचे उसे भी 60 से गुणा करके पुनः 70 से भाग दें, जो लब्धि होगी वह बिकला होंगी। इस तरह इष्ट शाक से 1800 घटा कर जो दूसरे स्थान पर वही संख्या रखी हुई है, उसे 50 पर भाग दें, जो लब्धि प्रप्त होगी वह कलाएं होगी, इस तरह भाग करने पर जो शेष रहे उसे 60 से गुणा करके पुनः 50 से भाग दें, जो लब्धि प्राप्त होगी । वह विकलाएं होंगी।

इस तरह हल करने पर जो फल प्राप्त हो उसको इस तरह करना चाहिए। जो पहले फल प्राप्त किया था उससे दूसरे स्थान का घटा दें। इस तरह पहले से दूसरा घटाने पर जो फल प्राप्त हों उसमें 22 अंश 8 कला 33 बिकला जोड़ देने पर जो फल प्राप्त होगा वह इस वर्ष का अथवा शाके का अयनांश होगा। जिस मास व दिन तक का अयनांश जानना है सरल गणित से जाना जा सकता है।

उदाहरण–मान लें किसी शिशु का जन्म चण्डीगढ़ में सम्वत् 2057, शाक 1922 चैत्र शुक्ल द्वादशी को हुआ। उस दिन 15 अप्रैल सन् ई॰. 2000 था। सूर्य प्रातः $0^{s}–1^{\circ}–29'–44''$ अर्थात् 0 राशि 1 अंश 29 कला 44 बिकला पर था। जन्म समय 10–30 प्रातः भारतीय मानक समय और दिन शनिवार था। चण्डीगढ़ का अक्षांश $30^{\circ}–44'$ उत्तर और रेखांश $76^{\circ}–52'$ पूर्व है। इस

विधि से अयनांश जानने के लिए प्रथम स्थान और दूसरे स्थान का ध्यान रखना चाहिए।

1. इष्ट शाके अर्थात् जिसका अयनांश जानना है = 1922
2. 1800 घटाए = 1800

शेष = 122

अब शेष संख्या 122 है। इस संख्या को दी स्थान पर रखकर अगली गणना करनी है।

प्रथम स्थान	दूसरा स्थान
122 को 70 पर भाग दिया	122 को 50 पर भाग दिया
70) 122 (1 अंश	50) 122 (2 कला
70	100
52	22
60	60
70) 3120 (44 कला	50) 1320 (26 विकला
280	100
320	320
280	300
शेष 40 अर्थात्	20 अर्थात्
= 1 अंश 45 कला	= 2 कला 26 विकला

प्रथम स्थान से दूसरा स्थान घटाया

अंश	कला	बिकला
1	45	0
	2	26
1	42	34

इस तरह 1 अंश 42 कला 34 बिकला फल प्राप्त हुआ। अब इसमें 22 अंश 8 कला 33 बिकला जोड़ने पर अयनांश प्राप्त हो जाएगा।

	अंश	कला	बिकला
	1	42	34
+	22	8	33
=	23	51	7

इस तरह शाक 1922 का $23^0-51'-7''$ अयनांश प्राप्त हुआ। अर्थात् शाक 1922 सम्वत् 2057 का आयनांश 23 अंश 51 कला 7 बिकला प्राप्त हुआ। इसकों शिशु की जन्म तिथि का बनाना होगा।

जैसे पहले बताया जा चुका है कि अयनांश लगभग एक वर्ष में $50^1/_3$ बिकला बढ़ता है। यहां केवल उदाहरण ली है और विधि बताई जा रही है। अतः यहां मान लेते हैं कि अयनांश लगभग 50 बिकला बढ़ता है और वर्ष के 12 मास होते हैं, इस तरह एक मास में 4 बिकला 10 प्रतिबिकला बढ़ेगा और इस तरह एक मास के तीस दिन होते हैं अतः एक दिन की अयनांश की गति लगभग 8 प्रति विकला होती है। इस तरह थोड़ी गणना करके अपनी अभीष्ट तिथि तक का अयनांश जाना जा सकता है।

सम्वत् 2057 शाक सम्वत् 1922 चैत्र शुक्ल द्वादशी का जानना है। सूर्य उस दिन प्रातः 0 राशि 1 अंश 29 कला 44 बिकला था अर्थात् 1 दिन ऊपर चला था। इस तरह 8 प्रति बिकला एक दिन की गति के हिसाब से 1×8 = 8 एक दिन का 8 प्रति बिकला बढ़ा। इसको शाक 1992 के अयनांश में जोड़ दिया। इस तरह–

	अंश	कला	बिकला	प्रतिबिकला
	23	51	7	0
+	–	–	–	8
=	23	51	7	8

इस तरह सम्वत् 2057, शाक सम्वत् 1922 चैत्र शुक्ल द्वादशी को 0 राशि 1 अंश पर अयनांश 23 अंश 51 कला 7 बिकला 8 प्रतिबिकला था। यहां जो विधियां दी गई हैं, इनसे अयनांश किसी भी बर्ष मास तथा तारीख का जाना जा सकता है। यहां पाठकों को ध्यान रखना चाहिए कि इन विधियों व उसी समय ही उपयोग किया जाए जब पंचांग या एफेमेरीज में अयनांश उपलब्ध न हों, क्योंकि प्रत्येक पंचांग में अथवा एफेमेरीज में अयनांश दिया रहता है। चित्रापक्षीय अयनांश प्रामाणिक माने गए हैं। अतः पंचांग या एफेमेरीज में दिए गए अयनांश का उपयोग किया जाना चाहिए। पंचांग में या एफेमेरीज में प्रत्येक मास की पहली तारीख का अयनांश प्रायः दिया रहता है, यदि ऐसा हो तो उसको अपनी अभीष्ट तारीख का थोड़ी गणना से बनाया जा सकता है। पुस्तक के आखिरी खंड में अयनांश सारणी दी गई है ताकि आपको जन्मपत्री निर्माण में सुविधा रहें क्योंकि अयनांश की जन्मपत्री निर्माण में अधिक आवश्यकता पड़ती है।

दिनमान–पंचांग अथवा एफेमेरीज में दिनमान घड़ी पलों में दिया होता है। यदि दिनमान को 60 घड़ी से निकाल दें तो रात्रिमान प्राप्त हो जाता है। जैसे पंचांग में दिनमान 1 जून 200 का 34 घटी 40 पल

लिखा है। इसकों 60 घटी से निकालने पर रात्रिमान प्रात हो जाएगा जैसे–

		घटी	पल
दिनमान 34 घटी 40 पल			
60 घटी में से घटाया	=	60 –	00
		34 –	40
रात्रिमान		25 –	20

पंचांग में सूर्योदय, सूर्यास्त भी दिया होता है। इससे भी दिनमान अथवा दिन का कितना मान है जाना जा सकता है। यदि सूर्योदय को सूर्योस्त से घटा दिया जाए तो दिनमान प्राप्त हो जाता है। पंचांग में सूर्योदय, सूर्यास्त घंटों, मिनटों में होता है। इनकों घटा कर जो फल प्राप्त हो उसके घटी पल बना लेने चाहिए। जैसे 1 जून 2000 का दिनमान, सूर्योदय, सूर्यास्त पंचांग में इस तरह लिखा गया है।

1 जून –2000 सन् ई०

दिनमान	सूर्योदय	सूर्यास्त
घटी पल	घंटा मिनट	घंटा मिनट
34 40	5 24	19 16

अब दिनमान सूर्योदय, सूर्यास्त से जानने के लिए सूर्यास्त से सूर्योदय घटाया–

	घंटा	मिनट
	19	16
(–)	5	12
	13	52 दिनमान

इस तरह दिनमान 13 घंटे 52 मिनट प्राप्त हुआ। इनके घटी पल बनाए गए जो 34 घटी 40 पल प्राप्त हुए जो दिनमान घटी पलों में हुआ वही दिनमान पंचांग में लिखा हुआ है।

भारतीय मानक समय से लोकल अथवा स्थानीय समय जानना–इस सम्बन्ध में पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है। क्योंकि जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री निर्माण में स्थानीय समय का अत्यधिक महत्व होता है, इस लिए उसे पुनः स्पष्ट किया जाता है। भारतीय मानक समय 82 अंश 30 कला देशान्तर पर आधारित है, अतः इसे स्टैंडर्ड देशान्तर कहा जाता है। समस्त भारत का समय जिसे भारतीय मानक समय (I.S.T.) कहा जाता है इस देशान्तर पर आधारित है। पूरे भारत में घड़ियां यही समय बतलाती हैं। यदि घड़ी पर 11 बजें होंगे तो समस्त भारत में भारतीय मानक समय अथवा घड़ी का समय 11 बजे का होगा। इसे ही भारतीय मानक समय या इंडियन स्टैंडर्ड टाइम कहा

जाता है। परन्तु देशान्तर के कारण प्रत्येक स्थान का अपना अलग–अलग समय भी होगा, उसे लोकल अथवा स्थानीय समय कहा जाता है। क्योंकि प्रत्येक शहर अथवा स्थान का देशान्तर एक दूसरे भिन्न होता है अतः स्थानीय समय भी भिन्न होगा। लोकल अथवा स्थानीय समय जानने के लिए भारत के स्टैंडर्ड देशान्तर के उस स्थान के देशान्तर अथवा रेखान्तर के अनुसार कम या अधिक होगा। आमतौर पर जन्म का समय स्टैंडर्ड समय होता है। आजकल तो प्रत्येक व्यक्ति के पास घड़ी है, अतः घड़ी से जन्म समय तुरन्त नोट कर लिया जाता है। घड़ी का समय ही उस देश का मानक समय होता है। परन्तु लग्न निकालने अथवा जन्मकुण्डली निर्माण के लिए लोकल समय ही उपयोग होता है। अतः घड़ी के समय अथवा भारत मानक समय (I.S.T.) को लोकल समय बनाना पड़ता है। इसके लिए जन्म स्थान का अक्षांश, रेखांश अवश्य ज्ञात होना चाहिए तभी लोकल समय ज्ञात होगा।

जिस भी स्थान का भारत में लोकल समय जानना हो उस स्थान का देशान्तर नोट करें। उसे स्टैंडर्ड देशान्तर अर्थात् 82°–30' से घटाएं। घटाने पर जो शेष बचे उसे 4 से गुणा करने पर मिनट सैकण्ड बन जाएंगे, यदि वह स्थान स्टैंडर्ड देशान्तर से पश्चिम में ही तो ऋण और यदि पूर्व में हों तो धन कर दें। जैसे –

चण्डीगढ़ का देशान्तर	=	76°	–	52'
स्टैंडर्ड देशान्तर	=	82'	–	30
स्टैंडर्ड देशान्तर से	=	82	–	30
चण्डीगढ़ का घटाया (–)		76	–	52
	=	5	–	38

5°–38' को 4 से गुणा करने पर 22 मिनट 32 सैकण्ड प्राप्त हुए और यह अन्तर जन्म समय से कम करके लोकल समय प्राप्त हो जाएगा।

	घं.	मि.	
अप्रैल का जन्म समय भारतीय मानक समय	10	30	प्रातः
	घं.	मि.	सैं.
इससे 22 मिनट 32 सैकण्ड घटाए।	10	30	0
		22	32
	10	7	28

यह स्पष्ट हो गया कि जब चण्डीगढ़ में घड़ी के अनुसार अथवा भारतीय मानक समय (I.S.T.) 10 बजकर 30 मिनट सुबह का था तो उस समय चण्डीगढ़ का लोकल स्थानीय समय टाइम 10 बजकर

7 मिनट 28 सैकण्ड था। यही समय लग्न जानने व जन्मपत्री निर्माण में उपयोग एवं उपयुक्त होगा।

परन्तु इस पद्धति से लग्न निकालने से पहले अन्य संस्कार करने पड़ते हैं। यह तो आप जान ही गए हैं कि पृथ्वी की गति का सूर्य की गति से तालमेल 24 घंटे का सदैव नहीं रहता, इसे ही वेलान्तर कहते हैं। यह वेलान्तर सारणी द्वारा सहजे ही किया जा सकता है। जो पूर्व इष्ट दिन लिया गया है उस दिन 15 अप्रैल था।

15 अप्रैल का वेलान्तर, सारणी में देखने पर वेलान्तर ऋण 0 मिनट 13 सैकण्ड था। अब ऋण 0 मिनट 13 सैकण्ड ऋण होने के कारण उसके विपरीत संस्कार करेंगे तथा लोकल समय में 0 मिनट 13 सैकण्ड को जोड़ना होगा।

		घं	मि.	सैं.
स्थानीय समय	=	10	7	28
वेलान्तर जोड़	+		0	13
	=	10	7	41

इस तरह 10 बजकर 7 मिनट 41 सैकण्ड जन्म का शुद्ध समय प्राप्त हुआ। लग न जानने अथवा जन्मपत्री निर्माण के लिए इष्ट काल (समय) बनाने के लिए इसी समय को सही जन्म समय माना जाएगा और अगली गणना इसी से की जाएगी। वही समय अति महत्वपूर्ण होता है और लग्न का शुद्ध होना इसपर ही निर्भर करता है।

वेलान्तर संस्कार के लिए यहां वेलान्तर सारणी दी जा रही है। प्रथम स्थान में मास की तारीख लिखी हुई है। जिस साल अथवा तारीख का वेलान्तर जानना है इस तारीख को सर्व प्रथम वेलान्तर सारणी में देखें। ऊपर मास के नाम हैं और उनके नीचे संस्कार मिनट (मिं.) और सैकण्ड (सै.) लिखा है। इसके नीचे और साथ चिन्ह (–) व (+) लगाया है। जब यह चिन्ह ऋण होगा तो संस्कार जोड़ा जाएगा और जब वह चिन्ह धन होगा तो संस्कार घटाया जाएगा। जैसे उदाहरण में स्पष्ट किया गया है।

बेलान्तर सारणी

तारीख	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
	मि. सैं.	मि. सै.	मिं. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.
1	−3−16	−13−31	−12−31	−4−6	+2−51	+2−23
2	−3−44	−13−39	−12−19	−3−48	+2−59	+2−14
3	−4−12	−13−46	−12−7	−3−30	+3−6	+2−4
4	−4−40	−13−53	−11−54	−3−12	+3−12	+1−54
5	−5−07	−13−59	−11−41	−2−55	+3−17	+1−44
6	−6−34	−14−4	−11−28	−2−37	+3−23	+1−34
7	−6−00	−14−8	−11−14	−2−20	+3−27	+1−23
8	−6−26	−14−11	−15−00	−2−4	+3−31	+1−11
9	−6−52	−14−14	−10−45	−1−47	+3−35	+1−00
10	−7−17	−14−15	−10−30	−1−30	+3−37	+0−48
11	−7−41	−14−16	−10−15	−0−14	+3−40	+0−36
12	−8−5	−14−16	−9−59	−0−58	+3−41	+0−24
13	−8−28	−14−16	−9−43	−0−43	+3−43	+0−12
14	−8−51	−14−14	−9−27	−0−28	+3−43	−0−00
15	−9−13	−14−12	−9−10	−0−13	+3−43	−0−13
16	−9−34	−14−9	−8−53	+0−1	+3−43	−0−25
17	−9−54	−14−6	−8−36	+0−15	+3−42	−0−38
18	−10−14	−14−1	−8−19	+0−29	+3−40	−0−55
19	−10−33	−13−56	−8−1	+0−43	+3−38	−1−4
20	−10−52	−13−51	−7−44	+0−56	+3−35	−1−17
21	−11−9	−13−44	−7−26	+1−9	+3−32	−1−30
22	−11−26	−13−37	−7−8	+1−21	+3−28	−1−43
23	−11−42	−13−29	−6−50	+1−33	+3−24	−1−56
24	−11−57	−13−25	−6−31	+1−45	+3−19	−2−9
25	−12−12	−13−12	−6−13	+1−56	+3−14	−2−21
26	−12−26	−13−3	−6−55	+2−6	+3−8	−2−34
27	−12−38	−12−51	−6−37	+2−16	+3−2	−2−47
28	−12−51	−12−42	−5−18	+2−26	+2−55	−2−69
29	−13−02	−12−42	−5−00	+2−35	+2−48	−3−12
30	−13−12	----	−4−42	+2−43	+2−40	−3−24
31	−13−22	----	−4−24	----	+2−32	----

तारीख	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.	मि. सै.
1	−3−36	−6−18	−0−13	+10−4	+16−21	+11−13
2	−3−47	−6−15	+0−5	+10−23	+16−22	+10−50
3	−3−59	−6−11	+0−24	+11−42	+16−23	+10−27
4	−4−10	−6−6	+0−43	+11−1	+16−23	+10−3
5	−4−21	−6−1	+1−03	+11−19	+16−22	+9−39
6	−4−32	−5−55	+1−23	+11−37	+16−21	+9−14
7	−4−42	−5−48	+1−43	+11−55	+16−18	+8−49
8	−4−52	−5−41	+2−3	+12−12	+16−15	+8−23
9	−5−01	−5−34	+2−24	+12−29	+16−11	+7−57
10	−5−10	−5−25	+2−45	+12−45	+16−6	+7−30
11	−5−11	−5−16	+3−5	+13−1	+16−00	+7−3
12	−5−27	−5−7	+3−26	+13−17	+15−54	+6−36
13	−5−34	−4−57	+3−48	+13−32	+15−46	+6−8
14	−5−42	−4−46	+4−9	+13−46	+15−38	+5−40
15	−5−48	−4−35	+4−30	+14−00	+15−29	+5−11
16	−5−55	−4−23	+4−52	+14−14	+15−19	+4−43
17	−6−00	−4−11	+5−13	+14−27	+15−9	+4−14
18	−6−5	−3−58	+5−35	+14−39	+14−57	+3−44
19	−6−10	−3−45	+5−56	+14−51	+14−44	+3−15
20	−6−14	−3−31	+6−17	+15−2	+14−31	+2−45
21	−6−17	−3−17	+6−39	+15−13	+14−17	+2−16
22	−6−20	−3−3	+7−00	+15−22	+14−2	+1−46
23	−6−23	−2−47	+7−21	+15−31	++13−46	+1−16
24	−6−24	−2−32	+7−42	+15−40	+13−30	+0−46
25	−6−26	−2−15	+8−3	+15−48	+13−12	+0−16
26	−6−26	−1−59	+8−24	+15−55	+12−54	−0−13
27	−6−26	−1−42	+8−44	+16−1	+12−35	−0−42
28	−6−26	−1−25	+9−4	+16−6	+12−16	−1−12
29	−6−25	−1−8	+9−24	+16−11	+11−55	−1−42
30	−6−23	−0−50	+9−44	+16−15	+11−34	−2−11
31	−6−21	−0−32	———	+16−18	————	−2−40

मध्यम समय से स्थानीय समय जानने के लिए + को + तथा– को– करना चाहिए। स्थानीय से मध्यम समय बनाने के लिए+ को – और – का + करना चाहिए।

इष्ट काल क्या है?–जिस समय के सम्बन्ध में विचारना हो उसे इष्टकाल कहते हैं। यदि यह कहें कि कोई भी विचारणीय इष्ट विषय के सम्बन्ध में यह जानना कि उस समय क्या बजा है, वही समय इष्टकाल माना जाता है। यदि किसी का जन्म 11 बजे का है तो 11 बजे का समय इष्टकाल घंटा में हुआ। इसलिए जिस समय की लग्न जानने के लिए जरूरत होती है वह समय इष्टकाल कहलाता है। यदि लग्न अथवा जन्म कुण्डली सूर्योदय सिद्धांत के अनुसार बनानी है तो इष्ट का समय घड़ी पल में होना आवश्यक है। यदि यह समय घंटा मिनट में दिया तो उसके घटी पल बनाने पड़ेंगे अर्थात् इष्ट घटी पल से प्रगट होता है कि सूर्योदय से इतने घटी पल उपरान्त किसी का जन्म हुआ है। इसे ही इष्ट काल कहा जाता है। यह काल बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि यह सारी गणित क्रिया का धूरा है। सारांश में इष्टकाल जन्म समय ही होता है, जिस दिन जन्म हुआ हो, उस दिन सूर्योदय से जन्म समय तक जितने घटी पल–घंटे मिनट बीत चुके हो, वह ही इष्टकाल से जाना जाता है।

इष्टकाल जानने के नियम–इष्टकाल जानने के निमय इस तरह हैं।

1. यदि सूर्योदय से लेकर 12 बजे दिन के भीतर जन्म समय हो तो नियम है जन्म समय–सूर्योदय = शेष× $2^1/_2$= इष्ट काल। अर्थात् जन्म समय और सूर्योदय का अन्तर कर शेष का ढाई गुना करने से घटायादि इष्टकाल होता है। इसके लिए जन्म समय से सूर्योदय घटाकर शेष को $2^1/_2$ गुना करने से इष्टकाल प्राप्त हो जाएगा।

2. यदि जन्म समय 12 बजे से सूर्योस्त के समय तक हो तो नियम है– सूर्योस्त काल–जन्म समय= शेष×$2^1/_2$ = इष्टकाल 1 अथवा यदि 12 बजे दिन से सूर्योस्त के भीतर का जन्म समय हो तो जन्म समय और सूर्योस्त का अन्तर कर शेष को $2^1/_2$ से गुणा करके दिनमान में से घटाने पर घटयादि इष्टकाल बन जाता है।

3. यदि जन्म समय सूर्यास्त से 12 बजे रात्रि के भीतर का जन्म हो तो जन्म समय और सूर्यास्त का अन्तर कर शेष को $2^1/_2$ गुना कर दिनमान में जोड़ देने से इष्टकाल आता है। अर्थात् सूर्यास्त से 12 बजे रात्रि के बीच तो जन्म समय –सूर्यास्त काल= शेष × $2^1/_2$ + दिनमान = इष्टकाल।

4. यदि जन्म समय रात्रि के 12 बजे से अगले सूर्योदय के बीच का हो अर्थात् रात्रि 12 बजे के पश्चात् और सूर्योदय के पहले का जन्म हो तो सूर्योदय काल और जन्म समय का अन्तर कर शेष को

$2^1/_2$ गुना कर 60 घटी में से घटाने पर घट्यादि इष्टकाल होगा। यानि जन्म समय–सूर्योदय= शेष × $2^1/_2$ – 60 घटी= इष्टकाल घटी पलात्मक।

5. सब से सरल विधि यह है कि सूर्योदय काल से सीधे जन्म समय में से घटाकर जो शेष घंटे मिनटादि बचे, उन्हें ढाई गुणा करने से लेकर इष्टकाल बनाया जा सकता है यानि सूर्योदय से लेकर जन्म समय तक जितने घंटे मिनटादि हों उन्हें $2^1/_2$ गुणा करके तुरन्त इष्टकाल प्राप्त किया जा सकता है। सारांश में सूर्योदय से जन्म समय तक जितने घंटे मिनटादि ही उन्हें $2^1/_2$ गुणा कर लेने पर इष्टकाल बन जाता है परन्तु ध्यान रहें कि स्थानीय सूर्योदय, सूर्यास्त समय, स्थानीय दिनमान, स्टैंडर्ड टाइम अथवा मानक समय से स्थानीय समय तथा वेलान्तर कर शुद्ध समय जान लेना चाहिए और उसके पश्चात् ही इष्टकाल बनाना चाहिए। सर्वप्रथम ध्यान रखने की बात तो यह है कि जन्म समय सही व शुद्ध होना चाहिए तभी इष्टकाल एवं शुद्ध लग्न बनेगा।

जो नियम यहां दिए गए हैं, उनमें से किसी एक का उदयोग करके जो उदाहरण में शुद्ध जन्म समय बनाया है इष्ट समय इस तरह जाना जाएगा।

		घं.	मि.	सै.
जन्म का शुद्ध समय	=	10	7	41
सूर्योदय काल जो प्राप्त हुआ था	=	5	18	0
अन्तर किया गया	=	4	49	41

क्योंकि शुद्ध जन्म समय 10 घंटे 7 मिनट 41 सैकण्ड प्राप्त हुआ था और जन्म समय जो जन्म विवरण पिछले पृष्ठों में दिया है, उसके अनुसार जन्म सूर्योदय के पश्चात् हुआ है अतः इस पर नियम नम्बर एक लागू होगा क्योंकि जन्म सूर्योदय से 12 बजे दोपहर के भीतर हुआ है।

इस नियम के अनुसार जन्म समय – सूर्योदय = शेष × $2^1/_2$ गुणा = इष्ट काल। इसी नियम को लागू किया जाएगा।

शुद्ध जन्म समय =	घंटा 10	मिनट 7	सै. 41
सूर्योदय घटाया =	घंटा 5	मिनट 18	सै. 0
समयान्तर =	4	49	41

अब 4–49–41 × $2^1/_2$ गुणा किया 1 गुणा करने के उपरान्त 12–4–12 फल प्राप्त हुए। इस तरह जो उदाहरण लिया था उसका भारतीय मानक समय के अनुसार अथवा घड़ी के अनुसार समय 10–30 प्रातः था और संस्कार करके शुद्ध समय 10 घंटा 7 मिनट 41 सैकण्ड था और इससे इष्टकाल 12 घटी 4 पल 12

बिकल प्राप्त हुआ। वह इष्टकाल लग्न निकालने के लिए उपयोग किया जाता है। अतः किसी भी बालक का कही भी जन्म हो तो उसके जन्म समय को, जो आजकल मानक समय (घड़ी का) ही होता है शुद्ध करके, उससे इष्टकाल निकाल कर लग्न निकालना होगा। जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री का सही आधार यही होता है।

यहां उदाहरण देकर इष्ट समय निकालने की प्रक्रिया दी है। जन्म कुण्डली तथा जन्मपत्री निर्माण प्रकरण में पंचांग पर से जन्म कुण्डली निर्माण तथा सम्पातिक काल विधि द्वारा सरल शुद्ध, जन्म कुण्डली निर्माण पर विचार किया जाएगा। प्रिया पाठकगण! अजकल घटी पल का उपयोग कम होता है तथा सभी पंचांग भी मानक समय में बनने लगे हैं जिनमें समय मानक समय में होता है। इससे लग्न शुद्ध, सही अथवा जन्मपत्री का निर्माण सरलता से किया जा सकता है।

प्रत्येक सन् या संवत् का अपना कैलेंड्र होता है जिसे ज्योत्षि की भाषा में पंचांग कहा जाता है। पंचांग को ज्योतिष का तिथि–पत्र भी कहा जाता है, यह इसलिए कि ज्योतिष के अध्ययन एवं जन्मपत्री निर्माण के लिए पंचांग, की अत्यावश्यक भूमिका रहती है। ऐसे कैलेंडर, पंचांग, जन्त्रियां जो प्रतिवर्ष निकलते हैं, वह सब पंचांग का ही रुप होते हैं। अंग्रेज़ी में एफेमेरीज एवं अल्मनाक पंचांग का ही दूसरा नाम है। इन सबमें ज्योतिष सम्बन्धी विशेष जानकारी व जन्मपत्री बनाने हेतु आवश्यक सामग्री दी होती है।

पंचांग में कौन सी आवश्यक जानकारी हो सकती है, यह पंचांग के शब्द अर्थ से स्वयं ही स्पष्ट हो जाती है। पंचांग का अर्थ है काल के पांच अंग अतः पंचांग में काल के पांच मुख्य अंगों का विवरण पाया जाता है। अतः प्रत्येक पंचांग में प्रमुख रूप से 1. तिथि, 2. वार, 3. नक्षत्र, 4. योग, 5. करण का समय तथा प्रमाण दिया होता है। इसी के अधार पर सूक्षम काल की गणना की जाती है। पंचांग में यह भी विवरण दिया होता है कि किस दिन सूर्य आदि ग्रह किस राशि में कितने अंश का है। इसी आधार पर जन्मकुण्डली व प्रश्न कुण्डली की रचना की जाती है। पंचांग में अनेक अन्य घटनाएं एवं सूचनाएं, मुहूर्त, वर्ष भर के विवाह, व्रत त्योहार, अवकड़ाह चक्र, स्पष्ट ग्रह सारणी, वर्ष ध्रुव सारणी तथा ज्योतिष सम्बन्धी बहुउपयोगी, ज्ञानवर्द्धक जानकारी विषय–वस्तु को रौचक बनाने के लिए दी जाती है। अतः पंचांग ज्योतिष का एक ऐसा पत्र है जिसमें काल के पांच अंगों का विवरण होता है तथा इसके अतिरिक्त जन्मपत्री की रचना करने व सामान्य ज्योतषीय ज्ञान बढ़ाने वाली बहुउपयोगी रौचक सामग्री होती है।

पंचांग कई रुप में ठीक समय पर प्रतिवर्ष प्रकाशित होते हैं। पंचांग का प्रत्येक ज्योतिषी के पास होना अनिवार्य समझा जाता है। क्योंकि पंचांग ज्योतिष का एक वार्षिक कैलेंडर है जिसमें दैनिक वार, तिथि, नक्षत्र, पर्व आदि तथा प्रत्येक दिन की ग्रह स्थिति होती है।

जैसे पहले कहा गया है कि पंचांग का भावार्थ काल के पांच अंग है। काल निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। शायद यह पीछे मुड़ कर देखता ही नहीं। इसलिए काल को नापने के लिए विभिन्न तरीके अपनाए जाते हैं। जो तरीके काल को नापने के लिए अपनाए जाते हैं उनमें सन्, संवत् प्रमुख है। प्रत्येक सन्–संवत् का अपना एक पंचाग प्रत्येक वर्ष का होता है। पंचांग का आधार विक्रम संवत् और शालिबाहन शके होता है। विक्रम संवत् और एक शालिवाहन वर्ष, प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् चैत्र सुदी प्रतिपदा से शुरु होता है। प्रतिवर्ष का पंचांग भी इसी दिन से आरम्भ होता है। भारत में यह पंचांग अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जन्त्रियों व एफेमेरीज प्रत्येक वर्ष तक जनवरी से प्रारम्भ होती है। काल नापने के लिए सबसे अधिक विक्रम संवत्, शालिवाहन शके तथा ईस्वी सन् का ही उपयोग होता है हलांकि वर्तमान में शक संवत् चलाने वाले आठ सम्राट हुए हैं।

प्रत्येक पंचांग अलग–अलग स्थानों के अक्षांश रेखांश के आधार पर बनाए जाते हैं तथा इनका उपयोग भी स्थानिय अथवा उन अक्षांश व रेखांश के लिए होता है। पंचांग का गणित जिस अक्षांश रेखांश को आधार मान कर किया होता है, अतः पंचांग सदैव अपने निकटतम स्थान का ही लेना चाहिए। यदि पंचांग का उपयोग किसी ऐसे स्थान के लिए करना हो जो उस स्थान से भिन्न हो जिस अक्षांश, रेखांश के आधार पर वह पंचांग बना है तो देशान्त संस्कार करना अनिवार्य होता है। आमतौर पर भारत के पंचांग निरयन पद्धति पर और पाश्चात्य देशों में सायन पद्धति पर बने होते हैं। पंचांग में सभी गणना प्रायः घटी पलों में होती है। जन्त्रियों न एफेमेरीज में गणना आमतौर पर घंटा, मिनट में होती है।

यह तो सुस्पष्ट है कि पंचांग की ज्योतिष में महत्वपूर्ण भूमिका है। यह वर्तमान की तिथि, नक्षत्र, योग, करण, दिनमान, सूर्योदय, सूर्यास्त, स्पष्ट सूर्य व राशि, ग्रह स्थिति बतलाता है तथा जन्मपत्री रचना में मार्गदर्शन करता है।

पंचांग के प्रत्येक अंग की जानकारी होना अति आवश्यक है क्योंकि इसके बगैर कोई भी गणना करना अथवा जन्मपत्री रचना करना कठिन होगा।

यहां वह बताना उचित रहेगा कि पंचांग में 12 साल के 24 पृष्ठ होते हैं। यानिं एक पक्ष का एक पृष्ठ होता है। पृष्ठ के ऊपर विक्रम संवत्, शके, चन्द्रमास, पक्ष, ईस्वी सन्, तारीख, ऋतु और गोलार्द्ध आदि का विवरण दिया होता है। प्रत्येक पृष्ठ पर एक तिथि की एक पंक्ति होती है। जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा प्रातः

कालीन करण की सूचना दी होती है। अतः सबसे पहले पंचांग के प्रमुख अंग तिथि के बारे में जानकारी दी जाती है।

पंचांग के प्रमुख अंग

1. **तिथि**–तिथि पंचांग का प्रथम अंग है। प्रत्येक पंचांग में पहले तिथि ही दी होती है, तथा इसके पश्चात् ही अन्य जानकारी दी होती है। भचक्र के 360 अंश होते हैं जिसमें एक तिथि का मान 12 अंश होता है। चन्द्रमास में दिनों की गिनती तिथियों से की जाती है। एक मास में 30 तिथियां होती हैं। जिनमें कृष्ण पक्ष की 15 और शुक्ल पक्ष की 15 तिथियां होती हैं। तिथियां शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गिनी जाती हैं और 15 तिथि पूर्णिमा को होती है अतः पूर्णिमा के स्थान में 15 तिथि पूर्णिमा होती है अतः पूर्णिमा के स्थान में 15 तिथि लिखीं होती हैं। इसके पश्चात् कृष्ण पक्ष की तिथियां आती हैं। यह तिथियां भी कृष्णा प्रतिपदा की शुरू होकर अमावस्या तक गिनी जाती है। वहां अमावस्या को 30वीं तिथि कहा जाता है। जैसे पूर्णिमा के स्थान में 15 तिथि लिखते हैं वैसे ही अमावस्या के स्थान में 30 तिथि लिखी होती है। इसलिए यहां 30 तिथि लिखी हो वहां अमावस्या और यहां 15 तिथि लिखी हो वंहां पूर्णिमा समझनी चाहिए।

अमावस्या–जिस दिन सूर्य और चन्द्रमा एक स्थान में आ जाते हैं, अर्थात् जब सूर्य और चन्द्रमा के राश्यंश समान हो जाते हैं तब अमावस्या होती है। अतः गणित करने पर जब सूर्य और चन्द्रमा का पूर्व पश्चिम अन्तर शून्य हो जाता है तो उसी समय अमावस्या तिथि होती है।

जैसे पहले बताया है कि तिथि 12 अंश की होती है। सूर्य की गति से चन्द्रमा की गति अति अधिक होती है। इस तरह जब दोनों का भ्रमण समय अन्तर बढ़ने लगता है और अन्तर बढ़ते–बढ़ते 12 अंश हो जाता है तो एक तिथि बन जाती है तथा प्रतिपदा तिथि पूरी हो जाती है और अगली तिथि का प्रारम्भ हो जाता है। जब भचक्र के 360 अंश को मास की 30 तिथियों अर्थात् 360 ÷ 30 तिथियां = 12 अंश =1 तिथि आ जाती है। इस से सुस्पष्ट हो गया है कि तिथि 12 अंश की होती है अर्थात् जब सूर्य चन्द्रमा में 12 अंश का अन्तर पड़ता है तो एक तिथि बनती है। इस तरह प्रत्येक 12 अंश के अन्तर पर अगली तिथि बनती रहती है।

पूर्णिमा–जैसे पहले लिखा जा चुका है कि जब सूर्य चन्द्रमा में 12 अंश का अन्तर पड़ता है तो तिथि बनती है। इस तरह 12 अंश के अन्तर पर तिथि बनती जाती है। इस तरह अमावस्या के पश्चात्

प्रतिदिन चन्द्रमा सूर्य से 12 अंश दूर होता चला जाता है, और यह अन्तर 180 अंश तक हो जाता है। इस तरह जब सूर्य चन्द्रमा अन्तर 180 हो जाता है तो पूर्णिमा होती है।

इस तरह जब सूर्य चन्द्रमा एक स्थान होते हैं तो अमावस्या और जब सूर्य चन्द्रमा 180 अंश पर होते हैं अर्थात् एक दूसरे से सप्तम होते हैं तो पूर्णिमा होती है।

वृद्धि तिथि—पंचांग में जो तिथि सूर्योदय पर होगी वही तिथि लिखी होगी, सूर्योदय के बाद वह तिथि बेशक एक घटी क्यों न हो। जैसे यदि गुरुवार को 2 घटी तक द्वितीया है तो भी उस दिन पंचांग में द्वितीया 2 घटी लिखा होगा। यदि ऐसा लिखा होगा तो समझ लेना चाहिए कि उस दिन सूर्योदय के बाद 2 घटी तक द्वितीय तिथि थी और उसके पश्चात् तृतीया तिथि शुरु हुई अथवा शुरू होगी। इस प्रकार जब कभी भी पंचांग में दो दिन एक ही तिथि लिखी हुई हो तो उसे वृद्धि तिथि माना जाता है। पंचांग देखने से यह तुरन्त पता चल जाता है।

क्षय तिथि—संक्षेप में सूर्योदय पर जो तिथि किसी भी दिन पंचांग में न बताई गई हो वह क्षय तिथि कहलाती हैं। जैसे बुधवार को सूर्योदय के बाद 2 घटी नवमी हैं। पंचांग में उस दिन 2 घटी नवमी लिखा गया होगा। इसके उपरान्त दशमी तिथि मान लिया 56 घटी रही और इस तरह फिर एकादशी शुरु हुई तो बुधवार को पूरे 60 घटी में 2 घटी नवमी के निकाले तो शेष रहे 58 घटी। इसमें 56 घटी दशमी के निकाले तो शेष बचे 2 घटी एकादशी के रहे। इस तरह उस दिन 2 घटी ही एकादशी रही। दूसरे दिन गुरूवार को भी इस तरह एकादशी शेष रहेगी, इस तरह गुरुवार को एकादशी तिथि पंचांग में लिखी जाएगी परन्तु दशमी तिथि पंचांग में लिखि हुई नहीं मिलेगी। इसका मतलब यह नहीं होगा कि नवमी के पश्चात् एकादश तिथि आ गयी और दशमी तिथि आयी ही नहीं। जैसे ऊपर लिखा है, इस तरह थोड़ी गणना करके आप जान सकते हैं कि नवमी के पश्चात् दशमी तिथि कब से कब तक रही। ऐसी स्थिति में जब तिथि का पंचांग में उल्लेख नहीं होता तो उसे क्षय तिथि समझना चाहिए।

यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि तिथि की वृद्धि और क्षय चन्द्रमा की भ्रमण गति के कारण होती है क्योंकि चन्द्रमा की भ्रमण गति में अन्तर आता रहता है। यह अन्तर (अर्थात् एक तिथि) मध्यम मान से 59 घटी 3 पल का होता है। चन्द्रमास $29^1/_2$ दिन का होता है, जिसमें 30 तिथियां व्यतीत होती हैं। यदि इस प्रकार से गणना की जो तो 12 मास में 354 दिन हुए और जिसमें 360 तिथियां आई, अर्थात् तिथियों का क्षय वृद्धि आदि होकर 6 दिन कम हो जाते हैं। जब चन्द्रमा की भ्रमण गति कभी 66 घटी से घटते–घटते 60 घटी तक

आ जाती है और जब तिथि का मान 60 घटी से अधिक होता है तो वृद्धि तिथि और जब 60 घटी से कम होता है तो क्षय तिथि होती है। पंचांग को देखने से यह सब कुछ स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है।

तिथियों के नाम—जैसे पहले बताया जा चुका है कि तिथियां 30 होती हैं। अमावस्या के पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष अर्थात् सुदी तथा पूर्णिमा से अमावस्या तक कृष्ण पक्ष अर्थात् बदी होती है। दोनों पक्षों की तिथियों के नाम इस प्रकार हैं:—

तिथि	नाम	पक्ष
1	प्रतिपदा या परिवा, परमा, पड़िवा	शुक्ल पक्ष
2	द्वितीया—दोज	शुक्ल पक्ष
3	तृतीया—तीज	शुक्ल पक्ष
4	चतुर्थी—चौथ	शुक्ल पक्ष
5	पंचमी—पांचें	शुक्ल पक्ष
6	षष्ठी—छठें	शुक्लपक्ष
7	सप्तमी—सातें	शुक्ल पक्ष
8	अष्टमी—आठें	शुक्ल पक्ष
9	नवमी—नमें	शुक्ल पक्ष
10	दशमी—दसें	शुक्ल पक्ष
11	एकादशी—ग्यारस	शुक्ल पक्ष
12	द्वादशी—बारस	शुक्ल पक्ष
13	त्रयोदशी—तेरस	शुक्ल पक्ष
14	चतुर्दशी—चौदस	शुक्ल पक्ष
15	पूर्णिमा—पूर्णमाशी	शुक्ल पक्ष

इसी तरह ही कृष्ण पक्ष की तिथियों के नाम हैं परन्तु कृष्ण पक्ष की 30 वीं तिथि का नाम अमावस्या या अमावस या अमावास्या होता है। जैसे यदि कृष्ण पक्ष की तृतीय होगी तो क्रम से 18 वीं तिथि होगी।

तिथियों का वर्गीकरण—शुभता, अशुभता के आधार पर दोनों पक्षों की तिथियों का वर्गीकरण भी किया हुआ है। इसी वर्गीकरण के अनुसार दोनों पक्षों की तिथियों को इस, प्रकार बांटा गया है।

तिथि	वर्ग—संज्ञा	स्वामी
1—6—11	नन्दा	शुक्र
2—7—12	भद्रा	बुध
3—8—13	जया	मंगल
4—9—14	रिक्ता	शनि
5—10—15 व 30	पूर्णा	गुरू

इस तरह तिथि 1–6–11 नन्दा, 2–7–12 भद्रा, 3–8–13 जया, 4–9–14 रिक्ता और 5–10–15 व 30 वीं तिथि पूर्णा कहलाती हैं।

सिद्धा तिथियां–जैसे ऊपर बताया गया है यदि तिथियों के दिन, उन तिथियों के स्वामी का दिन भी हो तो सिद्धा तिथियां कहलाती हैं जैसेः–

1. 1–6–11 तिथियों को शुक्रवार हो तो वह सिद्धा तिथियां कहलाती हैं।
2. 2–7–12 को बुधवार हो तो सिद्धा तिथियां होती हैं।
3. 3–8–13 को मंगलवार हो तो सिद्धा तिथियां कहलाती हैं।
4. 4–9–14 को शनिवार हो तो सिद्धा तिथियां होती हैं।
5. 5–10–15 वीं को गुरुवार हो तो सिद्धा तिथियां होती हैं

तिथि कैसे जाने?–जैसे पहले लिखा गया है कि सूर्य उदय पर जो तिथि होती है, वह पंचांग में लिखी होती है बेशक वह तिथि सूर्योदय के उपरान्त थोड़ा समय ही रहे। अतः उस स्थान विशेष के लिए वह ही व्यवहारिक तिथि होती है या उस दिन वही तिथि मान ली जाती है। चाहे वह तिथि सूर्योदय से कुछ समय पहले ही क्यों न शुरु हुई हो और सूर्योदय के उपरान्त कुछ समय उपरान्त ही क्यों न समाप्त हो जाए। अतः जब यह कहा जाता है कि आज कौन सी तिथि है, तो इसका यही मतलब होता है कि जो तिथि सूर्योदय पर थी वही आज की तिथि होगी अर्थात् व्यवहारिक तिथि ही आज की तिथि होगी। एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरण–यदि किसी भी दिन व किसी भी समय के सूर्य चन्द्र राश्यंश की जानकारी हो तो उस दिन कौन सी तिथि थी तुरन्त पता लगाया जा सकता है। यही नहीं तिथि के सम्बन्ध में सभी तरह की अर्थात् भुकतांश, भोग्यांश तथा कब तक रहेगी जाना जा सकता है।

चण्डीगढ़ दिनांक 1–4–1998 को प्रातः 5.30 बजे कौन सी तिथि होगी। चण्डीगढ़ का सूर्योदय 6घंटे–16 मिनट पर है। तिथि पत्र में इस तरह लिखा है।

तारीख	मास	तिथि	घंटा	मिन्ट
1	अप्रैल	5	16	29
2	,,	6	14	49
3	,,	7	13	56

जो ऊपर विवरण दिया है उसका मतलब है कि 1 अप्रैल को पांचवी तिथि 16 घंटा 29 मिन्ट तक रहेगी। तारीख 2 अप्रैल को षष्ठ

तिथि 14 घंटा 49 मिन्ट तक रहेगी। अतः यही तिथि 5.30 सुबह तथा सूर्योदय पर होना चाहिए क्योंकि यह ही व्यावहारिक तिथि है।

दिनांक 1 अप्रैल को प्रातः 5.30 बजे चन्द्र सूर्य के स्पष्ट राश्यंश थे।

चन्द्र 1 राशि 11 अंश 11 कला 24 विकला
सूर्य 11 राशि 17 अंश 14 कला 5 विकला

तिथि जाननें के लिए चन्द्र, सूर्य का राश्यन्तर प्राप्त किया अर्थात् चन्द्र से सूर्य के राश्यंश घटाए, यदि राश्यंश न घटे तो 12 जोड़ देने चाहिए।

	रा	अं	क	वि
चन्द्रमा राश्यंश	1	11	11	24
घटाए				
सूर्य राश्यंश	11	17	14	05
राश्यंतर	1	23	57	19
अंश बनाए	30			
	30			
	23			

53 अंश 57 कला 19

अब तिथि जानने के लिए इसको 12 पर भाग दिया क्योंकि तिथि 12 अंश की होती है।

12 | 53–57–19
48

45° 57' 19"

अतः स्पष्ट हुआ कि लब्धि 4 है, इस लिए शुक्ल पक्ष की चतुर्थ तिथि समाप्त हो चुकी थी और पांचवी तिथि चल रही है जो विवरण तिथि–पत्र में दिया है, ठीक है। क्योंकि 5.30 बजे व सूर्योदय पर पांचवी तिथि थी। यही व्यवहारिक तिथि भी है। पांचवीं तिथि के भी 12 अंशों में से 5 अंश 57 कला 19 विकला भुक्त हो चुके थे और 6 अंश 2 कला 41 विकला भोग्यांश थे।

पंचमी कब समाप्त होगी?—यदि तिथि का समाप्ति काल जानना हो तो चन्द्र, सूर्य की गति का राश्यंतर जाना जाता है। जैसे

	अंश	कला	विकला
चन्द्रगति	14 –	4 –	39
घटाया सूर्य गति	,, –	59 –	14
चन्द,सूर्य गति अन्तर	13 –	5 –	25

यह 13 अंश 5 कला 25 विकला का अन्तर 24 घंटे का है और भोग्यांश 6,2 कला 41 विकला को कितना समय लगेगा, जानना है। अब सरल गणना इस तरह की जानी चाहिए।

13 अंश, 5 कला, 25 विकला अंतर है 24 घंटे में 1 अंश अन्तर होगा $\frac{24}{13^0-5'-25''}$ घंटे में।

$6^0-2'-4''$ अन्तर होगा $\frac{24\times 6^0-2'-4''}{13^0-5'-25''}$

= 11 घंटे प्राप्त हुए।

अतः यह स्पष्ट हो गया कि चण्डीगढ़ तारीख 1 अप्रैल को जो तिथि अर्थात् पंचमी 5.30 बजे प्रातः $5^0-57'-19''$ पर थी, वह 5.30 घंटे + 11 घंटे अर्थात् 16–30 पर समाप्त होगी। एफेमेरीज अर्थात् जो तिथि-पत्र में समाप्ति काल लिखा है वह 16–29 है अतः सही है।

एक अति सरल विधि से भी कौन सी तिथि है तथा समाप्ति समय क्या है जान सकते हैं। क्योंकि यह लोग सारणी से तुरन्त जानी जाती है। अतः एक दो मिनट का कई कर अन्तर पड़ सकता है। पूर्व उदाहरण लें:–

विधि 2.–1–4–98 को 5.30 सूर्य स्पष्ट $347^0-14'-11''$ क्योंकि तिथि चन्द्र सूर्य का अन्तर दर्शाता है। जब यह अन्तर 60^0 तक हो जाए तो पंचमी पूर्ण हो जाएगी। अतः उदाहरण की पंचमी पूर्ण होना जानने के लिए 60^0 जोड़े तो $347^0-14'-11''+60^0=407^0-14'-11''$ क्योंकि $407^0, 360^0$ से अधिक है अतः $407^0-14'-11''(-)\ 360^0= 47^0-14'-11''$

इसी तरह चन्द्रमा के 1–4–98 को 5.30 बजे स्पष्ट राश्यंश $41^0-11'-24''$ हैं 1 अब सूर्य चन्द्र का अन्तर यानि $47^0-14'-11''-41^0-11'-24'' =6^0-2'-47''$ = इसका लॉग देखा = 5985

सूर्य चन्द्र की गति का अन्तर है $13^0-5'-25''$

अतः $13^0-5'-25''$ का लॉग, = 2629

अब दोनों लॉग का अन्तर देखा = 3356

यह अन्तर लॉग सारिणी में ढूँढा तो 11 घंटे 3 मिनट मिला। अतः 5वीं तिथि 5.30 बजे प्रातः से 11 घंटे 3 मिनट उपरान्त समाप्त होगी। इस तरह

5–30 घंटे
+11–3

16–33 = घंटे

स्पष्ट हुआ कि 1–4–98 की पंचमी तिथि 16 घंटे 33 मिंनट पर समाप्त होगी। एफेमेरीज समय 16 घंटे 29 मिनट समय लिखा है। जैसे कहा है, इस विधि से कई बार एक–दो मिनट का अन्तर आ जाता है।

यदि किसी भी तारीख के तथा किसी भी समय के चन्द्रमा और सूर्य के राश्यंतर ज्ञात हों तो निम्नलिखित सारणी से तुरन्त तिथि का ज्ञान हो जाएगा। जैसे जो पहले उदाहरण दी गई थी। उसके चन्द्र सूर्य का राश्यंतर $1^{5}-23^{0}-57'-19''$ हैं। सारणी देखने से पता चलता है कि शुक्ल पक्ष की पंचमी $1^{5}-18^{0}-0'$ से $2^{5}-0'-0''$ तक होती है। अतः पंचमी तिथि चल रही थी।

चन्द्रमा सूर्य राश्यंतर से तिथि ज्ञान सारणी

राशि से रा अं क	अंश कला तक रा अं क	शुक्ल पक्ष तिथि		राशि से रा अं क	अंश कला तक रा अं क	कृष्ण पक्ष तिथि	
0–0–0	0–12–0	1	एकम	6–0–0	6–12–0	1	एकम
0–12–0	0–24–0	2	द्वितीया	6–12–0	6–24–0	2	द्वितीया
0–24–0	1–6–0	3	तृतीया	6–24–0	7–6–0	3	तृतीया
1–6–0	1–18–0	4	चातुर्थी	7–6–0	7–18––0	4	चातुर्थी
1–18–0	2–0–0	5	पंचमी	7–18–0	8–0–0	5	पंचमी
2–0–0	2–12–0	6	पष्ठ	8–0–0	8–12–0	6	पष्ठ
2–12–0	2–24–0	7	सप्तमी	8–12–0	8–21–0	7	सप्तमी
2–24–0	3–6–0	8	अष्टमी	8–24–0	9–6–0	8	अष्टमी
3–6–0	3–18–0	9	नवमी	9–6–0	9–18–0	9	नवमी
3–18–0	4–0–0	10	दशमी	9–18–0	10–0–0	10	दशमी
4–0–0	2–12–0	11	एकादशी	10–0–0	10–12–0	11	एकादशी
4–12–0	4–24–0	12	द्वादशी	10–12–0	10–24–0	12	द्वादशी
4–24–0	5–6–0	13	त्रयोदशी	10–12–0	11–6–0	13	त्रयोदशी
5–6–0	5–18–0	14	चतुर्दशी	11–6–0	11–18–0	14	चतुर्दशी
5–18–0	6–0–0	15	पूर्णिमा	11–18–0	12–0–0	30	अमावस्या

2. वार–यह पंचांग का दूसरा महत्वपूर्ण अंग है। लगभग प्रत्येक पंचाग में तिथि के साथ वार दिया रहता है। कई जन्त्रियों में पहले वार लिखा होता है। वार सात होते हैं। वार के नाम सात ग्रहों के नाम पर ही रखे गए हैं। राहू व केतू क्योंकि छाया ग्रह माने गये हैं अतः इनको छोड़कर बाकी सात ग्रहों के नाम ही वार के नाम हैं। जैसे रवि ग्रह के नाम पर रविवार, मंगल ग्रह के नाम पर मंगलवार आदि। सात ही वारों के नाम इस प्रकार से है।

क्रम	वार का नाम	अंग्रेजी में नाम
1.	रविवार। इसको सूर्यवार, इतवार व आदित्यावार भी कहा जाता है।	SUNDAY
2.	चन्द्रवार या सोमवार	MONDAY
3.	मंगलवार या भोमवार	TUESDAY
4.	बुधवार	WEDNESDAY
5.	गुरुवार या वृहस्पतिवार(वीरवार)	THURSDAY
6.	शुक्रवार या भृगुवार	FRIDAY
7.	शनिवार या शनीचर	SATURDAY

दिनों के नाम देखने से वह सुसपष्ट हो जाता है कि इनके नाम ग्रहों के नाम पर ही रखे गए है। अंग्रेज़ी के नाम भी ग्रह के नाम पर ही हैं जैसे, SUNDAY, SUN के नाम पर है। जिस ग्रह का होरा प्रातः काल होता है, उसी ग्रह के नाम से उस दिन का नाम पड़ता है। पूरी दुनियां में इसी क्रम से ही दिन माने जाते हैं। संस्कृत में होरा शब्द घंटा का प्रतीक है और अंग्रेजी में भी HOUR घंटा का समानार्थक माना जाता है। रात–दिन के 24 घंटे होते हैं या रात के 24 होरा होतें हैं अथवा 24 HOUR होते हैं। इस तरह 24 होराओं का एक अहोरात्र यानि दिन–रात बनता है। प्रत्येक घंटा अथवा होरा का भी सात ग्रहों में से क्रमशः कोई न कोई ग्रह स्वामी होता है। क्रम से जिस ग्रह का होरा अथवा घंटा प्रातःकाल आ जाता है, इसी के नाम पर दिन का नाम होता है। जैसे यदि प्रातः काल सूर्य का होरा होगा तो उस दिन सूर्यवार अथवा रविवार होगा।

ग्रहों का होरा–दिन–रात में 24 होरा अथवा 24 घंटा होते हैं. सूर्य को जीवन शक्ति का प्रतीक माना गया है। इस तरह सृष्टि के शुरु में पहले सूर्य का प्रत्यक्ष दर्शन होने के कारण पहला वार सूर्य का

अर्थात् सूर्यवार या रविवार माना गया है। इस तरह यदि प्रातः काल सूर्य का होरा अथवा घंटा होगा तो उस दिन रविवार होगा। इस तरह रविवार को प्रथम घंटा अथवा होरा का स्वामी सूर्य हुआ। आकाश में सातों ग्रहों का क्रम है, अतः रविवार की दूसरा होरा अथवा घंटा उस ग्रह का होगा। ग्रहों का क्रम सूर्य के आगे शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल और फिर आठवां सूर्य अथवा रवि आ जाता है। इस तरह यदि रविवार को पहला घंटा अथवा होरा सूर्य का होगा तो फिर 8वां, 15वां, 22वां होरा अथवा घंटा रविवार को रवि अथवा सूर्य का ही होगा। यदि 22वां होरा अथवा घंटा रवि का होगा तो 23वां घंटा अथवा होरा ग्रह क्रम से शुक्र का होगा, 24वां घंटा अथवा होरा बुध का होगा और 25वां अर्थात् अगले दिन का प्रथम होरा चन्द्र का होगा और इसीलिए ही अगले दिन चन्द्रवार अथवा सोमवार होगा।

आकाश में पृथ्वी से दूरी के क्रम से ग्रहों का क्रम निश्चित है। जो ग्रह पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर है उसी ग्रह से यह क्रम प्रारम्भ होता है। शनि ग्रह को पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर माना गया है, अतः शनि से यह क्रम शुरु होता है। शनि से कम दूरी पर गुरु है, इससे पृथ्वी की अगली दूरी मंगल, फिर रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र आदि की आती है। इस तरह शनि ग्रह पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर है और चन्द्रमा सबसे कम दूरी पर है। इस तरह ग्रहों का क्रम हुआ 1. शनि 2. गुरु 3. मंगल 4. रवि 5. शुक्र 6. बुध 7. चन्द्र। यदि किसी दिन प्रातःकाल मंगल का होरा होगा तो प्रत्येक अगले होरा की गणना दिये गए क्रम से ही होगी। जैसे पहला होरा मंगल का, दूसरा रवि, तीसरा शुक्र, चतुर्थ बुध, पंचम चन्द्र, पष्ठ शनि का, सप्तम गुरु और फिर आठवां अथवा अष्टम होरा मंगल का होगा। इस तरह यह क्रम 24 होराओं का होगा और 25वां होरा अगले दिन अथवा बुध का होगा और इस दिन बुधवार होगा। इससे सुस्पष्ट हो गया है कि सूर्योदय के समय जिस ग्रह की होरा होगी, उसी के नाम का वह वार होगा। एक उदाहरण देकर होरा स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरण—मान लो सूर्योदय के समय शनिवार है तो इसका अर्थ है कि सूर्योदय के समय शनि का होरा अथवा घंटा होगा। अब आगे अगले दिन तक प्रत्येक होरा का क्या क्रम होगा तथा अगले दिन सूर्योदय के समय पहली होरा किस ग्रह की होगी नीचे दिये क्रम से स्पष्ट हो जाएगा।

शनिवार	पहला	होरा	---	शनि	का	होगा।
	2	,,	---	गुरू	,,	,,
	3	,,	---	मंगल	,,	,,
	4	,,	---	रवि	,,	,,
	5	,,	---	शुक्र	,,	,,
	6	,,	---	बुध	,,	,,
	7	,,	---	चन्द्र	,,	,,
	8	,,	---	शनि	,,	,,
	9	,,	---	गुरु	,,	,,
	10	,,	---	मंगल	,,	,,
	11	,,	---	रवि	,,	,,
	12	,,	---	शुक्र	,,	,,
	13	,,	---	बुध	,,	,,
	14	,,	---	चन्द्र	,,	,,
	15	,,	---	शनि	,,	,,
	16	,,	---	गुरु	,,	,,
	17	,,	---	मंगल	,,	,,
	18	,,	---	रवि	,,	,,
	19	,,	---	शुक्र	,,	,,
	20	,,	---	बुध	,,	,,
	21	,,	---	चन्द्र	,,	,,
	22	,,	---	शनि	,,	,,
	23	,,	---	गुरु	,,	,,
	24	,,	---	मंगल	,,	,,

25वां होरा अर्थात अगले दिन का होरा सूर्य का होगा। अतः अगला दिन रविवार होगा। इस तरह 24 घंटा–होरा में 7 ग्रह के पूरे 3 चक्कर लग जाते हैं और शेष 3 घंटा अथवा होरा बचे रहते हैं, जिसमें प्रति ग्रह 1 घंटा के हिसाब से तीन होरा बनते हैं। इस प्रकार 3 ग्रह और आते हैं और 24 घंटे पूरे होने पर 25 वें ग्रह के होरा में अगला दिन आरम्भ हो जाता है।

किस समय कौन सा होरा?–यदि यह जानना हो कि किसी वार को किसी इष्ट समय पर कौन सी होरा होगी तो तुरन्त जाना जा सकता है। यदि समय घटी में है तो उसके घंटा मिनट बना लें, उसमें 7 का भाग देने से जो शेष बचे उतनी संख्या उस दिन के प्रातः काल के समय से, उस दिन को एक गिनते हुए, जिस ग्रह का क्रम से होरा आए, वही होरा उस समय होगा।

जैसे 30 घटी दिन चढ़े सोमवार कौन सी होरा होगी जानना है।

30 घटी के घंटा मिनट बनाए 30 घड़ी 12 घंटे। अब 12 को 7 का भाग दिया 12÷7, इस तरह शेष 5 बचा। सोमवार का दिन था तो सोमवार से गिना पहला चन्द्र, दूसरा शनि, तीसरा गुरु, चतुर्थ मंगल और पंचम रवि का होरा हुआ। इस तरह उस समय रवि का होरा थी और चक्र में भी 5वां होरा सोमवार को रवि का ही है। किसी भी समय का होरा इस चक्र से देखा जा सकता है।

होरा चक्र-1

दिन	रवि वार	चन्द्र वार	मंगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार	होराक्रम घंटा तक			
	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	1	8	15	22
	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	2	9	16	23
	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	3	10	17	24
	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	4	11	18	–
	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	5	12	19	–
	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	6	13	20	–
	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	7	14	21	–

यदि समय घटी पल में हो और घटी पल में ही होरा जानना हो तो घटी पल में 2/5 से गुणा कर 7 का भाग देने से जो शेष बचे वही उस समय होरा होगा। घटी पल में होरा जानने के लिए इस चक्र का उपयोग किया जा सकता है।

होरा चक्र-2

दिन रवि वार	चन्द्र वार	मंगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार	होराक्रम–घटी तक			
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	$2\frac{1}{2}$	20	$37\frac{1}{2}$	55
शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	5	$22\frac{1}{2}$	40	$57\frac{1}{2}$
बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	$7\frac{1}{2}$	25	$42\frac{1}{2}$	60
चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	10	$27\frac{1}{2}$	45	–
शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	$12\frac{1}{2}$	30	$47\frac{1}{2}$	–
गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	15	$32\frac{1}{2}$	50	–
मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	$17\frac{1}{2}$	35	$52\frac{1}{2}$	–

होरा चक्र–1 घंटा के हिसाब से है क्योंकि होरा एक घंटा का होता है। दूसरा **होरा चक्र–2** घटी के हिसाब से है। घड़ी/घटी के हिसाब से होरा $2^1/_2$ घटी का होता है। $2^1/_2$ घटी = एक घंटा 1 होरा चक्र से ग्रह का क्रम भी स्पष्ट हो जाता है कि सूर्य से अगला होरा शुक्र, बुध,चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल और फिर सूर्य का 1 इसी तरह क्रम से होरा बदलता रहता है और 25 वां होरा अगले दिन का आ जाता है। यहां जो चक्र दिये गए हैं, उनकी सहायता से किसी भी समय एवं वार को आप तुरन्त होरा जान सकते हैं। चक्र–1 से घंटों में और चक्र–2 से घटी में होरा जाना जा सकता है। जिस समय का होरा जानना हो वह समय सूर्योदय से गिनना चाहिए यानि घड़ी के समय से सूर्योदय समय घटा कर जो समय होगा वह होरा जानने के लिए उपयुक्त होगा। सारांश यह कि आप किसी भी इष्ट समय का होरा जान सकते हैं।

उदाहरण–दिनांक 5–1–1998 सोमवार को 30 घटी दिन चढ़े का होरा जानना है। यहां 30 को 2/5 से गुणा किया तो 30×2/5 = 12 प्राप्त हुआ। अब 12 को 7 का भाग किया 12/7 = शेष 5 बचा। चक्र–2 घटी होरा चक्र में सोमवार को चन्द्र से 5वां होरा गिना तो सूर्य का होरा प्राप्त हुआ। इस तरह उस समय सूर्य का होरा था।

यदि घटी अथवा घंटा के हिसाब से होरा देखना होगा तो 30 घटी= 12 घंटा, अब 12 को 7 का भाग दिया 12/7= शेष 5, प्राप्त हुआ। चक्र–1 में सोमवार से 5वां गिना तो सूर्य का होरा प्राप्त हुआ। इस तरह उस समय सूर्य का होरा था। घटी तथा घंटा दोनों के हिसाब से सूर्य का होरा ही प्राप्त हुआ है।

3. **नक्षत्र**–नक्षत्र पंचांग का तीसरा अति महत्वपूर्ण अंग माना गया है। अभिजित समेत नक्षत्र 28 हैं परन्तु पंचांग में प्रायः 27 नक्षत्रों का ही विवरण दिया होता है। भचक्र को यदि 27 समान भागों में बांटे तो प्रत्येक भाग 13 अंश 20 कला का होगा क्योंकि पूर्ण भचक्र 360 अंश का है। इस तरह एक नक्षत्र $13^0–20'$ का हुआ। एक राशि 30^0 की होती है। बारह राशियों से 360^0 बनती है। मेष राशि से आरम्भ होकर यानि मेष राशि के शुरु में अश्विनी तथा मीन राशि के अंत में आखिरी नक्षत्र रेवती होता है। इस तरह एक राशि में $2^1/_4$ नक्षत्र स्थित होते हैं। सारांश यह है कि:–

1. भचक्र सम्पूर्ण = 360^0
2. 12 राशि $\frac{360}{12}$ = 30^0 की एक राशि
3. 27 नक्षत्र $\frac{360}{27}$ = $13^0–20$ का एक नक्षत्र

4. नक्षत्र 27/राशि 12

प्रत्येक राशि में $= 2\frac{1}{4}$ नक्षत्र या $2\frac{1}{4}$ नक्षत्र की एक राशि।

यह सदैव याद रखना चाहिए कि चन्द्रमा को किसी विशेष दिन 13 अंग 20 कला चलने में जो समय लगता है उसे नक्षत्र, समय अथवा चन्द्र नक्षत्र समय कहा जाता है। जब भी किसी विशेष ग्रह का उल्लेखन न हो तो आमतौर पर जब भी नक्षत्र का कहीं उपयोग होता है तो उस दिन का नक्षत्र अर्थात् चन्द्र नक्षत्र का समय ज्ञान व चन्द्रमा किस राशि में हैं, दिया रहता है। पंचांग में चन्द्रमा के रहने का समय घटी–पल व घंटा मिनटों में भी दिया होता है।

जैसे यहां कहा गया है अन्य ग्रह भी राशियों में भ्रमण करते हैं। जब ग्रह राशि में भ्रमण करेगा तो यह अवश्य ही नक्षत्र में अर्थात् राशि के किसी–न–किसी नक्षत्र में भ्रमण करता हुआ ही आगे बढ़ेगा। इस लिए जैसे चन्द्रमा नक्षत्र पर से भ्रमण करता है, इसी तरह समस्त ग्रह नक्षत्र पर से भ्रमण करते हैं। चन्द्र सब ग्रहों से तेज गति ग्रह है, अतः चन्द्र एक नक्षत्र एक दिन में चल लेता है परन्तु सूर्य जो दिन में केवल लगभग। अंश ही चलता है, उसे एक नक्षत्र पार करने में 13–14 दिन लगते हैं। इसे सूर्य नक्षत्र का समय या सूर्य नक्षत्र कहा जाता है। सूर्य नक्षत्र अर्थात् जिस नक्षत्र पर सूर्य होता है वह भी प्रत्येक पंचांग में दिया रहता है।

यह ही नहीं पंचांग में प्रत्येक ग्रह का नक्षत्र अर्थात् ग्रह किस नक्षत्र में कब प्रवेश हुआ आदि दिया होता है। नक्षत्रों एवं ग्रहों के अतिरिक्त पंचांग में किसी समय के ग्रह स्पष्ट व कुण्डली चक्र की दिये होतें हैं। इस तरह पंचाग से ऐसी सभी प्रकार की सूचना मिल जाती है।

प्रत्येक नक्षत्र को चार समान भागों में, बांटा गया है। प्रत्येक भाग को चरण या पाद कहा जाता है। जैसे एक नक्षत्र $13^{0}–20'$ का होता है, वैसे ही एक पाद अथवा चरण $3^{0}–20'$ का होता है। एक राशि 30^{0} की होती है। इससे सपष्ट हो जाता है कि $2\frac{1}{4}$ नक्षत्रों अथवा नौ चरणों से एक राशि का निर्माण होता है। ज्योतिष में चरण के लिए हिन्दी वर्णमाला के अक्षर निर्धारित किए हुए हैं। जन्म के समय चन्द्रमा जिस नक्षत्र के जिस चरण में होता, उस चरण के अक्षर से आरम्भ होने वाला नाम बच्चे को दिया जाता है। ऐसा नाम रखने का एक लाभ यह होता है कि किसी भी व्यक्ति का नाम जानकर ही उसकी चन्द्र अथवा जन्म राशि व नक्षत्र ज्ञात हो जाता है। सुहृदय पाठकों की जानकारी के लिए प्रत्येक नक्षत्र का नाम दिया जा रहा है।

क्रम	नक्षत्र	स्वामी	अक्षर			
1	अश्विनी	केतू	चू	चे	चो	ला
2	भरणी	शुक्र	लो	लू	ले	लो
3	कृतिका	सूर्य	आ	ई	उ	ए
4	रोहिणी	चन्द्रमा	ओ	व	रो	वू
5	मृगशिरा	मंगल	वे	वो	का	की
6	आर्द्रा	राहू	कु	घ	उ	छ
7	पुनर्वसु	गुरु	के	क्रो	हां	ही
8	पुष्य	शनि	हु	हे	हो	डा
9	आश्लेषा	बुध	डी	डू	डे	डो
10	मघा	केतु	मा	मी	मू	मे
11	पूर्वाफाल्गुनी	शुक्र	मो	टा	टी	टू
12	उतराफाल्गुनी	सूर्य	टे	टो	पा	पी
13	हस्त	चन्द्रमा	पू	ष	ण	ढ़
14	चित्रा	मंगल	पे	पो	रा	री
15	स्वाति	राहू	रू	रे	रो	ता
16	विशाखा	गुरु	ती	तू	ते	तो
17	अनुराधा	शनि	ना	नी	नू	ने
18	ज्येष्ठा	बुध	नो	या	यी	यू
19	मूल	केंतू	ये	यो	भा	भी
20	पूर्वाषाढ़	शुक्र	भू	या	का	ढ़ा
21	उतराषाढ़	सूर्य	भे	भो	जा	जी
22	श्रवण	चन्द्रमा	खी	खू	खे	खो
23	धनिष्ठा	मंगल	गा	गी	गू	गे
24	शतभिषा	राहू	गो	सा	सी	सू
25	पूर्वाभाद्रपद	गुरू	से	सो	दा	दी
26	उतराभाद्रपद	शनि	दू	थ	झ	त्र
27	रेवती	बुध	दे	दो	चा	ची

सारणी को ध्यान से देखने से पता चलेगा कि प्रथम, दश्म एवं 19 वें, 2–11–20, 3–12–21 वें नक्षत्र के स्वामी एक ही हैं अतः इसी क्रम से नक्षत्र का स्वामी ग्रह वही होगा। कष्ठस्थं करने के लिए नक्षत्र एवं नक्षत्रों के स्वामी इस तरह जाने जा सकते हैं।

1–10–19वां	नक्षत्र	का	स्वामी	केतू
2–11–20वां	नक्षत्र	का	स्वामी	शुक्र
3–12–21वां	नक्षत्र	का	स्वामी	सूर्य
4–13–22वां	नक्षत्र	का	स्वामी	चन्द्र
5–14–23वां	नक्षत्र	का	स्वामी	मंगल
6–15–24वां	नक्षत्र	का	स्वामी	राहू
7–16–25वां	नक्षत्र	का	स्वामी	गुरू
8–17–26वां	नक्षत्र	का	स्वामी	शनि
9–18–27वां	नक्षत्र	का	स्वामी	बुध

चन्द्रमा एवं चन्द्रमा नक्षत्र का जन्मपत्री निर्माण में अत्यधिक महत्व है। आमतौर जब यह कहा जाता है कि आज भरणी नक्षत्र है तो यह मतलब होता है कि चन्द्रमा भरणी नक्षत्र पर है। चन्द्रमा एवं चन्द्र नक्षत्र पर से ही शिशु का नाम, वर्ग, योनि, नाड़ी, गण आदि जाने जाते हैं।

जैसे पहले बताया जा चुका है कि जन्म समय जिस राशि नक्षत्र में चन्द्रमा होता है, वही उस शिशु की चन्द्र राशि अथवा जन्म राशि व जन्म नक्षत्र होता है। अतः चन्द्रमा किसी राशि व नक्षत्र में कितना समय रहता है, कब राशि प्रवेश करता है, कब राशि छोड़ता है, अति महत्वपूर्ण माना गया है। चन्द्र को एक नक्षत्र का भ्रमण अथवा पार करने में जितना समय लगता है, उसे नक्षत्र का भभोग कहते हैं। जितना नक्षत्र का समय पहले व्यतीत हो चुका होता है उसे नक्षत्र का भयात या मुक्तर्क्ष या गतर्क्ष कहा जाता है। पंचांग से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है। जन्म समय का नक्षत्र निर्धारण करने के लिए ऐसी जानकारी अति आवश्यक होती है। पंचांग में प्रतिदिन नक्षत्र के समाप्ति काल की जानकारी दी होती है। आमतौर पर जन्त्री एवं पंचांग में पर इस तरह सूचना दी होती है।

नक्षत्र ज्ञान चक्रम

नाम वार	अप्रैल 1998 तारीख	चैत्र प्रविष्टे	चैत्र शाका	तिथि चैत्र शुक्ल	समाप्ति काल घं मिं	नक्षत्र	समाप्ति काल घं मिं
बुध	1	19	11	5	16 38	रोई.	26 10

जैसे ऊपर दिखाया गया है दिनांक 1 अप्रैल की रोहणी नक्षत्र 26–10 बजे अर्थात् दिनांक 2 अप्रैल को 2–10 बजे समाप्त हो जाएगा और इसके उपरान्त मृगशिर नक्षत्र प्रारम्भ होगा।

जन्मपत्री निर्माण में नक्षत्र के भभोग व भयात की गणना जन्त्री अथवा पंचांग में दिए गए नक्षत्रों के काल के अनुसार पर की जाती है। भभोग व भयात की गणना अत्यधिक महत्वपूर्ण है अतः यहां पंचांग में दिए गए नक्षत्रों के समय के आधार पर, यह कैसे की जाती है स्पष्ट किया जाता है। प्रायः नक्षत्रों का स्टेण्डर्ड समाप्ति काल दिया जाता है, अतः आसानी के वर्तमान तथा गत नक्षत्र की पहचान हो जाती है और आसानी से भभोग व भयात जाना जा सकता है।

उदाहरण—एक बालक का जन्म 1 मई 1998 को चण्डीगढ़ में सुबह 10–15 पर हुआ दिनांक 1 मई1998 की चण्डीगढ़ का सूर्योदय समय 5 बजकर 42 मिन्ट था।

लहिरी एफेमेरीन 1998 के पृष्ठ 52 पर यह सूचना उपलब्ध है। यहां समय समाप्ति का दिया हुआ है।

तारीख	तिथि	घंटा	मिन्ट	नक्षत्र	घंटा	मिन्ट	योग	घंटा	मिन्ट
1	6	26	55	6	9	45	8	26	27
2	7	27	08	7	10	03	9	25	34
3	8	28	11	8	11	11	10	25	19

नक्षत्र क्रम संख्य 6 आर्द्रा का है। इस तरह नक्षत्र आर्द्रा तारीख एक को 9–45 पर समाप्त हुआ और इसके पश्चात् अगला नक्षत्र पुनर्वसु आरम्भ हुआ। बालक का जन्म 1 मई की सुबह 10–15 पर हुआ। इस तरह बालक का जन्म पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ। यहां आर्द्रा नक्षत्र गत तथा पुनर्वसु नक्षत्र वर्तमान अर्थात् जन्म का नक्षत्र हुआ। इस तरह जन्म का और गत नक्षत्र बड़ी ही आसानी से जाना जा सकता है। अब जब जन्म नक्षत्र ज्ञात हो जाए तो उसका भभोग ज्ञात करना चाहिए। यह इस तरह जाना जाएगा।

1 मई को क्रम से 6वां नक्षत्र 9–45 पर समाप्त हो गया और उसके पश्चात् अगला नक्षत्र अर्थात् क्रम के अनुसार 7वां नक्षत्र पुनर्वसु आरम्भ हुआ। दिनांक 2 मई की 7वां अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र समाप्त हुआ। इस लिएः–

1. दिनांक 1 मई को आर्द्रा का समाप्ति समय सुबह 9-45
2. दिनांक 2 मई को पुनर्वसु का समाप्ति समय सुबह 10-03

अब 2 मई 1998 पुनर्वसु का समाप्ति काल 10-03 में से 1 मई 1998 आर्द्रा नक्षत्र का समाप्ति समय अर्थात् पुनर्वसु नक्षत्र का आरम्भ होने का समय 9 बजकर 45 मिन्ट सुबह घटाया

1. पुनर्वसु समाप्ति	10 घंटे	3 मिनट
2. पुनर्वसु आरम्भ	9 घंटे	45 मिनट
3. अतः पुनर्वसु	0 –	18
4. 24 घंटे जोड़े	24 –	0
दूसरी तारीख होने से	24 –	18

इस तरह सपष्ट हो गया कि पुनर्वसु अर्थात् जन्म नक्षत्र का भभोग 24 घंटे 18 मिनट हुआ। इन 24 घंटे 18 मिनट के घटी पल बनाने से घटी पल में भभोग मिल जाएगा जैसे $2^1/_2$ घटी का एक घंटा होता है। (देखें सारणी) अतः 24 घंटे 18 मिनट× $2^1/_2$ = 60 घटी 45 भभोग हुआ।

सब से आसान विधि यह है कि जन्म नक्षत्र अर्थात् वर्तमान नक्षत्र के समाप्ति समय से उसका शुरू का समय कम अथवा घटा दो तो भभोग समय प्राप्त होगा जैसेः–

1. पुनर्वसु का समाप्ति समय 10–30 सुबह अर्थात् 34–03
2. पुनर्वसु का दिनांक 1 मई की शुरू होने का समय 9–45

भभोग = 24–18

इस तरह आसानी से पुनर्वसु का भभोग समय प्राप्त हो गया। आमतौर पर जन्त्री एवं ऐफेमेरीज तथा पंचांगों में आज कल समय सटैण्डर्ड समय ही दिया होता है, इसलिए किसी तरह की गणना आसानी से की जा सकती है क्योंकि प्रत्येक पंचांग में घटी पलों में भी समय होता है, इसलिए घटी पलों में कैसे भभोग ज्ञात किया जाए एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया जाता है।

घटी–पलों में भभोग जानना–घटी पलों में भभोग जानने की विधि भी वही है, केवल घंटा मिनटों की बजाय घटी पल होते हैं। जब मान घटी पल में हो तो गत (व्यतीत) नक्षत्र के घटी पलों को 60 घटी में से घटा दें क्योंकि दिए हुए घटी पल तो अहोरात्र (दिन रात का समय 60 घटी) में से गत नक्षत्र के निकल ही गए और शेष वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देने से वर्तमान नक्षत्र का भभोग अर्थात् किसी नक्षत्र के भोगने का कुल समय या वर्तमान नक्षत्र का पूरा समय प्राप्त हो जाएगा। यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि यदि कोई नक्षत्र तिथि के समान दो सूर्योदय के साथ आता हो तो 60 घटी और जोड़ने पर भभोग प्राप्त हो जाता है। आसान विधि यही है कि नक्षत्र के समाप्ति काल में से अर्थात् समाप्ति समय जो वर्तमान नक्षत्र का घटी पलों में हो, उसमें से वर्तमान नक्षत्र का शुरु होने का समय निकाल दें और जो शेष बचे, यदि एक दिन का अन्तर हो तो 60 घटी और दो दिन का

अन्तर हो तो और 60 घटी जोड़ दे। इस तरह आसानी से भभोग घटी पल में जाना जा सकता है।

उदाहरण—किसी बालक का जन्म चण्डीगढ़ में 1 मई 1998 को 11 घटी 22 पल 30 विपल दिन चढ़े हुआ। चण्डीगढ़ का सूर्योदय 5–42 बजे है। पंचांग में नक्षत्र स्थिति कुछ इस तरह हैं।

तारीख	नक्षत्र	घटी	पल	विपल	नोट
1	आर्द्रा	10	7	–	यह समाप्ति काल दिया है
2	पुर्नवसु	10	52	–	समाप्ति काल है

अब पुनर्वसु तिथि अर्थात् 1 तारीख को 10 घटी 7 पल पर आरम्भ होता है और 2 तारीख को 10 घटी 52 पल पर समाप्त होता है तो इस तरह समाप्ति से शुरू का समय निकालने से:—

10-52 समाप्ति पुर्नवसु
(–) 10-07 शुरु काल पुर्नवसु
0-45

45 पल में 60 घटी जोड़ देने से 60 घटी 45 पल भभोग मिला। घंटों मिनटों ने यह 24 घंटा 18 मिनट बना जो सही है।

भयात कैसे ज्ञात करे?–भयात अर्थात् नक्षत्र के शुरु अर्थात् जन्म नक्षत्र आरम्भ होने से जन्म समय अथवा अपने इष्ट समय तक कितनी अवधि का है। यह तो आपने देख ही लिया होगा कि नक्षत्र के समय को जानना कठिन कार्य नहीं है। भयात आमतौर पर जन्मपत्री में भी लिखा होता है अतः भयात को जानना भी अति जरूरी है। यह भी पंचांग की सहायता से घंटों, मिनटों व घटी पलों में जाना जा सकता है। जैसे पहले बताया गया है कि आजकल प्रत्येक पंचांग में समय घंटों मिनटों में दिया होता है, जिससे गणना करने में बड़ी आसानी रहती है।

भयात जानने के लिए 60 घटी में से गत नक्षत्र के घटी पल घटा देने चाहिए। इस तरह जो शेष बचे अथवा प्राप्त हो उसमें अपने इष्ट समय के घटी पल जोड़ देने पर जो योगफल प्राप्त होगा वह वर्तमान नक्षत्र अर्थात् जन्म नक्षत्र का भयात होगा, ध्यान रखने की बात वही है कि भयात वर्तमान नक्षत्र अर्थात् जन्म नक्षत्र आरम्भ होने से जन्म समय तक की अवधि तक का समय होता है।

अब सर्वप्रथम स्टैंण्डर्ड समय के आधार पर पूर्व उदाहरण को लेकर भयात ज्ञात करते हैं।

		घंटा	मिनट
1. जन्म समय	=	10	15 सुबह
2. पुनर्वसु शुरु	=	9	45 सुबह
3. पुनर्वसु का भयात	=	0	30 मिन्ट

इस तरह भयात 30 मिनट, हुआ, अर्थात् जन्म नक्षत्र पुनर्वसु शुरू होने से जन्म समय तक का समय (भयात) 30 मिनट था। यदि 30 मिनट की $\times 2^1/_2$ से करें तो समय घटी पल बन जाएगा। इस तरह भयात 1 घटी 15 पल प्राप्त हुआ। घटी पल में यह इस तरह ज्ञात होगाः–

जन्म समय 11 घटी 22 पल
(–)
पुनर्वसु शुरु 10 घटी 7 पल
= 1 – 15

घटी पल में भी 1 घटी 15 पल ही समय प्राप्त हुआ है। यदि 1 घटी 15 पल के घंटा मिनट बनाएं तो 30 मिनट हुए।

चन्द्र प्रत्येक 27 दिन के पश्चात् उसी नक्षत्र में विचरण करता है। यदि आप जानना चाहें कि आपका नक्षत्र राशि आदि कौन से हैं तो सारणी वाले पृष्ठ देखें। राश्यंश के अनुसार भी सारणी से नक्षत्र ज्ञात हो सकेगा।

पंचक संज्ञक नक्षत्र–क्योंकि यह नक्षत्र बड़े महत्वपूर्ण हैं और इनका विवरण जन्मपत्री में लिखा होता है। इसलिए उन नक्षत्रों को जानना अति आवश्यक है। जब चन्द्रमा कुम्भ राशि में होता है तो पंचक आरम्भ होती है तथा मीन राशि में से चन्द्रमा के पार करने के साथ पंचक समाप्त हो जाती है। इस तरह पंचक संज्ञक नक्षत्र यह माने गए हैं।

1. धनिष्ठा
2. शतभिषा
3. पूर्वा भाद्रपद
4. उतरा भाद्रपद
5. रेवती

इन नक्षत्रों में पंचक दोष माना गया है। इन नक्षत्रों में काम प्रारम्भ करना साधारणतयः शुभ नहीं होता।

मूलसंज्ञक नक्षत्र–इन नक्षत्रों का जन्मपत्र में विशेष स्थान है। यदि किसी बालक का मूल संज्ञक नक्षत्र में जन्म होता है तो जन्मपत्र में विशेष कर लिखा जाता है। मूल संज्ञक नक्षत्र यह होतें है।

1. ज्येष्ठा
2. आश्लेषा
3. रेवती

4. मूल
5. मघा
6. अश्विनी

यदि जन्म के समय चन्द्रमा अश्विनी के प्रथम चरण में, आश्लेषा के चौथे चरण में, मघा के प्रथम चरण में, ज्येष्ठा के चतुर्थ चरणा में, मूल में प्रथम चरण में हो तो जातक को जन्म के शीघ्र पश्चात् कषृ की लाभावना होती है। माता, पिता के लिए भी अशुभ माना गया है, परन्तु ग्रह स्थिति शुभ होने पर जातक दीर्घ आयु वाला, धनी तथा सम्पन्न होता है। यदि चन्द्रमा ज्येष्ठा के प्रथम चरण में जन्म समय हो तो जातक के बड़े भाई के लिए यह स्थिति अशुभ मानी गई है। जब किसी जातक का जन्म इनमें से किसी भी नक्षत्र में हो तो 27 दिन के बाद जब वही नक्षत्र हो अथवा जब चन्द्रमा उसी नक्षत्र में संचार करे तो शान्ति करायी जानी चाहिए। यह ध्यान रखें कि ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र आश्लेषा सर्प मूल संज्ञक नक्षत्र माना गया है।

गण्ड मूल—बालक का जन्म गण्डमूल में हुआ हो तो जन्मपत्री बताते समय ध्यान रखा चाहिए क्योंकि जन्म गण्डमूल में होना एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है। अतः गण्ड कैसे बनता है, यहां स्पष्ट किया जाता है।

जब राशि चक्र में किसी राशि के साथ किसी नक्षत्र का भी अन्त हो जाता है तो उस स्थान को गण्ड कहते हैं। जब राशि, नक्षत्र दोनों समाप्त हो जाएं, उस स्थान को गण्ड कहा जाता है। जैसे मेष राशि के आरम्भ और राशि का सन्धि स्थान गण्ड है क्योंकि मीन राशि भी और रेवती नक्षत्र का भी, अर्थात् दोनों का एक समय अन्त हो जाता है. इसी तरह कर्क राशि और आश्लेषा नक्षत्र अन्त पर तथा सिंह राशि और मघा नक्षत्र के प्रारम्भ में और वृश्चिक राशि और ज्येष्ठा के अन्त पर तथा धन राशि और मूल के आरम्भ में गण्ड की स्थिति उत्पन्न होती है। अतः यह तीनों स्थान गण्ड के स्थान माने गए हैं और इनमें सम्बन्धित नक्षत्र गण्डान्त नक्षत्र माने जाते हैं। इन तीनों गण्ड स्थानों को 1. संध्या गण्ड 2. रात्रि गण्ड 3. दिवा गण्ड का नाम दिया गया है।

गण्डान्त समय—प्रत्येक गण्डान्त स्थिति का समय निर्धारित किया गया है जो इस प्रकार है।

गण्डान्त समय

गण्ड नक्षत्र नाम	समय—आदि अन्त की घटी
1. मघा—अश्लेषा	2 + 2 घटी
2. मूल—ज्येष्ठा	2 + 2 घटी
3. अश्विनी—रेवती	2 + 2 घटी

तालिका से स्पष्ट है कि इन नक्षत्रों की आदि की 2 घटी और अन्त की 2 घटी 4 घटी का प्रत्येक गण्डान्त होता है। गणना करके यह समय आसानी से जाना जा सकता है। अतः इन नक्षत्रों की गणना करते समय यह ध्यान रखें और यदि जन्म नक्षत्र इस स्थिति में हो तो उसका जन्मपत्री में विशेष उल्लेख करना चाहिए। यह सदैव ध्यान रखें कि यदि जन्म के समय ये 6 नक्षत्र अर्थात् आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती, अश्विनी, जो गण्डान्त के हैं में से कोई नक्षत्र हो तो उन्हीं में मूल लगते हैं। अतः इन नक्षत्रों में जन्म लेने से मूल लगता है। मूल भी कई प्रकार के हैं। गण्डान्त में बालक का जब जन्म होता है तो पिता को कुछ समय तक बालक का मुख न देखना चाहिए। मूलादि की शान्ति कराकर मुख़ देखने का विधान है।

मास शून्य नक्षत्र—जब किसी मास में यह नक्षत्र आते हैं तो यह मास शून्य नक्षत्र माने जाते हैं।

क्रम	**मास**	**कौन सा नक्षत्र**
1	चैत्र	रोहिणी, अश्विनी
2	वैशाख	चित्रा, स्वाती
3	ज्येष्ठ	उतराषाढ़ा, पुष्य
4	आषाढ़	पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा
5	श्रावण	उतराषाढ़ा, रेवती
6	भाद्रपद	शतभिषा, रेवती
7	आश्विन	पूर्वाभाद्रपद
8	कार्तिक	कृर्तिका, मघा
9	मार्गशीर्ष	चित्रा, बिशाखा
10	पोष	आर्द्रा, अश्विनी, हस्त
11	माघ	श्रवणामूल
12	फाल्गुन	भरणी, ज्येष्ठा

दग्धसंज्ञक नक्षत्र—दध्ध नक्षत्रों में कोई भी शुभ कार्य करना वार्जित माना गया है। दग्धसंज्ञक नक्षत्र यह होते है। यदि किसी वार अथवा दिन कोई विशेष नक्षत्र आ जाता है तो दग्ध नक्षत्र कहलाता है। जैसेः—

वार	नक्षत्र
रविवार को	भरणी
सोमवार को	चित्रा
मंगलवार को	उतराषाढ़ा
बुधवार को	उतराफाल्गुणी
शुक्रवार को	ज्येष्ठा
शनिवार को	रेवती

नक्षत्रों के गुण व लिंग भेद—प्रत्येक नक्षत्र का गुण व लिंग भेद इस प्रकार हैं।

नक्षत्र	लिंग	गुण	अंग
अश्विनी	पुल्लिंग	तामस	पैरों का ऊपरी भाग
भरणी	स्त्रीलिंग	राजस	पैर के तलवे
कृतिका	स्त्रीलिंग	राजस	सिंह, सिर में कष्ट
रोहिणी	स्त्रीलिंग	राजस	भाल, भाल में कष्ट
मृगशिरा	नपुंसक लिंग	तामस	भौहें, भौहें ये कष्ट
आर्द्रा	स्त्रीलिंग	तामस	नेत्र, नेत्र रोग
पुनर्वसु	पुल्लिंग	सात्विक	नाक, नाक में कष्ट
पुष्ट	पुल्लिंग	तामस	चेहरा, चेहरे पर कष्ट
आश्लेषा	स्त्रीलिंग	सात्विक	कान, कान में रोग
मघा	स्त्रीलिंग	तामस	होंठ, होंठों में रोग
पू. फाल्गुनी	स्त्रीलिंग	राजस	दांया हाथ
उ. फाल्गुनी	स्त्रीलिंग	राजस	बांया हाथ
हस्त	पुल्लिंग	राजस	अंगुलियां
चित्रा	स्त्रीलिंग	तामस	ग्रीवा, गर्दन
स्वाती	स्त्रीलिंग	तामस	छाती में कष्ट
विशाखा	स्त्रीलिंग	सात्विक	छाती, छाती दर्द
अनुराधा	पुल्लिंग	तामस	उदर, उदरारोग

नक्षत्र	लिंग	गुण	अंग
ज्येष्ठा	स्त्रलिंग	सात्विक	आमाशय,पेट में कष्ट
मूल	नपुंसक लिंग	तामस	कोख
पूर्वाषाढ़ा	स्त्रीलिंग	राजस	कम्पन, वायु,पीठ
उठराषाढ़ा	स्त्रलिंग	राजस	रीढ़,रीढ़ की हड्डी
श्रवण	पुल्लिंग	राजस	कमर, कमर दर्द
धनिष्ठा	स्त्रीलिंग	तामस	गुदा, गुदारोग
शतभिषा	नपुंसक लिंग	तामस	दाई जंघा
पूर्वाभाद्रपद	पुल्लिंग	तामस	पिंडली, वायु
उत्तराभाद्रपद	पुल्लिंग	तामस	
रेवती	स्त्रीलिंग	सत्विक	टखनों में

जो नक्षत्र के अंग आदि दिए हैं, इन नक्षत्रों की शुभ, अशुभ स्थिति के अनुसार जातक के अंगों की पुष्टता व निर्बलता का पता लगाया जा सकता है। जैसे यदि आर्द्रा नक्षत्र और उसका स्वामी ग्रह राहु अशुभ स्थिति में होंगे तो नेत्र रोग होने की प्रबल सम्भावना रहती है। इसी तरह प्रत्येक नक्षत्र की शुभता, अशुभता महत्वपूर्ण मानी गयी है।

4. **योग**–योग भी पंचांग का महत्वपूर्ण अंग है। यह पंचांग का चौथा अंग है। योग दो प्रकार के हैं।

1.चन्द्रमा और सूर्य की गति में जब 13 अंश 20 कला का अन्तर पड़ता है तब एक योग बनता है। भचक्र 360 अंश का है। क्योंकि योग 27 होते हैं अतः $360^0 \div 27 = 13^0 - 20'$= एक योग हुआ। परन्तु ध्यान रहे इन योगों का नक्षत्र के प्रमाण अथवा अकाश की स्थिति से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। यह योग सूर्य + चन्द्र का अन्तर बतलाते हैं। इसलिए चन्द्र व सूर्य के राश्यंश के योग से विषकुम्भादि 27 योग होते हैं। अतः चन्द्र+सूर्य राश्यंश से कौन सा विषकुम्भादि योग है जाना जा सकता है। इन योंगों को भी तिथि एवं नक्षत्र की तरह पंचांग में घटी, पलों तथा सटैण्डर्ड समाप्ति समय के अनुसार लिखा होता है। पंचांग में सूर्योदय के समय जो योग होता है, लिखा होता है। किसी भी समय के चन्द्र सूर्य के राश्यंश स्पष्ट करके तथा उनको जोड़कर योग का पता लगाया जा सकता है। यहां एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरण–लाहिरी एफेमेरीज 1998 के पृष्ठ 52 तिथि, नक्षत्र एवं योग की सूचना इस प्रकार दी गई है।

जून-1998

तारीख	तिथि	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट
1	7	18	20	10	25	57	13	9	50

तिथि, नक्षत्र योग के साथ जो समय दिया गया है, वह इनके समाप्ति का स्टैण्डर्ड समय है। समय के साथ तिथि, नक्षत्र व योग की क्रम संख्या भी लिखी हुई है। इस तरह प्रथम जून–1998 को सुबह 9–50 तक 13वां योग अर्थात् व्याघात था। एफेमेरीज से वह भी ज्ञात होता है कि यह योग दिनांक 31 मई 1998 को 9 बजकर 55 से प्रारम्भ हुआ और दिनांक 1 जून 1998 को 9 बजकर 50 मिनट पर समाप्त हुआ।

यदि किसी शिशु का जन्म 1 जून 1998 को 5–30 सुबह हो तो यही योग होना चाहिए क्योंकि जन्म समय तारीख 31 मई 1998 को 9 बजकर 55 मिनट से 1 जून 1998 को 9 बजकर 50 मिनट के भीतर का है। अब दिनांक 1 जून 1998 को चन्द्र सूर्य के राश्यंस जोड़ कर देखते हैं कि कौन सा योग प्राप्त होता है। क्योंकि दिनांक 1 जून 1998 को 5 बजकर 30 मिनट सुबह के चन्द्र सूर्य के राश्यंश जोड़ने पर भी यही योग होना चाहिए। लाहिरी एफेमेरीज में 1 जून 1998 को सुबह 5.30 सूर्य चन्द्र की स्थिति इस तरह है।

		र. अं कं वि
1 जून 1998 5.30 सुबह चन्द्र स्पष्ट	=	4–4–27–9
1 जून 1998 5.30 सुबह सूर्य स्पष्ट	=	1–16–29–22
जोड़ा	=	5–20–56–31

अब योगों की तालिका (देखें अन्त में) देखने पर पता लगा कि 5 रा 10 अं 0 कला से 5 रा 23 अं 20 कला तक व्याघात योग होता है। इस तरह दिनांक 1 जून 1998 को चन्द्र सूर्य के राश्यंश जोड़ने पर भी सुबह 5.30 बजे व्याघात योग प्राप्त हुआ। अब यह सुस्पष्ट हो गया है कि योगः–

1. पंचांग से जाने जा सकते हैं।

2. सूर्य चन्द्र के स्पष्ट राश्यंश जोड़कर जो जोड़फल प्राप्त हो, दी गयी सारणी के अनुसार किसी भी समय का विषकुम्भादि योग जाना जा सकता है। यह 27 योग है। इनके नाम क्रम के अनुसार इस तरह है:–

योगों के नाम

क्रम	योग का नाम	क्रम	योग का नाम	क्रम	योग का नाम
1	विषकुम्भ	10	गण्ड	19	परिध
2	प्रीति	11	वृद्धि	20	शिव
3	आयुष्मान	12	ध्रुव	21	सिद्ध
4	सौभाग्य	13	व्याघात	22	साध्य
5	शौभन	14	इर्षण	23	शुभ
6	अतिगण्ड	15	बैर	24	शुक्ल
7	सुकर्मा	16	सिद्धि	25	ब्रह्मा
8	घृति	17	व्यतीपात	26	ऐन्द्र
9	शूल	18	वरीयान	27	वैधृति

जन्म समय का योग—जैसे पहले बताया जा चुका है कि पंचांग में योग का स्टैण्डर्ड समय दिया होता है। इससे जन्म समय को योग आसानी से निर्धारित किया जा सकता है। चन्द्र सूर्य के राश्यंशों को जोड़कर जो जोड़फल आए, उनके अनुसार भी तालिका से उस समय का योग तुरन्त जाना जा सकता है। एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा रहा है।

उदाहरण—किसी बालक का जन्म चण्डीगढ़ में दिनांक 1-6-1998 को 11-15 सुबह हुआ। इस बालक का जन्म समय कौन सा योग था, जानना है।

लाहिरी एफेमेरीज से यह जानकारी पहले नोट की।

1. प्रथम जून 1998 को सुबह 5.30 की ग्रह स्थिति इस तरह है।

		रा	अं	क	वि
सोमवार 1-6-98 5.30 सुबह सूर्य	=	1	16	29	22
1-6-98 5.30 सुबह चन्द्र	=	4	4	27	9

2. सूर्य की 24 घंटों में गति = 57'-30"
3. चन्द्र की 24 घंटों में गति = 12°-11"
4. एफेमेरीज में सुबह 5.30 की ग्रह स्थिति से जन्म समय का अन्तर

जन्म समय = 11-15
= ग्रह स्थिति
एफेमेरजि समय 5.30
घटाया = 5-45

5. एफेमेरीज में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योग के समाप्ति समय की सूचना इस प्रकार लिखी गई है।

तारीख	तिथि	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट
1	7	18	20	10	22	57	13	9	50
2	8	20	18	11	25	35	14	10	16

सर्वप्रथम इस सूचना से हीं पता लगाया जा सकता है कि जन्म समय कौन सा योग हो सकता है। यहां 13वें योग व्याघात का समाप्ति काल 9 बजकर 50 मिनट दिनांक 1 जून 1998 का दिया हुआ है। बालक का जन्म दिनांक 1 जून 1998 की 11 बजकर 15 मिनट पर हुआ। इससे स्पष्ट हो गया कि व्याघात से अगला अर्थात् 14वां योग हर्षण जन्म के समय था। इस की जांच दूसरी विधि द्वारा भी की जा सकती है और जन्म समय के योग से स्पष्ट राश्यंश होगा आदि प्राप्त की जा सकती हैं। इस विधि द्वारा योग इस तरह जाना जा सकता है। नियम पहले बताया जा चुका है अर्थात् सूर्य राश्यंश + चन्द्र राश्यंश का जोड़ = तालिका के अनुसार योग होगा।

बालक का जन्म 11 बजकर 15 मिनट पर सुबह 1–6–1998 को चण्डीगढ़ में हुआ। जो चन्द्र सूर्य के राश्यंश एफेमेरीज में दिए हैं वह सुबह 5.30 के हैं। जन्म समय और दिए गए स्पष्ट राश्यंश समय 5.30 में 5 घंटे 45 मिनट का अन्तर है। सूर्य चन्द्र की दैनिक गति (24 घंटे) के अनुसार 5 घंटे 45 मिनट का मान जानकर, दिनांक 1–6–1998 की सुबह 5.30 के सूर्य चन्द्र के स्पष्ट राश्यंश में जोड़ने से दिनांक 1–6–1998 को जन्म समय 11–15 सुबह के सूर्य, चन्द्र के राश्यंश प्राप्त हो जाएंगे। इनको जोड़कर, जोड़फल के अनुसार योग उस समय, जन्म समय का योग होगा।

		रा	अं	क	वि
1. 1–6–1998 को 5.30 सुबह एफेमेरीज अनुसार सूर्य	=	1	16	29	22
2. सूर्य की 24 घंटे अर्थात् दैनिक गति 57'–30"					
3. 5 घंटे 45 मिनट का मान	=	+0	0	13	54
4. 1–6–1998 को 11–15 सुबह सूर्य स्पष्ट	=	1	16	43	16
5. 1–6–1998 की 5.30 सुबह एफेमेरीज अनुसार चन्द्र	=	4	4	27	9
6. चन्द्र की दैनिक गति 12^{0}–11'					

7. चन्द्र की दैनिक गति के अनुसार 5 घंटे 45 मिनट का मान	=	+0	2	55	8
8. 1-6-1998 को 11-15 सुबह चन्द्र स्पष्ट	=	4	7	22	17
9. जन्म समय अर्थात् 11 बजकर 15 मिनट पर सूर्य, चन्द्र स्पष्ट हुए।	सूर्य =	1	16	43	16
	चन्द्र =	4	7	22	17
	जोड़फल =	5	24	5	33

जन्म समय पर सूर्य चन्द्र का राश्यंश का जोड़फल 5 राशि 24 अंश 5 कला 33 विकला प्राप्त हुआ। पुस्तक के अंत में जो सारणी दी गई है उसके अनुसार हर्षण योग (14वां) 5 राशि 23 अंश 20 कला पर आरम्भ होता है। जन्म समय के राश्यंश इससे अधिक है। इस तरह जन्म समय 14वां योग हर्षण था और वह योग 5°-24°-5'-33" तक था

योग के भुक्तांश एवं भोगयांश—जब किसी भी योग के जन्म समय के राश्यंश प्राप्त हो जाते हैं तो उस योग के भुक्तांश एवं भोग्यांश जान लेना अति सरल है। क्योंकि तालिका में (अंत के पृष्ठ) प्रत्येक योग के प्रारम्भ तथा समाप्ति के राश्यंश लिखे होते हैं। जन्म समय के योग राश्यंश जान लिये जाते हैं। अतः थोड़ा गणित करके भुक्तांश एवं भोग्यांश जाने जा सकते हैं। जैसेः—

अ—भुक्तांश

	राशि	अंश	कला	विकला
जन्म समय हर्षण योग के राश्यंश	5	24	5	33
तालिका अनुसार हर्षण योग का आरम्भ (–)	5	23	20	0
भुक्तांश =	0	0	45	33

क— भोग्यांश

तालिक अनुसार हर्षण योग की समाप्ति	6	6	40	0
जन्म समय के हर्षण योग स्पष्ट राश्यंश (–)	5	24	5	33
भोग्यांश =	0	12	34	27

ख— हर्षण योग का समाप्ति काल—हर्षण योग का समाप्ति काल प्रायः एफेमेरीज में दिया होता है। हर्षण का ही नहीं प्रत्येक योग का समाप्ति काल एफेमेरीज में लिखा होता है। जैसे लाहिरी एफेमेरील में हर्षण योग का अर्थात् 14वें योग का दिनांक 2 जून 1998 को 10 बजकर 16 मिनट स्टैण्डर्ड समय लिखा है। यह योग एफेमेरीज के अनुसार दिनांक 1 जून 1998 की सुबह 9.50 से दिनांक 2 जून 1998 की 10-16 तक रहा।

सूर्य, चन्द्र की दैनिक गति को जोड़कर, जो जोड़फल आता है वह योग गति फल कहलाता है। इससे भी तथा भोग्यांश से योग का समाप्ति काल भी जाना जा सकता है। यदि पंचांग में समाप्ति काल न दिया हो तो इस विधि की समाप्ति काल जानना अति सरल है।

विधि—

	अंश	कला	विकला
सूर्य की दैनिक गति =	0	57	30
चन्द्र की दैनिक गति = +	12	11	–
योग गति =	13	8	30

योग गति 13 अंश 8 कला 30 विकला है और हर्षण योग के भोग्यांश 12 कला 34 और विकला 27 है। अब हर्ष्रण योग का समाप्ति काल ज्ञात करना है। यह जानने की सरल विधि यह है कि इस पुस्तक के अन्त में लॉग सारणी देखें। इसमें योग गतिः—

= 13 अंश 8 कला का लॉग = 2618
= 12 अंश 34 कला का लॉग = 2810
= 2810 से 2618 घटाया = 0192
= 0192 लॉग सारणी में ढूंढा
तो समय प्राप्त हुआ = 22 घंटे 58 मिनट
= जन्म समय 11.15 + 22.58 = 34.13
24 घंटे घटाया(–) 24.0
10.13

इस तरह हर्षण योग दिनांक 2 जून की 10 बजकर 13 मिनट पर समाप्त होगा। तीन मिनट का लॉग विधि से अन्तर पड़ा है क्योंकि एफेमेरीज समाप्ति काल 10–16 दिया है।

विशेष योग—दूसरी प्रकार के योग वार, तिथि या नक्षत्र से विशेष योग बनते हैं। वार एवं नक्षत्र से बनने वाले आनन्दादि 28 योग होते हैं।

योगों को जानने की विधि—आनन्दादि योगों को जानने की विधि यह है कि रविवार को अश्विनी से, सोमवार को मृगशिर से, मंगलवार को अश्लेषा से, बुधवार को हस्त से, गुरुवार को अनुराध से, शुक्रवार को उतराषाढ़ा से, शनिवार को शतभिषा से गिना जाए तो आनन्दादि योग मिलता है। इसमें अभिजित नक्षत्र भी गिना जाता है। आनन्दादि योग सूर्योदय से सूर्योदय तक रहते हैं तथा इनकी गणितीय क्रिया नहीं है। प्रायः पंचांगों में आमतौर पर पंक्ति में इन योगों का पहला अक्षर ही दिया होता है। इन योगों का क्रम इस तरह होता है।

आनन्दादि योग सारणी

क्रम	योग क्रम	रविवार नक्षत्र	सोमवार नम्बर	मंगलवार नम्बर	बुधवार नम्बर	बृहस्पतिवार नम्बर	शुक्रवार नम्बर	शनिवार नम्बर
1	1	अश्विनी	5	9	13	17	21	25
2	2	भरणी	6	19	14	18	22	26
3	3	कृतिका	7	11	15	19	23	27
4	4	रोहिणी	8	12	16	20	24	28
5	5	मृगशिरा	9	13	17	21	25	1
6	6	आर्दा	10	14	18	22	26	2
7	7	पुनर्वसु	11	15	19	23	27	3
8	8	पुष्प	12	16	20	24	28	4
9	9	आश्लेषा	13	17	21	25	1	5
10	10	मघा	14	18	22	26	2	6
11	11	पूर्वाफाल्गुनी	15	19	29	27	3	7
12	12	उतराफाल्गुनी	16	20	24	28	4	8
13	13	हस्त	17	21	25	1	5	9
14	14	चित्रा	18	22	26	2	6	10
15	15	स्वाती	19	23	27	3	7	11
16	16	विशाखा	20	24	28	4	8	12
17	17	अनुराधा	21	25	1	5	9	13
18	18	ज्येष्ठा	22	26	2	6	10	14
19	19	मूल	23	27	3	7	11	15
20	20	पूर्वाषाढ़ा	24	28	4	8	12	16
21	21	उतराषाढ़ा	25	1	5	9	13	17
22	22	अभिजित	26	2	6	10	14	18
23	23	श्रवण	27	3	7	11	15	19
24	24	धनिष्ठा	28	4	8	12	16	20
25	25	शतिभिषा	1	5	9	13	17	21
26	26	पूर्वाभाद्रपद	2	6	10	14	18	22
27	27	उतराभाद्रपद	3	7	11	15	19	23
28	28	रेवती	4	8	12	16	20	24

उदाहरण—यह सारणी देखनी अत्यन्त सरल है। सर्वप्रथम क्रम दिया गया है, फिर योग का क्रम लिखा है। इस क्रम से कौन का योग हो सकता है का ऊपर विवरण दे दिया गया है। दिन के नीचे जो अंक दिए गए हैं वह नक्षत्र के क्रम के नम्बर हैं। इष्ट दिन अर्थात् जानने वाले दिन जो नक्षत्र ही उस नक्षत्र की क्रम का नम्बर उस दिन को नीचे लिखा हुआ है और उसके वाई ओर जिस योग का अंक–नम्बर होगा वही क्रम के अनुसार उस दिन योग होगा।

जैसे बुधवार आर्द्रा नक्षत्र है और यह जानना है कि उस दिन आनन्दादि योग कौन सा होगा। सारणी में देखा तो आर्द्रा का क्रम का अंक 6 लिखा है। अंक 6 के साथ देखा तो योग क्रम भी 6 है। अब बुधवार के नीचे 6 अंक ढूँढने से पता चला कि यह क्रम 22 की पंक्ति में है। इस तरह बुधवार को शुक्ल आनन्दादि योग था। जिसका फल शुभ नहीं हैं.

सुहृदय पाठकों की जानकारी के लिए 28 आनन्दादि योगों के नाम एवं फल दिये जाते हैं।

आनन्दादि योग एवं फल

क्रम	योग का नाम	योग का फल	क्रम	योग का नाम	योग का फल
1	आनन्द	शुभ, सिद्धि	15	लुम्ब	धन क्षय
2	कालदण्ड	हानि, मृत्यु	16	उत्पात	प्राण नाश
3	धूम	असुख	17	मृत्यु	अशुभ, मृत्यु
4	घाता	सौभाग्य	18	काण	कलेश, अशुभ
5	सौभ्य	अधिक सुख	19	सिद्धि	कार्यसिद्ध हो
6	ध्वांक्ष	धन हानि	20	शुभ	कल्याण होगा
7	केतू	सौभाग्य	21	अमृत	राज्य सम्मान
8	श्रीवत्स	सौभाग्य सम्पति	22	शुक्ल	धन क्षय
9	वज्र	हानि, क्षय	23	मद	अक्षय विद्या
10	मुद्गर	अशुभ, लक्ष्मी क्षय	24	मातंग	कुलवृद्धि
11	क्षत्र	राज्यमान	25	रक्ष	महाकष्ट
12	मित्र	पुष्टि	26	चर	कार्यसिद्धि हो
13	मानस	सौभाग्य	27	सुस्थिर	ग्रहारंभ
14	पद्म्	धनागम	28	प्रवर्द्धमान	विवाह, शुभ

उदाहरण—सोमवार को श्रवण नक्षत्र था। इस दिन का आनन्दादि योग एवं उसका फल जानना है। श्रवण नक्षत्र का क्रम 23 है। अब सोमवार के नीचे 23 नम्बर 1 अंक ढूंढा तो यह योग क्रम 19 में मिला। इस तरह इस दिन आनन्दादि योग 19वां अर्थात् सिद्धि था। इसका फल है कार्य सिद्धि। अतः इस दिन कार्य सिद्धि की सम्भावना है।

सिद्धि योग—वार या नक्षत्र के योग से अन्य भी विशेष प्रकार के योग बनते हैं जो प्रायः पंचांग ये दिए होते हैं। सिद्धि योग का छोड़ कर अन्य सब योग अशुभ ही माने गए हैं। 1. सिद्धि योग 2. अमृत सिद्ध योग 3. सर्वार्थ सिद्ध योग सर्व दोष नाशक माने गए हैं और कार्य सिद्ध करते हैं। मृत्युयोग, बालक तिथियां हैं तथा सभी अशुभयोग शुभ कार्यों में वर्जित है। तिथि और दिन मिलकर 13 होने से क्रकच योग बनता है। अंक ज्योतिष में संख्या/संयुक्तांक 13 की तरह यह योग भी शुभ कार्यों में वर्जित माना गया है।

जैसे कहा गया है। सिद्ध योग ही शुभ मानेंगे। यह पंचांग में लिए होते हैं जैसे सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर, रविपुष्प, गुरु पुष्प योग आदि व्यापार तथा अन्य शुभ कार्यों को आरम्भ करने के लिए उतम माने गए हैं। राशि की अंगूठी धारण करने के लिए अति शुभ माने गए हैं।

किसी विशेष दिन को किसी विशेष नक्षत्र के परस्पर होने पर चार तरह के योग विशेष रुप से बनते हैं। इनका प्रभाव मानव जीवन पर विशेष रुप से पड़ता है और यह योग दैनिक जीवन के लिए उपयोगीं एवं मार्गदर्शक माने गए हैं। यहां दी गई सारणी में योग का क्रम अंक लिखा है और किस नक्षत्र और वार को कौन से क्रम का योग होगा भी लिखा गया है। क्रम से योग इस प्रकार है:—

क्रम	**योग का नाम**	**फल**
1	अमृत योग	अति उतम फल
2	सिद्धि योग	उतम फल
3	मृत्यु का मरण योग	अशुभ फल
4	प्रवल अरिष्ट योग	अति अशुभ

यहां क्रम 3 और 4 के योग अशुभ फल दिखाते हैं। अतः यदि किसी दिन क्रम 3 और 4 के योग हों तो शुभ कार्य नहीं करने चाहिऐ अर्थात् इन दिनों शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं, अतः इन दिनों शुभ कार्य स्थगित रखने चाहिए। सुहृदय पाठकों की जानकारी के लिए यहां सारणी दी जा रही है। ताकि इन योगों का ज्ञान प्राप्त हो सके। जो अंक लिखे गए हैं, वह योग का क्रम अंक है जैसे। अमृत योग का, 2 सिद्धि योग का आदि।

अमृत सिद्धि योग सारणी

क्रम	नक्षत्र	दिन/वार						
		रवि वार	सोम वार	मंगल वार	बुध वार	गुरु वार	शुक्र वार	शनि वार
1	अश्विनी	2	2	2	3	1	1	2
2	भरणी	4	2	2	2	2	2	2
3	कृतिका	2	3	2	1	3	2	1
4	रोहिणी	2	1	1	2	3	3	1
5	मृगशिरा	2	1	2	2	3	2	2
6	आर्द्रा	2	2	3	2	3	2	2
7	पुनर्वसु	2	1	2	2	1	2	2
8	पुष्य	2	2	2	2	1	3	2
9	आश्लेषा	2	2	2	2	2	3	3
10	मघा	3	3	2	2	1	3	1
11	पू:फाल्गुणी	2	2	2	1	2	2	2
12	उ. फाल्गुणी	1	2	1	1	3	2	3
13	हस्त	1	2	2	3	2	1	3
14	चित्रा	2	4	2	2	2	2	3
15	स्वाती	2	1	2	2	1	2	2
16	विशाखा	3	3	3	2	2	2	2
17	अनुराधा	3	2	2	2	2	2	2
18	ज्येष्ठा	3	2	3	2	4	3	2
19	मूल	1	2	1	3	2	1	2
20	पूर्वाषाढ़ा	2	3	2	1	2	4	2
21	उतराषाढ़ा	1	3	4	1	3	3	3
22	श्रवण	1	1	2	2	2	3	2
23	धनिष्ठा	3	2	2	4	2	2	2
24	शतभिषा	2	2	3	2	3	2	1
25	पूर्वाभाद्रपद	2	3	3	1	2	2	3
26	उतराभाद्रपद	1	2	1	2	2	2	2
27	रेवती	1	2	2	3	2	2	4

उदाहरण—बुधवार को योग ज्ञात करना है। बुधवार को नक्षत्र अनुराध था। अब क्रम 17 अनुराधा नक्षत्र और दिन/वार बुधवार की नीचे खोजने से पता चला कि अंक 2 लिखा है। इसका मतलब हुआ कि उस दिन योग क्रम अंक 2 अर्थात् सिद्धि योग था जिसका फल उतम फल लिखा है। इस सारणी पर से ऐसे विचार करना चाहिए।

5. करण—करण पंचांग का पांचवां अंग है। यह भी अन्य अंगों की भांति महत्वपूर्ण अंग माना गया है। करण का आधार तिथि होता है। अतः करण तिथि का आधा भाग होता है अर्थात् तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। तिथि के प्रथम, पहले अर्थात् पूर्वार्द्ध में एक कारण और उतरार्द्ध अर्थात् अन्त के आधे भाग में दूसरा करण होता है। इस तरह एक तिथि में दो करण होते हैं।

सूर्य और चन्द्रमा के बीच 6 अंश का अन्तर पड़ने पर एक करण होता है इस तरह चन्द्रमास में 30 तिथि और 60 करण होते हैं। करणों की संख्या 11 है। इनके नाम है।

करणों के नाम

क्रम	करण का नाम	क्रम	करण का नाम	क्रम	करण का नाम
1	बव	5	गर	9	चतुष्पाद
2	बालव	6	वणिज	10	नाग
3	कौलव	7	विष्टि	11	किस्तुघ्न
4	तैतिल	8	शकुन		

इन 11 करणों में 4 करण स्थिर और सात करण चर माने गए हैं। क्रम संख्या एक से सात चर करण हैं और क्रम संख्या 8 से 11 स्थिर करण कहलाते हैं। शकुन, चतुष्पाद, नाग व किस्तुन करण क्रमशः कृष्ण चतुर्दशी के अन्त के आधे भाग में, अमावस्या के पहले आधे भाग में, अमावस्या के अन्त के आधे भाग में व शुक्ल प्रतिपदा के पहले आधे भाग में होते हैं तथा अन्य किसी तिथि में नहीं होते। क्योंकि इनका स्थान निश्चित एवं स्थिर है, इसलिए ही इन्हें स्थिर करण कहा जाता है। क्रम संख्या एक से सात तक करण जो चर करण कहलाते हैं वह मास के बाकी 56 तिथ्यार्द्धों में शुक्ल प्रतिपदा अन्त का आधा भाग से कृष्ण चतुर्दशी पहला आधा भाग तक आमतौर पर 8–8 वार क्रमशः आते हैं। किस तिथि को कौन सा करण होता है। इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है।

करण चक्रम

शुक्ल पक्ष				कृष्णा पक्ष			
तिथि	पहला आधा भाग	अन्त का आधा भाग	करण स्वामी	तिथि	पहला आधा भाग	अन्त का आधा भाग	करण स्वामी
1	किस्तुघ्न	बव	इन्द्र	1	बालव	कौलव	सूर्य
2	बालव	कौलव	सूर्य	2	तैतिल	गर	पृथ्वी
3	तैतिल	गर	पृथ्वी	3	वणिज	विष्टि	यम
4	वणिज	विष्टि	यम	4	बव	बालव	ब्रह्मा
5	बव	बालव	ब्रह्मा	5	कौलव	तैतिल	सूर्य
6	कौलव	तैतिल	सूर्य	6	गर	वणिज	लक्ष्मी
7	गर	वणिज	लक्ष्मी	7	विष्टि	बव	इन्द्र
8	विष्टि	बव	इन्द्र	8	बालव	कौलव	सूर्य
9	बालव	कौलव	सूर्य	9	तैतिल	गर	पृथ्वी
10	तैतिल	गर	पृथ्वी	10	वणिज	विष्टि	यम
11	वणिज	विष्टि	यम	11	बव	बालव	ब्रह्मा
12	बव	बालव	ब्रह्मा	12	कौलव	तैतिल	सूर्य
13	कौलव	तैतिल	सूर्य	13	गर	वणिज	पृथ्वी
14	गर	वणिज	लक्ष्मी	14	विष्टि	शकुन	कलियुग
15 पूर्णिमा	विष्टि	बव	इन्द्र	30 अमावस्या	चतुष्पाद	नाग	सर्प

करण के साथ जो करण स्वामी दिया है, वह साथ वाले करण का ही है जैसे बव का स्वामी इन्द्र, कौलव का सूर्य और किस्तुघ्न का स्वामी वायु। तुरन्त करण जानने के लिए कि कौन से तिथि में कौन करण होगा, यह अति सरल रहेगा।

अति सरल करणा सारिणी

शुक्ल पक्ष तिथि	1	2-9	3-10	4-11	5-12	6-13	7-14	8-15	-	-
पहला भाग अथवा आधा	किस्तुघ्न	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	विष्टि	चतुष्पाद
अन्त का अथवा दूसरा आधा	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	शकुन	नाग
कृष्ण पक्ष तिथि	-	1-8	2-9	3-10	4-11	5-12	6-13	7	14	30

इससे तुरन्त स्पष्ट हो जाता है कि शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि अर्थात् प्रतिपद को पहले आधे भाग में किस्तुघ्न और दूसरे अथवा अन्त के आधे भाग में बव करण होगा। यहां पुनः याद कराया जाता है कि तिथि 12 अंश की बनती है। अतः 6 अंश का पहला आधा होता है और दूसरा 6 अंश का अन्त का आधा होता है। तिथि द्वितीया नवम को पहले आधे भाग में बालव और दूसरे तथा अन्त के आधे भाग में कौलव करण होगा। इसी तरह कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को अन्त के अर्थात् दूसरे भाग का करण कौलव और पहले आधे भाग का बालव होगा। कृष्ण पक्ष की तिथि 2–9 का दूसरे आधे भाग का गर और पहले आधे भाग का करण तैतिल होगा आदि।

आमतौर यदि कोई विशेष कथन न हो तो पंचांग में किसी तिथि के पहले आधे भाग के अर्थात् पूर्वार्द्ध में जो करण होता है, वही दिया होता है। आमतौर पर यह करण कब अर्थात् किस समय तक रहेगा भी लिखा होगा है । यह सदैव ध्यान रखें कि पंचांग में करण सूर्योदय के समय तिथि के पूर्वार्द्ध तथा उतरार्द्ध के अनुसार होते हैं तथा यह विवरण देना होता है, अतः करण जन्म समय कौनसा था, जानना अति आवश्यक है । जैसे लिखा गया है कि पंचांग में करणा सूर्योदय समय अर्थात् प्रातः कालीन का होता है, इसे सरल गणित से जन्म समय कौन सा करण था जाना जा सकता है।

जन्म समय करण–जैसे बताया गया है कि पंचांग में सूर्योदय अर्थात् प्रातः कालीन करण लिखा होता है। यदि किसी बालक का जन्म उस के अन्तर्गत आता होगा या उससे आगे आएगा तो उसका उस समय तात्कालिक करण होगा। जैसे एक पंचांग में स्टैंडर्ड समय में लिखा है:–

प्रथम मार्च– गर 12–36 वाद वणिज 23–02 बाद
विष्टि अगले दिन तक।

इसका मतलब यह हुआ कि दिनांक, प्रथम मार्च को 12–36 तक गर करण था। अतः यदि किसी बालक का जन्म दिनांक प्रथम मार्च को 10 बजकर 15 मिनट पर हो तो उसका तात्कालिक करण गर होगा क्योंकि जन्म समय पंचांग में दिये गए समय के अर्न्तगत ही आता है। जो इस तरह जानकारी पंचाग में दी होती है, उससे तुरन्त तात्कालिक करण का पता चल जाता है। करण के स्पष्ट अंश भुक्तांश और भोग्यांश जानने के लिए सरल गणित करना पड़ता है। यदि किसी तिथि के भुक्तांश व भोग्यांश पता हो तो करण के भुक्तांश और भोग्यांश तुरन्त जाने जा सकते हैं।

1. यदि तिथि दशम 6 अंश 14 कला 10 विकला पर है अर्थात् शुक्ल पक्ष की तिथि दशम 6 अंश 14 कला 10 विकला पर

है, तो इसका मतलब है कि दशम तिथि का पहला आधा भाग समाप्त होकर दूसरा अथवा अन्त का आधा भाग है। सारणी में देखा तो शुक्ल पक्ष के दूसरे भाग अर्थात् अन्त की दशमी तिथि को गर करण था।

2. यदि किसी दिन कोई तिथि मान लें यही शुक्ल पक्ष दशम तिथि 3 अंश 10 कला पर है। इसका मतलब यह है कि दशम तिथि का अभी पहला आधा भाग है। अतः शुक्ल पक्ष की दशमी को पहले भाग में तैतिल करण होगा। इस तरह तिथि के अंश आदि जानकर तुरन्त करण जाना जा सकता है।

भुक्तांश और भोग्यांश–करण के भुक्तांश और भोग्यांश जानना बड़ा सरल है। यह तो आप जान ही चुके हैं कि चन्द्रमा (–) सूर्य का अन्तर जब 12 अंश का होता है तो एक तिथि होती है और यह तिथि इस तरह 12 अंश की होती है। आप यह भी जान चुके हैं कि तिथि के पहले 6 अंश तक पहला करण तथा 6 अंश से 12 अंश अर्थात् तिथि के अन्त तक दूसरा भाग होता है। अतः–

1. तिथि के पहले आधे भाग में करण के भुक्तांश = तिथि के भुक्तांश
2. करण के भोग्यांश = तिथि के भोग्यांश–6° कम 6 अंश

इसी तरह
1. तिथि के अन्त के आधे भाग में करण के भुक्तांश = तिथि के भुक्तांश –6°
करण के भोग्यांश = तिथि के भोग्यांश

3. पंचांग में प्रत्येक करण का समाप्ति काल भी दिया होता है और साथ ही यह भी लिखा होता है कि इससे आगे का करण कौनसा और किस समय तक रहेगा। इसलिए करण के समाप्ति काल को स्टैंडर्ड समय में जानने की कोई समस्या नहीं है परन्तु पंचांग पर ही भरोसा नहीं छोड़ देना चाहिए, थोड़ा गणित करके पंचांग में प्रत्येक इंदराज की जाँच कर लेनी चाहिए।

समाप्ति काल कैसे निर्धारित करें–तिथि = चन्द्रमा (–) सूर्य के राश्यंश दर्शाते हैं। इससे ही करण का ज्ञान होता है अर्थात् करण के भुक्तांश और भोग्याश की जानकारी मिलती है। अतः तिथि की गति जो दरअसल चन्द्रमा (–) सूर्य गति हो जाती है, को आधार मान कर करण का समाप्ति काल बड़ी असानी से जाना जा सकता है। करण सम्बन्धी पूर्ण जानकारी एक उदाहरण देकर स्पष्ट की जाती है।

उदाहरण–किसी बालक का जन्म 1–4–1998 चण्डीगढ़ में हुआ। सूर्य उदय 6–16 पर है। पंचाग में यह जानकारी दी गई है।

1 अप्रैल तिथि 5 घंटा 16 29 मिनट
2 अप्रैल तिथि 6 घंटा 16 49 मिनट

पूर्व जो तिथि की उदाहरण थी वही यहां उदाहरण का विवरण है क्योंकि करण का समाप्ति काल भी वही होता है जो तिथि का होता है। पहले आधे भाग के करण का समाप्ति काल भी वही होता है जो काल तिथि के मान का आधा भाग होता है। अब तिथि पंचमी 16–29 पर समाप्त होगी तो निश्चित है कि करण भी 16–29 पर समाप्त होगा। अतः पंचमी के दूसरे भाग का करण बालव 16–29 पर समाप्त होगा।

चन्द्रमा सूर्य का राश्यंश $1^5–23^0–57'–19"$ हैं। इसकी अंश बनाए तो 53 अंश 57' कला 19 विकला हुए। इसको 12 पर भाग दिया तो $4–5^0–57'–19"$ प्राप्त हुआ। इसका मतलब है चौथ समात होकर पंचमी के $5^0–57'–19"$ जा चुके थे। ये अंश कला 6 अंश से कम है अतः इस समय पंचमी तिथि में बव करण अथवा तिथि के आधा पहले भाग में बव करण चल रहा था। पंचमी के 6 अंश से अधिक होने पर बालव करण तिथि के समाप्ति काल तक रहेगा। तिथि 16–29 पर समाप्त होगी अतः बालव करण भी 16–29 पर ही समाप्त होगा क्योंकि पहले आधे भाग का करण चल रहा था अर्थात् बव चल रहा था तो इस तरह यह 5.40 तक ही चला।

भद्रा क्या है–भद्रा, विष्टि करण का ही दूसरा नाम है। यह भी पंचांग में चाहिए जानकारी दी होती है। भद्रा शुभ कार्य में वर्जित मानना चाहिए, परन्तु घात, विष तथा तान्त्रिक कार्य भद्रा में करने माने गए हैं। अतः युद्ध–शत्रु उच्चारण, यज्ञ कार्य आदि में भद्रा का विचार किया जाता है और इसको पंचांग में दिया रहता है।

जिन तिथियों में भद्रा होती है, वह इस प्रकार हैं। जैसे आप जान ही चुके हैं कि विष्टि करण का ही दूसरा रूप भद्रा है अथः जिन तिथियों में विष्टि करण होता है, उसी में भद्रा होती है। जैसेः–

पक्ष	शुक्ल पक्ष	कृष्ण पक्ष
तिथि	9–15 पहला भाग 4–11 अन्त का भाग	3–10 अन्त का भाग 7–14 पहला भाग

यदि करण चक्र को देखा जाए तो इन तिथियों को विष्टि करण ही मिलेगा। तिथि के आधे भाग में ही भद्रा होती है पूर्ण तिथि में भद्रा नहीं होती। इसका आमतौर पर प्रमाण 30 घटी का माना गया है। जैसे बताया गया है प्रत्येक पंचांग में भद्रा का प्रारम्भ एवं अन्त का समय घटी फल में व स्टैंडर्ड समय में दिया होता है। प्रत्येक पंचांग में भद्रा के सम्बन्ध में विशेष कई तरह के संकेत दिए होते हैं क्योंकि भद्रा के समय को अति अशुभ, शुभ कार्य के लिए माना गया है। अतः

इसका कुछ और ज्ञान भी दिया जाता है हालांकि यह विषय फलित का है। फिर भी थोड़ी जानकारी यहां देना आवश्यक है।

मनुष्य अंगों में भी भद्रा का वास माना गया है जो इस प्रकार से है। अधिकतर फल मन्दा ही माना गया है।

भद्रा का अंगों में वास

अंग	कितने घटी रहती हैं	फल क्या होता है
छाती	11	धन, सम्पति की हानि
नाभि	4	बुद्धिमान हो।
कटि	6	कलह—क्लेश हो
पुच्छ	3	विजय की सम्भावना बने
मुख	5	असफलता, कार्यनाश
कण्ठ	1	अति अशुभ, मरण

भद्रा को विद्वानों ने दो वर्गों में बांटा हुआ है। एक को वृश्चिकी भद्रा और दूसरी को सर्पिणी भद्रा कहा जाता है वृश्चिकी भद्राः शुक्ल पक्ष की रात्रि की भद्रा वृश्चिकी कहलाती है। आवश्यक कार्यों के लिए सर्पिणी अथवा सर्प का मुख का एक भाग छोड़ कर कार्य किया जा सकता है। ज्योतिष शास्त्र में भद्रा का वास चन्द्र की राशि में भी माना है। प्रायः भद्रा का समय शुभ कार्यों के लिए अशुभ ही रहता है बेशक भद्रा का वास कहीं भी हो; अतः ऐसा समय त्याग देना ही बेहतर होता है। चन्द्रमा की राशि के अनुसार भद्रा का वास इस प्रकार है और फल भी लिखा है।

चन्द्रमा की राशि क्रम	भद्रा का वास अथवा लोक	फल
1—2—3—8	स्वर्ग लोक	शुभ, धन सम्पति मिले
6—7—9—10	पाताल लोक	शुभ, धन, प्राप्त हो।
4—5—11—12	मृत्यु लोक	अशुभ, असफलता मिले

पंचांग का उपयोग—अब तक हम जान चुके हैं कि तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण आदि का तात्कालिक विवरण देने वाली पुस्तक का नाम पंचांग है। जन्त्री, एफेमेरीज आदि उसका ही रूप होते हैं। अब तक यह भी स्पष्ट हो गया है कि ज्योतिषीय अध्ययन के लिए पंचांग

अथवा पंचाग का अन्य रुप जन्त्री तथा एफेमेरीज एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य उपकरण है। इसके बिना लग्न, जन्म कुण्डली तथा जन्मपत्री की रचना करनी अति कठिन है। अतः पंचाग का ज्योतिष में बहुत महत्व है और इसका उपयोग ज्योतिषीय गणित में प्रत्येक अवस्था में सहायक सिद्ध होता है। पंचांग, प्रत्येक विद्यार्थी, विद्वान अथवा ज्योतिषी, गणितकार का मार्गदर्शन करता है। अतः पंचांग का ज्ञान प्रत्येक पाठक को होना अनिवार्य है। क्योंकि पंचाग में कई तरह के संकेत दिये होते हैं, अतः पंचाग को कैसे देखा जाए अर्थात् पंचांग को पढ़ना, वाचना पंचांग अथवा पंचांग का अध्ययन कैसे करें, जानना अति जरुरी है। सर्वप्रथम पंचाग को कैसे वाचें बताया जाता है।

पंचांग वाचना—कई तरह के पंचाग मिलते हैं परन्तु सबमें समानता यही होती है कि प्रत्येक पंचाग में अन्य विवरण के अतिरिक्त तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण आदि दिए होते हैं। जैसे पहले बताया जा चुका है कि पंचाग की गणित किसी–न–किसी विशेष स्थान के अक्षांश व रेखांश के आधार पर होती है। इसलिए सुविधा के लिए पंचांग सदैव अपने निकटतम स्थान का ही लेना चाहिए तभी आसानी से अक्षांश, रेखांश व अन्य संस्कार किए जा सकेंगे।

पंचांग जिस समवत् का होता है उसका उल्लेख आरम्भ में किया होता है। सम्वत् और साथ ही शा[illegible] भी लिखा होता है। हर एक पृष्ठ पर चान्द्रमा मास, पक्ष, ऋतु, अ[illegible] और गोलादि की जानकारी दी होती है। प्रत्येक पंचांग में अंग्रेजी महीने क[illegible] नाम और सन् भी लिखे होते हैं। पंचांग का आधार विक्र[illegible] सम्वत् होता है। पंचांग चैत्र शुक्ल (सुदी प्रतिपदा) से चैत्र बदी (कृष्ण) तक की अवधि के लिए बनाए जाते हैं। चैत्र शुक्ल से वर्ष आरम्भ होता है। उसमें नीचे कई प्रकार की खड़ी पंक्तियां ही रहती हैं। प्रत्येक मास के लिए दो–दो पृष्ठ अतः 12 मास के लिए 24 पृष्ठ होते हैं। यहां पंचांग के एक पृष्ठ से जानकारी के लिए उदाहरण दिया जा रहा है:—

विक्रमी संवत् 2055, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
शाक 1920 सन् 1998 ई०
(ता 5 नवं० से 19 नवं० तक)

दिनमान घटी पल	तिथि	वार	घटी	पल	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प	योग	घ.	प	करण	घ.	प	सूर्य उदय
26 48	1	गु	0	10	6	54	कृति.	37	18	वरि	40	23	कौ.	4	27	6 50
	2	गु	51	05	27	16	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0 0
26 45	3	शु	42	53	23	59	रोहि.	30	43	परि	30	30	व	16	59	6 50
26 43	4	श	35	55	21	13	मृग	25	23	शि	21	40	ब	9	24	6 51
26 38	5	सू	30	58	19	15	आर्द्र	21	50	सि.	14	10	कौ	3	42	6 52

जैसे यहां पंचांग के एक पृष्ठ में से सार दिया गया है, सुहृदय पाठक जान गए होंगे कि ऐसे ही पंचाग के पृष्ठों पर कई प्रकार की खड़ी पंक्तियां होती हैं। यहां तो केवल नमूने के लिए सार ही दिया है। आपको चाहिए, कोई अच्छा अपने निकटमत स्थान का पंचाग प्राप्त कर लें। अब प्रत्येक पंक्ति को कैसे देखना है दिया जा रहा है।

1. पृष्ठ के ऊपर के भाग में विक्रमी संवत्, मास व अंग्रेजी मास दिया रहता है।

2. इस पंचांग में सर्वप्रथम दिनमान के घटी पल दिए हुए हैं। दिनमान के सम्बन्ध में इससे पूर्व समझा दिया गया है। किसी किसी पंचांग में दिनमान अन्त में भी दिया हुआ मिलता है। यहां आपको पुनः बता दें कि सूर्योदय से सूर्य अस्त तक जितने घटी पल होते हैं यही पंचांग में दिनमान दिया होता है। यदि 60 घटी में से दिनमान घटाएं तो रात्रिमान मिल जाता है।

3. सर्वप्रथम प्रारम्भ में तिथि दी होती है। शुक्ल पक्ष में 1 से 15 तक और कृष्ण पक्ष में एक से 14 तक 30 अमावस्या दी होती हैं। यदि कोई तिथि क्षय हो वह तिथि नहीं दी होती है. पंचांगों में आमतौर पर जो तिथि वृद्धि होती है, वह दो बार लिखी हुई होती है यहां जो सार दिया हैं, उसमें तिथि एक घटी 0 पल 10 दिखाई गई है। इसका मतलब यह है कि कृष्णपक्ष की पहली तिथि सूर्योदय के उपरान्त घटी 0 पल 10 तक रहेगी। इस पंचांग में समय घंटा मिनट में दे दिया है। इसके अनुसार पहली तिथि सूर्योदय के उपरान्त घटी 0 पल 10 तक रहेगी। इस पंचांग में समय घंटा मिनट में दे दिया है। इसके अनुसार पहली तिथि सूर्योदय के उपरान्त 6 घंटा 54 मिनट तक रहेगी। इससे स्पष्ट हो गया है कि कृष्ण पक्ष की पहली तिथि गुरुवार को सूर्योदय से 0 घटी 10 पल तक तथा 6 घंटा 54 मिनट तक रहेगी। यदि यह देखना हो कि क्या यह समय सही लिखा गया है, तो सूर्य उदय देंखे। इसमें सूर्य उदय 6 घंटा 50 मिनट पर लिखा है। 0 घटी 10 पल के 4 मिनट बनते हैं, यदि सूर्य उदय में 4 मिनट जोड़े = 6.50+ 4 मिनट तो 6.54 मिनट सूर्य उदय उपरान्त बने और घंटों मिनटों में तिथि भी 6.54 तक रहेगी लिखा है। अतः सूर्य उदय से तिथि का काल घटी, पलों एवं घटों मिनटों में सही लिखा गया है। प्रिय पाठकों, पंचांग एक अनिवार्य उपकरण है परन्तु पंचांगों में बहुत अशुद्धियां देखी गयी हैं, अतः थोड़ा गणित करके स्वयं पंचांग में दी गयी महत्वपूर्ण व विशेष इंदराज की जाँच कर लेनी चाहिए कि जो जानकारी दी गयी है वह सही भी है।

कई पंचांगों में 1.1 गु 1.0–10 लिखा हुआ मिलेगा। इसका भी अर्थ वही है। इससे भी प्रगट होता है कि गुरुवार को पहली तिथि कृष्ण पक्ष की सूर्योदय के उपरान्त 0 घटी 10 पल तक रहेगी।

4. वार—तिथि के आगे वार लिखा हुआ होता है। वार का नाम आमतौर पर संकेताक्षर में ही लिखा होता है, ऐसे संकेतों की सूचना प्रायः पंचांग में दी होती है फिर भी यहां प्रत्येक वार के क्या—क्या संकेताक्षर होते हैं, दिया जा रहा है। सूर्यवार का सू, रविवार का र, चन्द्रवार का चं, सोमवार का सो, मंगलवार का मं, भौमवार (मंगलवार) का भौ, बुधवार का बु, गुरुवार का गु, शुक्रवार का शु, शनिवार का श इत्यादि संकेताक्षर लिखे होते हैं। इससे तिथि को कौन सा वार होगा या उस वार को कौन सी तिथि होगी का ज्ञान हो जाता है।

5. नक्षत्र—नक्षत्रों के नाम भी आमतौर पर संकेताक्षरों में ही दिये होते हैं। वार की अगली पंक्ति में नक्षत्र के घटी पल भी सूर्योदय समय के होते हैं। जैसे जो सार दिया गया है, उसमें कृतिका नक्षत्र 37 घटी 18 पल तक रहेगा। यदि घटी पल के घंटा मिनट बना लें तो पता चल जाएगा कि सूर्योदय के उपरान्त कृतिका नक्षत्र कितने घंटे मिनट तक रहेगा।

आमतौर पर अश्विनी के लिए अ, भरणी के लिए भ, कृतिका के लिए कृ या कृति इत्यादि लिखा होता है। संकेताक्षरों को बड़े ध्यान पूर्वक देखना चाहिए ताकि कोई गलती न हो। कभी—कभी एक ही संकताक्षर के दो नक्षत्र होते हैं जैसे अनुराधा, अश्विनी, आश्लेषा इत्यादि, इनका ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए नक्षत्रों का नाम और क्रम कण्ठस्थ होना जरूरी होता है।

6. योग—नक्षत्र की अगली पंक्ति में योग लिखा मिलता है। योगों के नाम भी संकेताक्षरों में ही दिए होते हैं। इसलिए योग का क्रम स्मरण रखना भी जरूरी है ताकि कहीं कोई भूल न हो जाए। योगों के संकेताक्षर जैसे सिद्ध का सि, वज् के लिए व, शुक्ल के शु, वरियान के लिए व या वरि, परिध के लिए प या परि आदि लिखा होता है। यहां जो सार दिया गया है उसमें वरि 40—23 घटी पल लिखा है। इसका मतलब है कि बरीयान योग सूर्योदय के उपरान्त 40 घटी 23 पल तक रहेगा।

7 करण—योग की अगली पंक्ति में करण दिया रहता है। यहां जो पृष्ठ का सार दिया गया है, उसमें कौ: 4 घटी 48 पल लिखा है। इससे पता चलता है कि कौलव करण सूर्योदय के उपरान्त 4 घटी 48 पल तक है। कई पंचांगो में एक करण दिया रहता है वह सूर्योदय पर जो तिथि होती है, उसी तिथि का करण चाहे वह अन्त का हो या आरम्भ का लिखा हुआ होता है। करणों के संकेताक्षर भी स्मरण रखने चाहिए क्योंकि इस तरह की जानकारी संकेताक्षरों में ही दी होती है।

8. सूर्योदय—प्रत्येक पंचाग में सूर्योदय और सूर्यास्त का समय घंटा मिनट में लिखा होता है। जैसे जहां जो पृष्ठ का सार दिया गया है,

सूर्य उदय 6.50 घंटे मिनट लिखे हैं। स्थान के अभाव के कारण सूर्यास्त समय और अन्य विवरण नहीं दिया गया है।

दिनमान से सूर्योदय या सूर्यास्त बड़ी ही आसानी से जाने जा सकते हैं। जैसे कि दिनमान को आधा करके उसके घंटा मिनट बना लो क्योंकि दिनमान घटी पल में लिखा होता है। जो यह समय बनेगा वह सूर्यास्त का समय होगा। उसे 12 घंटा से घटा देने से सूर्योदय का समय घंटा मिनट में आ जाएगा। जैसे दिए गए सार के पृष्ठ में सूर्योदय 6 घंटे 50 मिनट पर दिया है। दिनमान 26 घटी 48 पल दिया है। 26 घटी 48 पल का आधा किया 13 घटी 24 पल आया 1 इन 13 घटी 24 पल के घंटे मिनट बनाए तो 5 घंटे 21 मिनट 36 सै. सूर्यास्त समय बना। इस सूर्यास्त समय अर्थात् 5 घंटे 21 मिनट 36 सैकण्ड को 12 घंटे से निकाला 5–21 36 (–) 12 घटे तो सूर्योदय समय 6 घंटे 38 मिनट 24 सैकण्ड प्राप्त हुआ।

9. प्रत्येक पंचाग में चन्द्रमा की स्थिति दी रहती है। प्रत्येक राशि में चन्द्र कब आता है और कब तक रहता है आदि का पूरा विवरण होता है। सूर्यस्पष्ट भी दिया रहता है अर्थात् सूर्य उस समय ठीक, किस स्थान, किस राशि, अंश कला आदि पर था। आज कल पंचांगों में प्रत्येक ग्रह के किसी विशेष समय के राशि अंश लिखे होते है। चन्द्र, सूर्य के अतिरिक्त प्रत्येक ग्रह की गति भी दी होती है।

ग्रहों के योग, पर्व, त्योहार, व्रत आदि भी दिये रहते हैं। ग्रह जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है उसका समय भी दिया रहता है। ग्रहों के उदय, अस्त तथा मार्गी, वक्री लिखा होता है। पंचांगों में ग्रहण आदि की, विवाह, मुहूर्त तथा लग्न आदि सब प्रकार की जानकारी दी होती है। पंचांग में मुस्लिम तारीख का भी उल्लेख होता है। मुसलमानों का हिजरी सन् होता है। मुस्लिम कैलेंडर में प्रतिवर्ष मुहर्रम पहला मास होता है। वहां से उसकी पहली तारीख से नया हिजरी सन् शुरू होता है। इसके बाद पंचांग में मुस्लिम तारीख के उपरान्त रा. अर्थात् राष्ट्रीय तारीख का खाना होता है। 21 मार्च को हिन्दू तारीख। चैत्र मानकर यह वर्ष होता है। इसमें प्रत्येक माह की तारीखें दी रहती है। इसके बाद दिनमान आदि जो सदैव घटता बढ़ता रहता है लिखा होता है आमतौर पर अन्त के खाने में स्थानीय सूर्य उदय का खाना होता है। सूर्य उदय–अस्त आमतौर पर घंटे–मिनटों में लिखा होता है।

पंचांगों में अंग्रेजी तारीख का खाना भी होता है। वार, तारीख, मास और वर्ष का उल्लेख होता है। यह वर्ष1 जनवरी से आरम्भ होकर 31 दिसम्बर तक होता है। कई तरह के संकेत भी लिखे रहते हैं। कौन सा संकेत किसका है, आमतौर पर लिखा होता है। परन्तु कई पंचांगों में इसका उल्लेख नहीं मिलता। जैसे सायन मेषार्क 6.24 तो

इसका मतलब है कि सायन सूर्य की मेष की संक्रान्ति 6 घटी 24 पल पर होगी। मेषे चार्कः 25–37 का मतलब होता है निरयन सूर्य की मेष राशि की संक्रान्ति 25 घटी 37 पल पर होगी। सिंह रविः 5.39 का मतलब है कि निरयन सूर्य सिंह राशि पर 5.39 पर चला अर्थात् आ गया है। ऐसे ही संकेत दिए रहते हैं, और पंचांग प्रतिदिन इस्तैमाल करने के स्वयं ही पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।

इष्टकाल–ग्रह स्पष्ट की तरह, कई इष्टकाल के ग्रह भी दिए होते हैं। इष्टकाल समय वह होता है जिस समय के सम्बन्ध में विचारा जाता है। जैसे किसी का जन्म सूर्य उदय के उपरान्त 6 घटी पर हुआ या किसी ने सूर्य उदय के बाद 7 घटी पर प्रश्न किया तो यह समय अर्थात् यह समय क्रमशः 6 घटी व 7 घटी जन्म तथा प्रश्न का इष्टकाल हुआ। पचांग में प्रायः ग्रह गोचर दिया रहता है। कई वार इष्टकाल और कई पंचांग में प्रातः काल के ग्रह स्पष्ट लिखे होते हैं। यदि किसी इष्टकाल के होंगे तो लिखा होता है और यदि प्रातः काल सूर्य उदय के होंगे तो इष्ट 0–0 लिखा होता है। अतः यह सूर्य उदय के ग्रह स्पष्ट माने जाएंगें। इन्हें कुण्डली में भी दिखाया होता है। जैसेः–

खौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः 5.30 बजे
6 सितम्बर 1998

सू	चं	मं	बु	गु	शु	शः	रा	के
४	१०	३	४	११	४	०	४	१०
१९	१२	१६	०२	००	०५	०९	०६	०६
२२	५५	३१	५०	३३	०९	२४	४५	४५
०७	२३	०७	५२	००	५४	१०	०२	०२
५८ १२	८७९ ९	३७ ००	९३ २३	७ ४३	७३ ७	२ १३	३ २२	३ २२
पूफा	शत	पु०	मघा	पूभ	मघा	अश्वि	मघा	शते
२	२	४	२	४	२	३	३	२
०	मा	मा	मा	व	मा	व.	व.	व.
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली पूर्णिमा प्रातः 6 सितम्बर
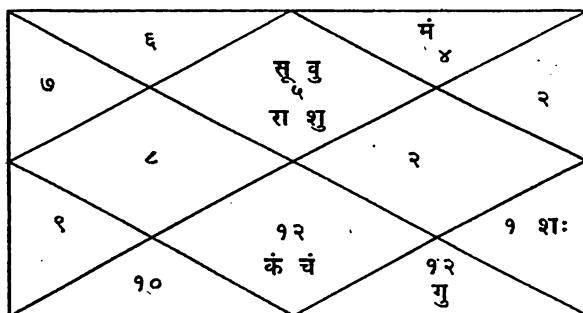
यहां जो गोचर ग्रह दिये हैं वह प्रातः 5.30 बजे के हैं और जो कुण्डली दी गई है वह सूर्य उदय के समय की है। ग्रहों की स्थिति इस प्रकार लिखी गयी है। जैसे सूर्य के लिए सू लिखा है। इसका मतलब है कि सूर्य 6 सितम्बर 1998 को 5.30 बजे 4 राशि (सिंह राशि) के 19 अंश 22 कला 7 विकला पर था। सूर्य की उस दिन गति 60 घटी अर्थात् 24 घंटों में 58 कला 12 विकला थी और सूर्य पूफा (पूर्वा फाल्गुनी), 00 इसके नीचे कुछ नहीं है। अन्य स्थान पर मा लिखा है अर्थात् मार्गी ग्रह था, 'उ' का मतलब है उदय, 'अ' का मतलब है अस्त ग्रह लिखा गया है। इसी आधार पर साथ में कुण्डली दी गई है। क्योंकि सूर्य सिहं राशि में था अतः सूर्य (सू) सिंह राशि में लग्न में लिख दिया गया है। इसी तरह ही ग्रह गोचर में प्रत्येक ग्रह की स्थिति दी हुई है और बाद में इसी आधार पर सभी ग्रह कुण्डली में दिखाए गए हैं। यहां गति जैसे पहले कहा है 24 घंटे की होती है इसके अनुसार किसी भी समय की ग्रह स्थिति जानी जा सकती है। इसी प्रकार की प्रत्येक सप्ताह अथवा पक्ष की पृथक गोचर कुण्डली और ग्रह स्पष्ट पंचांग में दिए होते हैं। यह आमतौर पर अष्टमी और अमावस्या या पूर्णिमा के होते हैं जैसे यहां खौ (रविवार) पूर्णिमा 6 सितम्बर की प्रातः 5.30 बजे की ग्रह गोचर स्थिति दी गई है।

जन्त्री, अध्मनाक व एफेमेरीज—अंग्रेजी में पंचांग को ही अध्मनाक कहा जाता है। एफेमेरीज भी पंचांग का ही रूप हीते हैं। इस तरह पंचांग को कई नामों से पुकारा जाता है। जन्त्री, अध्मनाक व एफेमेरीज में आमतौर पर सभी जानकारी घंटों—मिनटों में दी रहती है और समय भारतीय स्टैंडर्ड समय या स्टैंडर्ड समय जिस देश का पंचांग होता है दिया होता है। इससे सूचना प्राप्त करना अति सरल होता है और घटी पलों की कठिनाई नहीं होती। आज—कल प्राय जन्मपत्री घंटों मिनटों में बनायी जाती है और इसे लोग समझ भी लेते हैं जन्त्री के एक पृष्ठ में से नमूना देखें कि कैसे जानकारी दी होती है। पाठक स्वयं समझ जाएंगे कि यह जानकारी समझनी अति सरल होती है।

जन्त्री के पृष्ठ का सारांश

वार	तारीखें				तिथि कार्तिक शुक्ल	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्र राशि संचार प्रवेश काल			सूर्य उदय घ. मि.	सूर्य अस्त
	नवंबर 1998 30	कार्तिक प्रविष्ट	शुब्बान	कार्तिक शाका		घंटा	मिनट		घंटा	मिनट		घंटा	मिनट	राशि	घंटा	मिनट		
रवि	1	16	10	10	12	21	43	पूभा	12	20	व्या	20	12	मीन	6	49	6–47	5–36
चन्द्र	2	17	11	11	13	18	19	ऊमा	9	55	हर्ष	16	17	मीन	–	–	6–47	5–35
मंग	3	18	12	12	14	14	53	खेती	7	4	बज	12	2	मेष	7	04	6–48	5–35
								अशि.	27	56								

यहां जो जानकारी दी गई है, इसको देखने से स्वयं ही सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। जैसे पहली नवंबर को रविवार है। इस दिन की अन्य तारीखें भी लिखी हैं। तिथि, नक्षत्र, योग आदि सबका समय घंटों मिनटों में दिया हुआ है। जैसे पहली नवंबर 1998 को 12वीं तिथि 21–43 अर्थात् रात्रि 9–43 पर समाप्त होगी। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र 12–20 बजे, व्याघात योग 20–12 बजे अर्थात् रात्रि 8–12 बजे समाप्त है। यह भी स्पष्ट लिखा है कि चन्द्रमा इस दिन/तारीख मीन राशि में प्रातः 6–49 बजे प्रवेश करेगा। जन्त्री आदि का उपयोग अति सरल होता है।

एफेमेरीज–जन्त्री की तरह एफेमेरीज (अंग्रेजी पंचांग) में भी हर तरह की जानकारी उपलब्ध होती है तथा समय घंटों मिनटों में होता है। स्टैंडर्ड समय होने से तुरन्त नक्षत्र, योग, तिथि आदि का समय घड़ी के अनुसार जाना जा सकता है। एफेमेरीज में प्रत्येक दिन/तारीख के प्रातः 5.30 बजे के या किसी विशेष समय के अर्थात् इष्ट के स्पष्ट ग्रह लिखे होते हैं और उनकी दैनिक गति भी लिखी होती है। इसका उपयोग अति सरल होता है।

पंचांग परिवर्तन–पंचांग अब कई स्थानों से प्रकाशित होते हैं और उन पंचांगों में उस स्थान के अक्षांश और देशान्तर के अनुसार समय निकाल कर दिया होता है। इसीलिए एक स्थान के पंचांग का दूसरे स्थान के पंचांग के समय से मिलान करने पर अन्तर होता है, क्योंकि स्थान के अक्षांश देशान्तर आदि के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान के समय में अन्तर आ जाता है। यही कारण है कि पंचांग सदैव अपने नजदीक के स्थान का ही लेना चाहिए, वही पंचांग आपके उपयोगी सावत होगा। इस पंचांग पर से ही किसी भी स्थान का समय अन्तर जान कर स्पष्ट जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

किसी स्थान के पंचांग में दिए हुए समय से किसी अन्य विशेष स्थान अथवा अपने स्थान का समय अन्तर जानने के लिए इस विशेष स्थान अथवा अपने स्थान का देशान्तर ज्ञात होना जरुरी है। इस पुस्तक में वह सारिणी दे दी गई है। समय अन्तर जानने के लिए जिस स्थान का पंचांग बना है उस स्थान का तथा जिस विशेष स्थान अथवा अपने स्थान का देशान्तर का अन्तर प्राप्त कर लें। फिर यह देखें कि पंचांग के बने स्थान से किसी विशेष स्थान जहां का अन्तर जानना है या अपने स्थान का देशान्तर उससे अधिक है या कम है। यदि अन्तर अंशों में दिया हो तो उसके घड़ी पल बना लेने चाहिए। (देंखें सारणी अन्त में) यदि पंचांग के बने स्थान से अपना स्थान या जिस स्थान का समय जानना है पूर्व में हो तो जोड़ना (+) और यदि पश्चिम में हो तो घटना

(–) करना होगा। इस तरह पंचांग के समय में जोड़ने व घटाने से अपने या उस स्थान का समय प्राप्त हो जाएगा।

जैसे पंचांग 'क' स्थान पर बना है और उसका देशान्तर 78.5 इस में पंचमी 30 घटी 25 पल दिखाये गये हैं। हमने अपने स्थान जिसका देशान्तर 76.4 है और जो 'क' से पश्चिम में हैं, पंचमी का समय जानना है। देशान्तर का अन्तर 2 अंश है, 2 अंश के 8 मिन्ट और 20 पल हुए। पश्चिम में होने से 30 घटी 25 पल से 20 पल घटाए तो शेष 30 घटी 5 पल रहे। अतः अपने स्थान पर पंचमी 30 घटी 5 पल पर होगी। इस प्रकार नक्षत्र, योग इत्यादि का मान किसी विशेष स्थान या अपने स्थान के लिए जाना जा सकता है।

कुण्डली रचना अथवा जन्म कुण्डली व विभिन्न प्रकार की कुण्डलियों की रचना के लिए आवश्यक जानकारी दी जा चुकी है। पाठक अब तक जान गए होंगे कि जन्म कुण्डली के लिए क्या–क्या आवश्यक होता है। कुण्डली रचना से पूर्व यह बताना उचित रहेगा कि कुण्डली क्या होती है।

कुण्डली क्या है?–कुण्डली वास्तव में ज्योतिष वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया एक मानचित्र है। आकाश में जो राशियों एवं ग्रहों की स्थिति होती है। यह इस मानचित्र में अंकित होती है अथवा अंकित की जाती है। इस प्रकार कुण्डली आकाश का नक्शा है तथा इससे ज्ञात होता है कि कौन सा ग्रह किस समय कहां है। किसी विशेष समय, स्थान पर जो कुण्डली बनाई जाती है, वह उस विशेष समय व स्थान की ग्रह स्थिति को प्रगट करती है। अतः कुण्डली वह आकाशीय मानचित्र है जो किसी विशेष अथवा खास समय की ग्रह स्थिति को बतलाती है। जिस समय को लक्ष्य मानकर कुण्डली रचना की जाती हैं, उस समय जो राशि आकाश के पूर्व केन्द्र में उचित हो रही होती है, वही कुण्डली का केन्द्र लग्न होता है। जब जन्म समय को लेकर कुण्डली की रचना की जाती है तो जन्म कुण्डली कहलाती है। जिससे जीवन की शुभ–अशुभ घटनाओं एवं जीवन से सम्बन्धित हर प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

पृथ्वी का मानचित्र तो आपने देखा ही होगा। इस मानचित्र में उत्तर सदैव ही उत्तर की ओर होता है परन्तु आकाश के मानचित्र अर्थात् कुण्डली में ऐसा नहीं होता। आकाश के मानचित्र यानि कुण्डली में पूर्व दिशा ऊपर की ओर होती है। जिसे लग्न कहा जाता है और जो कुण्डली का केन्द्र अथवा मुख्य स्थान होता है तथा इसे लग्न अथवा प्रथम भाव भी कहा जाता है।

आकाश के इस मानचित्र अथवा कुण्डली के बारह भाग किए जाते हैं, जिन्हें 12 खाने या ज्योतिष में बारह भाव, द्वादश भाव

अथवा घर कहा जाता है। प्रथम भाव सदैव लग्न ही कहलाता है। लग्न सूर्य का उदय स्थान होता है या जैसे पहले कहा गया है कि किसी विशेष समय जो राशि आकाश के पूर्व केन्द्र में उदित हो रही होती है। वही लग्न होता है। यदि कह ले कि पूर्व में जो उदय स्थान कुण्डली में होता है उसे लग्न कहा जाता है और जो राशि उस समय पूर्व में विचरण कर रही होगी वह ही उस समय की लग्न की राशि होगी तो बात शींघ्र समझ में आएगी। जैसे यदि मिथुन राशि उदय हो रही होगी तो कहा जाएगा कि लग्न मिथुन है।

लग्न यानि राशियां सदैव पृथ्वी की गति के अनुसार घूमती रहती हैं। इसलिए ही कभी लग्न में वृष राशि और कभी मिथुन राशि एवं फिर कर्क राशि क्रमशः आती रहती है। जन्म तारीख, स्थान एवं समय जो राशि उदय हो रही होती है। वह ही लग्न राशि होती है तथा उस राशि को कुण्डली चक्र के पूर्व स्थान प्रथम भाव में रखा जाता है। अन्य राशियों की संख्या क्रमानुसार घड़ी की सुईयों की विपरीत चाल या बाई ओर बारह अथवा द्वादश भावों में लिख दी जाती है। समयानुसार जो ग्रह स्थिति होती है वह राशियों में अंकित कर दी जाती है। इस प्रकार कुण्डली की ग्रह स्थिति विशेष एवं स्पष्ट निर्देश देती है तथा इसी के आधार पर भविष्य अथवा अन्य घटनाओं का संकेत मिलता है।

कुण्डली के स्वरूप–आकाश के इस मानचित्र अथवा कुण्डली के अनेक स्वरुप प्रचलित हैं। पाठकों ने कुण्डली प्रकार के स्वरुप देखे भी होंगे। कईयों में तो तरह–तरह के रंग भी भरे होते हैं। भारत में साधारणतः कुण्डलियों के यह स्वरुप प्रयोग किए जाते हैं।

कुण्डलियों के स्वरुप
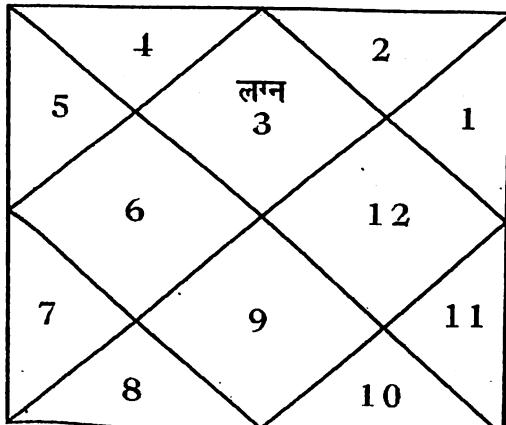
उत्तर भारत–1

12	1	2	लग्न 3
11			4
10			5
9	8	7	6

दक्षिण भारत–2
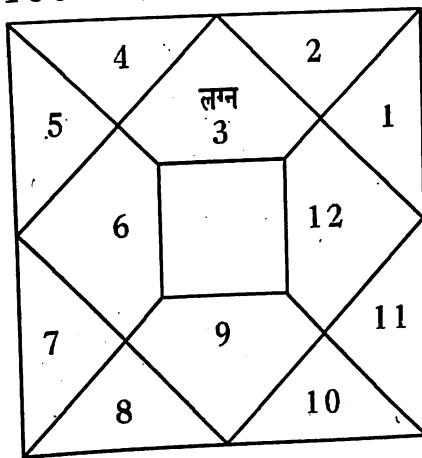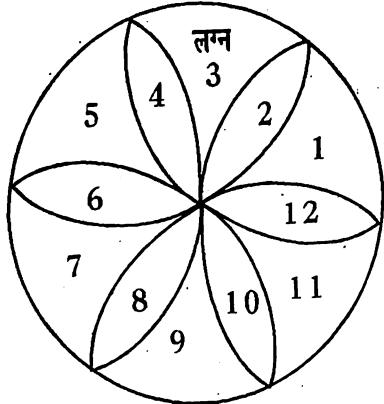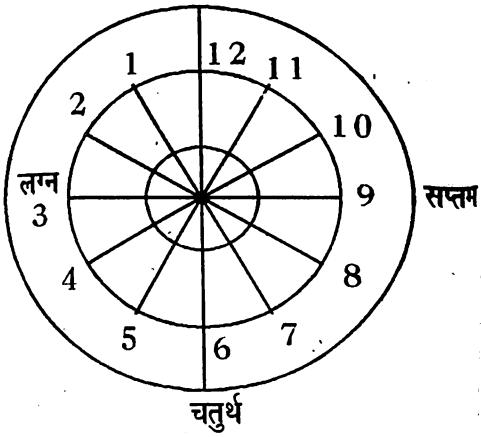
उतरी भारत तथा पंजाब आदि में अधिकतर कुण्डली नं: 1 का प्रयोग किया जाता है। चित्र नं: 2 वाली कुण्डली अधिकांश दक्षिणी भारत में प्रयुक्त होती है। दोनों कुण्डलियों मे अन्तर केवल इतना ही है कि नम्बर एक चित्र वाली कुण्डली में लग्न राशि संख्या प्रथम स्थान पर लिखी जाती है और बाकी राशियां क्रम संख्यानुसार लिखी जाती हैं। इस कुण्डली में राशियों की संख्या लिखी जाती है और जो राशि संख्या समय के हिसाब से लग्न राशि होती है वह प्रथम भाव में लिखी जाती है, इस तरह जब लग्न बदलता है तो पहले भाव में राशि संख्या भी बदलती होगी। इस तरह लग्न अनुसार राशि बदलती रहती है, जो लग्न होगा, उसी राशि की संख्या लिखी जाएगी। इस तरह केवल भावों

अथवा घरों में राशियां बदलती हैं और खाने, भाव पर घर पक्के ही रहते हैं। अर्थात् प्रथम भाव सदैव ही लग्न का प्रयोग और दूसरा भाव क्रम संख्यानुसार अगली राशि का होगा। इस तरह उतरी भारत की जन्म कुण्डली में लग्न एवं अन्य भावों का स्थान निश्चित होता है। सदैव लग्न भाव अथवा प्रथम भाव में ही ज़न्म राशि की संख्या लिखी जाएगी तथा शेष राशियां क्रमानुसार निश्चित द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम आदि भावों में लिखी जाएगी। सारांश में इस कुण्डली में भाव सदैव वही रहते हैं अथवा निश्चित होते हैं। परन्तु इनमें लग्न अनुसार राशियां बदलती रहती हैं।

दक्षिणी भारत अर्थात् चित्र नंः 2 वाली कुण्डली में राशियां स्थाई स्थापित समझी जाती हैं। तथा जो राशि सममानुसार उदय (लग्न) ही रही होती है, उस राशि में लग्न लिख दिया जाता है क्योंकि वहां राशि संख्या ही पक्की स्थापित समझी जाती है। इसी भाव को प्रथम भाव कहा जाता है। इस भाव से ही अगले भाव द्वितीय तृतीय आदि गिने जाते हैं। इस कुण्डली में नंः एक अथवा उतरी भारत की कुण्डली के विपरीत राशियों के स्थान निश्चित होते हैं। जबकि घरों अथवा भावों के खाने लग्नानुसार बदलते रहते हैं। दक्षिणी भारत को कुण्डली में भावों की गणना लग्न से करनी पड़ती है। यदि लग्न किसी वजह से न लिखा जाए तो लग्न का पता ही नहीं चलता जबकि उत्तरी भारत की कुण्डली में ऐसा नहीं है क्योंकि उत्तरी भारत की कुण्डली में प्रथम खाना अथवा भाव सदैव लग्न का ही होगा।

कुण्डली के अन्य चित्र 3–4–5 भी प्रयोग होते हैं। इनमें भी लग्न प्रथम भाव में राशि संख्या देकर अंकित किया जाता है। पाश्चात्य मतानुसार गोल कुण्डली का प्रयोग किया जाता है। यहां चित्र नंः 6 में यही कुण्डली दिखाई गई है। गोल स्वरुप की कुण्डलियां भी भिन्न–भिन्न हैं, इनमें भी लग्न, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम का स्थान निश्चित होता है।

यदि आप ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि यद्यपि मानचित्र भिन्न–भिन्न प्रतीत होते हैं। परन्तु इनमें वास्तव में कोई अन्तर नहीं है। पलकथन की दृष्टि से इनमें कोई अन्तर नहीं है। उत्तरी भारत की कुण्डली का स्वरुप सरल व समझने में अत्यन्त आसान है जबकि दक्षिणी भारत की कुण्डली में कुछ कठिनाई अवश्य अनुभव होती है।

कुण्डली में ग्रह स्थिति–समयानुसार लग्न राशि जानकर लग्न अर्थात् प्रथम भाव में लिख दी जाती है। इस तरह कुण्डली का निर्माता हो जाता है। परन्तु इसके पश्चात् उस समय के ग्रहों की स्थिति ज्ञात करके सम्बन्धित राशियों वाले भावों में लिखा जाता है। कुण्डली में ग्रह अंकित करने के पश्चात् ही कुण्डली पर से फलकथन किया जाता है।

जन्म कुण्डली रचना की विभिन्न विधियां—जैसे पहले बताया जा चुका है कि कुण्डली समय को लक्ष्य करके अर्थात् किसी इष्ट समयानुसार ही बनाई जाती है। अतः समय का ज्ञान होना अति आवश्यक है कई बार ऐसी स्थिति होती है कि घड़ी आदि का आभाव होता है और समय का ज्ञान नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में कुण्डली कैसे बनाई जा सकती है, का विवरण यहां दिया जा रहा है।

अनुमान कुण्डली—अनुमान कुण्डली तब ही बनानी चाहिए जब इसकी आवश्यकता हो अथवा जब किसी के पास भी समय देखने के लिए घड़ी न हो तथा कुण्डली रचना भी जरुरी हो। यदि ऐसा हो तो समय के अनुमान से ही कुण्डली बना ली जाती है।

आकाश के मानचित्र अथवा कुण्डली में प्रथम भाव प्रातः काल, दशम भाव दोपहर, सप्तम भाव शाम अथवा सन्धया तथा चतुर्थ भाव अर्ध रात्रि को सूचित करता माना गया है।

आकाश के मानचित्र अथवा कुण्डली में अनुमानित समय इस प्रकार है।

कुण्डली में अनुमानित समय
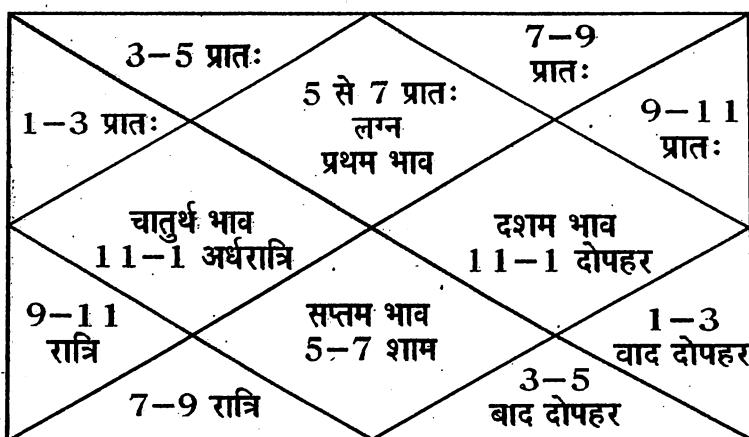
अनुमान कुण्डली की रचना हेतु कुण्डली के भावों। घरों में अनुमान समय स्मरण रखना होगा तभी अनुमान कुण्डली की रचना सरलता से हो सकेगी। इसलिए किस भाव में क्या अनुमानित समय होता है कण्ठस्थ कर लेना चाहिए। यदि आपको राशिस्थ, ग्रहों का ज्ञान भी हो तो यह कुण्डली तुरन्त फल कथन के लिए तैयार हो जाती है। इस अनुमान समय से प्रश्न कुण्डली भी सहज में तैयार की जा सकती है तथा उसी समय प्रश्नोत्तर दिया जा सकता है।

यह कुण्डली तैयार करनी अति सरल है। जैसे 15–5–1992 की चण्डीगढ़ में 10 बजकर 45 मिनट अर्थात् दोपहर से कुछ समय पहले की कुंण्डली बनानी है। सूर्य वृष राशि में 14 मई के 13 जून (नित्यन) तक रहता है। अनुमान समय वाले भाव अथवा घर में सूर्य लिख कर कुण्डली के द्वादश भाव पूरे कर दिए। जब सूर्य के घर से गिना अर्थात् वृष राशि संख्या दो से गिना तो प्रथम भाव में राशि संख्या चार आई जो प्रथम भाव अथवा लग्न में लिख दी। इस तरह 10–45 प्रातः लग्न कर्क था। इसमें सभी ग्रहों के नामों को सम्बन्धित राशियों वाले भावों में लिख देने की कुण्डली फल कथन के लिए तैयार है। यह कुण्डली देखने से पता चलेगा कि इष्ट समय 10–45 है जो 11 बजे से कम है, अतः सूर्य 11 वें (एकादश भाव) भाव लिखा गया है क्योंकि एकादश भाव में अनुमानित समय 9 से 11 प्रातः होता है। और अपना समय 9 और 11 के भीतर था।
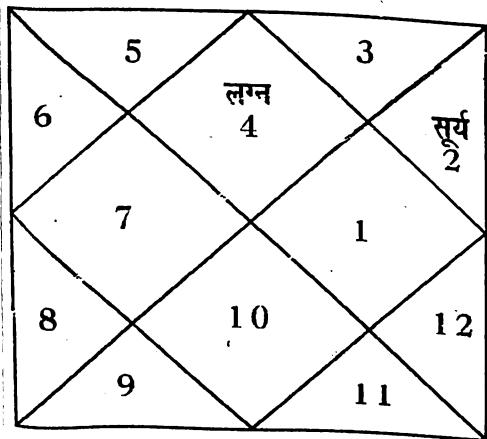
10 बजकर 45 मिनट की कुण्डली **फल कथन के लिए कुण्डली**
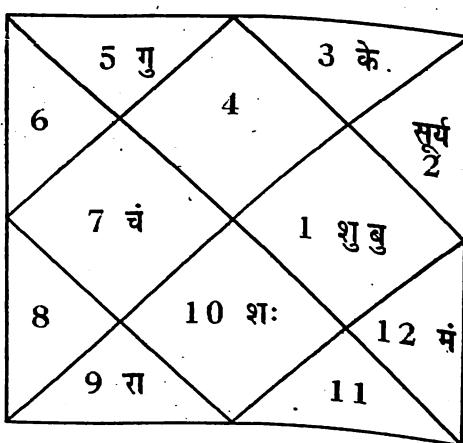
पंचांग में लग्न सारणी दी होती है। सुविधा के लिए तुरन्त समयानुसार लग्न राशि देखने के लिए इस पुस्तक के अन्त में भी लग्न सारणी दी गयी है। इन लग्न सारिणयों के देखने से ज्ञात हुआ कि 15–5–1992 को 10 बजकर 45 मिनट पर चण्डीगढ़ में कर्क लग्न ही था। इस तरह अनुमान समयानुसार भी लग्न ठीक ही है। यह ध्यान रखें कि कई बार अनुमान से निकाले गए लग्न व लग्न सारणी तथा पंचांग द्वारा बनाए लग्न में अन्तर आ जाता है। अतः लग्न, पंचांग में दी गई लग्न सारणी जो इस स्थान के लिए ही ज्ञात करना चाहिए तथा पंचांग द्वारा लग्न स्पष्ट करना चाहिए। यदि किसी स्थिति अथवा

कारणवश घड़ी द्वारा तथा किसी अन्य साधन द्वारा समय का ज्ञान न हो सके और लग्न भी जानना अनिवार्य ही तब हो अनुमान समय अनुसार कुण्डली की रचना करनी चाहिए।

सामान्य कुण्डली—इस कुण्डली की रचना करनी भी अत्यन्त सरल है। इस कुण्डली की रचना के लिए सम्बन्धित वर्ष का पंचांग अथवा जन्त्री जिसमें लग्न सारणी दी गई हो, अत्यावश्यक है। यह ध्यान रखें कि पंचांग अपने निकटवर्ती नगर आदि का हो क्योंकि पंचांग किसी विशेष स्थान के अक्षांश व रेखांश पर आधारित होते हैं। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि लग्न सारिणी किस अक्षांश रेखांश के लिए है। यदि अपने स्थान के निकट की न हो तो लग्न सारणी में लग्न सारणी परिवर्तन की सहायता से अपने स्थान का लग्न ज्ञात कर लेना चाहिए। पंचांग में जो लग्न सारणी दी होती है, किसी में लग्न प्रारम्भ का समय तथा किसी में लग्न समाप्ति का समय दिया गया होता है। इसका भी लग्न देखते समय ध्यान रखना चाहिए। लग्न सारणी से अपने इष्ट समय का लग्न देख कर कुण्डली बना लेनी चाहिए तथा इसमें सभी ग्रहों के नामों को सम्बन्धित राशियों वाले भावों में लिख दें तो परख एवं फलादेश के लिए कुण्डली तुरन्त तैयार हो जाती है।

उदाहरण—दिनांक 15–5–1992 को चण्डीगढ़ रचना करनी है। जिस लग्न सारणी द्वारा कुण्डली रचना करनी है अथवा लग्न ज्ञात करना है। वह लग्न सारणी चण्डीगढ़ पर ही आधारित है अतः इस पर से लग्न आसानी से ज्ञात किया जा सकता है।

पंचांग में दी गई लग्न सारणी देखने से ज्ञात हुआ कि दिनांक 15 मई को 9 बजकर 39 मिनट प्रातः से 12 बजकर 1 मिनट दोपहर तक कर्क लग्न रहेगा। लग्न जानने अथवा अपना इष्ट समय 10 बजकर 45 मिनट प्रातः का है, जो 9 बजकर 39 मिनट प्रातः से 12 बजकर 1 मिनट दोपहर के बीच का है। इस तरह 10 बजकर 45 मिनट प्रातः दिनांक 15 मई को कर्क लग्न हुआ। कर्क राशि की संख्या चार होती है, अतः लग्न भाव अथवा प्रथम भाव में संख्या चार (4) लिखकर शेष राशियां क्रमानुसार बाईं ओर से प्रारम्भ कर द्वादश भावों में लिख दी तथा इष्ट समय के ग्रह राशियों में अंकित कर दिए। कुण्डली फल कथन के तैयार हैं। यह कुण्डली आसानी से तैयार हो जाती है तथा पांच मिनट में ही फल कथन के लिए तैयार हो जाती है। आमतौर पर साधारण अवस्था में इस तरह बनी कुण्डली का उपयोग होता है।

लग्न सारणी द्वारा कुण्डली
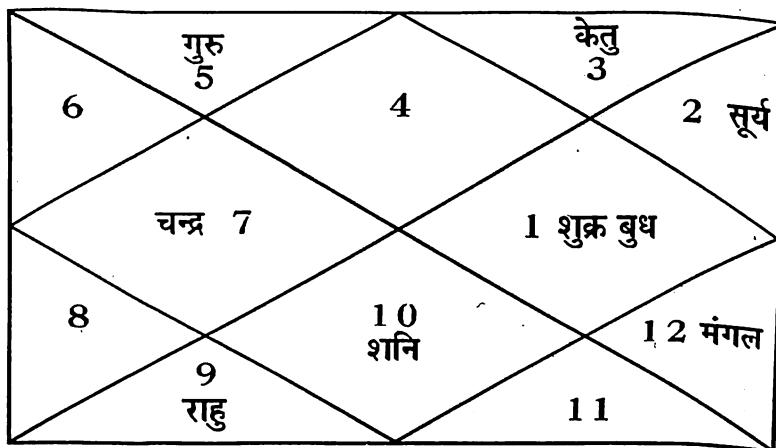
किसी विशेष समय अथवा इष्ट समय का लग्न ज़ानने एवं कुण्डली रचना करने की, ऐसी बहतु सी विधियां हैं इन विधियों द्वारा तुरन्त लग्न जान कर कुण्डली रचना करके फल कथन किया जा सकता है।

जैसे पहले लिखा गया है कि कुण्डलियां भी विभिन्न प्रकार की हैं। जिन सामान्य कुण्डलियों की रचना बताई गई है यह आमतौर पर जन्म कुण्डली बनाने तथा प्रश्न कुण्डली बनाने में प्रयोग होती है। इससे चन्द्र कुण्डली भी बनाई जा सकती है। परन्तु नवांश कुण्डली तथा अन्य बहुत सी कुण्डलियों के लिए भिन्न–भिन्न रीति होती है। जिसके सम्बन्ध में आगे चलकर बताया जाएगा। यहां वह बात ध्यान देने योग्य है कि प्रथमतः यह देखना चाहिए कि जो कुण्डली बनानी है वह किस स्थान की है, उस स्थान का अक्षांश, रेखांश क्या है? क्योंकि विभन्न स्थानों के सूर्योदय की जानकारी के इष्टकाल बनाया नहीं जा सकता तथा अक्षांश की अलग–अलग, स्पष्ट सूर्य की सारणी के अभाव में लग्न की राशि ठीक–ठीक नहीं निकल सकती । यदि प्राचीन पद्धति अथवा प्राचीन विधि द्वारा लग्न स्पष्ट करके कुण्डली निर्माण करना है तो सूर्योदय का ज्ञान अनिवार्य है क्योंकि लग्न निकालने की प्रक्रिया सूर्योदय पर ही निर्भर करती है। इस सम्बन्ध में इष्टकाल अथवा द्वारकाल कैसे जाने ? में विस्तारपूर्वक विवरण दिया गया है। क्योंकि ऐसी जन्म कुण्डली रचना में सूर्योदय जानना अनिवार्य होता है तथा इसको आधार बनाकर ही इष्टकाल जाना जाता है। अतः इसके लिए पंचांग की आवश्यकता पड़ती है। यहां पुनः स्मरण कराया जाता है कि पंचांग अपने स्थान का निकटवर्ती होना चाहिए अथवा जिस पंचांग की कुण्डली निर्माण में सहायता लेनी है, वह उस स्थान के निकट का होना चाहिए क्योंकि एक

ही स्थान का पंचांग सभी स्थानों पर यथावत् प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। पंचांग कैसे देखें में, इस सम्बन्ध में विस्तार पूर्वक जानकारी दे दी गई है। अतः अब पंचांग द्वारा लग्न जानने अथवा जन्म कुण्डली रचना हेतु प्राचीन विधि दी जा रही है। यहां पाठकों को पुनः स्मरण कराया जाता है कि प्राचीन विधि में घटी पल का अधिक उपयोग होता है, अतः घटी, पलों से घंटे मिनट तथा घंटे मिनटों से घटी पल जानने के लिए इस पुस्तक के अखिरी भाग में दी गई सारणी से सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

पंचांग द्वारा लग्न अथवा जन्म कुण्डली—पंचांग में प्रायः प्राचीन पद्धति अथवा प्राचीन विधि द्वारा लग्न जानने अथवा जन्म कुण्डली निर्माण घटी पलों में होता है। प्राचीन विधि द्वारा लग्न स्पष्ट करने तथा जन्म कुण्डली निर्माण के लिए जन्म तारीख। तिथि, जन्म स्थान और ठीक–ठीक जन्म समय की जानकारी होनी जुरुरी है। जिस पंचांग पर से जन्म कुण्डली का निर्माण करना है, वह भी उसी सम्बत् अथवा सन्० ई० का होना चाहिए। पंचांग में दिनमान, सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, करता, योग दैनिक व साप्ताहिक ग्रह स्पष्ट व लग्न् जानने के लिए सारिणयां दी होती है। इन सब के वाले पंचांग कैसे देखें प्रकरण में विस्तार से जानकारी दे दी गयी है। पाठकों को पंचांगी द्वारा लग्न अथवा कुण्डली निर्माता से पूर्व उसे ध्यान से पढ़ना चाहिए

पंचांग द्वारा लग्न एवं जन्म कुण्डली रचना—पंचांग द्वारा लग्न कैसे जाना जाता है तथा जन्म कुण्डली का निर्माण कैसे किया जाता है, यहां एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरण—दिनांक 15 अप्रैल 2000, तदनुसार चैत्र शुक्ल द्वादशी शनिवार, विक्रम सम्वत् 2057 शाक सम्वत् 1922 को 10 बजकर 30 मिनट भारतीय मानक समय (I.S.T) पर चण्डीगढ़ के नजदीक एक बालक का जन्म हुआ। उसका लग्न एवं जन्म कुण्डली की रचना करनी है।

1. पंचांग द्वारा लग्न जानने के लिए सर्वप्रथम भारतीय मानक समय को (I.S.T) को मध्यम समय बनाया जाता है। भारतीय मानक समय को कैसे स्थानीय मध्यम समय बनाया जाता है, इससे पहले विस्तार से स्पष्ट किया जा चुका है। ठीक उसी तरह जन्म समय को मध्यम समय बनाया जाएगा।

		घंटे	मिनट	सैं:
जन्म समय (I.S.T)		10	30	0
	(–)		22	32
	=	10 –	7 –	28

क्योंकि जन्म चण्डीगढ़ के नजदीक का है अतः चण्डीगढ़ का

आशांग 30°–44' व रेखांश 76°–52' लेंगे। स्टैंडर्ड रेखांश 82°–30' व चण्डीगढ़ के रेखांश का समय अन्तर (देखें सारणी) (–) 22 मिनट 32 सैकण्ड है। इसलिए मध्यम समय बनाने के लिए जन्म समय जो भारतीय मानक समय है, से 22 मिनट 32 सैकण्ड है। इस लिए मध्यम समय बनाने के लिए जन्म समय जो भारतीय मानक समय है, से 22 मिनट 32 सैं. घटाए गए हैं और शेष जन्म का मध्यम समय 10 घंटे 7 मिनट 28 सैं. प्राप्त हुआ। जैसे पहले बताया गया है मध्यम समय का और संस्कार करना पड़ता है। तभी जन्म समय लग्न जानने के लिए उपयुक्त होगा। इस संस्कार को बेज्ञान्तर संस्कार (देंखे बेलान्तर) कहा जाता है। यह संस्कार करने के लिए बेलान्तर सारणी (देखें बेलाान्तर सारणी) का उपयोग किया जाता है।

बेज्ञान्तर सारणी में 15 अप्रैल को (–) 13 सैकण्ड ऋण संस्कार दिया हुआ है। दिए चिन्ह के विपरीत अर्थात् इसे मध्यम समय में जोड़ने से स्पष्ट स्थानीय मध्यम समय प्राप्त हो जाएगा जिससे लग्न जाना जाएगा।

		घंटे	मिनट	सैं
स्थानीय मध्यम समय	=	10	7	28
15 अप्रैल का बेलान्तर	+	0	0	13
स्पष्ट स्थानीय समय	=	10 –	7 –	41

लग्न जानने के लिए स्पष्ट स्थानीय समय 10 घंटे 7 मिनट 41 सैकण्ड प्रयोग किया जाएगा। पंचांग द्वारा जब भी लग्न निकालना हो तो सर्वप्रथम इस समय को जानना आवश्यक है।

2. स्पष्ट स्थानीय समय जानने के पश्चात् पंचांग से अन्य जानकारी भी नोट कर लेनी चाहिए क्योंकि इस जानकारी से ही इष्टकाल जानने तथा लग्न जानंने में सहायता मिलेगी। पंचांग सम्वत् 2057 जो चण्डीगढ़ के आक्षांश, रेखांश पर आधारित के चैत्र शुक्ल पक्ष वाले पृष्ठ वाले से निम्नलिखित जानकारी नोट की।

दिनमान	=	31 घटी 39 पल। पंचांग में दिनमान प्रायः रात्रिमान जानने के लिए 60 घटी में से दिनमान घटा कर जाना जाता है अतः 31–59(–) ऋण किया 60 घटी से तो रात्रिमान प्राप्त हुआ 28 घटी 1 पल।
रात्रिमान	=	28 घटी 1 पल
जन्मतिथि को सूर्योदय	=	5 बजकर 59 मिनट
सूर्योस्त	=	18 बजकर 46 मिनट अर्थात् 6 बजकर 46 मिनट सांय

क्योंकि पंचांग द्वारा लग्न जानने के लिए सूर्योदय ज्ञान आवश्यक है, इस तरह अब सूर्योदय को लेकर लग्न जानने के लिए इष्टकाल बनाया जाएगा। जन्म समय का स्थानीय स्पष्ट पहले ही प्राप्त कर लिया है। अब इनके प्रयोग से लग्न जाना जाएगा। इससे पूर्व इष्टकाल जानना आवश्यक है।

3. इष्टकाल जानने के लिए पिछले पृष्ठों पर नियम दिए गए हैं। उनको ध्यानपूर्वक विचार लेना चाहिए और जो नियम जन्म समय के अनुसार लागू हो उसके अनुसार इष्टकाल बनाना चाहिए।

इष्टकाल के नियम देखने एवं विचारने से पता चला कि जन्म समय सूर्योदय से 12 बजे दोपहर तक के भीतर है, अतः इष्टकाल जानने के लिए नियम नम्बर एक लागू होगा। इष्टकाल बनाने का नियम नम्बर एक है–

जन्म समय (–) सूर्योदय=शेष $\times 2^1/_2$=इष्टकाल घटी, पलों में प्राप्त हो जाएगा। यहां यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि जन्म समय को स्थानीय समय में परिवर्तित सूर्योदय लेना चाहिए। यदि सूर्योदय स्टैंडर्ड टाइम में दिया है तो उसे भी स्थानीय समय संस्कार व बेलान्तर संस्कार करके स्थानीय सूर्योदय समय बना लेना चाहिए जैसे स्टैंडर्ड जन्म समय को संस्कार करके बनाया था। यदि सूर्योदय स्टैंडर्ड टाइम में है तो जन्म समय भी स्टैंडर्ड समय ही लेना चाहिए। अतः यह ध्यान रखें कि जन्म समय तो स्थानीय हो और सूर्योदय स्टैंडर्ड टाईम में हो व सूर्योदय स्थानीय हो और जन्म समय स्टैंडर्ड समय हों, तो लग्न ठीक नहीं बनेगा। सांरांश यह है कि सूर्योदय व जन्म समय समान होने चाहिए अथवा या तो दोनों स्थानीय समय में ही या स्टैंडर्ड समय में हो। यदि ऐसा नहीं होगा तो लग्न गलत साबित होगा।

क्योंकि पंचांग में सूर्योदय स्टैंडर्ड समय में दिया है अतः हम जन्म समय भी स्टैंडर्ड ही लेंगे और इष्टकाल स्पष्ट करेंगे।

		घंटे	मिनट	सैं
स्टैंडर्ड जन्म समय	=	10	30	0
,, सूयोर्दय ऋण किया (–)	=	5	59	0
	शेष	4 –	31 –	00

शेष 4 घंटे 31 मिनट सूर्योदय से बीत चुके थे। अब इष्टकाल बनाने के नियम एक के अनुसार 4 घंटे 31 मिनट को $2^1/_2$ से गुणा किया।

$$4 - 31 \times 2^1/_2$$

$4 \times 2^1/_2 = 10$ $31 \times 2^1/_2 = 77-30$

1 घटी 17 पल 30 विकल

$$\begin{array}{rr} = & 10 - 0 - 0 \\ + & 1 - 17 - 30 \\ \hline & 11 - 17 - 30 \end{array}$$

इस तरह 4–31 को $2^1/_2$ से गुणा करने पर 11 घटी 17 पल 30 विकल इष्टकाल प्राप्त हुआ। जिस बालक का जन्म समय 10–30 था उसका लग्न जानने के लिए इष्टकाल 11 घटी 17 पल 30 विकल हुआ।

जैसे पहले बताया है कि इष्टकाल जानने के लिए सूर्योदय व जन्म समय समान रुप होने चाहिए क्योंकि सूर्योदय स्टैंडर्ड टाइम में था अतः इसने जन्म समय भी स्टैंडर्ड लिया। यदि सूर्योदय को स्टैंडर्ड समय से संस्कार करके स्थानीय समय बना लें तो जो हमने जन्म समय स्थानीय बताया था उससे भी इष्टकाल जाना जा सकता है। इस तरह जो स्थानीय जन्म समय बनाया था उसको लेकर भी इष्टकाल स्पष्ट किया जाता है। स्थानीय जन्म समय तो पहले प्राप्त कर रखा है, अब सूर्योदय को भी रेखान्तर व बेलान्तर संस्कार करके स्थानीय बनाते हैं।

सूर्योदय	=	5	59	0
रेखान्तर	(–)		22	32
	=	5–	36–	28
बैलान्तर +				13
स्थानीय सूर्योदय	=	5–	36–	41

अब स्थानीय जन्म समय से स्थानीय सूर्योदय घटा कर नियम के अनुसार $2^1/_2$ से गुणा करने पर इष्टकाल घटी पल में प्राप्त हो जाएगा

स्थानीय जन्म समय	=	10	7	41
स्थानीय सूर्योदय घटाया	=	5	36	41
स्थानीय सूर्योदय	=	4 –	31 –	0

इस तरह भी 4 घंटे 31 मिनट प्राप्त हुए। इसे $2^1/_2$ से गुणा करने पर इष्ट काल स्पष्ट हुआ।

4–31

$\times 2^1/_2$

=11 घटी 17 पल 30 विकला

1 दोनों विधियों द्वारा इष्टकाल समान ही है।

4. प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न साधन के कई तरीके हैं। इसके लिए स्थानीय उदयमान, अयनांश, पहला, सायनार्क, चरघल, रेखान्तर, मिश्रमान आदि को लेकर गणित किया जाता है। इस विधि के लग्न निकालने की प्रक्रिया बड़ी जटिल है। यदि इस प्रक्रिया के अनुसार लग्न निकाल भी लिया जाए तो भी यहां जो विधि दी जा रही है। कोई विशेष

अन्तर नहीं पड़ता। गणित की बारीकी में पड़ने से कहीं न कहीं भूल होना निश्चित होती है, अतः सरल विधि द्वारा लग्न जान लेना चाहिए। यदि देखा जाए आजकल पुरानी अथवा घटी पल की प्राचीन विधियों को तिलांजलि दी जा रही है और नवीन विधियों द्वारा लग्न जानने, जन्म कुण्डली रचना का प्रसार हो रहा है। जिससे सूक्षम, प्रमाणिक लग्न माना जा सकता है। आगे चल इन विधियों के बारे में भी बताया जाएगा। अब जो इष्टकाल बनाया है उस पर से पंचांग की सहायता से लग्न कैसे जाना जाता है, स्पष्ट किया जा रहा है।

जैसे पहले बताया गया है। कि पंचांग सम्बत् 2057 चण्डीगढ़ के अक्षांश $30^{0}-44'$ व रेखांश $76^{0}-52'$ पर आधारित है और उदाहरण का जन्म स्थान चण्डीगढ़ के अति निकट का है। इसलिए पंचांग में जो लग्न सारणी 31^{0} उत्तर अक्षांश के लिए दी गई है वह लग्न जानने के लिए उपयुक्त रहेगी।

5. पंचांग में दी गई लग्न सारणी से लग्न साधन के लिए जन्म तारीख व जन्म समय का जो इष्टकाल प्राप्त किया है, उसी इष्टकाल व उसी दिन के सूर्य स्पष्ट की आवश्यकता पड़ती है। इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट व इष्टकाल को लेकर लग्न सारणी की सहायता से लग्न ज्ञात किया जाता है।

अतः पंचांग में दी गई लग्न सारणी से लग्न निकालने के लिए सर्वप्रथम इष्टकाल जानना अथवा निकालना पड़ता है तथा जिस दिन बालक का जन्म हुआ होता है। उस दिन का प्रातः स्पष्ट सूर्य ज्ञात करना होता है। आमतौर पर प्रत्येक पंचांग में प्रातः सूर्य स्पष्ट दिया हुआ रहता है। इस तरह लग्न जानने के लिए इष्टकाल व स्पष्ट सूर्य को नोट कर दिया जाता है।

स्पष्ट सूर्य के अंकों को लग्न सारणी में देंखे,जो अंक मिलें, इन्हें इष्टकाल में जोड़ दें। जोड़ने पर जो संख्या प्राप्त हो उसे पुनः लग्न सारणी में देखना चाहिए। यहां वह संख्या या उसके निकटस्थ संख्या लग्न सारणी में मिले, उसकी बायीं ओर लिखी राशि तथा ऊपर अंश प्राप्त होंगे

1. इष्टकाल लिया 11 घटी 17, पल 30 विकल
2. स्पष्ट सूर्य $0-1^{0}-29'-44''$

अब लग्न सारणी में सूर्य स्पष्ट की राशि मेष के आगे अर्थात् बाई ओर एक अंश के नीचे कोष्ठक से 2 घटी 48 पल प्राप्त हुए। यह मेष राशि के अंश के घटी पल प्राप्त हुए हैं। यदि सूक्ष्म रुप से जानना हो तो थोड़ा गणित करके जान सकते हैं।

पंचांग की लग्न सारणी में मेष के 1 अंश के 2 घटी 48 पल हैं

और मेष के 2 अंश के 2 घटी 55 पल हैं। इस तरह 60 कला पर (1 अंश) 7 पल बढ़ते हैं। सूर्य के 30 कला है अतः 4 पल प्राप्त हुए। जैसे–पंचांग की लग्न सारणी में देखने पर जाना कि–

मेष के 1 अंश पर अंक 2 घटी 48 पल हैं।

मेष के 2 अंश पर अंक 2 घटी 55 पल हैं।

इस तरह यदि देखा जाए तो एक अंश अथवा 60 कला पर केवल 7 पल बढतें हैं। परन्तु अथवा स्पष्ट सूर्य स्पष्ट 30 कला, मेष राशि के। अंश से आगे हैं। यदि हम 30 कला के पल जानकर 2 घटी 48 जो मेष राशि के एक अंश के घटी पल हैं जोड़ दें तो हमें अपने सूर्य स्पष्ट मेंष के 1 अंश 30 कला के घटी पल प्राप्त हो जाएगा। इस तरह जब एक अंश अथवा 60 कला के लिए 7 पल बढ़ता है तो 30 कला में कितना होगा ?

$60:30:7 = \frac{30 \times 7}{60} = 4$ पल

सूर्य स्पष्ट मेष राशि के 1 अंश के सारणी से प्राप्त घटी पल	=	2 – 48
30 कला के लिए पल ज़ोड़े	=	+ 0 – 4
सूर्य स्पष्ट मेष राशि के 1 अंश 30 कला के घटी पल	=	2 – 52

इन प्राप्त घटी पल को इष्टकाल के घटी पलों में जोड़ना होता है और जो जोड़फल होता है उसे पुनः लग्न सारणी में ढूँढ कर लग्न ज्ञात करना होता है। अतः प्राप्त घटी पल में इष्टकाल के घटी पल जोड़े।

सारणी से प्राप्त घटी पल	=	2 – 52 – 0
इष्ट काल से घटी कुल जोड़	=	11 – 17 – 30
कुल जोड़	=	14 – 9 – 30

अब जो कुल जोड़ प्राप्त हुआ है, इन घटी पलों को पुनः लग्न सारणी में ढूँढना होता है। लग्न सारणी में घटी पल दिए होते हैं विकल आदि नहीं होते। अतः लग्न सारणी में 14 घटी 10 पल (9–30 पल विकल के 10 पल ले लिए) ढूँढे या यदि यह न मिलें तो उनके अति निकटवर्ती घटी पल ढूँढे या यदि यह न मिलें तो इनके अति निकटवर्ती घटी पल ढूँढे। लग्न सारणी में मिथुन राशि के आगे अथवा दाई ओर 15 अंग के नीचे 14 घटी 3 पल लिखे हैं परन्तु 14 घटी 10 पल नहीं है। यही 14 घटी 3 पल निकट के हैं। इस तरह अपने कुल जोड़ से ये केवल 7 पल कम हैं। सूक्ष्म गणना के लिए एक अंश तथा दो अंश के घटी पलों का अन्तर जान कर अनुपातिक विधि द्वारा इष्टकालिक लग्न स्पष्ट जानां जा सकता है। जैसेः–

15 अंश के नीचे पंचांग की सारणी में घटी पल = 14–3
16 अंश के नीचे पंचांग की सारणी में घटी पल = 14–15

दोनों का अन्तर = 12 पल

इस तरह एक अंश अथवा 60 कला में केवल 12 पल बढ़ते हैं इस तरह यदि 60 कला में 12 पल बढ़ते हैं तो 7 पल में कितने कला होंगे क्योंकि हमारे कुल जोड़ से केवल 7 पल कम हैं। 7 पल के कला जानकर 15 अंश वाले मान में जोड़ देंगे। जैसेः

1 अंश अथवा 60 कला में = 12 पल

7 पल के लिए कला $= \frac{7 \times 60}{12}$

= 35 कला

14 घटी 3 पल के सारणी में राशि अंश = 2–15°–0"
7 पल के अनुपातिक विधि द्वारा कला = 0–0–35

14 घटी 1,0 पल के जो हमारा कुल जोड़ हैं = 2–15–35

इस तरह कुल जोड़ 14 घटी 10 पल के लिए मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला लग्न स्पष्ट हुआ। इस तरह जन्म समय 10–30 बजे प्रातः इष्टकालिक समय 11 घटी 17 पल 30 विकल, दिनांक 15 अप्रैल, 2000 को चण्डीगढ़ के नजदीक गांव में जन्मे बालक का लग्न स्पष्ट हुआ। अब दिनांक 15 अप्रैल 2000 के इष्ट समय के ग्रहों के नामों को सम्बन्धित राशियों वाले भावों में लिख देंगे तथा जन्म कुण्डली फल कथन के लिए तैयार है।

इस तरह 15 अप्रैल, 2000 को प्रातः 10.30 बजे जन्मे बालक का लग्न व तद्समय ग्रहस्पष्ट अनुसार जन्म कुण्डली में ग्रहस्थापन इस तरह से होगा तथा जन्म कुण्डली इस तरह होगी।

जन्म कुण्डली
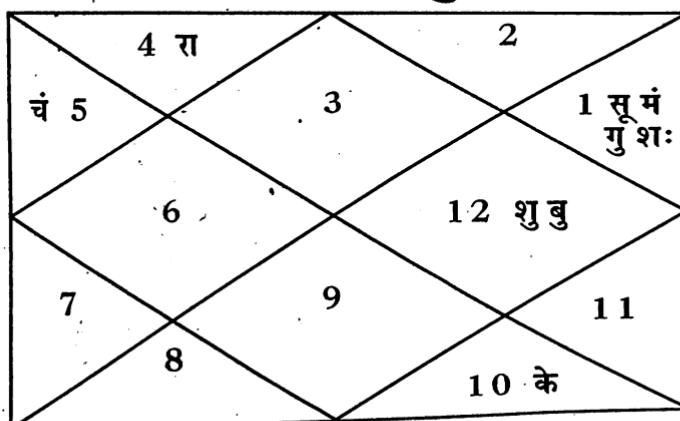
लग्न स्पष्ट
2–15°–35

प्राचीन पद्धति से लग्न जानने एवं लग्न स्पष्ट करने तथा जन्म कुण्डली रचना की जानकारी दी गई है। अब प्राचीन पद्धति द्वारा जन्मपत्री बनाने की सम्पूर्ण विधि स्पष्ट की जाएगी। इससे पहले यह जान लेना जरूरी है कि जन्मपत्री क्या होती है।

जन्मपत्री क्या है?—यदि यह कहें कि जन्म पत्रिका के साथ जन्म कुण्डली जुड़ी रहती है तो अतिशयोक्ति नहीं होगा। जन्म पत्रिका में जन्म कुण्डली के अतिरिक्त कई अन्य कुण्डलियां तथा जातक से सम्बन्धित अन्य आवश्यक जानकारी होती है। अतः जन्मपत्रिका का जन्मपत्री वह पत्र है जिसमें किसी की उत्पति के समय की जन्म कुण्डली, ग्रहों की स्थिति, दशा, अन्तर्दशा तथा अन्य आवश्यक जानकारी होती है। इसलिए जातक के भविष्य अथवा सर्वपक्षीय जीवन को जानने लिए जन्मपत्री जरूरी मानी जाती है। अब जो पूर्व उदाहरण ली थी उसकी ही सम्पूर्ण जन्मपत्री सर्वप्रथम प्राचीन शैली द्वारा बनाई जाएगी ताकि सुहृदय पाठक प्राचीन विधि से भी परिचित हो सकें।

जन्मपत्रिका निर्माण—जन्म पत्रिका बनाने के लिए भी सर्वप्रथम लग्न अथवा जन्म कुण्डली बनाई जाती है। इसके अतिरिक्त जैसे बताया गया है जन्म सम्बन्धी आवश्यक जानकारी दी जाती है। यह पत्र एवं पुसतिका के रूप में फल–कथन के लिए सुरक्षित रखी जाती है। आजकल प्रत्येक आकार एवं प्रकार की जन्मपत्री पुस्तिका के रूप में मिल जाती है। जन्मपत्रिका लिखने के लिए उनका आवश्यकता अनुसार उपयोग किया जा सकता है। इससे पूर्व पहले वाली उदाहरण की जन्म पत्रिका बनाएंगे इसके लिए सर्वप्रथम लग्न जानना होगा।

उदाहरण—किसी जातक का जन्म 15 अप्रैल, 2000 तदनुसार चैत्र शुक्ल द्वादशी शनिवार, विक्रम सम्वत् 2057 शाक सम्वत् 1922 को 10 बजकर 30 मिनट (I.S.T) पर चण्डीगढ़ के नजदीक एक गांव में हुआ इसकी जन्मपत्री बनानी है।

जन्म पत्री बनाने के लिए पंचांग 2057 जो चण्डीगढ़ के अक्षांश

$30^{o}-44'$ व रेखांश $76^{o}-52'$ पर आधारित है से निम्नलिखित तथ्य नोट किए।

द्वादशी शुक्ल के दिन शनिवार तथा वृद्धि योग था। द्वादशी 45 घटी 56 पल तक थी। इस दिन पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र 47 घटी 49 पल तक था। उस दिन वृद्धि योग 38–22 अर्थात् 38 घटी 22 पल तक था. उस दिन करण बव था जो 17 घटी 14 पल तक रहा। जन्म दिन अर्थात् द्वादशी को दिनमान 31 घटी 59 पल था। सूर्य उदय स्टैंडर्ड टाइम चण्डीगढ़ 5 घंटे 59 मिनट पर तथा सूर्यास्त 18–47 पर था। इस दिन अंग्रेजी तारीख 15 अप्रैल थी और सन् ई० 2000 था। इस दिन चन्द्रमा सिंह राशि में था तथा सूर्य उदय-कालिक $0^{o}-1^{o}-29'-44''$ अर्थात् मेष राशि के 1 अंश 29 कला 44 विकला पर था।

अब पंचांग से प्राप्त आवश्यक जानकारी के आधार पर प्राचीन विधि द्वारा पंचांग की सहायता से सर्वप्रथम जन्म लग्न करना होगा।

1. **जन्म लग्न**–क्योंकि हमने पूर्व उदाहरण ही ली है, और इस बालक का लग्न पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है अतः इसके द्वारा स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी जानकारी के लिए सारांश विवरण ही दिया जा रहा है।

		घंटे	मिनट	सै.
1. जन्म समय (I.S.T) से स्थानीय समय बनाया	=	10	30	0
			– 22	32
	=	10 –	7 –	28
बेलान्तर संस्कार 15/4				
स्पष्ट स्थानीय समय	=			+ 13
	=	10 –	7 –	41

2. स्टैंडर्ड सूर्योदय 5–59 स्थानीय 5–36–41 सूर्योदय।

3. स्थानीय जन्म समय= 10–7–41 (–) 5–36–41 = $4-31\times 2^{1}/_{2}$ = 11 घटी 17 पल 30 विपल इष्टकाल प्राप्त हुआ।

4. इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट $0^{o}-1^{o}-29'-44''$ के पंचांग की 31^{o} उतर की लग्न सारणी से घटी पल 2–52

5. प्राप्त 2–52+ इष्टकाल 11–17–30 = कुल जोड़ 14 घटी पल 30 विपल अथवा 14 घटी 10 पल प्राप्त हुआ। पंचांग से पुनः 14 घटी 10 पल का लग्न स्पष्ट सारणी की सहायता से $2^{o}-15^{o}-35'$ अर्थात् मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला हुआ।

अतः 15 अप्रैल को 10–30 बजे प्रातः जिस बालक का जन्म चण्डीगढ़ के निकट गांव में हुआ था उसका जन्म लग्न मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला पर स्पष्ट हुआ। यहां तक विस्तार पूर्वक प्रक्रिया पहले दे ही दी है। यहां वह स्मरण कराया जाता है कि जन्म लग्न बनाने के लिए जो इष्टकाल बनाने के नियम लिखे गए हैं, उन्हें सदैव ध्यान में रखने चाहिए और उसी अनुसार इष्ट बनाना चाहिए।

जन्मपत्री में प्रायः आवश्यक जानकारी के उपरान्त सर्वप्रथम मुख्यतः जन्म लग्न कुण्डली ही दी होती है। जन्मपत्री में जन्म लग्न कुण्डली अति महत्वपूर्ण होती है। यह जातक के पूरे जीवन का प्रति निधित्व करती है। इससे ही जातक के जीवन में होने वाली समस्त घटनाओं का पता चलता है। जन्म लग्न कुण्डली पिछले प्रकरण में दे दी है।

2. चन्द्र कुण्डली–चन्द्र कुण्डली को राशि कुण्डली भी कहा जाता है क्योंकि जिस राशि में चन्द्रमा होता है। वही जातक की चन्द्रमा राशि अथवा जन्म राशि होती है जैसे जो जन्म कुण्डली की रचना की गई है। उसमें चन्द्रमा सिंह राशि का है, अतः बालक की चन्द्र राशि अथवा जन्म राशि सिंह हुई। लग्न कुण्डली बनती है और यदि चन्द्र राशि को बीच में अर्थात् प्रथम भाव या स्थान पर रखकर, अन्य ग्रहों की अवस्थिति अपनी–अपनी राशि में ज्यों की त्यों रखकर कुण्डली बनाई जाती है वह चन्द्र कुण्डली कहलाती है।

चन्द्र कुण्डली भी अति महत्वपूर्ण होती है। चन्द्र कुण्डली से राशि, दैनिक भविष्य, यात्रा तथा गोचर ग्रहों का प्रभाव आदि जाना जाता है।
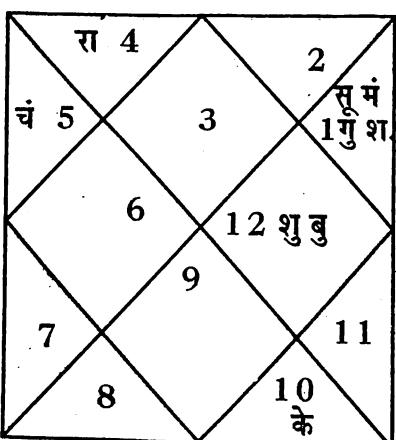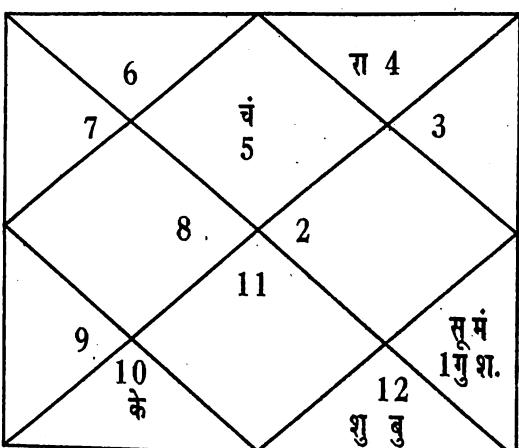
जैसे आपने देखा लग्न कुण्डली पर से चन्द्र कुण्डली सरलता से

बनाई जा सकती है. चन्द्र राशि को यहां लग्न मान कर अथवा चन्द्र राशि को लग्न, प्रथम भाव मानकर अथवा चन्द्र राशि को लग्न, प्रथम भाव अथवा स्थान रखकर चन्द्र राशि को लग्न, प्रथम भाव अथवा स्थान रखकर अन्य सभी ग्रह लग्न कुण्डली की तरह अपनी–अपनी राशि में लिख दिये जाते हैं, और चन्द्र कुण्डली तैयार हो जाती है। यही जातक की जन्म राशि होती है और चन्द्र राशि एवं चन्द्र स्पष्ट जान कर ही जातक के नाम का प्रथम अक्षर, नक्षत्र अर्थात् जन्म नक्षत्र तथा दशा आदि का ज्ञान होता है। इसलिए चन्द्र एवं अन्य ग्रहों के स्पष्ट राशि अंश जन्म समय अथवा इष्टकालिक जानने अति आवश्यक होते है। जैसे पहले बताया जा चुका है कि कुण्डली के द्वादश भाव होते हैं। और लग्न भाव केवल प्रथम भाव होता है। इसलिए अन्य भावों के भी लग्न भाव की तरह राशि अंश स्पष्ट करने आवश्यक होते हैं। तथा ऐसा करने पर ही सही फल कथन किया जा सकता है।

भाव स्पष्ट करने से पूर्व चन्द्रमा व अन्य ग्रहों के स्पष्ट राशि अंश जन्म समय पर क्या थे जानना आवश्यक है। सर्वप्रथम इष्टकालिक चन्द्र के स्पष्ट राशि अंश आदि प्राप्त करेंगे क्योंकि चन्द्र घर से चन्द्र राशि, चन्द्र नक्षत्र अथवा जन्म नक्षत्र, नाम का अक्षर, वर्ण, योनि, वर्ग आदि जाने जाते हैं। यदि चन्द्र और सूर्य के स्पष्ट राशि अंश आदि प्राप्त हो जाएं तो थोड़ा गणित करके तिथि, रोग व करण आदि तुरन्त जाने जा सकते हैं।

जन्म राशि–जैसे पहले बताया गया है कि जन्म समय में चन्द्रमा जिस राशि पर होता है, वही उस जातक की जन्म राशि होती है।

जन्म नाम–चन्द्रमा राशि में लगभग $2^1/_4$ नक्षत्र होते हैं। जन्म नाम का प्रथम अक्षर जानने के लिए वह जानना आवश्यक है कि जन्म समय पर किस नक्षत्र का कौन सा चरण था। जन्म समय के अनुसार जो भी वर्तमान चरण होता है, उसी के चरण के अक्षर के प्रारम्भ होने वाला कोई नाम रखा जाता है(देखें सारणी) यही जातक का जन्य नाम कहलाता है। इस नक्षत्र का वह चरण जिस राशि के अधीन आता है, वही जन्मराशि होती है। यह वही राशि होती है जिस राशि में जन्म समय चन्द्रमा होता है।

जन्म नक्षत्र, चरण, भयात भगोग विचार–पंचांग कैसे देखें में विस्तारपूर्वक बताया जा चुका है कि नक्षत्र के कुल विस्तार अथवा मान को भभोग कहते हैं और नक्षत्र के बीते हुए मान को भयात कहा जाता है। देखें पंचांग कैसे देंखें। नक्षत्र का चरण जानने के लिए भयात, भभोग जानने का ज्ञान आवश्यक है। अतः हम यहां उदाहरण वाले जातक का नक्षत्र चरण जानने के लिए तथा नाम का प्रथम अक्षर जानने के लिए भयात, भभोग स्पष्ट करेंगे।

यह जानने के लिए सर्वप्रथम इष्टकाल व वर्तमान अथवा जन्मदिन

पर जो नक्षत्र था उसके घटी पल नोट कर लें, क्योंकि इनकी अधिक अवश्यक्ता पड़ती है। इष्टकाल 11 घटी 17 पल 30 विकल था और पंचांग अनुसार पू–फाल्गुनी नक्षत्र 47 घटी 49 पल पर था। यह ध्यान रखना चाहिए कि उस दिन के नक्षत्र की घटियां यदि अपने इष्टकाल की घटियों से अधिक हों तो उसे ही गत नक्षत्र तथा अगले नक्षत्र तथा अगले दिन के सामने दिए नक्षत्र की वर्तमान नक्षत्र जानना चाहिए। यहां हमारे इष्टकाल के घटी पल उस दिन के नक्षत्र के अन्तर्गत ही आते हैं। अतः उस दिन का पुःफ नक्षत्र ही वर्तमान नक्षत्र था। सम्पूर्ण भयात, भभोग की गणना इस तरह होगी।

1. तिथि के साथ पंचांग में पूः फा नक्षत्र 47–49 पर था। यह नक्षत्र शनिवार के दिन 47–49 तक था।

2. अब पंचांग में देखें कि यह नक्षत्र इसके पहले शुक्रवार को कितना था। शुक्रवार को पंचांग में मघा नक्षत्र 48.39 तक था। इस तरह–

	पूर्ण घटी पल	= 60–0
	भुक त मघा नक्षत्र	= 48–39 शुक्रवार को
	शेष	= 11–21 शुक्रवार को पूःफ
	इस तरह पूःफ शुक्रवार को बचा	= 11–21 था
	+शनिवार को इष्टकाल	= 11–17–30
	भुक्त पूःफ	= 22–38–30 भयात
3.	शनिवार को पूःफ	= 11–21
	+शनिवार को पूःफ	= 47–49
	योगफल	= 59–10 भभोग पू.फ
4.	चरण नक्षत्र	= पूर्ण पूःफ 59–10
	1 चरण	$= \frac{59-10}{4}$ = 14–47–30

5. इस तरह शुक्रवार को मघा नक्षत्र 48–39 मुक्त होने के बाद पूःफ लगा। शुक्रवार को पूःफ 11–21 रहा और शनिवार को पूःफा 47–49 तक था। सब मिलाकर पूःफा का योगफल 59–10 प्राप्त हुआ। इसे भभोग कहा जाता है। भभोग को 4 से भाग देने पर (नक्षत्र के चार चरण होते हैं। एक चरण का भोग मिला अथवा वह 14 घटी पल 30 विकला प्राप्त हुआ।

अब जन्म समय अर्थात् इष्टकाल तक पूर्वाफाल्गुनी कितना गया था अथवा कितना था जानना है। इसके लिए शुक्रवार के शेष पूःफा में इष्टकाल जोड़ने से पूःफ मुक्त काल 22–38–30 निकला इसे ही भयान कहते हैं।

6. पूःफ नक्षत्र का कौनसा चरण था। यह देखने के लिए एक

चरण का मान जो हमने अभी–अभी जाना है अर्थात् 14–47–30 अयात में भी घटाया–

भयात		22–38–30
1 चरण	(–)	14–47–30
शेष		7–51–0

दूसरा चरण घटाया = 14–47–30 यह नहीं घटता है अतः पू:फ के दूसरे चरण का जन्म हुआ था। राशि सिंह है। अक्षर टा से नाम रखा जाएगा तथा अब नक्षत्र गुण धर्म सारणी से वर्ण,गुण योनि, नाड़ी वश्य आदि नोट कर लिए।

दूसरी अत्यन्त सरल विधि यह है कि जैसे बताया है कि वर्तमान नक्षत्र पू:फ है और हमारा इष्टकाल नक्षत्र के अन्तर्गत आता है जैसे इष्टकाल 11–17–30 है और शनिवार शुक्ल द्वादशी पर पू:फ नक्षत्र 47 घटी 49 पल तक हैं। इस तरह वही वर्तमान नक्षत्र हुआ। गत नक्षत्र मघा 48–39 है। इसे 60 घटी में से घटाया–

	घटी		पल		
	60	–	00		
	48	–	39		
शेष =	11	–	21		
इष्टकाल जोड़	11	–	17	–	30
	22	–	38	–	30 भयात

उपरोक्त मेष में वर्तमान नक्षत्र नक्षत्र के घटी पल जोड़ने से भभोग प्राप्त हो जाएगा।

उपरोक्त मेष =	11	–	21
वर्तमान नक्षत्र पू:फ =	47	–	49
योग =	59	–	10 भभोग हुआ

अब भभोग $\frac{59-10}{4}$=14 घटी पल 30 विकल पहले चरण की सीमा हुई। दूसरे चरण की 29 घटी पल हुई परन्तु भयात इससे कम है अतः जन्म नक्षत्र पू: फाल्गुनी का दूसरा चरण हुआ। दूसरा चरण का अक्षर टा हुआ। इस विधि से भी भयात, अभोग एवं चरण वही स्पष्ट होता है। पुस्तक में दी गई सारणी से सिंह राशि, पू:फ. नक्षत्र तथा द्वितीय चरण के गुण धर्म नोट कर लेने चाहिए।

भाव स्पष्ट करने से पहले प्रत्येक ग्रह को स्पष्ट किया जाता है। सर्वप्रथम चन्द्र स्पष्ट किया जाता है।

ग्रह स्पष्ट

1. चन्द्रमा स्पष्ट–ग्रह अथवा चन्द्र स्पष्ट करने की कई विधियां हैं जैसे त्रैराशिक आदि। क्योंकि चन्द्र अति शीघ्र गति ग्रह है तथा वह 24 घंटों में 13 अंश से भी अधिक आगे बढ़ जाता है। इस तरह प्रत्येक विधि से थोड़ा अन्तर अवश्य आ जाता है। हम यहां सरल विधि से चन्द्र स्पष्ट करेंगे।

इस विधि द्वारा, प्राप्त भभोग व भयान का उपयोग किया जाता है। भयात व भभोग को अलग–अलग स्थान पर रखकर इनके पल बना लिये जाते हैं। इसके उपरान्त पलात्मक भयात को 60 से गुणा करके जो भभोग के पल बनाए होते हैं भाग दिया जाता है। इस तरह जो घटी पल, विकल प्राप्त हो जाते हैं। इसके बाद अश्विनी नक्षत्र से गत नक्षत्र तक गिनकर जी संख्या प्राप्त होती है, उसे 60 से गुणा करके जो पहले घटी पल विकल प्राप्त किए थे जोड़ दिए जाते हैं। जो भी कुल जोड़, प्राप्त ही उसको 2 से गुणा करके 9 से भाग दिया जाता है तथा इस तरह चन्द्र के स्पष्ट राशि अंश कलादि प्राप्त हो जाते हैं। वर्तमान नक्षत्र पू: फाल्गुनी था व भयात 22–38–30 और भभोग 59–10 प्राप्त हुआ था। भयात एवं भभोग के पल बनाए। पल बनाने के लिए 60 से गुणा किया।

(क) भयात
22–38–30
अर्थात्

22 घटी 38 पल लिया
× 60 पल बनाने के लिए
1320
38
1358 पल

भभोग
59 घटी 10 पल
×60 पल बनाने के लिए
3540
10
3550 पल

अब पलात्मक भयात को 60 से गुणा करके, फल को पलात्मक भभोग का भाग किया गया।

पलात्मक भयात 1358
× 60

भभोग 3550) 81480 (22 अंश
7100
10480
7100

```
              3380
                60
3550 ) 202800 ( 57 कला
       17750
       -----
       25300
       24850
       -----
         450
          60
3550 ) 27000 ( 7
       24850
       -----
        2150     = शेष 2150
                 अतः 8 विकला लिए।
```

इस तरह 22 अंश 57 कला 8 विकला प्राप्त हुए।

(ख) जैसे पहले बताया गया है अब गत नक्षत्र तक अश्विनी नक्षत्र से गणना की तो पू:फ तक 10 संख्या प्राप्त हुई। इस संख्या 10 को 60 से गुणा किया 10×60 = 600 गुणनफल प्राप्त हुआ। इस गुणनफल में (क) में प्राप्त अंश कला बिकला जोड़े और जोड़फल को 2 से गुणा करके 9 से भाग दिया–

```
       600
    +  22–57–8
    ------------
  =    622–57–8
        × 2
    ------------
  =    1244–114–16
  =    1245–54–16
```

अब 1245–54–16 को 9 से भाग दिया तो अंश कला बिकला प्राप्त होंगे।

```
9 ) 1245–54–16 ( 138
    9
    --
    34
    27
    --
    75
    72
    --
```

```
          3
         60
       ------
        180
         54
9 ) 2341 ( 26
     18
    -----
     54
     54
    -----
     00
     60
    -----
     00
     16
9 ) 16 ( 1
     9
    -----
     7   घोड़ा
```

इस तरह 138 अंश 26 कला। विकला फल प्राप्त हुआ।

(ग) अब जो (ख) में अंश कला बिकला प्राप्त हुए हैं, राशि आदि जानने के लिए उन्हें 30 पर भाग किया।

$= \frac{138}{30}$ अंश = 26 कला 1 बिकला

= 4 राशि 18 अंश 36 कला 1 बिकला

इस तरह चन्द्रमा स्पष्ट हुआ सिंह राशि के 18 अंश 26 कला 1 बिकला।

दूसरी विधि चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह स्पष्ट करने की यह विधि अति सरल है और इस विधि द्वारा तुरन्त चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह स्पष्ट किए जा सकते हैं। इसके लिए चन्द्रमा की 24 घंटे अथवा 60 घटी की गति व कितने घंटा मिनट आदि का गति के अनुसार मान मानना है। आमतौर पर आजकल प्रत्येक पंचांग व एफेमरीज में प्रातः 5.30 बजे की दैनिक ग्रह स्थिति व प्रत्येक ग्रह की गति दी होती है। यदि गति न दी हो तो आगे पीछे की तारीख के 5.30 बजे के ग्रह स्पष्ट अन्तर जानकर 24 घंटों की गति ज्ञात कर लेनी चाहिए। अब हम विधि द्वारा चन्द्रमा स्पष्ट करेंगे। चन्द्रमा की गति जानने के लिए 16 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के चन्द्र स्पष्ट से 15 अप्रैल 5.30 प्रातः का चन्द्र स्पष्ट घटाया–

		रा	अंश	कला	विकला
(क) 16 अप्रैल 5.30 प्रातः चन्द्र स्पष्ट	=	4	29	6	55
15 अप्रैल 5.30 बजे प्रातः चन्द्र स्पष्ट	=	4	15	36	47
24 घंटे की गति	=	0	13	30	8

1. इस तरह चन्द्रमा की 24 घंटे की गति 13 अंश 30 कला है (8 विकला छोड़ दिए) 1 अर्थात् चन्द्रमा 24 घंटों में 13 अंश 30 कला आगे बढ़ता है।

2. उपरोक्त ग्रह स्थिति 5.30 बजे प्रातः की है और हमारा समय (जन्म समय) 10–30 प्रातः है। इस तरह 10.30 (–) 5.30=5 घंटे का मान चन्द्रमा की 13 अंश 30 कला गति के अनुसार प्राप्त करके 5.30 बजे वाले दिनांक 15 अप्रैल के चन्द्र स्पष्ट में जोड़ देने से दिनांक 15 अप्रैल को प्रातः 10.30 बजे के चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंश कला बिकला प्राप्त हो जाएंगे। इसके लिए लॉग सारणी की सहायता ली जाएगी। लॉग सारणी पंचांग में और एफेमेरीज में दी होती है। आमतौर पर प्रत्येक एफेमेरीज में लॉग सारणी होती है। यदि प्रत्येक एफेमेरीज मे लॉग सारणी होती है। यदि आपके पास पंचांग है और उसमें लॉग सारणी नहीं है तो प्राप्त कर लेनी चाहिए। ये केवल दो–तीन पृष्ठ ही होते हैं और आवश्यकता अनुसार इनका प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि यह बदलती नहीं अतः यदि पंचांग में न हो तो अपने पास अवश्य सुरक्षित रखनी चाहिए। अब इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट लॉग सारणी की सहायता से करेंगे जो अति सरल है। कई बार कुछ बिकला का अन्तर पड़ सकता है जो नगण्य अर्थात् उपेक्षणीय होता है।

(ख) 1. चन्द्रमा की गति 24 घंटे की 13 अंश 30 कला।

2. उपरोक्त गति के अनुसार 5 घंटे का मान?

3. 15 अप्रैल 5.30 बजे, प्रातः का चन्द्र स्पष्ट $4^{s}–15^{\circ}–36'–47''$

अब लॉग सारणी से $13^{\circ}–30'$ का लॉग नोट किया=2499
लॉग सारणी से 5 घंटे का लॉग नोट किया =6812

जोड़ फल =9311

4. अब लॉग सारणी में 9311 लॉग के घंटे मिनट अर्थात् अंश कला नोट किए जो 2 घंटे 49 मिनट प्राप्त हुए। इनको 15 अप्रैल के 5.30 प्रातः के चन्द्र स्पष्ट में जोड़ा तो 15 अप्रैल को जन्म समय का अर्थात् 10.30 बजे प्रातः का चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा।

		रा	अं	क	बि
5. 15 अप्रैल 2000, 5.30 चन्द्र स्पष्ट	=	4	15	36	47
लॉग से प्राप्त अंश कला जोड़ा	=		2	49	0
योग फल	=	4	18	25	47

इस तरह जन्म समय का चन्द्र स्पष्ट हुआ सिंह राशि के 18 अंश 25 कला 47 बिकला 1 बिकला का पहले चन्द्र स्पष्ट से थोड़ा अन्तर है जो नगण्य है।

इस चन्द्रमा स्पष्ट से चन्द्र नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण तुरन्त जाना जा सकता है। इस पुस्तक के आखिर में नक्षत्र आदि सारणी दी है। उसकी सहायता से तुरन्त नक्षत्र अर्थात् जन्म नक्षत्र प्राप्त हो जाएगा।

(ग) नक्षत्र सारणी में जो चन्द्रमा स्पष्ट किया है देखा। वहां पू. फाल्गुनी नक्षत्र का विस्तार 4 राशि 13 अंश 20 कला से 4 राशि 26 अंश 40 कला तक लिखा है। हमारा जन्म समय का चन्द्र स्पष्ट 4 राशि 18 अंश 25 कला 47 बिकला है। हमारा चन्द्र स्पष्ट उपरोक्त दिए गए विस्तार के अन्तर्गत आता है अतः जन्म समय का नक्षत्र अथवा जन्म नक्षत्र पू. फाल्गुनी हुआ। नक्षत्र का चरण जानना भी अति आसान है एक नक्षत्र का मान 13 अंश 20 कला होता है नक्षत्र के चार चरण होते हैं। अतः एक चरण का मान 3 अंश 20 कला होता है।

जैसे वहां बताया है कि पूःफ नक्षत्र का विस्तार 4 रा 13 अं 20 कला से प्रारम्भ होता है। इस तरह यदि इस में 3 अंश 20 कला जोड़े तो प्रथम चरण वहां तक होगा अर्थात्–

4 – 13 – 20
– 3 – 20
4 – 16 – 40

इस तरह पूःफा नक्षत्र के पहले चरण का विस्तार 4 राशि 16 अंश 40 कला तक हुआ। अब दूसरा चरण का विस्तार जानने के लिए 3 अंश 20 कला अथवा एक चरण का मान जोड़ा–

4 – 16 – 40
– 3 – 20
4 – 20 – 0

अब देखा तो दूसरे चरण का विस्तार 4 राशि 16 अंश 40 कला से 4 राशि 20 कला तक है। अपना चन्द्र स्पष्ट दूसरे चरण के अन्तर्गत आता है। अतः पूःफा के जन्म समय दूसरा चरण था। पहले की तरह इसका अक्षर देख लेंगे और गुण धर्म नोट कर लेंगे।

तीसरी विधि—यह विधि बड़ी सरल एवं सही है। प्रत्येक ग्रह की अलग–अलग गति के अनुसार अलग–अलग समय का मान सारणी में दिया होता है। कई पंचागों में भी यह तालिका होती है। उसकी सहायता से मिनटों में ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं। चन्द्रमा की गति 13 अंश 30 कला है और 5 घंटे का मान वांछित है। इस गति से 5 घंटे का मान सारणी में 2 अंश 48 कला 45 बिकला लिखा है। इसको प्रातः 5.30 बजे, 15 अप्रैल के चन्द्र स्पष्ट में जोड़ा $4^s-15^0-36'-47''+2^0-48'-45''=4$ राशि 18 अंश 25 कला 32 बिकला चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हो गया। बिकला का तुच्छ अन्तर पड़ता है। इससे भी पहले की तरह नक्षत्र चरण आदि देखा एवं स्पष्ट किया जा सकता है।

अवकहड़ा चक्र—प्राचीन शैली अथवा पारम्परिक जन्मपत्री निर्माण एवं लेखन में अवकहडा का अपना विशेष महत्व है। जब जन्म लग्न और जन्म नक्षत्र का चरण ज्ञात कर लिया जाता है तो अवकहड़ा चक्र भी बनाना चाहिए क्योंकि चन्द्र नक्षत्र से ही सभी प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है और चन्द्र एवं चन्द्र का नक्षत्र स्पष्ट किया जा चुका है। यह चक्र कैसे बनाया जाए, प्रायः पंचांगों में तालिका दी होती है, और सुविधा के लिए इस पुस्तक के सारणी प्रकरण में तालिका दे दी गयी है। जन्म नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण के अनुसार जातक का चरणाक्षर अथवा जन्माक्षर, वर्ग, योनि, गण, नाड़ी आदि प्राप्त करके जन्मपत्री में लिखे जाते हैं।

1. **वर्ण**—अपनी उदाहरण की जन्म राशि सिंह है और नक्षत्र पू. फाल्गुनी का द्वितीय चरण है। अवकहड़ा चक्र देखा तो वर्ण श्रत्रिय हुआ।

2. **जन्माक्षर**—क्योंकि जन्म नक्षत्र पूःफाल्गुनी का द्वितीय चरण हैं, अतः जन्माक्षर 'ट' हुआ

3. **गण, योनि आदि**—अवकहड़ा चक्र में सिहं राशि के पूःफाल्गुणी नक्षत्र के द्वितीय चरण के अनुसार गण–मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि मूषक, वर्ग श्वान और वश्य वनचर प्राप्त किए। इन सभी को जन्मपत्री में उपयुक्त स्थान पर अवश्य लिखना चाहिए।

2. **सूर्य स्पष्ट**—जैसे पहले बताया गया है कि ग्रह स्पष्ट करने की कई विधियां है और कई विधियां तो अत्यन्त जटिल है। घटी, पलों में होने के कारण प्राचीन विधियां अधिक जटिल प्रतीत होती है। अलग–अलग विधियों से गणना करने पर कुछ विकला का अवश्य अन्तर पड़ जाता है कई बार कलादि का भी अन्तर आ जाता है। साधारणतय त्रैराशिक विधि का गणना में प्रयोग होता है। आज कल तो पंचांग में कई तरह की सारणीयां होती है। प्रायः पंचागों में दैनिक ग्रह स्पष्ट किसी विशेष समय के दिए होते हैं। प्रायः 5.30 प्रातः या 5.30

शाम के होते है। अपनी अभीष्ट तिथि व समय के ग्रह, किसी भी, ग्रह की गति जानकर बड़ी सरलता से स्पष्ट किया जा सकते हैं। यदि किसी कारण गति अथवा दैनिक ग्रह स्पष्ट पंचांग में न दिए हों तो अन्य विधियों द्वारा ग्रह स्पष्ट करने चाहिए। आमतौर पर आजकल प्रत्येक पंचांग में दैनिक ग्रह स्पष्ट प्रातः 5.30 बजे के दिये रहते है। यहां सूर्य के लिए प्राचीन विधि तथा दैनिक ग्रह स्पष्ट को लेकर दिनांक 15 अप्रैल, 2000 का सूर्य स्पष्ट किया जाएगा ताकि पाठक प्राचीन विधि से भी परिचित हो सकें। क्योंकि हमारा उद्देश्य सरल विधि द्वारा जन्मपत्री रचना का ज्ञान देना है अतः हम आगे सरल विधि का ही उपयोग करेंगे परन्तु आपको त्रैचशिक विधि से परिचित कराना भी जरूरी है।

पंचांग से द्वादशी शुक्ल 2057, तदनुसार 15 अप्रैल 2000 से सूर्योदय नोट किया जो स्टैंडर्ड टाइम में हैं। वह है 5–59 और अपना जन्म समय 10–30 बजे का है अतः 4–31 का अन्तर है इस तरह 4 घंटे 31 मिनट के अंश कला सूर्य की गति के अनुसार उदयकालिक सूर्योस्पष्ट में जोड़ देने से जन्म समय का सूर्य स्पष्ट प्राप्त ही जाएगा।

		रा	अं	क	वि
पंचांग में 16 अप्रैल का उदय कालिक सूर्य स्पष्ट	=	0	2	28	20
पंचाग में 15 अप्रैल का उदय कालिक सूर्य स्पष्ट	=	0	1	29	44
60 घटी अथवा 24 घंटे की गति 16/4 से 15/4 का घटाया	=	0	0	58	36

इस तरह 24 घंटे में सूर्य 58 कला 36 बिकला बढ़ता है तो 4 घंटे 31 मिनट में कितना बढ़ेगा? जान कर 15 अप्रैल के सूर्य स्पष्ट में जोड़ने से स्पष्ट सूर्य जन्म समय का प्राप्त हो जाएगा। यहां त्रैराशिक विधि से गणना करेंगे।

(क) = 24 घंटे में :4 घंटें 31 मिनट :58 कला 36 बिकला

$$= \frac{58.36 \times 4.31}{24} \quad ?$$

घंटों के मिनट बनाकर इसका हल इस तरह होगा।

4 घंटे 31 मिनट के मिनट बनाए = 4× 60 = 240+ 31 =271 मिनट। 24 घंटे के मिनट बनाए 24×60=1440 मिनट

अब 1440: 58.36: : 271 ?

= 58 कला 36 बिकला के लिए 59 कला ले लेते हैं, बाद में सूक्ष्मता से जानने के लिए जो 24 बिकला अधिक मान ली है का मान जानकर कुल जोड़ से निकाल कर स्पष्ट सूर्य प्राप्त कर लेंगे।

```
=    271
    × 59
   ------
    2439
    1355
   ------
   15989 कला। इनको 1440 का भाग दिया।

1440 ) 15989 ( 11
       1440
       ----
        1589
        1440
        ----
         149
          60

1440 ) 8940 ( 6
       8640
       ----
        300 छोड़ दिए = 11 कला 6 विकला
```

हमने 58 कला 36 बिकला को 59 कला मान कर सरलता के लिए गणना की थी। इस तरह 59 कला (−) 58.36=24 बिकला का अधिक 4 घंटे 31 मिनट के लिए मान–प्राप्त किया। यदि 58 कला 36 बिकला का ही मान लेना हो तो 24 बिकला के हिसाब से 4.31 मिनट का मान लगभग 6 बिकला उपरोत से घटा देते हैं। इस तरह 6 विकला घटा दी।

59 कला की गति से	= 11 कला 6 बिकला
	−6
58 कला 36 बिकला की गति से	= 11 − 00

(ख) 15 अप्रैल के उदय कालिक सूर्य स्पष्ट में जो मान 58 कला 36 विकला 24 घंटे की सूर्य गति से 4 घंटे 31 मिनट का प्राप्त हुआ जोड़ देंगे–

		रा	अं	क	वि
15 अप्रैल उदय कालिक सूर्य स्पष्ट	=	0	1	29	44
4 घंटे 31 मिनट का जोड़ा	=			11	0
15 अप्रैल को जन्म समय का सूर्य स्पष्ट	=	0	1	40	44

इस तरह जन्म समय सूर्य स्पष्ट मेष राशि के 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर था।

दूसरी विधि–जन्म समय तक का सूर्य स्पष्ट करने के लिए यह अति सरल व अत्यन्त सही विधि है। अब इस विधि द्वारा सूर्य स्पष्ट किया जाएगा क्योंकि यह विधि सरल है और ग्रह स्पष्ट करने में समय भी बहुत कम लगता है और गलती होने का भी कम डर होता है। इसके लिए पंचांग में से सूर्य की दैनिक गति लेंगे, यदि न हो तो पंचांग में जो दैनिक सूर्य स्पष्ट दिया होता है, आगे पीछे की तारीख लिखकर तुरन्त गति जान सकते हैं। आमतौर प्रातः 5.30 बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट लिखे होते हैं और 5.30 बजे को आधार मान कर अपने समय तक के घंटे मिनट का गति का मान जोड़ कर और यदि ग्रह वक्रीय हो तो घटा कर ग्रह के स्पष्ट राशि अंश प्राप्त किए जा सकते हैं। अब सूर्य स्पष्ट करते हैं। पंचांग से यह विवरण ओर किया–

		रा	अं	क	वि
(क) 16 अप्रैल का 5.30 बजे सूर्य स्पष्ट	=	0	2	27	7
15 अप्रैल का 5.30 बजे सूर्य स्पष्ट	=	0	1	28	24
24 घंटे का अन्तर अर्थात् गति (–)	=		0	58	43

जन्म समय 10.30 पंचांग में ग्रह अथवा सूर्य स्पष्ट 5.30 बजे का है। अतः 10.30 (–) 5.30=5 घंटे का मान प्राप्त करना है।

आजकल पंचांगों में आमतौर पर अलग–अलग गति के हिसाब से अलग–अलग घंटों मिनटों का क्या मान हो सकता है सारणी दी रहती है। ऐसी पुस्तिका भी मिल जाती है जिससे अलग–अलग गति के लिए अलग–अलग समय के लिए मान गणना करके लिखा होता है। इस तरह इसकी सहायता से तुरन्त इष्ट समय एवं इष्टगति के अनुसार मान प्राप्त किया जा सकता है। हम यहां इसी की सहायता से सूर्य स्पष्ट करेंगे।

(ख) 1. पंचांग की सारणी के 58 कला 43 बिकला की सूर्य की गति के अनुसार 5 घंटे का मान मिला =12कला 17बिकला

2. 15 अप्रैल को 5.30 बजे प्रातः=0–1–28–24 सूर्य स्पष्ट के राशि अंश आदि रा अं क बि

		राशि	अंग	कला	बिकला
दोनों का जोड़ किया	=	0	0	12	17
	=	0	1	28	24
योग फल	=	0	1	40	41

इस विधि द्वारा जन्म समय का सूर्य स्पष्ट मेष राशि के 1 अंश 40 कला 41 बिकला हुआ। पहली विधि और इस तरह केवल 3 बिकला का अन्तर पड़ा जो कोई अन्तर है ही नहीं है।

तीसरी विधि—तीसरी विधि लॉग सारणी की सहायता से भी सूर्य स्पष्ट करके बताया जाता है।यह तो हमें पता ही है कि यदि 5.30 बजे की ग्रह स्थिति दी होगी तो अपना समय 10.30 (जन्म समय) होने से हमें प्रत्येक ग्रह का 5 घंटे का गति के अनुसार मान प्राप्त करके प्रत्येक प्रातः 5.30 बजे को ग्रह स्पष्ट स्थिति में जोड़कर जन्म समय का ग्रह स्पष्ट ज्ञात करना है।

1. सूर्य की गति 24 घंटे की हमने पहले ज्ञात कर रखी है वह है 58 कला 43 बिकला।

2. 5 घंटे का मान उपरोक्त गति के अनुसार जानना है।

3. प्रातः 5.30 बजे, 15 अप्रैल 2000 को सूर्य स्पष्ट 0 राशि। अंश 28 कला 24 बिकला था। यहां जो जानकारी दी है, उसको लेकर लॉग सारणी की सहायता से सूर्य स्पष्ट करेंगे।

(क) 1. सूर्य की गति 58 कला 43 बिकला है अतः 59 कला का लॉग = 1.3875

2. सारणी से 5 घंटे का लॉग = 6812

जोड़ फल = 2.0687

अब 2.0687 के लॉग सारणी में ढूँढा तो यह संख्या तो नहीं मिली, इसके लगभग संख्या के 12 कला प्राप्त हुए। थोड़ी सूक्ष्मता से जाने पर 19 बिकला मिले इस तरह 12 कला 19 बिकला, 5.30 बजे—प्रातः दिनांक 15 अप्रैल के सूर्य स्पष्ट में जोड़े—

		राशि	अंश	कला	बिकला
5.30 बजे सूर्य	=	0	1	28	24
5 घंटे का मान	=			12	19
जोड़फल	=	0	1	40	43

इस विधि द्वारा भी जन्म समय का सूर्य स्पष्ट हुआ मेष राशि के एक अंश 40 कला 43 बिकला पर। यहां केवल एक बिकला का तुच्छ अन्तर पड़ा है।

चन्द्र, सूर्य के जन्म समय के स्पष्ट राशि अंश आदि जानने की विभिन्न विधियां दी हैं। यह अलग—अलग विधि समझाने के लिए है। जो भी विधि आसान और सही लगे उसी एक विधि से समस्त ग्रह स्पष्ट करने चाहिए। अतः अगले ग्रह हम केवल एक विधि अथवा गति सारणी की सहायता से करेंगे जो सरल भी है और सही भी है।

3. बुध स्पष्ट—पंचांग में बुध की 24 घंटे की गति ज्ञात इस प्रकार की, जैसे पहले सूर्य आदि की थी।

		रा	अं	क	बि.
1. पंचांग में 16 अप्रैल को 5.3·0 प्रातः बुध के स्पष्ट राशि अंश नोट किए	=	11	10	47	5
2. पंचांग से 15 अप्रैल के 5.30 प्रातः	=	11	9	12	13
दोनों का अन्तर गति	=	0 –	1 –	34 –	52

इस तरह बुध कही 24 घंटे की गति 1 अंश 34 कला 52 बिकला है। यहां हम आसानी के लिए गति 1 अंश 35 कला ले लंगे।

3. सारिणी से 1 अंश 35 कला की गति के अनुसार 5 घंटे का मन देखा तो 19 कला 47 बिकला प्राप्त हुआ।

4. प्राप्त मानं को दिनांक 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के बुध स्पष्ट में बुध मार्गी होने से जोड़ा–

		रा	अं	क	वि
15 अप्रैल को 5.30 बजे प्रातः बुध स्पष्ट		11	9	12	13
प्राप्त 5 घंटे का मान सारणी से लिया	+	0	0	19	47
योगफल		11	9	32	00

इस तरह जन्म समय का बुध स्पष्ट 11 राशि 9 अंश 32 कला अर्थात् मीन राशि के 9 अंश 32 कला स्पष्ट हुआ। बुध स्पष्ट 11 राशि 9 अंश 32 कला।

4. **शुक्र स्पष्ट**–पंचांग से शुक्र की 24 घंटे की गति प्राप्त की।

		र	अं	क	बि
1. पंचांग से 16 अप्रैल 5.30 बजे प्रातः शुक्र स्पष्ट के राश्यंश नोट किए	=	11	17	31	9
2. पंचांग से 15 अप्रैल 5.30 बजे के राश्यंश	=	11	16	17	11

= 11–17–31–9 से 11–16–17–11 घटाए

= 11–17–31–9

= 11–16–17–11

अन्तर/गति = 0–1–13–58

इस तरह शुक्र की 24 घंटे की गति 1 अंश 13 कला 58 बिकला प्राप्त हुई. आसानी के लिए इसे 1 अंश 14 कला मान लेंगे।

3. सारणी से 1 अंश 14 कला की गति के अनुसार 5 घंटे का मान देखा तो 15 कला 25 बिकला प्राप्त हुआ।

4. प्राप्त मान को दिनांक 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के पंचांग में दिए शुक्र स्पष्ट में मार्गी होने से जोड़ा–

		र	अं	क	बि
15 अप्रैल को 5.30 बजे प्रातः शुक्र स्पष्ट	=	11	16	17	11
5 घंटे का मान सारणी से प्राप्त हुआ	=	0	0	15	25
योगफल	=	11	16	32	36

इस तरह जन्म समय का शुक्र स्पष्ट मीन राशि के 16 अंश 32 कला 36 विकला प्राप्त हुआ। अतः शुक्र स्पष्ट 11^{5}–16^{0}–32'–36

5. **मंगल स्पष्ट**–पंचांग में मंगल की 24 घंटे की गति ज्ञात की जैसे–

		र	अं	क	बि
1. पंचांग में 5.30 बजे प्रातः मंगल स्पष्ट दिनांक 16 अप्रैल, 2000 को	=	0	23	31	5
2. पंचांग में 15 अप्रैल, 5.30 बजे मंगल स्पष्ट	=	0	23	48	6
दोनों का अन्तर/गति	=	0	0	42	59

इस तरह मंगल की 24 घंटे की गति 42 कला 59 बिकला प्राप्त हुई. आसानी के लिए इसे 43 कला ले लिया।

3. गति सारणी से 43 कला की गति से 5 घंटे का मान देखा तो 8 कला 57 बिकला प्राप्त हुआ।

4. प्राप्त मान को दिनांक 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के मंगल स्पष्ट में मंगल मार्गी होने से जोड़ा।

		र	अं	क	बि
15 अप्रैल को 5.30 बजे प्रातः मंगल स्पष्ट	=	0	22	48	6
प्राप्त 5 घंटे का मान जोड़ा +	=	0	0	08	57
योगफल	=	0	22	57	03

इस तरह मंगल मेष राशि के 22 अंश 57 कला 3 बिकला स्पष्ट हुआ। मंगल स्पष्ट 0र 22अं 57क 03बि।

6. **गुरु स्पष्ट**–पंचांग से गुरु स्पष्ट के दिनांक 16 व 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के गति जानने के राश्यंश नोट किए।

		र	अं	क	बि
1. पंचांग में 16 अप्रैल, 5.30 बजे गुरु स्पष्ट	=	0	18	46	9
2. पंचांग में 15 अप्रैल, 5.30 बजे, गुरु स्पष्ट	=	0	18	32	8
दोनों का अन्तर/गति	=	0	0	14	1

इस तह गुरु की 24 घंटे की गति 14 कला 1 बिकला है। यहां 1 बिकला छोड़ दी तथा 14 कला ही लेंगे।

3. सारणी से 14 कला की गति के अनुसार 5 घंटे का मान प्राप्त किया तो 2 कला 55 बिकला मिला।

4. पांच घंटे के प्राप्त मान को दिनांक 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के गुरु स्पष्ट में गुरु मार्गी होने से जोड़ा।

		र	अं	क	बि
15 अप्रैल 5.30 प्रातः गुरु स्पष्ट	=	0	18	32	8
5 घंटे का प्राप्त मान	=	0	0	2	55
योगफल	=	0	18	35	3

गुरु मेष राशि के 18 अंश 35 कला 3 बिकला पर स्पष्ट हुआ। इस तरह गुरु स्पष्ट 0–18–35–2

7. शनि स्पष्ट–पंचांग से शनि स्पष्ट के दिनांक 16 व 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के राश्यंश गति जानने के लिए नोट किए।

		र	अं	क	बि
1. पंचांग में 16 अप्रैल 5.30 प्रातः शनि स्पष्ट	=	0	23	25	52
2. पंचाग में 15 अप्रैल 5.30 प्रातः शनि स्पष्ट	=	0	23	18	29
दोनों का अन्तर/गति	=	0	0	7	23

इस तरह शनि की 24 घंटे की गति 7 कला 23 बिकला प्राप्त हुई। मन्दगति ग्रह है और यह बहुत धीमी गति से चलता है अतः आसानी के लिए 7 कला गति ली। बिकला छोड़ देने से विशेष अन्तर नहीं पड़ेगा क्योंकि अति धीमी गति होती है।

3. सारणी से 7 कला की गति से 5 घंटे का मान 1 कला 27 बिकला प्राप्त हुआ।

4. प्राप्त 5 घंटे के मान को 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के शनि स्पष्ट में शनि मार्गी होने से जोड़ा।

		र	अं	क	बि
15 अप्रैल 5.30 बजे					
शनि स्पष्ट	=	0	23	18	29
5 घंटे का प्राप्त मान जोड़ा +	=	0	0	1	27
	=	0	23	19	56

जन्म समय शनि स्पष्ट मेष 23 अंश 19 कला 56 बिकला।

8. राहू स्पष्ट—राहू स्पष्ट करने के लिए पंचांग में से दिनांक 16 अप्रैल व 15 अप्रैल, 5.30 बजे प्रातः का राहू स्पष्ट नोट किया जो इस प्रकार प्राप्त हुआ।

		र	अं	क	बि
1. 16 अप्रैल 5.30 बजे प्रातः राहू स्पष्ट	=	3	5	36	0
2. 15 अप्रैल 5.30 बजे प्रातः राहू स्पंष्ट	=	3	5	39	11
दोनों का अन्तर/गति (–)	=	0	0	3	11

यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि राहू केतू सदैव एक दूसरे से 180 अंश के अन्तर पर रहते हैं और यह आमतौर पर सदैव वक्रीय चलते हैं। इसी लिए जैसे–जैसे यह आगे बढ़ते हैं इनके राश्यंश कम होते जाते हैं। जैसे 15 अप्रैल को राहू 5.30 बजे प्रातः स्पष्ट कर्क राशि के 5 अंश 39 कला 11 विकला पर या प्रन्तु गति के कारण यह दिनांक 16 अप्रैल को 5.30 बजे प्रातः कर्क राशि के 5 अंश 36 कला पर आ गया याने राश्यंश कम हो गए। इस लिए गति के अनुसार प्राप्त मान को घटाना होता है।

3. पंचांग से राहू के राश्यंश के अनुसार जो गति ऋण 3 कला 11 बिकला प्राप्त हुई, आसानी के लिए 3 कला मान ली। सारणी से 3 कला की गति के अनुसार 5 घंटे का मान 37 बिकला प्राप्त हुआ।

4. प्राप्त 5 घंटे के मान को 15 अप्रैल के 5.30 बजे प्रातः के राहू स्पष्ट से राहू वक्रीय होने से घटाया।

		रा	अं	क	बि
15 अप्रैल 5.30 बजे प्रातः राहू स्पष्ट	=	3	5	39	11
5 घंटे का प्राप्त मान ऋण किया (–)	=	0	0	0	27
		3	5	38	44

इस तरह जन्म समय का राहू स्पष्ट कर्क राशि के 5 अंश 38 कला 44 बिकला हुआ। अतः राहू स्पष्ट $3^{6}-5^{0}-38'-44''$

9. **केतू स्पष्ट**—जैसे पहले बताया गया है कि राहू केतू सदैव 180 अंश के अन्तर अर्थात् 6 राशि के अन्तर पर रहते हैं। इस लिए केतू को अलग स्पष्ट करने की आवृश्यकता नहीं होती। जन्म समय के राहू स्पष्ट में 6 राशि जोड़ देने से (180^{0}) केतू स्पष्ट हो जाता है। जैसेः—

		र	अं	क	बि
15 अप्रैल जन्म समय का राहू स्पष्ट	=	3	5	38	44
केतू स्पष्ट के लिए 6 राशि जोड़ा	=	6	0	0	0
जोड़फल	=	9	5	38	44

इस तरह जन्म समय का केतू मकर राशि के 5 अंश 38 कला 44 बिकला पर स्पष्ट हुआ। अतः केतू स्पष्ट $9^{5}-5^{0}-38'-44''$.

सभी ग्रह स्पष्ट कर लिए गए हैं। यदि पाठक चाहें तो अन्य ग्रह यूरेनस, नेपच्यून व प्लूटो आदि भी दी गयी विधि द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। क्योंकि यह ग्रह एक राशि में कई—कई वर्ष रहते हैं अतः इनकी गति अति धीमी होती है। यदि इन ग्रहों को भी लेना हो तो प्रायः कई पंचांगों में इनके भी 5.30 बजे प्रातः के राश्यंश दिए होते हैं. इस लिए यदि पाठक चाहें इनकों जन्म समय तक स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह बहुत ही कम चलते हैं, अतः जन्म तारीख के जिस समय के पंचांग में यह स्पष्ट दिए हो, इन्हें ज्यों का त्यों ले लेना चाहिए।

जो ग्रह स्पष्ट किए हैं, उन्हें सबको एक स्थान पर जानकारी के लिए एकत्र कर लेना चाहिए।

"जन्म समय स्पष्ट ग्रह चक्र'

ग्रह → राश्यंश	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	राहू	केतू
राशि	4	0	11	11	0	0	0	3	9
अंश	18	1	9	16	22	18	23	5	5
कला	26	40	32	32	57	35	19	38	28
बिकला	1	44	0	36	3	3	56	44	44
गति अं	0	0	1	1	0	0	0	0	0
क	810	58	34	13	42	14	7	3	3
बि	8	36	52	58	59	1	23	11	11
मार्गी/ वक्री	मार्गी	मार्गी	मार्गी	मार्गी	मार्गी	मार्गी	मार्गी	वक्री	वक्री

द्वादश भाव स्पष्ट

लग्न जिसे प्रथम भाव भी कहा जाता है स्पष्ट किया जा चुका है। कुण्डली के द्वादश भाव होते हैं। अतः इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव स्पष्ट करने आवश्यक होते हैं। इस तरह हमने पहले प्रथम भाव ही स्पष्ट किया है परन्तु अन्य भाव स्पष्ट करने के लिए दशम भाव सर्वप्रथम स्पष्ट करना होता है। अतः यहां पहले दशम भाव स्पष्ट की विधि बताई जाती है तथा इसके उपरान्त द्वादश भाव स्पष्ट किए जाएंगे।

दशम भाव स्पष्ट विधि–जैसे हमने लग्न स्पष्ट किया था वैसे ही दशम लग्न सारणी की सहायता से दशम भाव स्पष्ट करना होता है। दशम भाव स्पष्ट करने के लिए प्रायः प्रत्येक पंचांग में सारणी दी होती है जो सर्वत्र उपयोगी होती है। यहां लग्न स्पष्ट करने वाले कुल योगफल को दशम भाव स्पष्ट करने के लिए भी उपयोग किया जाता है क्योंकि दशम भाव स्पष्ट के लिए लग्न सारणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंश से जो घटी पल प्राप्त होते है उनमें इष्टकाल जोड़ने से जो योगफल होता है, उसके योगफल को दशम लग्न सारणी में देखने से यदि वही न मिलें तो निकटस्थ के देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होते हैं, वही दशम स्पष्ट होता है।

		घटी	पल	विपल
1. लग्न सारणी से सूर्य स्पष्ट के राश्यंश प्राप्त थे	=	2	52	0
2. इष्टकाल था +	=	11	17	30
योगफल	=	14	9	30

अब योगफल 14 घटी 10 पल को दशम लग्न सारणी में ढूंढा। ढूँढने पर 14 घटी 10 पल तो नहीं मिले परन्तु इसके निकटस्थ 14 घटी 4 पल मिले जिसके लिए मीन राशि का 1 अंश है। यदि सूक्ष्म अर्थात् 14 घटी 10 पल के ही राशि अंश जानने चाहें तो तुलनातमिक विधि द्वारा तुरन्त जान सकते हैं। जैसे:–

14 घटी 4 पल के लिए = मीन 1 अंश है।

14 घटी 13 पल के लिए = मीन 2 अंश है।

यदि ध्यान से देखें तो पता चला कि 9 पल एक अंश अथवा 60 कला तक बढ़ता है। हमारे घटी पल 14–10 हैं जो 14 घटी 4 पल से 6 पल अधिक हैं। यदि 6 पल मान प्राप्त करके 14 घटी 4 पल वाले मान में जोड़ देंगे तो हमें 14 घटी 10 पल के राश्यंश प्राप्त हो जाएंगे। इस तरह–

= 9 पल: 6 पल ?: 60 कला

$$= \frac{6 \times 60}{9} = 40 \text{ कला}$$

इस तरह सूक्ष्म राश्यंश मीन राशि 1 अंश 40 कला दशम स्पष्ट हुआ। अतः दशम स्पष्ट $11^{s}–1^{0}–40'$, दश्म स्पष्ट कर लिया है और लग्न अथवा प्रथम भाव पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है।

प्रथम भाव स्पष्ट–प्रथम भाव पहले ही मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला का स्पष्ट किया गया है। अतः प्रथम भाव स्पष्ट $2^{s}–15^{0}–35'$

सप्तम भाव स्पष्ट–करने के लिए प्रथम भाव में 6 राशि जोड़ दी जाती है तो सप्तम स्पष्ट हो जाता है जैसे:–

		रा	अं	क	बि
प्रथम स्पष्ट	=	2	15	35	0
6 राशि जोड़ी +	=	6	0	0	0
सप्तम स्पष्ट	=	8	15	35	0

इस तरह सप्तम भाव स्पट हआ $8^{s}–15^{0}–35'–0''$

चतुर्थ भाव–दशम भाव स्पष्ट में 6 राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव स्पष्ट हो जाता है।

	=	र	अं	क	बि
दशम भाव स्पष्ट	=	11	1	40	0
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
चतुर्थ भाव स्पष्ट	=	17	1	40	0
यदि जोड़ 12 से अधिक हो तो 12 घटा देने चाहिए अतः	=	12	0	0	0
12 घटाए		5	1	40	0

इस तरह चतुर्थ भाव स्पष्ट $5^{5}-1^{0}-40'-0"$ हुआ है।

अन्य भाव स्पष्ट—प्रथम, सप्तम, दशम, चतुर्थ भाव स्पष्ट कर लिए गए हैं। अन्य भाव स्पष्ट करने के लिए चतुर्थ भाव को लिया जाता है।

चतुर्थ भाव स्पष्ट से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर जो शेष रहे उसमें 6 का भाग दिया जाता है। इस प्रकार जो अंश–कलादि प्राप्त हों वह षष्ठांश कहलाता है। षष्ठांश को लग्न भाव स्पष्ट में जोड़ने से लग्न की सन्धि, लग्न भाव की सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से द्वितीय भाव, द्वितीय भाव में षष्ठांश जोड़ने से द्वितीय भाव की सन्धि, द्वितीय भाव की सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से तृतीय भाव की सन्धि व तृतीय भाव की सन्धि में षष्ठांश जोड़ने से चतुर्थ भाव स्पष्ट आता है। यहां ध्यान रखें चतुर्थ भाव स्पष्ट वही होना चाहिए जो हमने पहले दशम में 6 राशि जोड़ने पर प्राप्त अथवा स्पष्ट किया था।

इसके उपरान्त 30 अंश में से षष्ठांश को घटाएं, जो शेष रहे उसे चतुर्थ भाव स्पष्ट में जोड़ने से, चतुर्थ भाव की सन्धि, चतुर्थ भाव की सन्धि में जोड़ने से पंचम भाव, पंचम भाव में जोड़ने से पंचम भाव की सन्धि, पंचम भाव की सन्धि में जोड़ने से षष्ठम भाव की सन्धि, षष्ठम भाव में जोड़ने से षष्ठम भाव की सन्धि, षष्ठम भाव की सन्धि में जोड़ने से सप्तम भाव आता है।

इसके उपरान्त लग्न सन्धि में 6 राशि जोड़ने से सप्तम भाव सन्धि, द्वितीय भाव में 6 राशि जोड़ने से अष्टम भाव। द्वितीय भाव सन्धि में 6 राशि जोड़ने से अष्टम भाव सन्धि, तृतीय भाव में 6 राशि जोड़ने से नवम भाव। तृतीय भाव सन्धि में 6 राशि जोड़ने से नवम भाव सन्धि। चतुर्थ भाव में 6 राशि जोड़ने से दशम भाव। चतुर्थ भाव सन्धि में 6 राशि जोड़ने से दशम भाव सन्धि। पंचम भाव में 6 राशि जोड़ने से एकादश भाव। पंचम भाव सन्धि में 6 राशि जोड़ने से एकादश भाव सन्धि। षष्ठम भाव में 6 राशि जोड़ने के द्वादश भाव। षष्ठम भाव सन्धि में 6 राशि जोड़ने से द्वादश भाव सन्धि। इसी तरह द्वादश भावों के स्पष्ट भाव स्पष्ट किये जाते हैं। सर्वप्रथम षष्ठांश प्राप्त करेंगे फिर द्वादश भाव स्पष्ट करेंगे।

	=	राशि	अंश	कला	विकला
दशम भाव	=	11	1	40	0
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
चतुर्थ भाव	=	5	1	40	0
में से लग्न को घटाया	=	2	15	35	0

षष्ठांश बनाने के लिए 6 का भाग किया

```
6 ) 2-16-5-0 ( 0
    0
    ----
       2
      30
    ----
      60
     +16
6 )  76  ( 12
      6
    ----
      16
      12
    ----
       4
      60
    ----
     240
       5
6 ) 245 ( 40
     24
    ----
     ×5
      0
    ----
      5
     60
6 ) 300 ( 50
     30
    ----
     00
     00
    ----
      ×
    ----
```

इस तरह 0^{5}–12^{0}–40'–50" षष्ठांश प्राप्त हुआ।

		रा	अं	क	बि
अब लग्न में	=	2	15	35	0
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	40	50
लग्न सन्धि	=	2	28	15	50
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	40	50
द्वितीय भाव	=	3	10	56	40
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	40	50
द्वितीय भाव सन्धि	=	3	23	37	30
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	40	50
तृतीय भाव	=	4	6	18	20
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	40	50
तृतीय भाव सन्धि	=	4	18	59	10
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	40	50
चतुर्थ भाव स्पष्ट	=	5	1	40	00

अब 30 अंश में से षष्ठांश घटाया।

	=	0	30	0	0
षष्ठांश (–)	=	0	12	40	50
शेष	=	0	17	19	10
चतुर्थ भाव में	=	5	1	40	0
शेष को जोड़ा	=	0	17	19	10
चतुर्थ भाव की सन्धि	=	5	18	59	10
शेष को जोड़ा	=	0	17	19	10
पंचम भाव	=	6	6	18	20
शेष को जोड़ा	=	0	17	19	10
पंचम भाव सन्धि	=	6	23	37	30
शेष को जोड़ा	=	0	17	19	10
षष्ठम भाव	=	7	10	56	40
शेष को जोड़ा	=	0	17	19	10
षष्ठम भाव सन्धि	=	7	28	15	50
शेष को जोड़ा	=	0	17	19	10
सप्तम भाव	=	8	15	35	0

		रा	अं	क	बि
अब लग्न सन्धि में	=	2	18	15	50
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
सप्तम भाव सन्धि	=	8	18	15	50
द्वितीय भाव में	=	3	10	56	40
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
अष्टम भाव	=	9	10	56	40
द्वितीय भाव सन्धि में	=	3	23	37	30
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
अष्टम भाव सन्धि	=	9	23	37	30
तृतीय भाव में	=	4	6	18	20
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
नवम भाव	=	10	6	18	20
तृतीय भाव सन्धि में	=	4	18	59	10
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
नवम भाव सन्धि	=	10	18	59	10
चतुर्थ भाव	=	5	1	40	0
में 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
दशम भाव	=	11	1	40	0
चतुर्थ भाव सन्धि में	=	5	18	59	10
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
दशम भाव सन्धि	=	11	18	59	10
पंचम भाव में	=	6	6	18	20
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
एकादश भाव	=	0	6	18	20
पंचम भाव सन्धि	=	6	23	37	30
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
एकादश भाव सन्धि	=	0	23	37	30
षष्ठ भाव मे	=	7	10	56	40
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
द्वादश भाव	=	1	10	56	40

		रा	अं	क	बि
षष्ठ भाव सन्धि में	=	7	28	15	50
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
द्वादश भाव सन्धि	=	1	28	15	50

इस तरह सभी बारह भाव स्पष्ट करने होते हैं। तुरन्त भाव स्पष्ट की जानकारी प्राप्त करने हेतु द्वादश भाव स्पष्ट चक्र, ग्रह स्पष्ट की तरह बना लेना चाहिए।

द्वादश भाव स्पष्ट चक्र

भाव राशि	1	सन्धि	2	सन्धि	3	सन्धि	4	सन्धि	5	सन्धि	6	सन्धि
रा	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	7	7
अं	15	28	10	23	6	18	1	18	6	23	10	28
क	35	15	56	37	18	59	40	59	18	37	56	15
बि	0	50	40	30	20	10	0	10	20	30	40	50
भाव	**7**	**सन्धि**	**8**	**सन्धि**	**9**	**सन्धि**	**10**	**सन्धि**	**11**	**सन्धि**	**12**	**सन्धि**
रा	8	8	9	9	10	10	11	11	0	0	1	1
अं	15	18	10	23	6	18	1	18	6	23	10	28
क	35	15	56	37	18	59	40	59	18	37	56	15
बि	0	50	40	30	20	10	0	10	20	30	40	50

भाव चलित चक्र—जब ग्रह व भाव स्पष्ट कर लिए जाए तो भाव चलित चक्र बनाना आवश्यक समझा जाता है। भाव चलित चक्र बनाने के लिए ग्रह स्पष्ट तथा भाव स्पष्ट की आवश्यकता पड़ती है। असानी के लिए ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट तथा लग्न कुण्डली एक स्थान पर रख लेनी चाहिए ताकि ग्रहों, भावों के स्पष्ट राश्यंश व कुण्डली से यह पता रहे कि ग्रह कुण्डली में किस भाव में थे।

चलित चक्र बनाने की विधि—भाव स्पष्ट करते समय देखा होगा कि प्रत्येक भाव स्पष्ट एवं प्रत्येक भाव की सन्धि है। अतः प्रत्येक भाव का

विस्तार प्रारम्भ की सन्धि से अगली सन्धि तक होता है अर्थात् प्रत्येक भाव का विस्तार सन्धि के तृतीय भाव की सन्धि तक तृतीय भाव होगा। बाहरवें भाव की सन्धि से प्रथम भाव की सन्धि तक, प्रथम भाव होता माना गया है। यदि यह कहें कि सन्धि एक सीमा है तो अनुचित नहीं होगा।

ग्रह स्पष्ट व भाव स्पष्ट को ध्यान में रखकर तथा लग्न कुण्डली सामने रखकर चलित चक्र बनाना आसान रहता है। चलित चक्र बनाने के लिए ग्रह के राश्यादि यदि भाव के राश्यादि के समान हो तो वह ग्रह उसी भाव में तथा यदि कम हों तो पीछे के भाव और यदि उस पीछे की सन्धि से भी कम हो तो पिछले भाव में गिना जाता है। यदि ग्रह स्पष्ट के राश्यादि भाव के राश्यंश से आगे हो तो अगली सन्धि में और उस सन्धि के राश्यादि से भी अधिक हों वह ग्रह अगले भाव में गिना जाता है। सारांश यह कि चलित चक्र बनाने के लिए जांचना पड़ता है कि ग्रह स्पष्ट भाव के विस्तार में आता है या नहीं आता है। जब ग्रह स्पष्ट पिछली सन्धि से आगे–भाव–अगली सन्धि तक जिसे भाव विस्तार माना जाता है, में आ जाता है, तो उसे उसी भाव में माना जाएगा। यदि ग्रह पिछली सन्धि से भी क्रम है तो पिछले भाव में और यदि अगली सन्धि से अधिक है तो ग्रह अगले भाव में चला जाएगा। सन्धि में आने वाले ग्रह को सन्धि में लिखा जाता है परन्तु आजकल भाव विस्तार के अन्दर जी ग्रह होता है उसे उसी भाव में माना जाता है और सन्धि में अलग से नहीं दिखाया जाता है। यह सही माना गया है और सरल भी है।

चलित चक्र का महत्व–चलित चक्र बड़ा महत्वपूर्ण माना गया है। चलित चक्र में भावों का स्पष्ट विस्तार पता चल जाता है तथा ग्रहों के वास्तविक स्थान जानने तथा पहचानने में असानी रहती है। जिससे सही फलकथन में मदद मिलती है। चलित चक्र से ही पता चलता है कि ग्रह की भावों में वास्तविक स्थिति क्या है क्योंकि यदि ग्रह अगले पिछले घरों में आ जाएगा तो निश्चय ही फल भी उसी के अनुरुप ही होगा। यह भी माना गया है कि ग्रह सन्धि में आ जाने से निर्बल हो जाता है और उसका प्रभाव भी कम हो जाता है। यह जानकारी चलित चक्र अथवा चलित कुण्डली से जानी जाती है।

अब जो उदाहरण ली गई है उसका चलित्त चक्र बनाया जाता है।

1. सूर्य–स्पष्ट सूर्य 0^5–1^0–40'–44" हैं। एकादश भाव 11^5–18^0–59'–10" से 0^5–23^0–37'–30" तक है। इस तरह सूर्य एकादश में रहेगा।

2. चन्द्र–चन्द्र स्पष्ट 4^5–18^0–26'–1" पर है। तृतीय भाव 3^5–23^0–37'–30" से 4^5–18^0–59'–10" तक है। चन्द्र भी तृतीय रहेगा।

3. बुध–बुध स्पष्ट 11^5–9^0–32'–0" है, और दशम भाव 10^5–18^0–59'–10" से 11^5–18^0–59'–10" तक है। अतः बुध दशम रहेगा।

4. शुक्र–शुक्र स्पष्ट $11^{s}-16^{0}-32'-36''$ है। दशम भाव $10^{s}-18^{0}-59'-10''$ से $11^{s}-18^{0}-59'-10''$ तक है। उस तरह शुक्र भी यथास्थान दशम में रहेगा।

5. मंगल–मंगल स्पट $0^{s}-22^{0}-57'-3''$ पर है और एकादश भाव $11^{s}-18^{0}-59'-10''$ से $0^{s}-23^{0}-37'-30''$ तक है। अतः मंगल यथास्थान एकादश में ही रहेगा।

6. गुरु–गुरू स्पष्ट $0^{s}-18^{0}-35'-3''$ पर है और एकादश भाव $11^{s}-18^{0}-59'-10''$ से $0^{s}-23^{0}-37'-30''$ तक है अतः गुरु एकादश रहेगा।

7. शनि–शनि स्पष्ट $0^{s}-23^{0}-19'-56''$ है और एकादश भाव $11^{s}-18^{0}-59'-10''$ से $0^{s}-23^{0}-37'-30''$ तक है। इसलिए शनि एकादश रहा।

8. राहू–राहू स्पष्ट $3^{s}-5^{0}-38'-44''$ है और द्वितीय भाव $2^{s}-28^{0}-15'-50''$ से $3^{s}-23^{0}-37'-30''$ तक है, इस तरह राहू द्वितीय रहेगा।

9. केतू–केतू स्पष्ट $9^{s}-5^{0}-38'-44''$ है और अष्टम भाव $8^{s}-18^{0}-15'-50''$ से $9^{s}-23^{0}-37'-30''$ तक है। इस तरह केतू अष्टम में रहेगा। चलित स्पष्ट हो जाने पर चलित चक्र बनाया जाता है।

भाव चलित चक्र कुण्डली
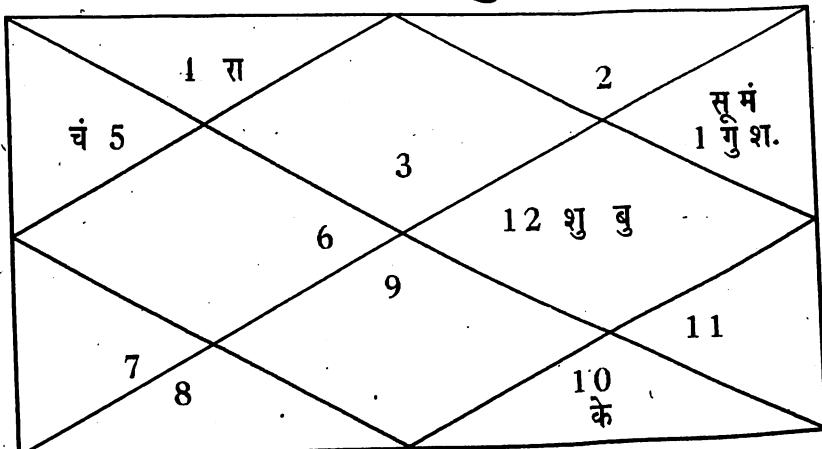
यदि चलित चक्र को ध्यान से देखें तो पता चलता है कि चन्द्रमा $4^{s}-18^{0}-26'-1''$ पर है। तृतीय भाव $3^{s}-23^{0}-37'-30''$ से $4^{s}-18^{0}-59'-10''$ तक है। अतः चन्द्र के राश्यंश तृतीय भाव सन्धि में हैं कई विद्वान इसे इस सन्धि में रखेंगे परन्तु फिर भी चन्द्र के स्पष्ट अंश कला विस्तार के भीतर आते हैं अतः चन्द्र तृतीय रहेगा। यही स्थिति शनि की भी है।

भाव मध्य विचार—जन्मपत्री में भाव मध्य चक्र भी दिया होता है। यदि भाव सन्धियों को छोड़ दिया जाए तो भाव स्पष्ट के जो राश्यंश हैं उनकी तुलना जन्म कुण्डली से की जाती है और यह भाव मध्य कहलाते हैं। पाश्चात्य मतानुसार भाव का विस्तार भारतीय मत के इसी भाव से भाव तक होता है परन्तु भारतीय मतानुसार भाव का विस्तार सन्धि से सन्धि होता है। अतः भारतीय मतानुसार जन्म कुण्डली में जिस भाव में जो राशि हो यदि, भाव स्पष्ट में भी वही राशि रहे तो भाव वही रहेगा, अन्यथा भाव बदल जाएगा। हमारी उदाहरण में जन्म कुण्डली राशि और भाव स्पष्ट में वही राशियां है अतः भाव चलित की तरह भाव मध्य चक्र इस प्रकार होगा।

भाव मध्य चक्रम्
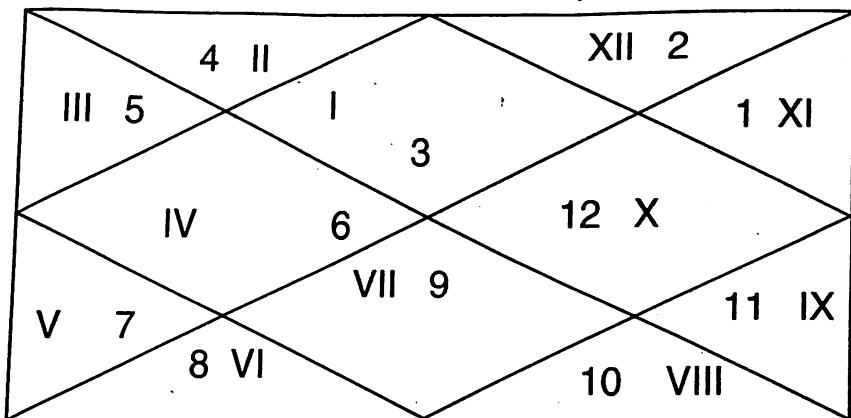
दशावर्ग विचार

आमतौर पर जन्मपत्री को सप्तवर्गी व दश्वर्गी कहा जाता है। यह इस लिए कहा जाता है कि ग्रहों के बलावल का विचार करके जन्मपत्री में चक्र दिए रहते हैं। यही देखा जाए तो सूक्ष्म फलादेश के लिए यह बहुत उपयोगी होते हैं। फलित ज्योतिष में वर्ग अति महत्वपूर्ण माने गए हैं इस लिए प्राचीन शैली जन्म पत्रियों में इनको आवश्य लिखा करते थे और आजकल भी जन्म पत्री में प्रायः वर्ग दिए होते हैं। यह दशावर्ग इस तरह होते हैं। गृह, होरा, द्रेष्काण, सप्तांश, नवांश, दशमांश, द्वादशांश, षोड़शांश, त्रिशांश तथा षष्ठ्यंश कहलाते हैं। आमतौर पर सप्तवर्ग व षड्वर्ग का ही प्रयोग किया जाता है। गृहम् लग्न होरा, द्रेष्काण, सप्तांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश मिलकर सप्तवर्ग कहलाते हैं। लग्न, होरा द्रेष्काण, नवांश द्वादशांश और त्रिशांश मिलकर षड्वर्ग कहलाते हैं। आमतौर पर सप्तवर्ग व षड्वर्ग का ही उपयोग

किया जाता है। यहां पाठकों की जानकारी के लिए विशेष वर्गों पर विचार किया जाता है।

1. गृहम अथवा लग्न कुण्डली–विशेष व महत्वपूर्ण किसी एक वर्ग का विचार करने से पूर्व गृहम अथवा लग्न के सम्बन्ध में बताना आवश्यक है। यह तो आप अब तक जान गए होंगे लग्न अति महत्वपूर्ण होता है। जन्म लग्न से अपने शरीर, स्वास्थ्य, प्रगति आदि का लग्न के शुद्ध होने पर ही फलादेश अधिकतर निर्भर करता है। प्रत्येक लग्न का अथवा जो लग्न में राशि होती है उसका कोई–न–कोई गृह स्वामी होता है। यदि लग्न में राशि मिथुन होगी तो मिथुन राशि का स्वामी बुध होगा। इस तरह लग्न राशि जो भी होगी उसका स्वामी ग्रह भी होगा। नैसर्गिक कुण्डली में प्रथम भाव में मेष राशि होती है। अतः मेष राशि का स्वामी मंगल होता है। इस तरह जो ग्रह जिस राशि का स्वामी होता है, वह राशि उस ग्रह का गृह होती है। अतः किसी भी राशि का गृह जानने के लिए प्रत्येक राशि के अधिपति, स्वामी का ज्ञान होना जरुरी है। आगे दिए जा रहे वर्ग समझने में भी राशि स्वामी जान लाभकारी रहेगा।

राशि स्वामी सारणी

क्रम नं.	राशि	स्वामी
1	मेष	मंगल
2	वृष	शुक्र
3	मिथुन	बुध
4	कर्क	चन्द्रमा
5	सिंह	सूर्य
6	कन्या	बुध
7	तुला	शुक्र
8	वृश्चिक	मंगल
9	धन	गुरु
10	मकर	शनि
11	कुम्भ	शनि
12	मीन	गुरु

मंगल, शुक्र, बुध, गुरु, शनि, दो–दो राशियों के स्वामी है जबकि

सूर्य चन्द्र केवल एक–एक राशि के स्वामी हैं। राहू केतू किसी राशि के स्वामी नहीं होते इन्हें केवल छाया ग्रह माना गया है।

2. **नवांश कुण्डली**–अन्य वर्ग जानने से पूर्व अब सर्वप्रथम नवांश पर विचार किया जाएगा क्योंकि अधिकतर जन्मपत्रों में नवांश कुण्डली अवश्य बनाई गई होती है और प्रायः सभी विद्वान इसको कुछ अधिक महत्व देते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि कई बार तो अन्य वर्ग की कुण्डलियां न देकर, इन सबके स्थान पर नवांश कुण्डली ही बनाई गई होती है। इससे ही नवांश कुण्डली के महत्व का पता चल जाता है। यह सत्य है कि नवांश कुण्डली से ही ग्रहों की वास्तविक शक्ति का पता लगाया जा सकता है। इसी लिए नवांश कुण्डली महत्वपूर्ण मानी गयी है। नवांश कुण्डली से पत्नी, पत्नी के सम्बन्ध में सभी प्रकार की जानकारी, ससुराल, ससुराल से लाभ, विवाह समय, दाम्पत्य जीवन, दाम्पत्य सुख इत्यादि जानकारी प्राप्त होती है।

नवमांश क्या होता है?–आमतौर पर नवमांश को नवांश कहा जाता है। दोनों शब्दों में कोई अन्तर नहीं है और दोनों का प्रभाव भी समान ही है। केवल नाम में ही थोड़ा अन्तर है। इस तरह किसी भ्रम में पड़ने की आवश्यकता नहीं है। नवमांश एक राशि के 9 वें भाग हो कहते हैं और प्रायः यह तीन अंश 20 कला का होता है। यह तो आप अब तक जान ही गए होंगे कि एक राशि में 30 अंश होते हैं और प्रथम नवांश 3 अंश 20 कला तक, दूसरा 6 अंश 40 कला तक तीसरा 10 अंश तक, चौथा 13 अंश 20 कला तक, पांचवा 16 अंश 40 तक, षष्ठवां 20 अंश तक, सातवां 23 अंश 20 कला तक, आष्ठां 26 अंश 40 कला तक और नवम 30 अंश तक होता है। इस तरह एक राशि में नव(नौं) नवांश होते हैं। इस लिए इसको नवमांश अर्थात् नवांश के नाम से जाना जाता है। भचक्र 360 अंश का है और इस तरह 12 बारह राशियों के 108 नवांश होते हैं। प्रत्येक नवांश की राशि का ग्रह स्वामी होता है या यूँ कह लें कि प्रत्येक ग्रह का नवांश होता है जैसे सूर्य, मंगल के नवांश में। नवमांश यानि ग्रहों की सूक्ष्म अवस्था प्रगट करती है। इस तरह जब नवांश कुण्डली विचारी जाती है तो कई बार निर्बल दिखने वाले ग्रह नवमांश कुण्डली में बलवान हो जाते हैं और कई वार जन्म कुण्डली में बलवान ग्रह, नवांश कुण्डली में कमजोर स्थिति में आ जाते हैं। इसी लिए ग्रहों की वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए अन्य कुण्डलियों में नवांश कुण्डली को आजकल अधिक प्राथमिकता दी जाती है। इस लिए यह जरूरी है कि फल कथन करने एवं भविष्य बताने से पूर्व जन्म कुण्डली के साथ–साथ नवमांश कुण्डली भी देखनी चाहिए तभी ग्रहों की स्थिति का पता चलेगा।

नवमांश जानने की विधि—नवमांश एवं नवांश कुण्डली बनाने की विधि अति सरल है। नवमांश जानने अथवा निकालने के लिए कोई विशेष गणित नहीं करना पड़ता क्योंकि नवांश जानने एवं निकालने के लिए लग्न स्पष्ट तथा ग्रह स्पष्ट की जरूरत पड़ती है जो हमने पहले ही कर रखें है। जब भी नवमांश जानना अथवा निंकालना हो तो लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट सामने रखने चाहिए ताकि सरलता से नवांश जाना जा सके क्योंकि बिना ग्रह स्पष्ट नवांश जानना अति कठिन ही होगा। यदि लग्न स्पष्ट व ग्रह स्पष्ट हों तो नवांश सारणी की सहायता से तुरन्त पता चल जाता है कि किस राशि का कौन—सा नवांश किस ग्रह का है। यह जानकर तुरन्त नवांश कुण्डली बनाई जा सकती है। यहां नवांश चक्र दिया जा रहा है जिससे तुरन्त नवांश जाना जा सकता है।

नवांश चक्र

नवांश क्रम संख्या	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	षष्ठवां	सातवां	आठवां	नौवां
राशि	अं क 0 0 से 3 20 तक	अं क 3 20 से 6 40 तक	अं क 6 40 से 10 0 तक	अं क 10 0 से 13 20 तक	अं क 13 20 से 16 40 तक	अं क 16 40 से 20 0 तक	अं क 20 0 से 23 20 तक	अं क 23 20 से 26 40 तक	अं क 26 40 से 30 00 तक
मेष	0	1	2	3	4	5	6	7	8
वृष	9	10	11	0	1	2	3	4	5
मिथुन	6	7	8	9	10	11	0	1	2
कर्क	3	4	5	6	7	8	9	10	11
सिंह	0	1	2	3	4	5	6	7	8
कन्या	9	10	11	0	1	2	3	4	5
तुला	6	7	8	9	10	11	0	1	2
वृश्चिक	3	4	5	6	7	8	9	10	11
धन	0	1	2	3	4	5	6	7	8
मकर	9	10	11	0	1	2	3	4	5
कुम्भ	6	7	8	9	10	11	0	1	2
मीन	3	4	5	6	7	8	9	10	11

यहां जो नवांश चक्र दिया गया है, इसकी सहायता से तुरन्त नवांश निकाला जा सकता है। जैसे पहले बताया है, जो लग्न एवं ग्रह स्पष्ट कर रखें हैं उनको सामने रखें। इन को लेकर नवांश जानेगे।

कैसे? 1. सर्वप्रथम नवांश कुण्डली बनाने के लिए जन्म लग्न स्पष्ट से नवांश लग्न जानना होता है। लग्न स्पष्ट $2^5-15^0-35'-0''$ पर है। सारणी में बाई ओर मिथुन राशि देखी। मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला 0 बिकला है, यह मिथुन राशि के आगे दाएं ओर (10) कुम्भ राशि के ऊपर पांचवां नवांश $13^0-20'$ से $16^0-40'$ के भीतर है। अतः नवांश लग्न कुम्भ प्राप्त हुआ। नवांश लग्न कुम्भ मान कर आगे नवांश कुण्डली बनाएंगे परन्तु इससे पूर्व सभी ग्रहों का नवमांश सारणी से प्राप्त कर लेते हैं ताकि नवांश कुण्डली बनाने में सुविधा रहे। इस तरह नवांश लग्न कुम्भ, प्राप्त हुआ है।

2. चन्द्र स्पष्ट $4^5-18^0-26'-1''$ है। सारणी में सिंह राशि देखी। षष्ठवां नवांश $16^0-40'$ से $20^0-0'$ तक है। इसके नीचे तथा सिंह राशि के सामने दाएँ(5) अर्थात् कन्य राशि है अतः चन्द्र को कन्या में लिखा।

3. सूर्य स्पष्ट $0^5-1^0-40'-44''$ है। मेष राशि देखी है। मेष राशि के आते हैं। इस तरह मेष राशि देखी। मेष राशि के अंश कला पहले नवांश 0–0 से 3–20 के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह मेष राशि के सामने पहले नवांश के नीचे (0) अर्थात् मेष लिखा है। अतः सूर्य को मेष में लिखा।

4. बुध स्पष्ट $11^5-9^0-32'-0''$ पर है। मीन राशि सारणी में देखी। मीन राशि के अंश कला तीसरे नवमांश के अन्तर्गत आते हैं। मीन राशि के सामने तीसरे नवांश के नीचे(5) कन्या राशि है। अतः बुध को कन्या राशि में लिखा गया।

5. शुक्र स्पष्ट $11^5-16^0-32'-36''$ है। मीन राशि देखी। सारणी में मीन राशि के अंश कला पांचवें नवमांश के अन्तर्गत आते हैं। अतः मीन राशि के सामने दाएं पांचवें नवमांश् के नीचे (7) वृश्चिक राशि है, अतः शुक्र को वृश्चिक राशि में लिखा गया।

6. मंगल स्पष्ट $0^5-22^0-57'-3''$ है। मेष राशि को देखा। मेष राशि के अंश कला सातवें नवमांश के अन्तर्गत आते हैं। मेष राशि के सामने दाएं सातवें नवमांश के नीचे (6) तुला राशि है अतः मंगल को तुला राशि में अंकित किया गया।

7. गुरु के स्पष्ट राशि अंश $0^5-18^0-35'-3''$ हैं। मेष राशि देखी। मेष राशि के अंश कला षष्ठवें नवमांश के अन्तर्गत आते हैं। मेष राशि के सामने दाएं ओर षष्ठवें नवांश के नीचे (5) कन्या राशि है। इस तरह गुरु को कन्या राशि में लिख दिया।

8. शनि के स्पष्ट राश्यंश $0^5-23^0-19'-56''$ हैं। सारणी में मेष राशि देखी तो पता चला यह राशि अंश सातवें नवमांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह मेष राशि के सामने और सातवें नवमांश के नीचे (6) तुला राशि लिखा है अतः शनि को तुला राशि में लिखा जाएगा।

9. राहू स्पष्ट $3^5-5^0-38'-44''$ हैं। कर्क राशि देखी। कर्क राशि के हमारे राश्यंश अर्थात् अंश कला दूसरे नवमांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह कर्क राशि के सामने दाएं और दूसरे नवमांश के नीचे (4) अर्थात् सिंह राशि है। अतः राहू को सिंह राशि में अंकित किया।

10. केतू के स्पष्ट राशि अंश $9^5-5^0-38'-44''$ हैं। सारणी में मकर राशि देखी। हमारे मकर राशि के अंश कला दूसरे नवमांश के अन्तर्गत आते है। मकर राशि के सामने दूसरे नवमांश के नीचे (10) कुम्भ राशि लिखी है। अतः केतू कुम्भ राशि में लिखा दिया गया।

इस तरह लग्न का लग्न नवमांश व ग्रहों का नवमांश प्राप्त करके नवांश कुण्डली बना दी।

नवांश कुण्डली
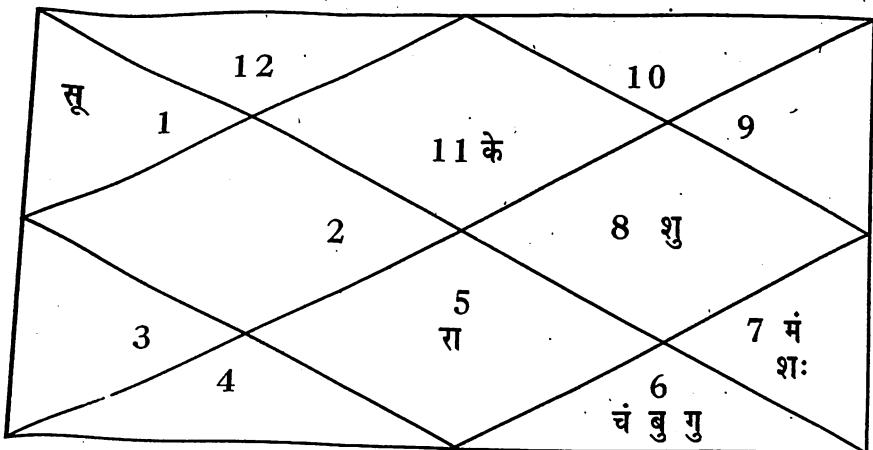
आमतौर पर फलकथन में यह कहा जाता है कि शनि, शुक्र के नवमांश में है। यह इस लिए कि शनि जिस राशि में नवांश राशि में होता है उसके स्वामी ग्रह का नवांश कहा जाता है। जैसे कुण्डली में शनि तुला राशि में है। अब तुला राशि का स्वामी शुक्र है तो यह कहा जाएगा कि शनि शुक्र के नवमांश में है। ऐसे जानकर जन्म कुण्डली व नवमांश कुण्डली पर से फल विचारा जाता है। इस लिए यह जरूरी है कि आपको पता हो कि किस राशि में क्रमानुसार कौनसे ग्रह का नवमांश आता है। आपको इसे कण्ठस्थ कर लेना चाहिए।

1. मेष सिंह धन राशि का नवांश मेष से अर्थात् शुरू होकर मंगल शुक्र बुध चन्द्र सूर्य बुध शुक्र मंगल गुरु पर समाप्त होता है। यदि आप तुरन्त जानना चाहते हैं कि किस राशि में पहले कौन नवांश उदय होता है तो राशियों की दिशाएं ध्यान में रखें। जिस राशि की जो दिशा होती है व उसका जो भाव है स्मरण रखने पर नवांश आरम्भ किस राशि का होगा तुरन्त पता चल जाता है। जैसे

1–5–9 राशियां पूर्व दिशा बताती हैं और एक राशि प्रथम भाव का गृह है। अतः इन राशियों का नवांश मेष से प्रारम्भ होगा जैसे पहले लिखा है।

2–6–10 राशियां दशम से सम्बन्धित है अतः 10 (दशम) शनि का गृह है इस तरह इन राशियों का नवांश मकर से आरम्भ होगा और राशि क्रमांक अनुसार अन्त तक चलेगा। राशि के स्वामी ग्रह का नवांश कहलाएगा। जैसे प्रारम्भ में शनि, शनि, गुरु, मंगल, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य और बुध।

3–7–11 राशियां पश्चिम दिशा की है। सप्तम पश्चिम दिशा सूचित करता है अतः सप्तम तुला का गृह है तो इन राशियों का नवांश तुला से आरम्भ होगा। इस तरह तुला का स्वामी शुक्र है अतः इन राशियों में कोई भी ग्रह, प्रथम शुक्र में होगा, फिर मंगल, गुरु, शनि, शनि, गुरु, मंगल, शुक्र, बुध में।

4–8–12 राशियां उतर की है और चतुर्थ भाव कर्क से सम्बन्धित होता है। अतः इनका नवांश कर्क से प्रारम्भ होगा। इस तरह कर्क → चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु, शनि शनि, गुरु का नवांश होगा। इसे तुरन्त नवांश जानने के लिए स्मरण रखना चाहिए।

अब प्राप्त नवांश की नवांश कुण्डली दी जाती है। यह वही कुण्डली है जो इस से पहले भी दी है।

नवांश कुण्डली
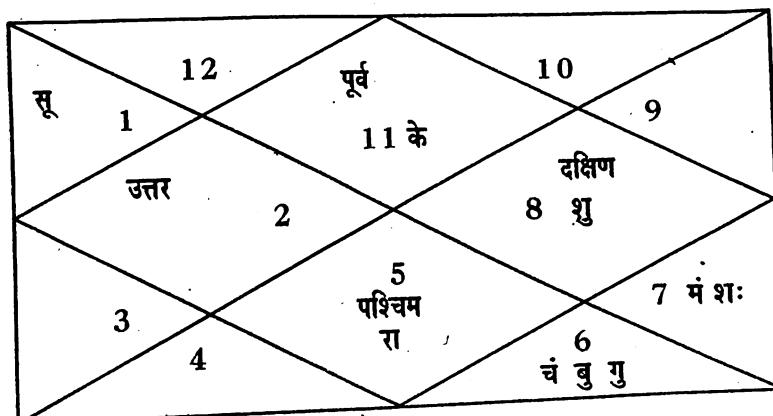
3. होरा विचार–एक राशि के 30 अंश होते हैं और प्रत्येक राशि के 15–15 अंश के दो खंड होते हैं। इस विचार में एक खंड को होरा माना गया है। अतः एक राशि में 15–15 के दो खंड होने से एक राशि में दो होरा होते है। होरा जानने के लिए लग्न स्पष्ट व ग्रह स्पष्ट की जरूरत पड़ती है। जो हमने पहले ही स्पष्ट कर रखें हैं। पाठकों को परामर्श दिया जाता है कि लग्न स्पष्ट अर्थत् भाव स्पष्ट व ग्रह स्पष्ट वर्ग जानने व किसी वर्ग की कुण्डली बनाने के लिए सामने रखें। यदि ऐसा करेंगे तो तुरन्त कुछ मिनटों में सभी वर्ग कुण्डलियां तैयार की जा सकती है।

होरा लग्न जानने के लिए भी जन्म लग्न स्पष्ट की आवश्यकता होती है और किसी ग्रह का होरा भी ग्रह स्पष्ट से जाना जाता है। प्रत्येक राशि में होरा इस प्रकार होता है।

1. विषम राशियों 1–3–5–7–9–11 में 15 अंश तक सूर्य का होरा होता है व 16 से 30 अंश तक चन्द्रमा का होरा होता है।

2. सम राशियों 2–4–6–8–10–12 में 15 अंश तक चन्द्र का होरा होता है और 16 से 30 अंश तक सूर्य का होरा होता है।

होरा स्पष्ट करने के लिए जैसे कहा गया है लग्न स्पष्ट देखना चाहिए। सर्वप्रथम जन्म लग्न देख कर होरा लग्न स्पष्ट करना चाहिए। इसके उपरान्त प्रत्येक ग्रह की होरा प्राप्त होरा कुण्डली में लिखनी चाहिए।

होरा का महत्व–होरा दो ग्रहों सूर्य तथा चन्द्रमा में ही मानी गयी है अतः होरा में सूर्य चन्द्र की ही सुख्य रुप में प्रधानता होती है और इन दो ग्रहों की राशियों में ही सभी ग्रहों की होरा देखी जाती है। जिस ग्रह की जिस ग्रह अर्थात सूर्य चन्द्र में होरा आती है वहां लिख दी जाती है। होरा चक्र का अपना महत्व है। होरा कुण्डली से आय के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इस तरह धन, जमीन, व्यापार, नौकरी की स्थिति, आय के साधन, भौतिक सुख सुवधिाएं, मकान तथा आकस्मिक धन प्राप्त होने का संकेत मिलता है। मानव जीवन में आय एवं व्यवसाय एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है अतः होरा कुण्डली जो प्रायः सूर्य चन्द्र अर्थात् कर्क, सिंह राशि में घूमता है तथा एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

होरा कुण्डली–होरा कुण्डली बनाने के लिए सर्वप्रथम होरा लग्न ज्ञात करना पड़ता है और फिर प्रत्येक ग्रह की होरा देख कर होरा कुण्डली में लिखनी होती है। निम्नलिखित होरा चक्र की सहायता से तुरन्त होरा कुण्डली बन जाती है तथा होरा स्पष्ट हो जाती है।

होरा ज्ञान सारणी

राशि	मेष		वृष		कर्क		मिथुन		सिंह		कन्या	
अंश	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक
होरा	5	4	4	5	5	4	4	5	5	4	4	5
राशि	तुला		वृश्चिक		धनु		मकर		कुम्भ		मीन	
अंश	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक	अंश 15 तक	अंश 30 तक
होरा	5	4	4	5	5	4	4	5	5	4	4	5

होरा जानने की विधि—1. सर्वप्रथम होरा लग्न जानना होगा। उदाहरण का लग्न स्पट $2^{5}-15^{0}-35'-0''$ है। इस तरह मिथुन राशि के अंश आदि देखे। लग्न स्पष्ट के अंश 15 से अधिक है अतः मिथुन राशि के दूसरे होरा अर्थात् कर्क चौथी राशि (4) प्राप्त हुई। अतः होरा लग्न कर्क हुआ।

2. चन्द्रमा के स्पष्ट राश्यंश $4^{5}-18^{0}-26'-1''$ हैं। सिंह राशि देखी तो पता चला यह अंश कर्क होरा अर्थात् चन्द्रमा होरा में है। इस तरह चन्द्रमा अपने होरा में है।

3. सूर्य स्पष्ट $0^{5}-1^{0}-40'-44''$ हैं। मेष राशि देखी तो यह राश्यंश प्रथम होरा सिंह राशि में आते हैं। सिंह का स्वामी सूर्य है। अतः सूर्य भी अपनी होरा में है।

4. बुध के स्पष्ट राश्यंश $11^{5}-9^{0}-32'-0''$ हैं। मीन राशि सारणी में देखी। वह अंश प्रथम होरा कर्क में आते हैं अतः बुध चन्द्र होरा में हुआ।

5. शुक्र स्पष्ट $11^{5}-16^{0}-32'-36''$ हैं। मीन राशि देखी। शुक्र के अंशादि दूसरे होरा सिंह राशि में आते हैं। अतः शुक्र सूर्य होरा में हुआ।

6. मंगल स्पष्ट $0^{5}-22^{0}-57'-3''$ है। मेष राशि देखी। मंगल के अंशादि दूसरी होरा कर्क के अन्तर्गत आते हैं अतः मंगल चंद्र की होरा में हुआ।

7. गुरु के स्पष्ट राश्यंश $0^{s}-18^{0}-35'-3''$ हैं। मेष राशि सारणी में देखी। गुरु के अंशादि दूसरी होरा कर्क राशिमें आते अतः गुरू चन्द्र की होरा मे हुआ।

8. शनि स्पष्ट $0^{s}-23^{0}-19'-56''$ है। मेष राशि देखी। शनि के राश्यंश दूसरी होरा कर्क में आते हैं, अतः शनि चन्द्र होरा में हुआ।

9. राहू स्पष्ट $3^{s}-5^{0}-38'-44''$ है। कर्क राशि देखी। राहू के अंशादि प्रथम होरा कर्क राशि में आते हैं अतः राहू चन्द्र होरा में हुआ।

10. केतू स्पष्ट $9^{s}-5^{0}-38'-44''$ हैं। मकर राशि देखी। केतू के अंशादि प्रथम होरा कर्क में आते है अतः केतू चन्द्र होरा में हुआ।

होरा लग्न एवं प्रत्येक ग्रह का होरा प्राप्त कर लिया है। लग्न व ग्रह (4) चौथी राशि कर्क व पांचवी राशि (5) सिंह की होरा में ही होंगे इनके स्वामी ग्रह चन्द्र व सूर्य होते हैं। इस तरह प्रत्येक ग्रह चन्द्र व सूर्य की होरा में ही होगा क्योंकि होरा दो ही अर्थात् चन्द्र, सूर्य की होती है। जो होरा लग्न राशि प्राप्त हो उसकी संख्या लिखकर होरा कुण्डली दो गोल चक्र बना कर स्पष्ट कर दी जाती है।

होरा कुण्डली–दो गोल चक्र बनालें। यह सिंह एवं कर्क राशि का एक–एक चक्र होगा। जो भी लग्न अर्थात् होरा लग्न हो उसका गोल चक्र पहले बनाया जाता है। उसमें लग्न लिखकर, सभी ग्रह होरा अनुसार लिख दिये जाते हैं। उदाहरण जो ली गयी है इसकी होरा कुण्डली इस तरह होगी।

होरा कुण्डली
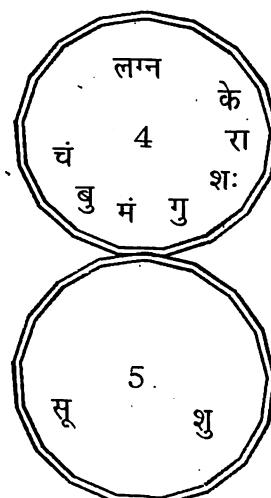
4. **सप्तांश**—सप्तांश शब्द स्वयं ही अपने अर्थ प्रगट करता है। एक राशि के जब सात खंड किए जाते हैं तो वह सप्तांश कहलाता है। जो ग्रह जिस खंड में होता है वह ग्रह उसी सप्तांश राशि में माना जाता है। सप्तांश जानने के लिए भी लग्न स्पष्ट व ग्रह स्पष्ट की जरूरत पड़ती है। इस में भी ग्रह की सूक्ष्म स्थिति का वास्तविक ज्ञान होता है।

महत्व—सप्तांश से सन्तान से सम्बन्धित सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त की जाती है। लड़के, लड़कीयों, पुत्र, पुत्रियों की तहदाद, शादी, शिक्षा आदि का पता चलता है। इस तरह सन्तान के सम्बन्ध में किसी तरह की भी जानकारी प्राप्त करने के लिए सप्तांश को देखा जाता है।

सप्तांश कुण्डली—सप्तांश लग्न सर्वप्रथम जाना जाता है और उसके उपरान्त प्रत्येक ग्रह की सप्तांश स्थिति ज्ञात करके सप्तांश कुण्डली बनाई जाती है। इसके लिए सप्तांश ज्ञान सारणी की सहायता ली जाती है, इस लिए यहां सप्तांश बोधक सारणी दी जा रही है। इस की सहायता से तुरन्त सप्तांश कुण्डली बना ली जाती है।

सप्तांश सारणी

सप्तांश	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवां	षष्ठवां	सातवां
अं क बि राशि	4-17-8 तक	8-34-17 तक	12-51-25 तक	17-8-34 तक	21-25-42 तक	25-52-51 तक	30-0-0 तक
मेष	0	1	2	3	4	5	6
वृष	7	8	9	10	11	0	1
मिथुन	2	3	4	5	6	7	8
कर्क	9	10	11	0	1	2	3
सिंह	4	5	6	7	8	9	10
कन्या	11	0	1	2	3	4	5
तुला	6	7	8	9	10	11	0
वृश्चिक	1	2	3	4	5	6	7
धन	8	9	10	11	0	1	2
मकर	3	4	5	6	7	8	9
कुम्भ	10	11	0	1	2	3	4
मीन	5	6	7	8	9	10	11

सप्तांश जानने की विधि—सप्तांश में सर्वप्रथम सप्तांश लग्न जानना होता है। लग्न जानने के उपरान्त प्रत्येक ग्रह का सप्तांश जाना जाता है तथा इसके पश्चात् सप्तांश कुण्डली बनाई जाती है।

1. पूर्व उदाहरण का लग्न स्पष्ट $2^5-15^0-35'-0''$ हैं। सप्तांश सारणी में मिथुन राशि देखी। तीसरा सप्तांश 12 अंश 51 कला 25 बिकला तक है। अपनी उदाहरण के मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला 0 बिकल है। इस तरह वह चौथा सप्तांश में पड़ते हैं। मिथुन राशि के सामने चतुर्थ सप्तांश के नीचे 5 संख्या प्राप्त हुई, 5 राशि गत अथवा कन्या राशि हुई। इस तरह सप्तांश लग्न कन्या हुआ।

2. चन्द्रमा स्पष्ट $4^5-18^0-26'-1''$ हैं। सिंह राशि देखी सिंह राशि के ये अंशादि पांचवां सप्तांश के अन्तर्गत आते हैं। सिंह राशि के सामने पांचवें सप्तांश के नीचे(8 राशि) अर्थात् धनु राशि प्राप्त हुई। अतः चन्द्रमा धन के सप्तांश में था।

3. सूर्य स्पट $0^5-1^0-40'-44''$ है। मेष राशि के सामने दाएं प्रथम सप्तांश $4^0-17'-8''$ तक है। अतः सूर्य पहले सप्तांश की राशि (0) मेष में है। इस तरह सूर्य मेष के सप्तांश में हुआ।

4. बुध स्पष्ट $11^5-9^0-32'-0''$ है। मीन राशि देखी। मीन राशि के अंशादि तीसरे सप्तांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह मीन राशि के सामने दाएं और तीसरे सप्तांश के नीचे 7 राशि गत अर्थात् वृश्चिक राशि है। अतः बुध वृश्चिक राशि में हुआ।

5. शुक्र स्पष्ट $11^5-16^0-32'-0''$ है। इस तरह शुक्र मीन के 16 अंस 32 कला 36 निकला पर चौथा सप्तांश के अन्तर्गत माना है। अतः शुक्र 8 राशिगत अर्थात् धन राशि में हुआ।

6. मंगल स्पष्ट $0^5-22^0-57'-3''$ है। इस तरह मंगल मेष राशि के 22 अंश 57 कला 3 बिकला है और यह अंशादि षष्ठवें सप्तांश के अन्तर्गत आते हैं। मेष के सामने षष्ठवें सप्तांश के नीचे 5 राशि गत अर्थात कन्या प्राप्त हुई। अतः मंगल, कन्या में है।

7. गुरु स्पष्ट $0^5-18^0-35''-3''$है। गुरु मेंष के $18^0-35'-3''$ अंशादि पांचवें सप्तांश के अन्तर्गत आते हैं। अतः मेष राशि मे सामने पांचवें सप्तांश के नीचे 4 राशिगत अर्थात् सिंह राशि हुई। अतः गुरू सिंह सप्तांश में है।

8. शनि स्पष्ट $0^5-23^0-19'-56''$ है। शनि के वह राश्यंश षष्ठवें सप्तांश में आते हैं। अतः मेष राशि के सामने षष्ठवें सप्तांश के नीचे 5 राशि गत अर्थत् कन्या राशि हुई। अतः शनि, कन्या में हैं।

9. राहु स्पष्ट कर्क के $5^0-38^0-44''$ पर है। यह राश्यंश दूसरे सप्तांश में आते हैं। इस तरह कर्क के सामने दूसरे सप्तांश के नीचे 10 राशि गत कुम्भ राशि हुई। अतः राहु कुम्भ में हुआ।

10. केतु स्पष्ट मकर के 5°–38'–44" पर है। यह अंशादि दूसरे सप्तांश में आते हैं। अतः मकर राशि के सामने दूसरे सप्तांश के नीचे 4 राशि गति सिंह राशि हुई। अतः केतु सिंह मे हुआ।

सप्तांश लग्न प्राप्त कर लिया है और प्रत्येक ग्रह की सप्तांश स्थिति निश्चित हुई, अब सप्तांश कुण्डली बनाई जाएगी।

सप्तांश कुण्डली
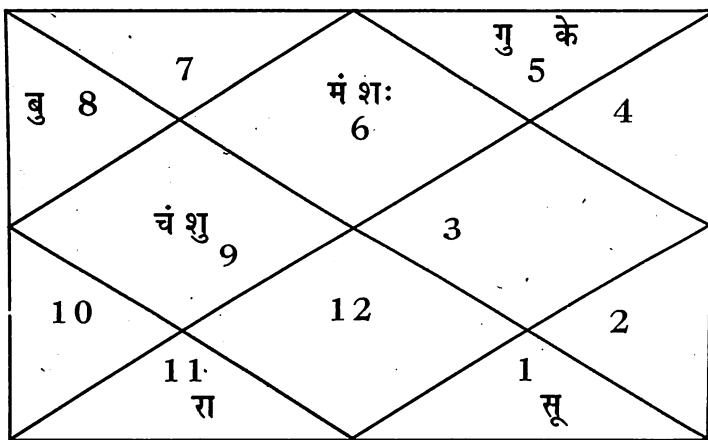
5. **द्रेष्काण**–एक राशि में तीन द्रेष्काण होते है और एक द्रेष्काण 10–10 अंश का होता है क्योंकि राशि 30 अंश की होती है। द्रेष्काण जानने के लिए भी लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पट की जरूरत पड़ती है, अतः यह अपने सामने रखने चाहिए। हर एक राशि का प्रथम द्रेष्काण उसकी अपनी राशि का होता है तथा दूसरा और तीसरा द्रेष्काण क्रमशः अपनी राशि से पांचवीं और नवम राशि का होता है। इस तरह ऐसे द्रेष्कोण को त्रिकोलेश भी कहा जाता है। पाश्चात्य पद्धति डेक्न अथवा राशि के 10–10 अंश के खंड भी इसी का स्वरुप है।

द्रेष्काण का महत्व–द्रेष्काण कुण्डली से भाई बहन से सम्बन्धित सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है। भाई, बहिनों की तहदाद, समृद्धि, स्वभाव, पारस्परिक सम्बन्ध तथा भाईयों का सुख का पता चलता है। यह कुण्डली भी जन्मपत्र में प्रायः दी होती है।

द्रेष्काण जानने की विधिः– जैसे पहले बताया गया है, द्रेष्काण जानने के लिए लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट सामने रखने चाहिए। द्रेष्काण ज्ञान सारणी की सहायता से सर्वप्रथम द्रेष्काण लग्न निकालना चाहिए इसके उपरान्त प्रत्येक ग्रह का अलग–अलग द्रेष्काण जानकर द्रेष्काण कुण्डली बना लेंनी चाहिए।

द्रेष्काण ज्ञान सारणी

द्रेष्काण	पहला	दूसरा	तीसरा
अंशादि → राशि	0–10 अंश	11–20 अंश	21 से 30 अंश
मेष	0	4	8
वृष	1	5	9
मिथुन	2	6	10
कर्क	3	7	11
सिंह	4	8	0
कन्या	5	9	1
तुला	6	10	2
वृश्चिक	7	11	3
धन	8	0	4
मकर	9	1	5
कुम्भ	10	2	6
मीन	11	3	7

द्रेष्काण ज्ञान सारणी की सहायता से द्रेष्काण कुण्डली बनाएंगे।

द्रेष्काण कुण्ड़ली–द्रेष्काण कुण्डली बनाने के लिए सर्पप्रथम द्रेष्काण लग्न जानना पड़ता है। उसके पश्चात् अलग–अलग ग्रह के स्पष्ट राश्यंश लेकर अलग–अलग ग्रह की द्रेष्काण राशि जानी जाती है तथा इसके पश्चात् द्रेष्काण कुण्डली मे लिखा दिया जाता है।

1. पूर्व उदाहरण का लग्न स्पष्ट मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला 0 बिकला पर है। यह राश्यंस द्रेष्काण ज्ञान सारणी में मिथुन राशि के सामने दूसरे द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। दूसरे द्रेष्काण के नीचे मिथुन राशि के सामने 6 राशिगत अर्थात् तुला राशि है। अतः द्रेष्काण लग्न तुला हुआ।

2. चन्द्र सिंह राशि के 18°-26'-1" पर है। यह राश्यंश सारणी में सिंह राशि के सामने दूसरे द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। दूसरे द्रेष्काण के नीचे और सिंह राशि के सामने संख्या 8 है, अत चन्द्रमा धन में हुआ।

3. सूर्य मेष राशि के 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर है। यह राश्यंश सारणी में मेष राशि के सामने पहले द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। पहले द्रेष्काण के नीचे और मेष राशि के सामने दाएं 0 संख्या है अतः सूर्य मेष में हुआ।

4. बुध मीन के 9°-32"-0" पर है। यह राश्यंश सारणी के पहले द्रेष्काण और मेष राशि के दाएं ओर है। पहले द्रेष्काण के नीचे और मीन राशि के सामने दाएं 11 संख्या है अतः बुध मीन में हुआ।

5. शुक्र मीन राशि के 16°-32'-36" पर है। यह राश्यंश सारणी में मीन राशि के सामने दूसरे द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। दूसरे द्रेष्काण के नीचे और मीन राशि के सामने दाएं संख्या तीन है, अतः शुक्र कर्क में हुआ।

6. मंगल मेष के 22°-57'-3" पर है। यह राश्यंश सारणी में मेष राशि के सामने दाएं तीसरे द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। तीसरे द्रेष्काण के नीचे और मेष राशि के दाएं संख्या 8 है। अतः मंगल धन में है।

7. गुरु मेष के 18°-35'-3" पर है। यह राश्यंश सारणी में मेष राशि के सामने दाएं दूसरे द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। दूसरे द्रेष्काण के नीचे और मेष राशि के दाएं संख्या 4 है अर्थात् सिंह राशि में गुरु हुआ।

8. शनि मेष राशि के 23°-19'-56" पर है। यह राश्यंश सारणी में मेष राशि के सामने दाएं तीसरे द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। तीसरे द्रेष्काण के नीचे और मेष राशि के दाएं संख्या 8 है अतः शनि धन में हुआ।

9. राहू कर्क राशि के 5°-38'-44" पर है। यह राश्यंश द्रेष्काण सारणी में कर्क राशि के दाएं पहले द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। पहले द्रेष्काण के नीचे और कर्क राशि के दाएं संख्या तीन है। अतः राहू कर्क राशि में हुआ।

10 केतू मकर के 5°-38'-44" पर है। यह राश्यंश द्रेष्काण सारणी में मकर राशि के दाएं पहले द्रेष्काण के अन्तर्गत आते हैं। पहले द्रेष्काण के नीचे और मकर राशि के दाएं संख्या 9 हैं अतः केतू मकर राशि में हुआ।

द्रेष्काण लग्न प्राप्त कर लिया है और प्रत्येक ग्रह की द्रेष्काण

स्थिति भी जान ली गई है। अब जो जानकारी प्राप्त की है उसी के आधार पर द्रेष्काण कुण्डली बनाई जाती है।

अथ द्रेष्काण चक्र मिदम्
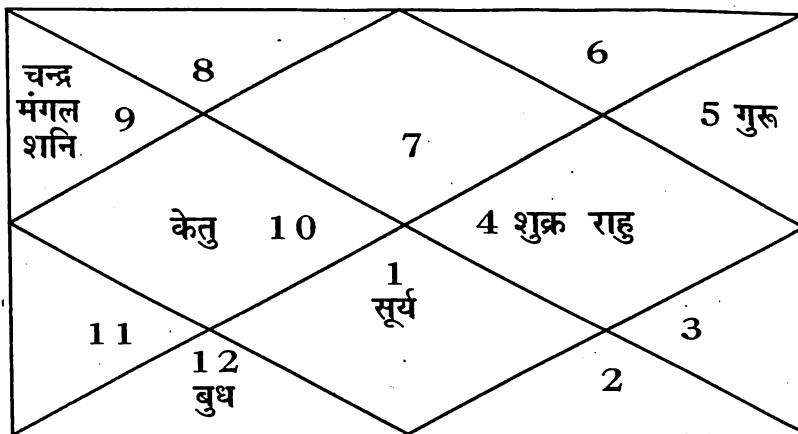
6. **द्वादशांश**—एक राशि 30 अंश की होती है। द्वादशांश कुण्डली से लग्न एवं प्रत्येक ग्रह की अति सूक्ष्म स्थिति का ज्ञान होता है क्योंकि इसमें एक राशि को $2\frac{1}{2}-2\frac{1}{2}$ अंश के खंडों में बांटा जाता है। अतः द्वादशांश में प्रत्येक राशि के $2\frac{1}{2}-2\frac{1}{2}$ अंश के बारह खंड होते हैं। प्रत्येक राशि में अपनी ही राशि से द्वादशांश का आरम्भ होकर राशि क्रमानुसार चलता है।

द्वादशांश का महत्व—द्वादशांश कुण्डली से माता पिता से सम्बन्धित सभी प्रकार का विचार होता है। माता, पिता का सुख, लाभ तथा पैतृक सम्पत्ति आदि की जानकारी द्वादशांश कुण्डली से प्राप्त की जाती है।

द्वादशांश जानने की विधि—द्वादशांश जानने के लिए जन्म लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट की आवश्यकता होती है। यह हमने पहले स्पष्ट कर रखें हैं। यहां द्वादशांश ज्ञान सारणी दी जा रही है, इसकी सहायता से तुरन्त लग्न एवं प्रत्येक ग्रह द्वादशांश जाना जा सकता है। पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि प्रत्येक राशि में अपनी ही राशि से कुण्डली जानने की विधि भी पूर्व विधियों के समान है। द्वादशांश जानने के लिए यहां द्वादशांश जान सारणी दी जा रही है।

द्वादशांश ज्ञान सारणी

द्वादशांश	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्टम	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम	एकादश	द्वादश
अंशादि	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क
राशि ↓	2–30 तक	4–0 तक	7–30 तक	10–0 तक	12–30 तक	15–0 तक	17–30 तक	20–0 तक	22–30 तक	25–0 तक	27–30 तक	30–0 तक
मेष	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
वृष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0
मिथुन	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1
कर्क	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2
सिंह	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3
कन्या	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4
तुला	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5
वृश्चिक	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6
धन	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7
मकर	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8
कुम्भ	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
मीन	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

द्वादशांश कुण्डली–द्वादशांश कुण्डली बनाने के लिए सर्वप्रथम द्वादशांश लग्न जाना जाता है। इसके पश्चात् प्रत्येक ग्रह का द्वादशांश ज्ञात करके द्वादशांश कुण्डली में जिस राशि के द्वादशांश में होता है, लिख दिया जाता है, इस तरह द्वादशांश कुण्डली फलकथन के तैयार हो जाती है। द्वादशांश कुण्डली बनाने के लिए द्वादशांश लग्न एवं प्रत्येक ग्रह का द्वादशांश सारणी की सहायता से इस तरह स्पष्ट होगा।

1. हमारा लग्न स्पष्ट मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला 0 बिकला पर है। मिथुन राशि के यह राश्यंश सप्तम द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं। अतः सप्तम द्वादशांश के नीचे और मिथुन राशि के दाएं और 8 संख्या प्राप्त हुई अतः द्वादशांश लग्न धन हुआ।

2. चन्द्र स्पष्ट सिंह राशि के 18 अंश 26 कला 1 बिकला पर है। सिंह राशि के यह राश्यंश अष्टम द्वादशांश के अन्तर्गत आते है। अतः अष्टम द्वादशांश के नीचे और सिंह राशि के दाईं और 11 संख्या प्राप्त हुई। अतः चन्द्र मीन राशि के द्वादशांश में हुआ।

3. सूर्य मेष राशि के 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर है। मेष राशि के ये राश्यंश प्रथम द्वाद्शांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह प्रथम द्वादशांश के नीचे और मेष राशि की दाई और 0 संख्या मिली। अतः सूर्य मेष के द्वादशांश में हुआ।

4. बुध स्पष्ट मीन राशि के 9 अंश 32 कला 0 बिकला पर है। मीन राशि के ये राश्यंश चतुर्थ द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह मीन राशि की दाई ओर ओर चतुर्थ द्वादशांश के नीचे संख्या दो है। अतः बुध मिथुन राशि में हुआ।

5. शुक्र स्पष्ट मीन राशि के 16 अंश 32 कला 36 बिकला पर है। मीन राशि के ये राश्यंश सप्तम द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह सप्तम द्वादशांश के नीचे और मीन राशि के दाई ओर 5 संख्या है अतः शुक्र कन्या राशि में हुआ।

6. मंगल स्पष्ट मेष राशि के 22 अंश 57 कला 3 बिकला पर है। ये राश्यंश दशम द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह मेष राशि की दाई ओर और दशम द्वादशांश के नीचे 9 संख्या है। अतः मंगल मकर राशि में हुआ।

7. गुरु स्पष्ट मेष राशि के 18 अंश 35 कला 3 बिकला पर है। मेष राशि के ये राश्यंश अष्टम द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस लिए अष्टम द्वादशांश के नीचे और मेष राशि के सामने दाई ओर 7 संख्या है। अतः गुरु वृश्चिक राशि में हुआ।

8. शनि स्पष्ट मेष राशि के 23 अंश 19 कला 56 बिकला पर है। ये मेष राशि के अंशादि दशम द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं।

इसलिए दशम द्वादशांश के नीचे और मेष राशि के दाई ओर 9 संख्या मिली अतः शनि मकर राशि में लिखेंगे।

9. राहू स्पष्ट कर्क राशि 5 अंश 38 कला 44 बिकला पर है कर्क राशि के ये राश्यंश तृतीय द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस लिए तृतीय द्वादशांश के नीचे और कर्क राशि के सामने दाई ओर 5 संख्या मिली अतः राहू कन्या राशि में हुआ।

10. केतू स्पष्ट मकर राशि के 5 अंश 38 कला 44 बिकला पर है। मकर राशि के ये राश्यंश तृतीय द्वादशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस लिए तृतीय द्वादशांश के नीचे और मकर राशि के सामने दाई ओर 11 संख्या मिली। अतः केतू मीन राशि के द्वादशांश में हुआ।

द्वादशांश लग्न प्राप्त कर लिया गया है और प्रत्येक ग्रह की द्वादशांश स्थिति भी जान ली गई है। अब जो जानकारी प्राप्त की है उसके आधार पर द्वादशांश कुण्डली बनाई जाती है।

अथ द्वादशांश चक्र मिदम्
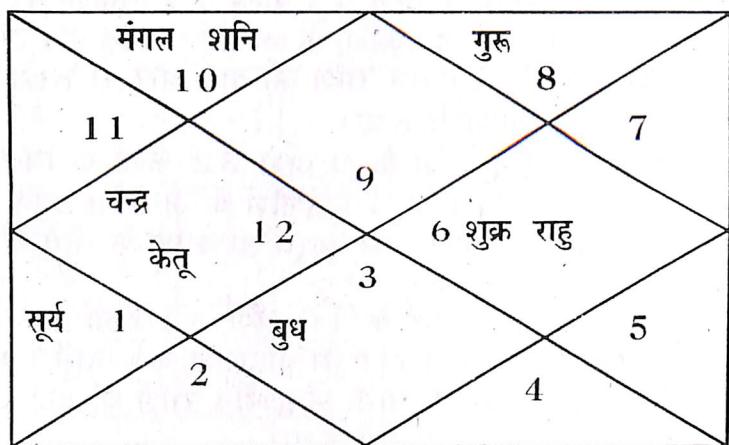
7. त्रिशांश—एक राशि 30 अंश की होती है और त्रिशांश में प्रत्येक राशि के पांच खंड होती है अर्थात् प्रत्येक राशि में 5 पांच त्रिशांश होते हैं परन्तु राशि के अंशों का खंड विभाजन विषम व सम राशियों में अलग–अलग होता है और प्रत्येक खंड के अंश भी समान नहीं होते। जैसे विषम राशियों अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, धन, कुम्भ में प्रथम त्रिशांश 0 अंश से 5 अंश तक सदैव मंगल का होता है। द्वितीया त्रिशांश 5 अंश से 10 अंश तक शनि का होता है, तीसरा 10 से अधिक 18 अंश तक गुरू का, चतुर्थ 18 से 25 तक बुध का और पंचम त्रिशांश 25 से 30 अंश तक होता है इस तरह प्रत्येक विषम राशि के अंश अलग–अलग होते हैं और प्रत्येक खंड का मान समान

नहीं होता। जैसे आपने देखा विषम राशियों का प्रथम खंड 5 अंश का दूसरा भी 5 अंश का, तीसरा 8 अंश का और चौथा 7 अंश का पांचवां 5 अंश का है। इस तरह 5 + 5 + 8 + 7 + 5 = 30 अंश एक राशि का विभाजन किया होता है। जब भी कोई ग्रह इन अंशों के अन्तर्गत आएगा तो वह ग्रह उसी त्रिशांश की राशि व त्रिशांश राशि के स्वामी ग्रह के त्रिशांश में माना जाएगा जैसे नवमांश, सप्तांश आदि ने पूर्व बताया गया है ।

सम राशियों जैसे वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन में 5 अंश तक शुक्र, 12 अंश तक बुध का, 20 अंश तक गुरु और 25 अंश तक शनि का व 30 अंश तक मंगल का त्रिशांक होता है। इस तरह सम राशियों का प्रत्येक खंड 5+7+8+5+5=30 अंश एक राशि विभाजन किया होता है। त्रिशांश जानने की विधि अन्य विधियों की तरह ही है।

त्रिशांश का महत्व—त्रिशांश से मुख्यत अपने कष्ट का विचार होता है। अतः त्रिशांश कुण्डली से जातक के कष्टों से सम्बन्धित सभी प्रकार की जानकारी मिलती है। बीमारी, स्वास्थ्य, चिन्ता, परेशानी, डर, भय, मृत्यु, सवारी, वाहन सुख, भविष्य, आने वाले जीवन तथा प्रसन्नता आदि का पता चलता है।

त्रिशांश जानने के लिए त्रिशांश ज्ञान सारणी दी जा रही है।

विषय राशि त्रिशांश ज्ञान सारणी (क)

त्रिशांश	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
अंशादि	अंश तक	अंश तक	अंश तक	अंश तक	अंश तक
राशि → ↓	5	10	18	25	30
मेष	0 मं	10 शः	8 गु	2 बु	6 शु
मिथुन	0 मं	10 शः	8 गु	2 बु	6 शु
सिंह	0 मं	10 शः	8 गु	2 बु	6 शु
तुला	0 मं	10 शः	8 गु	2 बु	6 शु
धनु	0 मं	10 शः	8 गु	2 बु	6 शु
कुम्भ	0 मं	10 शः	8 गु	2 बु	6 शु

सम राशि त्रिशांश ज्ञान सारणी (ख)

त्रिशांश	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम
अंशादि	अंश	अंश	अंश	अंश	अंश
राशि ↓ →	5 तक	12 तक	20 तक	25 तक	30 तक
वृष	1 शु	5 बु	11 गु	9 शः	7 मं
कर्क	1 शु	5 बु	11 गु	9 शः	7 मं
कन्या	1 शु	5 बु	11 गु	9 शः	7 मं
वृश्चिक	1 शु	5 बु	11 गु	9 शः	7 मं
मकर	1 शु	5 बु	11 गु	9 शः	7 मं
मीन	1 शु	5 बु	11 गु	9 शः	7 मं

यहां दी गई सारणी में किसी ग्रह की त्रिशांश अवस्थिति के साथ उस राशि का स्वामी ग्रह भी लिखा है। जैसे यदि कोई ग्रह वृष राशि के प्रथम त्रिशांश में होगा तो वह ग्रह संख्या एक अर्थात् वृष राशि में शुक्र (शु) के त्रिशांश में होगा। यदि कोई ग्रह कुम्भ राशि के तृतीय त्रिशांश में होगा तो वह ग्रह संख्या 8 अर्थात् धनु राशि में गुरू (गु) के त्रिशांश में होगा। यहां त्रिशांश के साथ ग्रह का नाम जैसे मंगल (मं) बुध (बु) गुरु (गु) शुक्र (शु) शनि (शः) आदि सुविधा के लिए लिख दिया गया है।

त्रिशांश जानने की विधि—त्रिशांश में सर्वप्रथम त्रिशांश लग्न जानना होता है। लग्न जानने के उपरान्त प्रत्येक ग्रह की त्रिशांश राशि एवं ग्रह जानना होता है। इसके पश्चात् त्रिशांश कुण्डली बनाई जाती है। त्रिशांश जानने के लिए भी लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट सामने रखने चाहिए।

1. हमारी उदाहरण का जन्म लग्न स्पट मिथुन राशि के 15 अंश 35 कला 0 बिकला पर है। मिथुन राशि, विषम राशि है अतः सारणी (क) देखी। मिथुन राशि के ये राश्यंश तृतीय त्रिशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस लिए तृतीय त्रिशांश के नीचे और मिथुन राशि के दाई ओर संया 8 और गु लिखा है। अर्थात् त्रिशांश लग्न धनु है और जन्म लग्न गुरु के त्रिशांश में है।

2. चन्द्र स्पष्ट राशि के 18 अंश 26 कला 1 बिकला पर है।

विषम राशि त्रिशांश सारणी देखी। सिंह राशि के ये राश्यंश चतुर्थ त्रिशांश के अन्तगर्त आते हैं। इस तरह चतुर्थ त्रिशांश में नीचे और सिंह राशि के दाईं ओर संख्या 2 बु लिखा है। अतः चन्द्रमा मिथुन राशि में है और बुध के त्रिशांश में है।

3. सूर्य स्पष्ट मेष के 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर है। मेष विषम राशि है अतः सारणी क देखी। मेष राशि के ये राश्यंश प्रथम त्रिशांश के नीचे और मेष राशि की दाई और संख्या 0 में लिखा है। अतः सूर्य मेष राशि में है और मंगल के त्रिशांश में है।

4.बुध स्पष्ट मीन राशि के 9 अंश 32 कला 0 बिकला पर है। मीन सम राशि है। अतः सारणी ख देखी। मीन राशि के ये राश्यंश द्वितीय त्रिशांश के अंतर्गत आते हैं। इस तरह द्वितीय त्रिशांश के नीचे और मीन राशि के दाईं ओर संख्या 5 बु प्राप्त हुई अतः बुध कन्या राशि बुध त्रिशांश में हुआ।

5. शुक्र मीन राशि के 16 अंश 32 कला 36 बिकला पर है। मीन राशि सम राशि है अतः सारणी ख देखी। मीन राशि के ये अंशादि तृतीय त्रिशांश में आते हैं। इस तरह तृतीय त्रिशांस के नीचे और मीन राशि के दाईं ओर संख्या 11 गु लिखा है। अतः शुक्र मीन राशि एवं गुरु त्रिशांश में हुआ।

6. मंगल स्पष्ट मेष राशि के 22 अंश 57 कला 3 बिकला पर है। मेष राशि विषम राशि है अतः सारणी क देखी मेष राशि के ये अंशादि चतुर्थ त्रिशांश में आते हैं। इस तरह चतुर्थ त्रिशांश के नीचे और मेष राशि के दाईं ओर संख्या 2 बु लिखा है अतः मंगल मिथुन राशि और बुध के त्रिशांश में है।

7. गुरु स्पष्ट मेष राशि के 18 अँश 35 कला 3 बिकला पर है। मेष राशि विषम राशि है अतः सारणी क देखी। मेष राशि के ये अंशादि चतुर्थ त्रिशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह चतुर्थ त्रिशांश के नीचे और मेष राशि के दाईं ओर संख्या 2 बु लिखा है अतः गुरु मिथुन राशि और बुध त्रिशांश में हुआ।

8. शनि स्पष्ट मेष राशि के 23 अंश 19 कला 56 बिकला पर है। मेष राशि विषम राशि है। अतः सारणी क देखी। मेष राशि के ये अंशादि चतुर्थ त्रिशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह चतुर्थ त्रिशांश के नीचे और मेष राशि की दाईं ओर संख्या 2 बु है। अतः शनि मिथुन राशि में और बुध त्रिशांश में हैं।

9. राहू स्पष्ट कर्क राशि के 5 अंश 38 कला 44 बिकला पर है। कर्क राशि सम राशि है अतः ख सारणी देखी। कर्क राशि के ये अंशादि द्वितीय त्रिशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह कर्क राशि की दाईं और द्वितीय त्रिशांश के नीचे 5 बु लिखा है। अतः राहू कन्या राशि और बुध के त्रिशांश में हुआ। 10 केतू स्पष्ट मकर राशि के 5

अंश 38 कला 44 बिकला पर है। मकर राशि सम राशि है। अतः सारणी ख देखी। मकर राशि की दाईं ओर और द्वितीय त्रिशांश के नीचे संख्या 5 बु लिखी है अतः केतू कन्या राशि और बुध त्रिशांश में हुआ क्योंकि केतू स्पष्ट के अंशादि द्वितीय त्रिशांश के अन्तर्गत आते हैं।

त्रिशांश लग्न स्पष्ट कर लिया गया है और प्रथक–प्रथक ग्रह की त्रिशांश राशि और वह किस त्रिशांश के ग्रह में हैं, की भी जानकारी प्राप्त करली है। अब जो यह जानकारी प्राप्त की है, उसके आधार पर त्रिशांश कुण्डली बनाई जाती है। त्रिशांश की स्थिति पर विचार करते समय विषम और सम राशि का ध्यान रखना चाहिए और उपयुक्त सारणी से त्रिशांश जानना चाहिए।

अथ त्रिशांश चक्र मिदम्
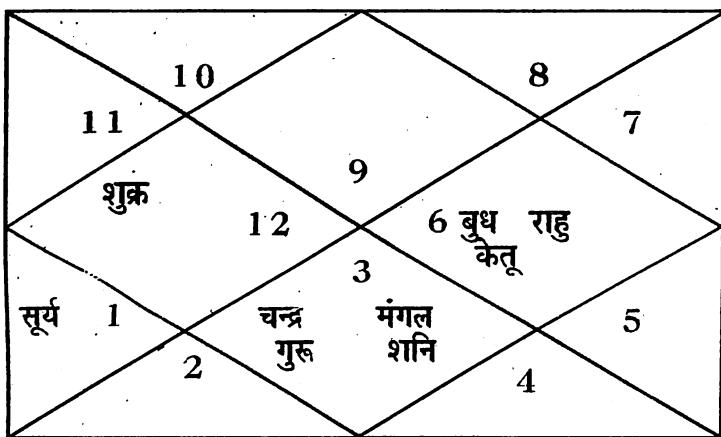
8. दशमांश—दशमांश में एक राशि के 10 खण्ड होते हैं। प्रत्येक खण्ड तीन–तीन अंश का होता है। एक राशि के इस तरह दश खण्ड होने से दशमांश कहलाता है। यहां भी विषम और सम राशि के अनुसार दशमांश जाना जाता है। विषम राशि में उसी राशि का दशमांश होता है और सम राशि में उसकी नौवीं राशि का दशमांश होता है।

दशमांश का महत्व—दशमांश का भी बड़ा महत्व है क्योंकि दशमांश से मान–सम्मान, यश, ख्याति, महानता, सामाजिक स्थिति और समाज में मान–सम्मान जाना जाता है। इस लिए कुण्डली में अर्थात् यह विचार दशमांश कुण्डली से विचार करना चाहिए।

दशमांश जानने की विधि—दशमांश यहां दी गई सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है।

दशमांश ज्ञान सारणी

दशमांश	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्टम	सप्तम	अष्टम	नवम	दशम
अंशादि	अंश	अंश	अंश	अंश	अंश	अंश	अंश	अंश	अंश	अंश
राशि ↓	3 तक	6 तक	9 तक	12 तक	15 तक	18 तक	21 तक	24 तक	27 तक	30 तक
मेष	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
वृष	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6
मिथुन	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
कर्क	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8
सिंह	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1
कन्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
तुला	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3
वृश्चिक	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0
धनु	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5
मकर	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2
कुम्भ	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7
मीन	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4

दशमांश कुण्डली–दशमांश कुण्डली बनाने के लिए सर्वप्रथम दशमांश लग्न जाना जाता है इसके पश्चात् प्रत्येक ग्रह का दशमांश ज्ञात करके दशमांश कुण्डली में जिस राशि के दशमांश में वह ग्रह होता है लिख दिया जाता है और इस दशमांश कुण्डली से विचार किया जाता है। जैसेः–

1. हमारा जन्म लग्न स्पष्ट मिथुन राशि 15 अंश 35 कला 0 बिकल पर है। यह मिथुन राशि के अंशादि षष्ठम दशमांश के अन्तर्गत आते है। इस तरह षष्ठम दशमांश के नीचे और मिथुन राशि की दाईं ओर अंक 7 है। अतः दशमांश लग्न वृश्चिक हुआ।

2. चन्द्र स्पष्ट 18 अंश 26 कला 1 बिकला पर है, अर्थात् चन्द्र सिंह राशि $18^0–26'–1"$ है। सिंह राशि के ये अंशादि सप्तम दशमांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह सप्तम दशमांश के नीचे और सिंह राशि के दाईं ओर संख्या 10 है, अतः चन्द्र कुम्भ राशि में है।

3. सूर्य स्पष्ट मेष राशि के 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर है। मेष राशि के ये अंशादि प्रथम दशमांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह प्रथम दशमांश के नीचे और मेष राशि के दाईं ओर संख्या 0 है। अतः सूर्य मेष राशि में हुआ।

4. बुध स्पष्ट मीन राशि के 9 अंश 32 कला 0 बिकला पर है। मीन राशि के ये अंशादि चतुर्थ दशमांश में आते हैं। इस तरह चतुर्थ दशमांश के नीचे और मीन राशि की दाईं ओर संख्या 10 है। अतः बुध कुम्भ राशि एवं शनि के दशमांश में हुआ।

5. शुक्र स्पष्ट मीन राशि के 16 अंश 32 कला 36 बिकला पर है। मीन राशि के ये राश्यंश षष्ठम दशमांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह षष्ठम दशमांश के नीचे और मीन राशि के दाईं ओर 0 संख्या है। अतः शुक्र मेष राशि में और मंगल के दशमांश में हुआ।

6. मंगल स्पष्ट मेष राशि के 22 अँश 57 कला 3 बिकला पर है। मेष राशि के ये अंशादि अष्टम दशमांश में आते हैं। इस तरह अष्टम दशमांश के नीचे और मेष राशि के दाईं ओर संख्या 7 है। अतः मंगल वृश्चिक राशि और मंगल के दशमांश में हुआ।

7. गुरु स्पष्ट मेष राशि के 18 अंश 35 कला 3 बिकला पर है। मेष राशि के ये अंशादि सप्तम दशमांश के अन्तर्गत आते है। इस तरह सप्तम दशमांश के नीचे और मेष राशि के ये अंशादि सप्तम दशामांश के नीचे और मेष राशि के दाईं ओर संख्या 6 लिखी है। अतः गुरु तुला राशि में और शुक्र के दशमांश में हुआ।

8. शनि स्पष्ट मेष राशि के 23 अंश 19 कला 56 बिकला र है। मेष राशि के ये अंशादि अष्टम दशमांश के अन्तगर्त आते हैं। इस तरह अष्टम दशमांश के नीचे और मेष राशि की दाईं ओर अंक 7 है। अतः शनि वृश्चिक राशि में हुआ।

9. राहू स्पष्ट के राशि के 5 अंश 38 कला 44 बिकला पर है। राहू के ये राश्यंश द्वितीय दशमांश मे आते हैं। इस तरह द्वितीय दशमांश की नीचे और कर्क राशि की दाईं और 0 संख्या मिली। अतः राहू मेष राशि में है और मंगल के दशमांश में है।

10. केतू स्पष्ट मकर राशि के 5 अंश 38 कला 44 बिकला पर है। केतू स्पष्ट के ये राश्यंश द्वितीय दशमांश के अन्तर्गत आते हैं। द्वितीय दशमांश के नीचे और मकर राशि के सामने दाईं और संख्या 6 लिखी है। अतः केतू तुला राशि के दशमांश और शुक्र दशमांश में हुआ माना गया।

दशमांश लग्न स्पष्ट कर लिया गया है और पृथक–पृथक ग्रह का दशमांश भी ज्ञात कर लिया है। अब जो जानकारी प्राप्त की है उसके आधार पर दशमांश कुण्डली बनाई जाती है।

अथ दशमांश चक्र मिदम्
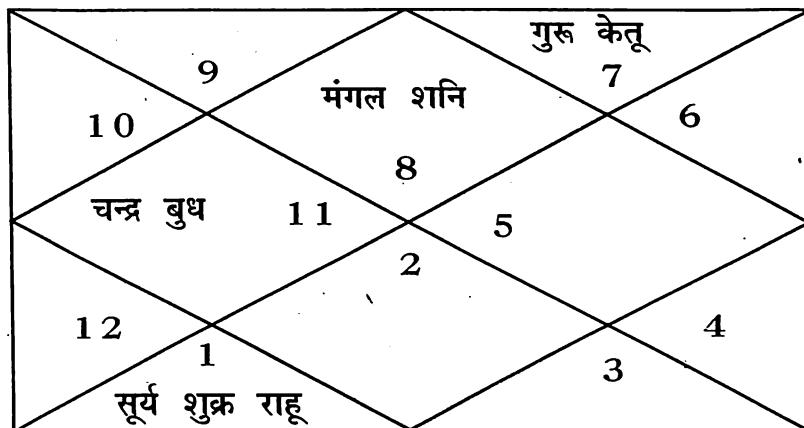
9. **षोडशांश**—षोड़शांश में एक राशि अर्थात् 30 अंश को 16 खण्डों में विभाजित किया होता है। इस तरह एक खण्ड 1 अंश 45 कला 30 बिकला का होता है। चर राशियों अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर में मेष राशि से, स्थिर राशियों अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ में सिंहादि से और द्विस्वभाव राशियों अर्थात् मिथुन, कन्या, धनु, मीन में धनु राशि से प्रथम षोड़शांश आरम्भ होता है।

षोडशांश का महत्व—षोडशांश में लग्न एवं ग्रह की अति सूक्ष्म अवस्था अथवा अवस्थिति होती है। षोडशांश से आकस्मिक लाभ, हानि, लॉटरी, जुआ, सटट्ा, लेन–देन, बन्धन एवं तस्करी आदि का विचार होता है अतः षोडशांश कुण्डली से इन बातों का विशेष तौर पर विचार करना चाहिए।

षोडशांश जानने की विधि—षोड़शांश जानने के लिए भी लग्न स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट की आवश्यकता होती है। अतः तथ्य सामने रखने चाहिए।

यहां षोडशांश जानने के लिए षोडशांश ज्ञान सारणी दी है। इसकी सहायता से आप तुरन्त षोडशांश कुण्डली बना सकते हैं। इसमें भी सर्वप्रथम लग्न अर्थत् षोडशांश लग्न जाना जाता है और इसके उपरान्त पृथक–पृथक ग्रह का षोडशांश ज्ञान कर कुण्डली बना ली जाती है। जैसे नवमांश, सप्तांश जाने गए हैं, ठीक उसी प्रकार षोडशांश भी जानना चाहिए।

षोडशांश-ज्ञान सारणी

षोडशांश	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	षष्ठम	सातवां	आठवां	नौवां	दशम	ग्यारहवां	बारहवां	तेरहवां	चौदवां	पन्द्रवां	सोलवां
अंशादि राशि ↓	1-52-30तक	3-45-0 तक	5-37-30तक	7-30-0तक	9-22-30तक	11-15-0तक	13-7-30तक	15-0-0तक	16-52-30तक	18-45-0तक	20-37-30तक	22-30 तक	24-22-30तक	26-15-0तक	28-7-30तक	30-0-0तक
मेष	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3
वृष	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7
मिथुन	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
कर्क	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3
सिंह	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7
कन्या	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
तुला	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3
वृश्चिक	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7
धनु	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
मकर	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3
कुम्भ	4	5	6	7	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7
मीन	8	9	10	11	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

षोडशांश कुण्डली–षोडशांश चक्र अथवा कुण्डली बनाने के लिए सर्वप्रथम षोडशांश लग्न जानना होता है। इसके पश्चात् पृथक–पृथक ग्रह का षोडशांश ज्ञात करके षोडशांश कुण्डली बना ली जाती है। जैसे–

1. उदाहरण का जन्म लग्न स्पष्ट मिथुन के 15 अंश 35 कला 0 बिकला पर है। मिथन राशि के ये राश्यंश षोडशांश सारणी में नवम षोडशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह नवम षोडशांश के नीचे और मिथुन राशि के सामने दाईं ओर संख्या 4 है। अतः हमारा षोडशांश लग्न सिंह हुआ। कुण्डली में लग्न सिंह लिखेंगे।

2. चन्द्र स्पष्ट सिंह राशि के 18 अंश 26 कला 1 बिकला पर है। सिंह राशि के ये अंशादि दशम षोडशाश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह दसम षोडशांश के नीचे और सिंह राशि की दाईं ओर संख्या 1 है। अतः चन्द्र वृष राशि और शुक्र के षोडशाश में हुआ।

3. सूर्य स्पष्ट मेष राशि के 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर है। सूर्य स्पष्ट के ये राशि अंशादि पहले षोडशांश के अन्तर्गत आते हैं। इस तरह पहले षोडशांश के नीचे और मेष राशि की दाईं ओर 0 संख्या लिखी है। अतः सूर्य मेष राशि और मंगल षोडशांश में हुआ।

सभी ग्रहों को इसी प्रकार लेकर षोड़शांश ज्ञात कर लेना चाहिए क्योंकि अब तक आप इस विधि एवं सारणी के वर्ग बनाने की विधि जान गए होंगे। इस तरह सभी ग्रहों का षोडशांश ज्ञात करके चक्र बना लेना चाहिए। षोडशांश कुण्डली अथवा चक्र इस तरह होगा।

अथ षोड़शांश चक्र मिदम्
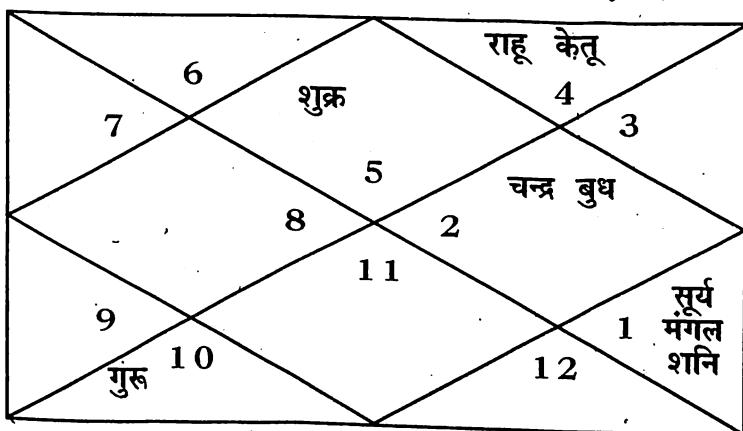
10. **षष्ट्यन्श**–षष्ट्यन्श में एक राशि के 30 अंशों को 60 खण्डों में विभाजन किया जाता है। इस तरह एक राशि का 60वां भाग षष्ट्यन्श होता है। इस तरह एक षष्ट्यन्श 30 कला का होता है। प्रत्येक षष्ट्यन्श अपनी ही राशि से आरम्भ होता है। षष्ट्यन्श बनाने

के लिए प्रायः सारणी होती है अतः सारणी की सहायता से षष्ट्यन्श चक्र जैसे पहले चक्र बनाए गए, बनाया जा सकता है।

षष्ट्यन्श का महत्व—षष्ट्यन्श चक्र अथवा कुण्डली से, बाधा, देव बाधा, भूत–प्रेत, बाधा, पितृ वाधा तथा सन्तिपात आदि का विचार होता है। मेरे विचार में यह कुण्डली अथवा चक्र आज के युग में इतना महत्व नहीं रखता। फिर भी यदि पाठक चाहें तो षष्ट्यन्श सारणी की सहायता से बड़ी आसानी से यह कुण्डली बना सकते हैं।

पिछले पृष्ठों में सभी वर्ग स्पष्ट कर दिए गए हैं। अतः यदि पाठक चाहें तो सप्तवर्गी व दशवर्गी जन्म पत्री कुछ मिनटों में बना सकते है। सप्तवर्गी जन्मपत्री में यह चक्र लेने चाहिए।

1. गृहम अथवा लग्न कुण्डली
2. होरा
3. द्रेष्काण
4. नवांश
5. द्वादशांश
6. त्रिशांश
7. सप्तांश

दशवर्गी जन्मपत्री में यह चक्र बनाने चाहिए।

1. गृह अथवा लग्न
2. होरा
3. द्रेष्काण
4. नवांश
5. द्वादशांश
6. त्रिशांश
7. सप्तांश
8. दशमांश
9. षोड़शांश
10. षष्ट्यन्श

आमतौर पर सप्तवर्गी जन्मपत्री ही बनाई जाती है। आज कल तो नवांश के अतिरिक्त अन्य चक्र बहुत कम वनाए जाते हैं। सभी तरह के चक्र एवं कुण्डलियां बनाने का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए। निरन्तर अभ्यास करने से ही पाठक इनको बनाने की विधि पूरी तरह समझ पाएंगे। अतः अभ्यास, जरा सा श्रम तथा पूरी लग्न से कुछ मिनटों में ही आप सप्तवर्गी जन्मपत्र बनाने के समर्थ हो जाएंगे।

सप्तवर्गी या दशवर्गी जन्पत्री में विशेष तौर पर ग्रह मैत्री का चक्र दिया होता है जो अति महत्वपूर्ण होता है। अतः अब ग्रह मैत्री पर विचार किया जाएगा। जन्मपत्री में ग्रह मैत्री चक्र अवश्य बनाना चाहिए। ग्रह मैत्री विचार से पहले सप्तवर्गी चक्र बनाया जा रहा है।

सप्तवर्गी चक्र

पारम्परिक विधि में जब जन्मपत्री का निर्माण किया जाता है, प्रायः वह सप्तवर्गी या दशवर्गी बनाई जाती है। इसी को ध्यान में रखते हुए सप्तवर्गी व दशवर्गी जन्म पत्री निर्माण का विस्तार से विवरण दिया गया है। जब सप्तवर्गी व दशवर्गी कुण्डलियां बन जाती हैं तो उन सभी के एक साथ अंकित करके सप्तवर्गी या दशवर्गी चक्र बनाया जाता है। यह चक्र अति महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस चक्र में तुरन्त एक साथ ही सब जानकारी उपलब्ध हो जाती है कि प्रत्येक ग्रह अलग–अलग वर्ग में कहां–कहां स्थित है। जो उदाहरण हम ने ली थी व जिसकी जन्मपत्री बनाई थी अब उस का सप्तवर्गी चक्र दिया जा रहा है।यह चक्र बनाना अति आसान है। सभी अलग–अलग वर्गों की जानकारी इस चक्र में अंकित कर देने से यह चक्र तैयार हो जाता है। जैसे गृहम अर्थात् जन्म कुण्डली में चन्द्र सिंह राशि में जो पांचवी राशि है, शुक्र बुध 12 वीं राशि अर्थात् मीन में, सूर्य, मंगल, गुरु, शनि मेष राशि अर्थात पहली राशि में है। अतः सप्तवर्गी एवं दशवर्गी चक्र में चन्द्र के नीचे 5 (सिंह राशि) शुक्र बुध के नीचे 12 (मीन राशि) और सूर्य, मंगल, गुरु, शनि के नीचे। (मेष राशि) अंकित कर दिए जाते हैं। इसी तरह प्रत्येक वर्ग अर्थात् नवांश होरा आदि का अंक अंकित किया जाता है और यह चक्र तैयार हो जाता है। पूर्व उदाहरण का सप्तवर्गी चक्र उस प्रकार होगा।

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शुक्र	गुरू	शनि	राहू
गृहम	1	5	1	12	12	1	1	4
होरा	5	4	4	4	5	4	4	4
द्रेष्काण	1	9	9	12	4	5	9	4
सप्तमांश	1	9	6	8	9	5	6	11
नवमांश	1	6	7	6	8	6	7	5
द्वादशांश	1	12	10	3	6	8	10	6
त्रिशांश	1	3	3	6	12	3	3	6

पिछले पृष्ठों में मेष राशि को 0 लिखा है। परन्तु यहां मेष के लिए 1, वृष के लिए 2 आदि अंक सुविधा के लिए दिए हैं। अतः इसका ध्यान रखना चाहिए। यदि चाहें तो आप मेष के लिए 0, वृष के लिए 1 भी लिख सकते हैं।

ग्रह मैत्री विचार

ग्रहों की भी प्रभावी मित्रता, शत्रुता होती है। मैत्री आदि का विचार अर्थात् प्रायः जन्म पत्रों में पंचधा मैत्री चक्रम् दिया होता है। दशवर्गों का विचार पहले किया जा चुका है और अब ग्रह मैत्री और पंचधा मैत्री बनाने की विधि पर विचार किया जाएगा।

ग्रहमैत्री–ग्रहों की भी परस्पर मित्रता तथा शत्रुता होती है। इसी लिए किसी की भी कुण्डली हों, ग्रहों की मैत्री का अवश्य विचार करना चाहिए क्योंकि ग्रह फलकथन का मूल स्त्रोत होते हैं। जैसे ग्रह अपने घर में या मित्र के घर में जब होता है तो बलवान होता है और जब शत्रु के क्षेत्र अथवा घर में होता है तो बलहीन हो जाता है। यह सब विचार करने के लिए पंचधा मैत्री चक्र बनाया जाता है।

मैत्री दो प्रकार की होती है। प्रथम नैसर्गिक मैत्री और दूसरी तात्कालिक मैत्री 1 नैसर्गिक मैत्री आम, सामान्य अथवा स्वाभाविक मैत्री होती है और तात्कालिक मैत्री का निर्णय, नैसर्गिक मैत्री व शत्रुता को लेकर जन्म कुण्डली के अनुसार करना होता है। तात्कालिक मैत्री जानने से पूर्व यह जानना जारुरी है कि सामान्य कौन ग्रह का कौन मित्र या शत्रु होता है। अतः सर्वप्रथम ये जानने के लिए नैसर्गिक मैत्री चक्र दिया जा रहा ताकि यह पता लग सके कि ग्रहों की सामान्य मैत्री कैसी है?

नैसर्गिक मैत्री–यहां जो नैसर्गिक मैत्री चक्र दिया है। उससे आप तुरन्त जान सकेंगे कि कौनसा ग्रह किसका मित्र और शत्रु है।

नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह का	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चन्द्र,मंगल, गुरू	शनि, शुक्र, राहू	बुध
चन्द्र	रवि, बुध	राहू	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध, राहू	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र, राहू	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि, राहू
शुक्र	बुध, शनि, राहू	सूर्य, चन्द्र	मंगल, गुरु
शनि	शुक्र, बुध, राहू	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
राहू	बुध, शुक्र, शनि	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु

पाठकों को चाहिए कि नैसर्गिक मैत्री चक्र में दी गई जानकारी को कष्ठस्थ कर लें। फलकथन के लिए भी यह जानकारी अनिवार्य है। यदि सामान्य ग्रह मैत्री ही ज्ञात नहीं होगी तो फलकथन अति कठिन हो हीगा। अतः यह जरुरी है कि इस जानकारी को कष्ठस्थ किया जाना चाहिए।

इस चक्र में सूर्य का चन्द्र, मंगल और गुरु मित्र है, अतः जब भी सूर्य चन्द्र, मंगल गुरु की राशि क्रमशः कर्क, मेष वृश्चिक, धन, मीन में से किसी राशि में सूर्य होगा तो यह कहा जाएगा कि सूर्य मित्रगृही है अर्थात् मित्रों के घर है। इसी तरह जब सूर्य, शनि, शुक्र की राशि क्रमशः मकर, कुम्भ, वृष और तुला में से किसी राशि में होगा तो कहेंगे सूर्य शत्रुगृही है अर्थात् शत्रु के घर में हैं। जब सूर्य बुध की किसी राशि मिथुन, कन्या में होगा तो सूर्य समगृही कहा जाएगा। इसी तरह ही सभी ग्रहों की मित्रता देखी जाती है। यह मैत्री सामान्य अर्थात् स्वाभाविक मैत्री है।

तात्कालिक मैत्री–जैसे पहले कहा गया है कि तात्कालिक मैत्री व शत्रुता का निर्णय किसी जातक की जन्म कुण्डली के अनुसार करना होता है क्योंकि ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री होते हुए भी परिस्थिति के अनुसार मैत्री में परिवर्तन हो जाता है, ऐसी परिस्थितिवश हुई मैत्री को तात्कालिक मैत्री कहा जाता है अर्थात् तत्कालिक अवस्था के अनुसार जो मैत्री हुई वह ही तत्कालिक मैत्री कहलाती है। क्योंकि यह विचार किसी जातक के लिए अथवा जातक की कुण्डली के अनुसार होता है अतः तात्कालिक ग्रहों का मैत्री विचार जातक माना जाता है।

इस तरह 2–3–4, 12–11–10 वें स्थान के ग्रह मित्र और 1–5–6–7–8–9 वें स्थान के ग्रह जन्म कुण्डली या किसी कुण्डली में कोई ग्रह यहां पर भी हो उस स्थान को छोड़ कर आगे के 3 स्थान और पीछे के 3 स्थानों में बैठे ग्रह इस ग्रह के तात्कालिक मित्र हो जाते हैं। बाकी स्थान में बैठे ग्रह उसके शत्रु हो जाते है। इस तरह किसी विशेष स्थान सेः–

मित्र–2–3–4–10–11–12 भावों के ग्रह।

शत्रु–1–5–6–7–8–9 वें भावों के ग्रह।

अब जो उदाहरण हमने ली थी उसका तात्कालिक मैत्री चक्र बनाएंगे। यह सदैव ध्यान रखें कि यह चक्र बनाने के लिए जन्म कुण्डली सामने रखनी चाहिए तभी तात्कालिक मैत्री चक्र सरलता से बनाया जा सकेगा। अतः पूर्व जन्म कुण्डली यहां दी जा रही है और उसका किस तरह मैत्री चक्र बनेगा, यहां बताया जाऐगा।
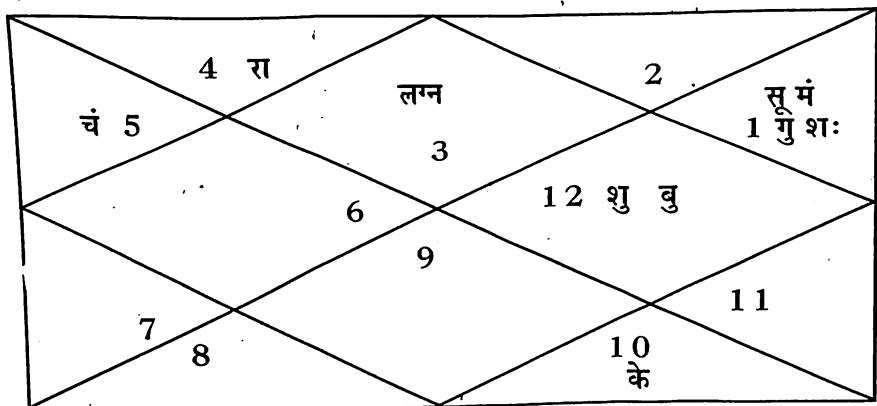
जन्म कुण्डली

उदाहरण की इस जन्म कुण्डली का मैत्री चक्र इस तरह बनेगा।

1. सर्वप्रथम सूर्य को लेते हैं। सूर्य से मंगल प्रथम है। अतः शत्रु हुआ। गुरु शनि भी प्रथम में है अतः शत्रु हुए। सूर्य से चन्द्र पंचम है अतः चन्द्र शत्रु हुआ। सूर्य से राहू चतुर्थ है अतः मित्र हुआ। सूर्य से शुक्र बुध बाहरवें है अतः मित्र हुए। केतू सूर्य के दशम में है अतः मित्र हुआ।

2. अब सूर्य की तरह चन्द्र को देखा। चन्द्र से केतू 6 वें हैं अतः चन्द्र का केतू शत्रु हुआ। चन्द्र से शु, बु अष्टम हैं अतः चन्द्र के शुक्र बुध शत्रु हुए। चन्द्र से सू.मं, गु, शनि दशम हैं अतः चन्द्र के मंगल, गुरु, शनि मित्र हुए। चन्द्र से राहू 12 वें है अतः चन्द्र का राहू मित्र हुआ।

3. मंगल से सूर्य, गुरु शनि, प्रथम हैं अतः मंगल के सूर्य गुरु, शनि शत्रु हुए। मंगल से राहू चतुर्थ है अतः मंगल का राहू मित्र हुआ। मंगल से चन्द्रमा पंचम है अतः मंगल का चन्द्र शत्रु हुआ। मंगल से केतू दशम है, अतः मंगल का केतु मित्र हुआ। मंगल से शुक्र बुध बारहवें हैं अतः मंगल के शुक्र बुध तात्कालिक मित्र हुए।

4. शुक्र से बुध प्रथम है अतः शुक्र का बुध तात्कालिक शत्रु हुआ। शुक्र से मंगल, शनि, सूर्य, गुरु, द्वितीय हैं अतः यह शुक्र के तात्कालि मित्र हुए। शुक्र से राहू पंचम है अतः शुक्र का राहू शत्रु हुआ। शुक्र से चन्द्र षष्ठम है अतः शुक्र का चन्द्र शत्रु हुआ। शुक्र से केतू 11 वें हैं अतः शुक्र का केतू मित्र हुआ।

5. बुध से शुक्र प्रथम है अतः बुध का शुक्र शत्रु हुआ। बुध से सूर्य, मंगल, गुरू, शनि दूसरे हैं अतः यह बुध के मित्र हुए। बुध से राहू पंचम हैं अतः राहू, बुध का तात्कालिक शत्रु हुआ। बुध से चन्द्र षष्ठम है अतः चन्द्र बुध का शत्रु हुआ। बुध से केतू 11वें है अतः बुध का केतू मित्र हुआ।

6. गुरु से सूर्य, मंगल, शनि प्रथम हैं अतः यह गुरु के तात्कालिक शत्रु हुए। गुरु के राहू चतुर्थ है अतः गुरू का राहू मित्र हुआ। गुरू से चन्द्र पंचम है अतः गुरु का चन्द्र शत्रु हुआ। गुरु के केतू दशम है अतः गुरु का केतू मित्र हुआ। गुरु से शुक्र बुध 12 वें हैं अतः गुरु के शुक्र बुध तात्कालिक मित्र हुए।

7. शनि से मंगल, गुरु, सूर्य प्रथम है अतः यह शनि के तात्कालिक शत्रु हुए। शनि से राहू चतुर्थ है अतः शनि का राहू मित्र हुआ। शनि से चन्द्र पंचम है, अतः शनि का चन्द्र शत्रु हुआ। शनि से केतू दशम है अतः शनि का केतू मित्र हुआ। शनि से शुक्र बुध 12 वें हैं अतः शनि के शुक्र बुध तात्कालिक मित्र हुए।

8. राहू से चन्द्र दूसरे है अतः राहू का चन्द्र तात्कालिक मित्र हुआ। राहू से केतू सदैव सप्तम रहता है अतः तात्कालिक शत्रु हुआ। राहू से शुक्र बुध नवम है, अतः राहू के शुक्र बुध तात्कालिक शत्रु हुए। राहू से सूर्य, मंगल, शनि, गुरु दशम है अतः राहू के सूर्य मंगल, शनि, गुरु मित्र हुए।

9. केतू से शुक्र बुध तृतीय हैं अतः केतू के शुक्र बुध तात्कालिक मित्र हुए। केतु से सूर्य, मंगल; शनि और गुरु चतुर्थ है अतः यह केतू के तात्कालिक मित्र हुए। केतू से राहू सप्तम है अतः तात्कालिक शत्रु हुआ। केतू से चन्द्र अष्टम हैं अतः केतू का चन्द्र तात्कालिक शत्रु हुआ।

प्रत्येक ग्रह का तत्कालिक मित्र, शत्रु ज्ञात कर लिया गया है, अब इस प्राप्त जानकारी के आधार पर मैत्री चक्र बनाया जाता है। तात्कालिक मैत्री चक्र इस प्रकार होगा।

तात्कालिक मैत्री चक्र

ग्रह के तात्कालिक	मित्र	शत्रु
सूर्य	राहू, शुक्र, बुध, केतू	मंगल, गुरु, शनि, चन्द्र
चन्द्र	सूर्य, मंगल, शनि, गुरु, राहू	केतू, शुक्र, बुध
मंगल	राहू, केतू, शुक्र, बुध	सूर्य, गुरु, शनि, चन्द्र
शुक्र	सूर्य, मंगल, शनि, गुरु, केतू	बुध, राहू, चन्द्र
बुध	सूर्य, मंगल, शनि, गुरु, केतू	शुक्र, राहू, चन्द्र
गुरू	राहू, केतू, शुक्र, बुध	मंगल, शनि, सूर्य, चन्द्र
शनि	राहू, केतू, बुध, शुक्र	मंगल, सूर्य, गुरू, चन्द्र
राहू	चन्द्र, सूर्य, मंगल, शनि, गुरू	केतू, शुक्र, बुध
केतू	शुक्र, बुध, सूर्य, मंगल, शनि गुरु	राहू, चन्द्र

पंचघा मैत्री–जब तात्कालिक मैत्री चक्र बना लिया जाए तो उसके उपरान्त नैसर्गिक अर्थात् सामान्य या स्वाभाविक और तात्कालिक मैत्री, दोनों को सामने रखकर सम्मिश्रण से पंचघा मैत्री जाननी होती है। यहां पांच तरह के मित्र, शत्रु होते हैं, यह है–

1. अतिमित्र 2. मित्रं 3. सम 4. शत्रु 5. अतिशत्रु

तात्कालिक और नैसर्गिक दोनो प्रकार से अतिमित्र और अन्य मित्र, शत्रु इस तरह बनते हैं।

1. मित्र + मित्र = अति मित्र
2. मित्र + सम = मित्र
3. मित्र + शत्रु = सम
4. शत्रु + सम = शत्रु
5. शत्रु + शत्रु = अति शत्रु

नैसर्गिक और तात्कालिक दोनों स्थान मित्र होने से अतिमित्र दोनों ग्रहों हो जाते हैं। इसी तरह दोनों स्थान शत्रु होने पर अति शत्रु बन जाते हैं। यदि एक स्थान मित्र और दूसरे स्थान सम होंगे तो यह मित्र बन जाते हैं। ऐसे ही अलग–आलग मित्र, शत्रु, सम, अतिमित्र और अतिशत्रु बनते हैं।

अब जो उदाहरण ली गयी है उसका पंचघा मैत्री चक्र स्पष्ट किया जाएगा। पंचघा मैत्री जानने के लिए सब से सरल विधि वह है कि नैसर्गिक मैत्री और तात्कालिक मैत्री तालिका को सामने रखकर यह चक्र बनाना चाहिए। यदि दोनों एक स्थान रख कर पंचघा मैत्री ज़ानी जाए तो कुछ मिनटों में स्पष्ट हो जाती है। अतः यहां पहले दोनों को लिखा।

नैसर्गिक मैत्री				तात्कालिक मैत्री जो प्राप्त की		
ग्रह	मित्र	शत्रु	सम	ग्रह	मित्र	शत्रु
सूर्य	चन्द्र मंगल गुरु	शनि शुक्र राहू	बुध	सूर्य	राहू शुक्र बुध केतू	मंगल गुरु शनि चन्द्र
चन्द्र	सूर्य बुध	राहू	मंगल गुरू शुक्र शनि	चन्द्र	मंगल सूर्य शनि गुरू, राहू	केतू शुक्र बुध
मंगल	सूर्य चन्द्र गुरु	बुध राहू	शुक्र शनि	मंगल	राहू, केतू शुक्र, बुध	सूर्य, गुरू शनि, चन्द्र
शुक्र	बुध शनि राहू	सूर्य चन्द्र	मंगल गुरु	शुक्र	सूर्य, मंगल शनि, गुरु केतू	बुध राहू चन्द्र
बुध	सूर्य शुक्र राहू	चन्द्र	मंगल गुरु शनि	बुध	सूर्य, मंगल शनि, गुरु केतू	शुक्र राहू चन्द्र
गुरू	सूर्य चन्द्र मंगल	बुध शुक्र	शनि राहू	गुरु	राहू, केतू शुक्र, बुध	मंगल शनि सूर्य, चन्द्र
शनि	शुक्र बुध राहू	सूर्य चन्द्र मंगल	गुरु	शनि	राहू, केतू शुक्र, बुध	मंगल सूर्य गुरु चन्द्र
राहू	बुध शुक्र शनि	सूर्य चन्द्र राहू	गुरु	राहू	चन्द्र, सूर्य मंगल, शनि गुरु	केतू, शुक्र बुध
				केतू	शुक्र,बुध सूर्य, मंगल शनि, गुरु	राहू, चन्द्र

अब इन दोनों चक्रों को सामने रखकर तुरन्त पंचघा मैत्री चक्र स्पष्ट हो जाएगा। अतः दोनों को मिला कर दिए गए नियमों के अनुसार पंचघा मैत्री चक्र ऐसे बना–

पंचघा मैत्री चक्रम्

ग्रह	अति मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अति शत्रु
सूर्य	–	बुध	चन्द्र, मंगल, गुरु शुक्र, बुध	–	शनि
चन्द्र	सूर्य	मंगल गुरू, शनि	बुध, राहू	शुक्र	–
मंगल	–	शुक्र	सूर्य, चन्द्र, गुरु बुध, राहू	शनि	–
शुक्र	शनि	मंगल, गुरु	बुध, राहू, सूर्य	–	चन्द्र
बुध	सूर्य	मंगल गुरु, शनि	शुक्र, राहू	–	चन्द्र
गुरु	–	राहू	सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, शुक्र	शनि	–
शनि	बुध राहू शुक्र	–	–	गुरु	सूर्य चन्द्र मंगल
राहू	शनि	गुरु	बुध, शुक्र, सूर्य चन्द्र, मंगल	–	–

अतः पंचघा मैत्री चक्र इस तरह स्पष्ट हुआ। यदि दोनों चक्र साथ–साथ हों तो पंचघा मैत्री चक्र तुरन्त बन जाता है। जैसे सूर्य के नैसर्गिक मैत्री चक्र में चन्द्र मित्र हैं और तत्कालिक मैत्री जो प्राप्त की थी उसमें सूर्य के चन्द्र शत्रु है अतः मित्र + शत्रु मिलकर सम बन जाता है, इस तरह सूर्य के चन्द्र सम हुए और सूर्य के दाईं और सम खाने में लिख दिया। इस तरह सूर्य के बुध नैसर्गिक मैत्री में सम हैं और तात्कालिक मैत्री में सूर्य मित्र हैं अतः सम + मित्र = मित्र हुए । इस तरह बुध को मित्र के खाने में लिखा। ऐसे ही अलग–अलग ग्रह का सम्बन्ध देखकर पंचघा मैत्री बनानी चाहिए।

जन्मपत्री में पंचघा मैत्री चक्र अवश्य बनाना चाहिए।

पंचघा मैत्री का महत्व—पंचघा मैत्री चक्र जन्मपत्री में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, अतः जैसे पहले बताया गया है, इसे प्रत्येक जन्मपत्री में अवश्य बनाना चाहिए। इसके बगैर जन्मपत्री पूर्ण नहीं हो सकती और फलकथन भी सत्य की कसौटी पर पूरा नहीं उतर सकता क्योंकि यह एक ऐसा उपकरण है जिस द्वारा तात्कालिक अर्थात् किसी भी ग्रह का दूसरे ग्रह के सम्बन्ध और वह ग्रह जातक के लिए कैसा है का पूर्ण संकेत मिलता है। इस लिए अलग–अलग ग्रह की मित्रता मिलान करके पंचघा मैत्री चक्र अवश्य बनाना चाहिए। सम्पूर्ण ग्रहों का फल विचारते समय इस पंचघा मैत्री चक्र को सदैव ध्यान में रखना चाहिए।

जैसे जो हमारी उदाहरण की जन्म की कुण्डली है, उसका पंचघा मैत्री चक्र हमने बना लिया है। जन्म कुण्डली में लग्न मिथुन है और मिथुन लग्न का स्वामी ग्रह बुध दशम में गुरु की राशि में है। अतः हम यह कहेंगे कि बुध जो लग्न का स्वामी है गुरु की राशि अर्थात् गुरु के गृह या घर में बैठा है। अब पंचघा मैत्री में देखा बुध का गुरु मित्र है। इस कारण बुध, मित्र के घर या गृह में अथवा मित्र स्थानी हुआ। इसी तरह नवम भाव का स्वामी ग्रह शनि मेष राशि में है जिसका का स्वामी मंगल है, एकादश में है। पंचघा मैत्री में शनि का मंगल अति शत्रु है अतः शनि अति शत्रु क्षेत्री है। इस तरह ही सभी ग्रहों की मित्रता शत्रुता कुण्डली से देखी जाती है और उस अनुसार कोई निर्णय लिया जाता है।

किसी भी ग्रह के मित्र क्षेत्री होने से उसकी शक्ति एवं बल बढ़ता है और वह अथवा मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री, अतिमित्रक्षेत्री या उच्च का ग्रह ही शुभ फल देता है। इसी तरह किसी भी ग्रह के शत्रुक्षेत्री होने से उसकी शक्ति एवं वल कम होता है और इस तरह शत्रुक्षेत्री, अतिशत्रुक्षेत्री या नीच में ग्रह स्थित हो तो मन्दा, बुरा व अनिष्ट फल देता है।

दशासाधन—जीवन मे कोई घटना कब घटित होगी, जानने के लिए दशासाधन किया जाता है। किसी भी जातक के लिए जिसकी जन्मपत्री होती है, जन्मपत्री अथवा जन्मकुण्डली के अनुसार ग्रहों का जो फल होता है उस फल की प्राप्ती का समय दशादि से ही जाना जाता है। अतः जन्मपत्री में दशा तालिका अवश्य देनी चाहिए।

दशा कई प्रकार की होती है परन्तु मुख्यतः तीन प्रकार की दशाओं का ही प्रचलन है। यह हैं:

1. विंशेत्तरी दशा
2. अष्टोतरी दशा
3. योगिनी दशा।

कई जन्मपत्रों में यह तीन प्रकार की दशाएं दी होती है, कईयों में विंशोतरी और योगिनी दशा दी होती है और कईयों में विंशोतरी और

अष्टोतरी दशा दी होती है। एक समानता यह देखी गयी है कि प्रायः सब जन्मपत्रों में विंशोतरी दशा होती है। इससे सिद्ध होता है कि विंशोतरी दशा सभी विद्वान मानते हैं। फलित शास्त्र के ऋषियों ने भी विंशोतरी दशा को ही प्रधान, प्रमाणिक एवं श्रेष्ठ माना है । यह भी देखा गया है दक्षिण भारत में अष्टोतरी दशा को अधिक महत्व दिया जाता है और उतर भारत में विंशोतरी दशा ही प्रायः श्रेष्ठ मानी जाती है। आज के विद्वानों का तो यही मत है कि विंशोतरी दशा ही सत्य साबित होती है।

कुछ विद्वानों का विचार है कि जन्म पक्ष के अनुसार किसी एक दशा का साधन करना चाहिए जैसे यदि किसी का जन्म शुक्ल पक्ष में रात्रि समय हो तो जन्मपत्र में विंशोतरी दशा साधन और यदि कृष्णापक्ष में दिन का जन्म हो तो अष्टोतरी दशा होनी चाहिए। इसी तरह शुक्ल पक्ष में दिन के समय या कृष्ण पक्ष में रात्रि के समय जन्म हो तो योगिनी दशा का विचार करना चाहिए। जैसे पहले कहा गया है कि आज के विद्वान केवल विंशोतरी दशा को ही सही मानते हैं और यही दशा सत्य की कसौटी पर ठीक बैठती है। अतः यहां केवल विंशोतरी दसा साधन की विधि दी जा रही है और जिस बालक की जन्मपत्री बना रहे हैं, उसकी विंशोतरी दशा ही लेंगे।

विंशोतरी दशा—विंशोतरी दशा साधन बड़ा आसान हैं प्रत्येक पंचांग, एफेमेरीज में जन्म समय कौन सी दशा थी, जानने के लिए तालिक दी होती है। यदि आपने चन्द्र स्पष्ट अर्थात् नक्षत्र ज्ञात कर लिया है तो जन्म समय दशा कुछ मिनटों में ही जानी जा सकती है.

विंशोतरी दशा में मनुष्य की परम आयु 120 वर्ष की मानी गई है। इस तरह पूर्ण आयु 120 वर्ष मानकर ग्रहों के अनुसार विभाजन किया गया है और प्रत्येक ग्रह के अलग–अलग वर्ष निर्धारित किए गए हैं अतः सूर्य की 6 वर्ष, चन्द्र की 10 वर्ष, गुरु की 16 वर्ष, शनि की 19 वर्ष और बुध की 17 वर्ष, केतू की 7 वर्ष और शुक्र की 20 वर्ष की दशा मानी गई है। इस तरह सभी ग्रहों के वर्षों 6+10+7+18+16+19+17+7+ 20 = कुल जोड़ 120 वर्ष बनता है।

विंशोतरी दशा साधन—जैसे आप जान गए हैं कि प्रत्येक ग्रह को अलग–अलग वर्ष दिए गए हैं या यूँ कहे कि प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष अलग–अलग हैं,परन्तु ये कैसे पता चले कि पहले कौन सी या किस ग्रह की दशा होगी? अर्थात् जन्म समय किस ग्रह की कितनी दशा होगी। यह जानने के लिए चन्द्र नक्षत्र अथवा जन्म नक्षत्र का ज्ञान होना चाहिए। चन्द्र अथवा चन्द्र नक्षत्र से विचार करके प्रारम्भ में कौन सी दशा अथवा जन्म समय या पहले कौन सी दशा होगी निकाली जाती है।

एक राशि में लगभग $2^1/_4$ नक्षत्र होते हैं और बारह राशियों में

27 नक्षत्र माने जाते हैं। प्रत्येक नक्षत्र का स्वामी ग्रह होता है। यदि प्रथम नक्षत्र अश्विनी है तो उसका स्वामी ग्रह केतू माना गया है। यदि इसमें 9 जोड़ दे तो उस नक्षत्र का स्वामी भी केतू होगा जैसे 1+9 वां नक्षत्र मघा होता है, और 10वें में पुनः 9 जोड़ें तो 10+9=19वां मूला का स्वामी भी केतू होता है। इस तरह 27 नक्षत्रों के तीन नक्षत्रों के ग्रूप का एक ही स्वामी होता है, इस तरह उस स्वामी के अनुसार दशा भी समान वर्ष होती है। इस तरह दशा का क्रम और वर्ष बड़ी आसानी से जाना जा सकता है। दशा साधन में कृतिका को आदि नक्षत्र मान कर एक-एक नक्षत्र में एक-एक ग्रह भोगता है। इस प्रकार 9 ग्रह 27 नक्षत्र भोगने से प्रत्येक ग्रह को 3-3 नक्षत्र मिलते हैं अर्थात् तीन नक्षत्रों का एक ही ग्रह स्वामी होता है। यहां जो चक्र दिया है, उससे इन तीनों नक्षत्रों के नाम, स्वामी और वर्ष का तुरन्त पता चल जाएगा।

विंशोतरी महादशा चक्र
(जन्म नक्षत्र द्वारा विंशोतरी ज्ञान सारणी)

नक्षत्र क्रम	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी ग्रह	ग्रह के दशा वर्ष
3	कृतिका	सूर्य	6
12	उतराफाल्गुनी		
21	उतराषाढ़ा		
4	रोहिणी	चन्द्र	10
13	हस्त		
22	श्रवण		
5	मृगशिरा	मंगल	7
14	चित्रा		
23	धनिष्ठा		
6	आर्द्रा	राहू	18
15	स्वाति		
24	शतभिषा		

नक्षत्र क्रम	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी ग्रह	ग्रह के दशा वर्ष
7	पुनर्वसु	गुरु	16
16	बिशाखा		
25	पूः भाद्रपद		
8	पुष्प	शनि	19
17	अनुराधा		
26	ऊः भाद्रपद		
9	आश्लेषा	बुध	17
18	ज्येष्ठा		
27	रेवती		
10	मघा	केतू	7
19	मूला		
1	अश्विनी		
11	पूर्वा फाल्गुनी	शुक्र	20
20	पूर्वाषाढ़ा		
2	भरणी		

यहां दी गयी सारणी से स्पष्ट हो गया होगा, कि तीन–तीन नक्षत्रों का एक ही ग्रह है और उस ग्रह की दशा निर्धारित है जैसे सारणी में दिखाया है। जन्म समय दशा जानने के लिए थोड़ी गणना करनी पड़ती है, परन्तु यदि तुरन्त जन्म समय दशा किस ग्रह की थी जानना हो तो सारणी से ज्ञात हो जाएगी। जैसे अपनी उदाहरण का जन्म नक्षत्र पूः फाल्गुनी है, सारणी में पूः फाल्गुनी का स्वामी ग्रह शुक्र है अतः बालक की जन्म समय शुक्र की महा दशा थी। शुक्र की कितनी दशा बाकी थी, कितनी जन्म तक भोग चुका था आदि जानने के लिए जैसे पहले कहा गया है थोड़ा गणित करना पड़ता है। यह सरल विधि है।

ग्रह की दशा जानना—इस विधि द्वारा कृतिका नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनने में जो संख्या प्राप्त हो उसे 9 का भाग दें। जो शेष बचे तो

ग्रह की दशा क्रम अर्थात् सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहू, गुरु, शनि, बुध, केतू और भरणी अर्थात् शुक्र, इस प्रकार क्रम से गिनने पर जो ग्रह आए, उस ग्रह की महादशा जन्म समय होती है।

जैसे अपनी उदाहरण के बालक का जन्म पूः फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ । कृतिका नक्षत्र से गिनने पर पूः फाल्गुनी नक्षत्र तक 9 संख्या प्राप्त हुई। यदि 9 से अधिक संख्या होती तो 9 पर भाग दिया जाता परन्तु प्राप्त हुई संख्या 9 है अतः क्रम से 9वां ग्रह शुक्र है। इस तरह जन्म समय शुक्र की दशा हुई।

2. यहां जो सारिणी दी गई है, उसमें नक्षत्र आदि की गणना की आवश्यकता नहीं पड़ती। अतः इस पर से जन्म समय कौन से ग्रह की महा दशा थी, तुरन्त जानी जा सकती है जैसे हमने इससे पूर्व बताया था। सारिणी में जन्म नक्षत्र पूः फाल्गुनी देखा, तो उसके दाईं ओर शुक्र, और 20 वर्ष लिखा गया है। इस तरह अपनी उदाहरण के बालक की जन्म समय शुक्र की महादशा थी जो 20 वर्ष की होती है। इस से तुरन्त पता चल गया कि बालक का जन्म शुक्र महादश में हुआ है। शुक्र की पूरी दशा 20 वर्ष की होती है। अब कितनी दशा बीत चुकी थी, कितनी जन्म समय वाकी थी जानने के लिए नक्षत्र अथवा जन्म नक्षत्र का भयात और भभोग जो हमने पहले ही ज्ञात किया हुआ है, की आवश्यकता पड़ती है। हमने देखा अथवा जाना कि पूः फाल्गुनी नक्षत्र कुछ भुक्त हो चुका है और उसी अनुपात से शुक्र के वर्ष भी भुक्त हो चुके होंगे। जन्म नक्षत्र कितना भुक्त हो चुका है और कितना भोगने को बाकी है और पूर्ण नक्षत्र कितने घड़ी पल का है ज्ञात कर, उसी अनुपात से दशा के भुक्त वर्ष प्राप्त किए जाते हैं। नियम यह है—

(क) भयात × महादशा के वर्ष ÷ भभोग = दशा के भुक्त वर्ष, मास और दिन।

(ख) महादशा वर्ष—भुक्त वर्ष = भोगय वर्ष महादशा के

सरलता के लिए भयात और भभोग के पलादि बना लेने चाहिए और फिर ग्रह दशा वर्ष से गुणा करके उसमें पलात्मक भभोग का भाग कर देना चाहिए। जो लब्धि होगी वह वर्ष होंगे। वाकी को 12 से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि मास, इसके बाद जो वाकी हो उसे 30 से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने पर लब्धि दिन प्राप्त होगी। यदि घटी पल आदि तक जानना चाहते हैं तो शेष को 60 से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि घटी और शेष को 60 से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देने से लब्धि पल प्राप्त होंगे और यदि विफल भी जानना हो तो शेष को 60 [illegible] णा कर, पलात्मक भभोग का भाग [illegible] से लब्धि विफल प्राप्त होंगे। [illegible] तौर पर दिन तक

का ही प्रचलन है यदि चाहें तो घटी पल तक भी जान सकते हैं। अब अपनी उदाहरण की भुक्त दशा जानेंगे और उससे नियमानुसार भोग्य दशा अथवा जन्म के बाद कितनी दशा भुगतनी है ज्ञात करेंगे।

अपनी उदाहरण का जो भयात व भभोग ज्ञात कर रखा है यहां लिया जाता है।

भयात
22 घटी 38 पल 30 विपल
अथवा
22 घटी 38 पल लिए
×60 पलादि जानने के लिए
1320
38
1358 पलात्मक
× 20 शुक्र के दशा वर्ष से गुणा किया
27160

भभोग
59 घटी 10 पल
×60
3540
10
3550 पलात्मक भभोग

27160 को पलात्मक भभोग 3550 से भाग किया

3550) 27160 (7 वर्ष
24850
2310
×12
4620
2310×
3550) 27720 (7 मास
24850
2870
×30
3550) 86100 (24 दिन
7100
15100
14200

```
                900
                 60
3550    ) 54000 (   15 घटी
          3550
          -----
          18500
          17750
          -----
            750
             60
3550    ) 45000 (   12 पल
          3550
          -----
           9500
           7100
          -----
           2400 अर्थात् 12 पल
```

1. अतः भुक्त दशा 7 वर्ष 7 मास 24 दिन 15 घटी 12 पल प्राप्त हुई।

2. शुक्र की कुल दशा 20 वर्ष है अतः कुल दशा से भुक्त दशा निकाली—

	वर्ष	मास	दिन	घटी	पल	
3. शुक्र की कुल दशा =	20	0	0	0	0	
जन्म से पूर्व शुक्र दशा =	7	7	24	15	12	भुक्त दशा
	12	4	5	44	48	भोग्यदशा

अतः जन्म के पश्चात् = 12 वर्ष 4 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल शुक्र की महादशा, भोग्य दशा थी।

इस तरह अपनी उदाहरण के बालक की—

1. जन्म से पूर्व शुक्र दशा अर्थात् भुक्ति = 7 वर्ष 7 मास 24 दिन 15 घटी 12 पल

2. जन्म के पश्चात् शुक्र की दशा
अर्थात् जो भोगनी है अथवा भोग्य = 12 वर्ष 4 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल

3. भुक्ति और भोग्य दशा जन्म समय की ज्ञात हो गई है। अब जीवन में कौन–कौन सी दशा तथा किस समय तक चलेगी इस तरह जाना जाता है।

		सम्वत्	सूर्यराशि	अंश	पल	विकला
जन्म समय	=	2057	0	1	40	44
शुक्र के भोग्य वर्ष		12	4	5	44	48
= तक शुक्र	=	2069	4	7	25	32
+ सूर्य दशा का काल	=	6	0	0	0	0
= तक चन्द्र	=	2075	4	7	25	32
+ चन्द्र महादशा काल	=	10	0	0	0	0
= तक चन्द्र	=	2085	4	7	25	32
+ मंगलदशा काल	=	7	0	0	0	0
= तक मंगल	=	2092	4	7	25	32
+ राहू दशा काल	=	16	0	0	0	0
= तक राहू	=	2110	4	7	25	32
+ गुरू दशा काल	=	16	0	0	0	0
= तक गुरु	=	2126	4	7	25	32
+ शनि दशा काल	=	19	0	0	0	0
= तक शनि	=	2145	4	7	25	32
+ बुध दशा काल	=	17	0	0	0	0
= तक बुध	=	2162	4	7	25	32
+ केतू दशा काल	=	7	0	0	0	0
= तक केतू	=	2169	4	7	25	32

सम्पूर्ण जीवन का महादशा काल स्पष्ट हो गया हैं। ध्यान रहें आयु निर्णय के अनुसार ग्रहों की महादशा ज्ञात करनी चाहिए, यदि वह संभव न हो तो 6–7 ग्रहों की महादशा निकालनी चाहिए। महादशा कौन–सी, किस समय तक हो सकती है, तुरन्त जानने के लिए महादशा चक्र जन्मपत्री में अवश्य बनाना चाहिए। चक्र से तुरन्त स्पष्ट हो जाता है कि कौन से ग्रह की महदाशा कब से कब तक चलेगी। यहां अब महादशा चक्र दिया जा रहा है। ध्यान रखें कि जन्म समंय जिस ग्रह की महादशा होती है, उसकी समाप्ति पर ग्रहदशा क्रमानुसार अगले ग्रहों की महादशा आती है। जैसे अपनी उदाहरण की जन्म समय शुक्र की महादशा थी, इसकी समाप्ति पर ग्रहदशा क्रमानुसार अगली सूर्य, मंगल, राहू, गुरू आदि की होगी।

विंशोतरी महादशा चक्र मिदम्

ग्रह →	भक्ति	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	गुरू	शनि	बुध	केतू
वर्ष	7	12	6	10	7	18	16	19	17	7
मास	7	4	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	24	5	0	0	0	0	0	0	0	0
घटी	15	44	0	0	0	0	0	0	0	0
पल	12	48	0	0	0	0	0	0	0	0
सम्वत्		2057	2069	2075	2085	2092	2110	2126	2145	2162
सूर्य गति राशि		0	4	4	4	4	4	4	4	4
अंश		1	7	7	7	7	7	7	7	7
कला		40	25	25	25	25	25	25	25	25
बिकला		44	32	32	32	32	32	32	32	32
		प्रारम्भ	प्रारम्भ	प्रारम्भ	प्रारम्भ	प्रारम्भ	प्रारम्भ	प्रारम्भ	प्रारम्भ	प्रारम्भ
तारीख		15	21	21	21	21	21	21	21	21
मास		4	8	8	8	8	8	8	8	8
सन्		2000	2012	2018	2028	2035	2053	2069	2088	2105

जन्म समय सूर्य 0 राशि 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर था उस समय शुक्र महादशा प्रारम्भ हुई और वह सम्वत् 2069 में जब सूर्य 4 राशि 7 अंश 25 कला 32 बिकला पर होगा समाप्त होगी और सूर्य की महादशा आरम्भ होगी।

अन्तर्दशा—महादशा स्पष्ट करने के पश्चात् अन्तर्दशा भी स्पष्ट करनी चाहिए क्योंकि महदाशा का समय बहुत अधिक होता है। अतः महादशा से सूक्ष्म समय निकालने को अन्तर्दशा कहते हैं। अन्तर्दशा निकालने एवं जानने की विधि यह है कि जिस भी ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा निकालनी हो तो यह ध्यान रखें कि सर्वप्रथम उस ग्रह की ही अन्तर्दशा होती है जिसकी महादशा होती है। उसके पश्चात् अगले ग्रह की क्रमानुसार जो ग्रह चक्र में दिया है, अन्तर्दशा होती है।

अन्तर्दशा निकालने का सरल तारीका यह है कि जिस ग्रह की दशा में अन्तर्दशा निकालनी है तो उसके दशा वर्ष से गुणा करें अर्थात् दशा–दशा का गुणा करके, योगफल को 10 से भाग दें तो मास प्राप्त होंगे, यदि यह 12 से अधिक हों तो 12 से भाग देकर वर्ष बना लें। जो शेष बचे उसमें 3 गुणा कर देने से दिन की संख्या प्राप्त हो जाती है।

जो उदाहरण ली है उसकी अन्तर्दशा निकालेंगे। उदाहरण के बालक की जन्म समय शुक्र की महा दशा थी। अब शुक्र में अन्तर्दशा जानने के लिए शुक्र के 20 वर्ष को 20 से (दशा वर्ष–दशा वर्ष गुणा) गुणा किया जैसेः–

20

× 20 = 400 प्राप्त हुआ। अब इस संख्या को 10 पर भाग दिया।

10) 400 (40 मास
40
——
00
00
——
×

40 मास प्राप्त हुए। इसको 12 से भाग दिया तो 3 वर्ष 4 मास प्राप्त हुए। यह शुक्र महा दशा में शुक्र की अन्तर्दशा का समय होगा। यहां यह ध्यान रखें कि प्रत्येक महादशा में प्रथम अन्तर्दशा उसी ग्रह की होगी। जैसे शुक्र की महादशा थी तो यह 3 वर्ष 4 मास शुक्र की अन्तर्दशा से प्रारम्भ होगी जिसे कहा जाता है शुक्र की महदाशा में शुक्र की अन्तर्दशा।

इस तरह शुक्र की 20 वर्ष की महादशा में सर्वप्रथम शुक्र की ही अन्तर्दशा होगी जो 3 वर्ष 4 मास होगी। इस से ग्रह दशा क्रम के अनुसार अगले ग्रहों की अन्तर्दशा होगी जो शुक्र की कुलदशा के समान होगी जो इस तरह होगी–

(क) शुक्र में अन्तर्दशा सारणी

ग्रह क्रम	ग्रह	वर्ष	मास	दिन
1	शुक्र	3	4	0
2	सूर्य	1	0	0
3	चन्द्र	1	8	0
4	मंगल	1	2	0
5	राहू	3	0	0
6	गुरु	2	8	0
7	शनि	3	2	0
8	बुध	2	10	0
9	केतू	1	2	0
	कुल वर्ष	20	0	0

यह देखने के लिए कि जातक को महादशा में कौन सी अन्तर्दशा चल रही थी, थोड़ा गणित करना होगा। इसके लिए जो भोगने की महा दशा होती है सामने रखना पड़ता है और यह देखना होता है कि इसमें अन्तर्दशा का समय किस ग्रह का होगा। हमारे उदाहरण की भोगने को शेष शुक्र की महादशा 12 वर्ष 4 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल रही थी। अब वह देखना है कि इस शुक्र की महादशा के समय के अन्तर्गत कौन ग्रह की अन्तर्दशा भोगने की रही है। इसको देखने के लिए सरल विधि यह है कि शुक्र महादशा से अन्तर्दशा के वर्ष उल्टे क्रम से घटाते जाएं और इसी क्रम से यहां तक घटते जाएं घटाएं और जब न घटें और वह जो शेष रहें जिनमें से नहीं घटे, वहां से अन्तर्दशा का समय गिनना चाहिए। अब अपनी उदाहरण का देखेंगे कि शुक्र की महादशा में जन्म समय कौन सी अन्तर्दशा थी और कितने समय तक थी तथा उसके पश्चात् और कौन–कौन सी अन्तर्दशा व कितने–कितने समय तक होगी। जैसे–

		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
1. शुक्र महादशा के भोगने के वर्ष जो निकाले हैं	=	12	4	5	44	48
2. शुक्र महादशा में अन्तर्दशा आखिरी सारणी (क) में केतू की हैं जो नियमानुसार घटायी	=	1	2	0	0	0
शेष	=	11	2	5	44	48
3. केतू के बाद उलटे क्रम में बुध का अन्तर्दशा समय घटाया	=	2	10	0	0	0
शेष	=	8	4	5	44	48
4. बुध के पश्चात् उलटे क्रम में शनि का अन्तर्दशा समय घटाया	=	3	2	0	0	0
शेष	=	5	2	5	44	48
5. शनि के उपरान्त गुरू का अन्तर्दशा समय घटाया	=	2	8	0	0	0
शेष	=	2	6	5	44	48
6. गुरु के पश्चात् उलटे क्रम से राहू का अन्तर्दशा समय घटाया	=	3	0	0	0	0
				?		

नियमानुसार उलटे क्रम से, शेष से राहू का अन्तर्दशा समय नहीं घटता है, अतः स्पष्ट हुआ कि राहू की अन्तर्दशा में जन्म हुआ है। इस तरह स्पष्ट हो गया कि जन्म के समय शुक्र की 12 वर्ष 4 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल महदशा भोगने वाली थी और इस महादशा में राहू का 2 वर्ष 6 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल अन्तर्दशा का समय भोगने को शेष था। इस अन्तर्दशा का यह शेष समय भोगने के पश्चात् गुरु की अन्तर्दशा का समय, फिर शनि का, फिर बुध का और अन्त में केतू की अन्तर्दशा का समय भोगना होगा। जैसे–

		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
1. शुक्र दशा में राहू की अन्तर्दशा जो भोगने को शेष रह गई है	=	2	6	5	44	48
2. इस के पश्चात् गुरु की अन्तर्दशा	=	2	8	0	0	0
3. इसके पश्चात् शनि की अन्तर्दशा	=	3	2	0	0	0
4. शनि के बाद बुध की अन्तर्दशा	=	2	10	0	0	0
5. बुध के बाद केतू की अन्तर्दशा	=	1	2	0	0	0
योग	=	12	4	5	44	48

इससे स्पष्ट हो गया कि शुक्र की महादशा जो भोगने को थी अर्थात् 12 वर्ष 4 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल थी केतू की अन्तर्दशा की समाप्ति पर समाप्त हो जाएगी और उसके पश्चात् ग्रहदशा क्रम से अगले ग्रह सूर्य की महादशा जो 6 वर्ष का समय होता है चालू होगी। ग्रहदशा का क्रम पहले दे दिया गया है।

प्रत्यन्तर्दशा—अन्तर्दशा के पश्चात् और सूक्ष्म समय जानने के लिए प्रत्यन्तर्दशा निकालनी होती है। प्रत्यन्तर्दशा का क्रम भी अन्तर्दशा के समान ही है। इसमें भी वही नियम है जो अन्तर्दशा में था। प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा में भी सर्वप्रथम प्रत्येन्तर्दशा उसी ग्रह की होती है। जैसे यदि गुरु की अन्तर्दशा होगी तो प्रथम अथवा शुरु से गुरु की ही प्रत्यन्तर्दशा होगी। जैसे पहले नियम दिया है उसी अनुसार प्रत्यनर्दशा निकाली जाती है। अब उदाहरण जो ली गई है उसकी प्रत्यन्तर्दशा ज्ञात करेंगे।

शुक्र की भोग्य महादशा 12 वर्ष 4 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल थी और शुक्र मे राहू की भोग्य अन्तर्दशा 2 वर्ष 6 मास 5 (पांच) दिन 44 घटी 48 पल थी। अब हमने राहू की अन्तर्दशा में प्रयन्तर्दशा निकालनी है। जैसे बताया गया है कि प्रथम प्रयन्तर्दशा उसी ग्रह की होती है अतः प्रथम प्रयन्तर्दशा समय राहू का होगा। किसी भी ग्रह की प्रयन्तर्दशा निकालने का नियम यह है—

1. अन्तर्दशा के महीनों को 4 से भाग दो। भाग देने से दिन व घंटे प्राप्त होंगे।

2. अन्तर्दशा के दिनों को 5 से भाग दो। भाग देने से जो लब्धि आदि आए वह घंटे और मिनट कहलाएंगे।

3. क्रम नः 1 और 2 से जो संख्या प्राप्त हो उसे जिस ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा निकालनी है उसके सम्पूर्ण दशा वर्षों के गुणा करें तो जो फल प्राप्त होगा वह उसकी प्रत्यन्तर्दशा का समय होगा। जैसे हमने जो उदाहरण ली है, अब उसकी राहू अन्र्दशा में राहू की प्रत्यन्तर्दशा निकालनी हैं, क्योंकि सर्वप्रथम राहू में राहू की प्रत्यन्र्दशा चलेगी। वह नियम के अनुसार उस तरह निकाली जाएगी।

1. शुक्र की महादशा का पूर्ण समय = 20 वर्ष
2. शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा का पूरा समय = 3 वर्ष
3. राहू अन्तर्दशा में राहू प्रत्यन्तर्दशा का कितना समय होगा? = ?

नियम—1 राहू अन्तर्दशा के 3 वर्ष से 3×12 =36 मास हुए। 36 को ÷ 4 भाग दिया तो 9 लब्धि। = 9 दिन

नियम—2 राहू अन्तर्दशा के दिनों को 5 का भाग दिया जाना होता है। राहू के अन्तर्दशा के केवल 3 वर्ष है। दिनादि नहीं है।

नियम —3 हमने राहू की राहू प्रत्यन्तर्दश जानती है। जिसकी प्रयन्तर्दशा जाननी है,उसकी दशा का पूर्ण समय 18 वर्ष होता है। इस तरह नियम नंः 1 के फल को 18 से गुणा किया।

$$\begin{array}{r} 9 \\ \times 18 \\ \hline 162 \end{array} = \text{दिन}$$

162 दिनों के $\frac{162}{30}$ = 5 मास 12 दिन राहू की अन्तर्दशा में राहू की प्रत्यन्तर्दशा का समय होगा। इस तरह 9 ही ग्रहों की प्रत्यन्तर्दशा निकाल कर सारणी दी जाती है।

(ख) शुक्र महादशा, राहू अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा सारणी

क्रम	ग्रह	मास	दिन
1	राहू	5	12
2	गुरु	4	24
3	शनि	5	21
4	बुध	5	3
5	केतू	2	3
6	शुक्र	6	0
7	सूर्य	1	24
8	चन्द्र	3	0
9	मंगल	2	3
		36	0 = 36 मास अर्थात् 3 वर्ष।

अब यह देखने के लिए कि जातक को राहू की अन्तर्दशा में कौन सी प्रत्यन्तर्दशा थी, वही तारीका है जो अन्तर्दशा जानने का था। इसके लिए राहू अन्तर्दशा समय से प्रत्यन्र्दशा सारणी से देखकर उलटे क्रम से प्रत्यन्तर्दशा ग्रह का समय निकालने अथवा घटाते जाएं जिससे न घटे वही जातक की प्रत्यन्तर्दशा समय भोगने को होगा–

		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
1. राहू अन्तर्दशा के भोगने के वर्ष आदि	=	2	6	5	44	48
2. उलटे क्रम से मंगल प्रत्यन्तर्दशा समय घटाया	=	0	2	3	0	0
शेष	=	2	4	2	44	48
3. उलटे क्रम से चन्द्र का समय घटाया	=	0	3	0	0	0
शेष	=	2	1	2	44	48
4. सूर्य का घटाया	=	0	1	24	0	0
शेष	=	1	11	8	44	48

		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
5. शुक्र का घटाया	=	0	6	0	0	0
शेष	=	1	5	8	44	48
6. उलटे क्रम से केतू का घटाया	=	0	2	3	0	0
शेष	=	1	3	5	44	48
7. उलटे क्रम से बुध का घटाया	=	0	5	3	0	0
शेष	=	0	10	2	44	48
8. उलटे क्रम से शनि का घटाया	=	0	5	21	0	0
शेष	=	0	4	11	44	48
9. उलटे क्रम से गुरू का घटाया ?	=	0	4	24	0	0

नियमानुसार उलटे क्रम से गुरु प्रत्यन्तर्दशा का समय नहीं घटता है। अतः स्पष्ट हुआ कि राहू की अन्तर्दशा में जातक को गुरू की प्रत्यन्तर्दशा 4 मासे 11 दिन 44 घटी 48 पल भोगने को शोष थी। इस तरह यह प्रत्यन्तदर्शा समय भोगने के पश्चात् शनि की प्रत्यन्तर्दशा का समय चलेगा और फिर बुध का- केतू–शुक्र–सूर्य - चन्द्र और अन्त में मंगलकी प्रत्यन्तर्दशा समय की समाप्ति के साथ ही राहू की अन्तर्दशा भी समाप्त हो जाएगी। राहू की अन्तर्दशा के पश्चात् ग्रह क्रम से गुरु की अन्तर्दशा क्रम आता है। जैसे–

		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
1. राहू की अन्तर्दशा में गुरु की प्रत्यन्तर्दशा भोगने को शेष रही	=	0	4	11	44	48
2. इसके पश्चात् शनि की प्रत्यन्तर्दशा	=	0	5	21	0	0
3. शनि के पश्चात् बुध की प्रत्यन्तर्दशा	=	0	5	3	0	0
4. बुध के पश्चात् केतू की प्रत्यन्तर्दशा	=	0	2	3	0	0
5. केतू के पश्चात् शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा	=	0	6	0	0	0

		वर्ष	मास	दिन	घटी	पल
6. शुक्र के पश्चात् सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा	=	0	1	24	0	0
7. सूर्य के पश्चात् चन्द्र की प्रत्यन्तर्दशा	=	0	3	0	0	0
8. चन्द्र के पश्चात् आखिरी मंगल की प्रत्यन्तर्दशा	=	0	2	3	0	0
कुल योग	=	2	6	5	44	48

इससे स्पष्ट हो गया कि राहू की अन्तर्दशा जो भोगने को थी अर्थात् 2 वर्ष 6 मास 5 दिन 44 घटी 48 पल थी, मंगल की प्रयन्तर्दशा भोगने के पश्चात् समाप्त हो जाएगी और उसके पश्चात् ग्रहदशा क्रम से अगले ग्रह की अन्तर्दशा चलेगी और उसी की प्रयन्तर्दशा होगी।

अब उदाहरण वाले जातक की शुक्र की महादशा चल रही थी और शुक्र की महादशा में राहू की अन्तर्दशा थी तथा राहू की अन्तर्दशा में गुरु की प्रयन्तर्दशा चल रही थी जो 4 मास 11 दिन 44 घटी 48 पल अभी शेष दी।

इसके यह स्पष्ट होता है कि महादशा का समय अधिक होता है। शुक्र महादशा का समय तो बीस वर्ष तक का है। इससे यदि सूक्ष्म समय जानना हो तो अन्तर्दशा निकालनी चाहिए तो अधिक समय को थोड़े-थोड़े समय वर्ष अर्थत् अन्तरा में विभाजित कर देता है। यदि मास दिन का समय ज्ञात करना ही तो प्रत्यन्तर्दशा निकालनी चाहिए। इस प्रत्यन्तर्दशा को भी 9 भागों में (9 ग्रहों का समय क्रमानुसार) विभाजित कर प्रत्येक ग्रह की सूक्ष्म दशा स्पष्ट की जा सकती है। यदि इससे आगे जानना हो तो सूक्ष्मदशा को भी 9 भागों में बांट कर जो प्रत्येक ग्रह के लिए समय निर्धारित हो जाता है, वह प्राण दशा कहलाता है। इस तरह फल कथन के लिए अत्यन्त सूक्ष्म समय निकाला जा सकता है। यहां यह बताना उचित रहेगा कि अधिकतर जन्मपत्रों में अन्तर्दशा तक ही चक्र दिए जाते हैं।

जो पिछले पृष्ठों में अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा निकाली थी, सर्वप्रथम उसे सम्वत् अनुसार स्पष्ट करके अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर्दशा चक्र वनाएंगे क्योंकि प्राचीन शैली में दशादि इस तरह स्पष्ट की जाती है और फिर दशादि चक्र बनाया जाता हैं।

1. अन्तर्दशा स्पष्ट सम्वत् अनुसार इस तरह होगी। इसमें जैसे महादशा में स्पष्ट की है, दी जाती है। इसमें जन्म समय के सम्वत् व इष्कालिक सूर्य राशि अंश कला बिकला में दशा का काल जोड़ने के

उस ग्रह का सम्वत् सूर्य राशि अंश कला बिकला ज्ञात हो जाती है जब उस ग्रह की दशा का प्रारम्भ होता है। जैसे–

		सम्वत्	सूर्यराशि	अंश	कला	बिकला
जन्म समय सम्वत् और सूर्यराशि अंश कला आदि	=	2057	0	1	40	44
+ राहू का भोग्य अन्तर्दशा काल	=	0	6	5	44	48
तक राहू	=	2059	6	7	25	32
+ गुरू की अन्तर्दशा वर्ष	=	2	8	0	0	0
तक गुरू	=	2	8	0	0	0
+ शनि की अन्तर्दशा वर्ष	=	2062	2	7	25	32
तक शनि	=	3	2	0	0	0
+ बुध के अन्तर्दशा वर्ष	=	2065	4	7	25	32
तक बुध	=	2	10	0	0	0
+ केतू के अन्तर्दशा वर्ष	=	2068	2	7	25	32
तक केतू	=	1	2	0	0	0

इसी तरह प्रत्यन्तर्दशा स्पष्ट की जाती है।

जन्म समय सम्वत् सूर्य राश्यंश	=	2057	0	1	40	44
+ गुरू का भोग्य प्रत्यन्तर्दश काल	=	0	4	11	44	48
तक गुरु प्रत्यन्तर्दशा	=	2057	4	13	25	32
+ शनि प्रत्यन्तर्दशा काल	=	0	5	21	0	0
तक हानि प्रत्यन्तर्दशा	=	2057	10	4	25	32
+ बुध प्रत्यर्न्दशा काल	=	0	5	3	0	0
तक बुध प्रत्यर्न्दशा	=	2058	3	7	25	32
+ केतू प्रत्यर्न्दशा काल	=	0	2	3	0	0
तक केतू प्रत्यर्न्दशा	=	2058	5	10	25	32
+ शुक्र प्रत्यर्न्दशा काल	=	0	6	0	0	0
तक शुक्र प्रत्यर्न्दशा	=	2058	11	10	25	32

		सम्वत्	सूर्यराशि	अंश	कला	बिकला
+ सूर्य प्रत्यर्न्दशा काल	=	0	1	24	0	0
तक सूर्य प्रत्यर्न्दशा	=	2059	1	4	25	32
+ चन्द्र प्रत्यर्न्दशा काल	=	0	3	0	0	0
तक चन्द्र प्रत्यर्न्दशा	=	2059	4	4	25	32
+ मंगल प्रत्यर्न्दशा काल	=	0	2	3	0	0
तक मंगल प्रत्यर्न्दशा	=	2059	6	7	25	32

अब शुक्र महादशा में अन्तर्दशा और शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र दिए जा रहे हैं।

शुक्र महादशा में अन्तर्दशा चक्र

ग्रह	भुक्ति	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतू	केतू
वर्ष	0	2	2	3	2	1	
मास	5	6	8	2	10	2	
दिन	24	5	0	0	0	0	
घटी	15	44	0	0	0	0	
पल	12	48	0	0	0	0	
सम्वत्		2057	2059	2062	2065	2068	2069
सूर्य के राशि		0	6	2	4	2	4
अंश		1	7	7	7	7	7
कला		40	25	25	25	25	25
बिकला		44	32	323	32	32	32
		प्राः	प्राः	प्राः	प्राः	प्राः	तक
तारीख		15	21	21	21	21	21
मास		4	10	6	8	6	8
सन्		2000	2000	2005	2008	2011	2012

शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र

ग्रह	भुक्ति	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	मंगल
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मास	0	4	5	5	2	6	1	3	2	
दिन	12	11	21	3	3	0	24	0	3	
घटी	15	44	0	0	0	0	0	0	0	
पल	12	48	0	0	0	0	0	0	0	
सम्वत्		2057	2057	2057	2058	2058	2058	2059	2059	2059
राशि		0	4	10	3	5	10	1	4	6
अंश		1	13	4	7	10	11	4	4	7
कला		40	25	25	25	25	25	25	25	25
बिकला		44	32	32	32	32	32	32	32	32
		प्राः	प्राः	प्राः	प्राः	प्राः	प्राः	प्राः	प्राः	तक
तारीख		15	27	18	21	24	24	18	18	21
मास		4	8	2	7	9	3	5	8	21
सन्		2000	2000	2001	2001	2001	2002	2002	2002	2002

महादशा, अन्तर्दशा, प्रयन्तर्दशा देखने की विधि–जो महादशा, अन्तर्दशा व प्रयन्तर्दशा के चक्र दिए हैं वह अपने–आप में स्पष्ट हैं परन्तु इनको ध्यान से बनाना व देखना चाहिए। चक्रों से स्पष्ट होता है कि दिए गए सम्वत् में जब सूर्य उतने राश्यंश पर आयेगा तब वह दशा, अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर्दशा प्रारम्भ होगी और यह क्रमानुसार अगले ग्रह की दशा, अन्तर्दशा तक रहेगी।

जैसे महादशा चक्र में जब जन्म समय सम्वत् 2057 सूर्य 0 राशि 1अंश 40 कला 44 बिकला था तब शुक्र महादशा चल रही थी और यह सम्वत् 2069 में जब सूर्य 4 राशि 7 अंश 25 कला 32 बिकला पर होगा तब तक रहेगी और फिर सूर्य की महादशा प्रारम्भ हो जाएगी। सुविधा के लिए सन् ई० भी लिखा है। इससे तुरन्त स्पष्ट हो जात है कि जन्म समय अर्थात् 15–4–2000 से शुक्र दशा प्रारम्भ हुई और 21–8–2012 तक चलेगी। दिनाक 21–8–2012 से सूर्य की महादशा प्रारम्भ होगी।

इसी तरह शुक्र महादशा में सम्वत् 2057, 0 राशि 1 अंश 40 कला 44 बिकला जो जन्म समय के सूर्य राश्यंश है, से शुक्र महदशा में राहू अन्तर्दशा प्रारम्भ हुई और सम्वत् 2059 में जब सूर्य 6 राशि 7 अंश 25 कला 32 विकला पर होगा शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा रहेगी और सम्वत् 2059 को जब सूर्य 6 राशि 7 अंश 25 कला 32 पर होगा गुरू अन्तर्दशा प्रारम्भ होगी।

शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में जब जन्म समय सम्वत् 2057, सूर्य 0 राशि 1 अंश 40 कला 44 बिकला पर था गुरू प्रत्यन्तर्दशा प्रारम्भ हुई और सम्वत् 2057 में जब सूर्य 4 राशि 3 अंश 25 कला 32 बिकला था, तक रही और शनि की प्रत्यन्तर्दशा आरम्भ हुई। इस तरह दशादि देखी जाती है।

इस विधि द्वारा दशादि निकाले व देखने में कुछ कठिनाई होती है। जिस बालक की उदाहरण ली गई है उसी की साम्पातिक काल विधि द्वारा भी जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री निर्माण अगले पृष्ठों में किया है। वहां दशा साधन की सरल विधि दी है और दशा चक्रों से भी दशा समय जानना अति सरल है क्योंकि वह सन् ई० में दिए हैं। हमारा परामर्श है कि उसी विधि द्वारा दशा साधन करना चाहिए और सुविधा के लिए वह चक्र बनाने चाहिए। जब सभी तथ्य स्पष्ट हों जाएं तो जन्मपत्री लिखनी चाहिए। जन्मपत्री लिखने की पारम्परिक विधि इस प्रकार है।

पारम्पारिक जन्म-पत्री लेखन

।। श्री गणेशाय नमः ।।

सजपति सिन्धुरवदनों देवो,
सत्यादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिखि तमासां
राशिंत्राशयति विघ्नानाम्।।

वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटि समः प्रभाः।
अविघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

ललाटपट्टेलिखिता विधता
ज्योतिष्मतीवस्तुधनान्धवेता।
तज्जन्मपत्रीं लिखितां विधते
दीपोयथावस्तु धनान्धकार।।

अथ शुभे बिंक्रम सम्वस्सरे 2057 शाके 1922 उतरायणे उतरगोले, वसन्त ऋतौ शुभे चैत्र मासे शुक्ल पक्षे शुभतिथि द्वादशी शनि बासरे 45 घटी 56पल, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे 47 घटी 49 पल, वृद्धि योगे 38 घटी 22 पल बव करणे 17 घटी 14 पल, दिनमानम् 31 घटी 59 पल रात्रिमानम् 28 घटी 1 पल अहोरात्रमानम् 60 घटी, मेषाऽर्कस्य गतांशः। शेषांश 29 तत्र श्रीसूर्योदयादिष्टम् 11 घटी 17 पल 30 विपल। सूर्योदयकालः चण्डीगढ़ नगर 5 घंटा 59 मिनट सूर्यास्तकाल 18 घंटे 46 मिनट भा.स्टे. टा तत्समय, मिथुन लग्नस्य स्पष्टोदयो चण्डीगढ़ नगरे श्रीमतः (बाबा का नाम) तस्यात्मजस्य श्रीमतः (पिता का नाम) गृहे सुलक्षणं भार्यायां दक्षिणकुक्षौ पुत्रः (वायुकुक्षौ पुत्री) अजायत्।

तत्र होराचक्रानुसारेण भयातम् 22 घटी 38 पल 30 विपल भभोग 59 घटी 10 पल वशात् पूर्वाफाल्गुनी द्वितीय चरणें जनितत्वात् टा काराद्यक्षर नामा तस्य राशि सिंह स्वामी सूर्य वर्ण क्षत्रिय वश्य वनकर गण मनुश्य योनि मूषक नाड़ी मध्य वर्ग श्वान इत्यादि सर्वन्तु विवाहे व्यापारे च चिन्तनीयम्। शुभम्

अथ घातादयः ज्येष्ठ मासः जय तिथम 3–8–13 शनिवार वारः मूल नक्षत्रम्.धृति योग वणिज करणम् कन्या चन्द्रमाः।

विंशोतरी मतानुसारेण शुक्र महादशायाम् तस्याः वर्षाणि 20 भुक्त वर्षादि 7–7–24 भोग्य वर्षादि 12–4–6

दिनांक जन्म तारीख 15 अप्रैल, 2000 सन् ई० चण्डीगढ़ प्रातः 10–30 भा.मा.स. इति।

पिछले पृष्ठों में पंचांग द्वारा जन्म–कुण्डली निर्माण एवं सप्तवर्गी व दशवर्गी जन्मपत्री निर्माण की विस्तृत जानकारी दी है। सुहृदय पाठकों ने देखा होगा कि पंचांग द्वारा लग्न स्पष्ट करने, जन्म कुण्डली बनाने हेतु कठिन गणित करना पड़ता है और परिश्रम भी अति अधिक करना पड़ता है। इसके बावजूद प्राचीन सिद्वान्त अलग–अलग होने के कारण सूक्ष्म रूप से लग्न स्पष्ट कर सकना कठिन ही है। इसका मुख्य कारण यह है कि प्राचीन पद्धति अर्थात् पंचांग द्वारा लग्न स्पष्ट करने के लिए जन्म स्थान का शुद्ध सूर्योदय जानना अति आवश्यक है क्योंकि लग्न की शुद्धता सूर्योदय की शुद्धता पर ही निर्भर करती है। यह तो स्पष्ट है कि प्रत्येक स्थान पर एक समय पर सूर्योदय नहीं होता और किसी स्थान का लग्न व इष्ट्यादि बनाने के लिए वहां का सूर्योदय का ज्ञान अति आवश्यक है। पंचांग की सहायता से भिन्न–भिन्न स्थानों का सूर्योदय जानना पड़ता है। जिसमें परिश्रम करने पर भी कुछ–न–कुछ अन्तर पड़ जाता है तथा इसी कारण पंचांग की सहायता से जन्म लग्न एवं जन्म कुण्डली बनाना प्रायः अशुद्ध होता है। यही नहीं सिद्धान्त में भी मतभेद है तथा सभी अपने–अपने सिद्धान्त को प्रामाणिक मानते हैं। फिर भी हमने पंचांग द्वारा लग्न निकालने, जन्म कुण्डली बनाने तथा सम्पूर्ण जन्मकुण्डली रचना की विस्तृत जानकारी दी है ताकि यदि पाठक चाहें वी इस विधि द्वारा कुण्डली बना सके।

साम्पातिक काल द्वारा लग्न स्पष्ट करने, जन्म कुण्डली निर्माण के लिए सूर्योदय की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। साम्पातिक काल द्वारा सूक्ष्म, शुद्ध एवं प्रामाणिक लग्न सरलता के कुछ मिन्टों ही जाना जा सकता है। पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिक काल पद्धाति को अपनाया है और वह इसी को एकमत होकर मान्यता देते हैं। साम्पातिक काल द्वारा विश्व के किसी भी स्थान का शुद्ध, सूक्ष्म एवं प्रामाणिक लग्न कुछ मिन्टों में जाना जा सकता है। अव यहां इसी पद्धति द्वारा

लग्न सपष्ट करने, कुण्डली बनाने व जन्मपत्री निर्माण की विधि का विवेचन किया जाएगा। पाठक चाहें तो इस विधि द्वारा कुण्डली निर्माण कर सकते हैं। हमारा मत तो यह है कि इस नवीन विधि को ही अपनाया जाना चाहिए क्योंकि इससे सूक्ष्म व प्रामाणिक लग्न निकाला जा सकता है, और इस विधि में कोई मतभेद भी नहीं है। अतः साम्पातिक काल द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि दी जा रही है।

साम्पातिक काल द्वारा लग्न स्पष्ट—साम्पातिक काल क्या है, इसके सम्बन्ध में बताया जा चुका है। यहां साम्पातिक द्वारा लग्न स्पष्ट करने के लिए क्या–क्या आवश्यक है बताया जाता है।

साम्पातिक काल द्वारा लग्न स्पष्ट करने के लिए यह उपकरण होने आवश्यक है।

1. जन्म तारीख
2. जन्म समय
3. जन्म स्थान
4. जन्म स्थान का अक्षांश, रेखांश
5. सम्बन्धित वर्ष की एफेमेरीज
6. लग्न तालिका पुसतिका अर्थात् टेबुल्स ऑफ असेन्डेंट्स् लाहिरी या अन्य (TABLES OF ASCENDANTS)
7. भाव तालिका पुसतिका अर्थात् टेबुल्स आफ हाउसस् राफेल या अन्य (TABLES OF HOUSES)

यदि आपके पास यह पुस्तके तथा विवरण है तो आप विश्व में किसी भी स्थान का कुछ मिनटों में सूक्ष्म लग्न सरलता से निकाल सकते हैं।

इष्टकालिक साम्पातिक काल—जैसे पंचांग द्वारा कुण्डली निर्माण में सूर्योदय को लेकर इष्काल बनाया गया था उसी तरह इसी विधि द्वारा 12 बजे या जो जिस समय का एफेमेरीज में साम्पातिक काल दिया हो (प्रायः 12 दोपहर या 5.30 प्रातः का ही होता है) उसको लेकर समय के अनुसार इष्टकालिक साम्पातिक काल बनाना पड़ता है। इसी इषृकालिक साम्पातिक काल को लेकर एफेमेरीज व टेबुल्स आफ असेन्डेंट्स् पुस्तिका में दी गई तालिका की सहायता से तुरन्त लग्न स्पष्ट किया जाता है। सर्वप्रथम इस विधि द्वारा दो–तीन उदाहरण लग्न स्पष्ट करने की देते हैं ताकि पाठक इस विधि से पूर्णातयः परिचित हो सकें।

यहां ध्यान रखें कि प्रत्येक लग्न सपष्ट करने से पूर्व आपके पास सभी उपकरण हो तथा जिसका भी लग्न स्पष्ट करना है, उसका पूर्ण विवरण अलग नोट किया जाना चाहिए जैसेः–

1. जन्म तारीख

2. जन्म समय (भारतीय मानक समय)

यहां यह भी ध्यान रखें कि यदि भारत के किसी स्थान का 1942 से सन् ई० 1945 के बीच का लग्न स्पष्ट करना हो तो स्टैंडर्ड टाइम अर्थात् भारतीय मानक समय से 1 घंटा घटाकर और फिर देशान्तर संस्कार अथवा स्थानीय समय संस्कार करके ही स्थानीय मध्यम समय निकालना चाहिए क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण 1 सितम्बर 1942 से 14 अक्तूबर 1945 तक भारतीय मानक समय 1 घंटा बढ़ा दिया गया था।

3. जन्म स्थान अक्षांश व रेखांश

4. स्थानीय समय संस्कार

5. साम्पातिक काल संस्कार उस स्थान के लिए 1 भारत के सभी स्थानों के लिए यह संस्कार तुच्छ सा अर्थात् 10 सैकण्ड तक का ही होता है।

6. 12 दोपहर का साम्पातिक काल

7. जन्म तारीख, मास, सन् ई० का अयनांश।

इस जाने गए विवरण पर से सरलता से लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्न स्पष्ट विधि—(क) साम्पातिक काल विधि द्वारा लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम जन्म समय जो घड़ी का समय अर्थात् भारतीय मानक समय होता है देशान्तर संस्कार अर्थात् स्थानीय समय संस्कार करके स्थानीय मध्यम समय जाना जाता है।

2. जब स्थानीय समय प्राप्त कर लिया जाए तो फिर जिस समय का एफेमेरीज में सम्पातिक काल दिया गया हो जो प्रायः 12 बजे दोपहर का दिया होता है, अन्तर निकाला जाता है, अर्थात् स्थानीय मध्यम समय दिए गए साम्पातिक काल से कितने घंटे कम या अधिक है जाना जाता है।

3. साम्पातिक काल से जन्म समय स्थानीय मध्यम काल का एक संस्कार फिर किया जाता है। प्रति एक घंटे के लिए यह संस्कार 10 सैकण्ड का होता है। जितने घंटे—मिनट स्थानीय मध्यम समय व 12 बजे के दिये गए साम्पातिक समय में अन्तर हो प्रति एक घंटे के 10 सेकण्ड के हिसाब से ज्ञात कर लें या तालिका से देख लें। जितने भी मिन्ट सेकण्ड प्राप्त हो वह स्थानीय मध्यम समय में जोड़ देने चाहिए तथा योग फल नोट कर लें।

4. जो क्रम नं: 3 में योगफल प्राप्त हो उसे यदि जन्म समय 12 बजे दोपहर से कम है तो 12 बजे के साम्पातिक काल से घटा दें और यदि जन्म समय 12 बजे दोपहर से अधिक है तो 12 बजे के साम्पातिक काल में जोड़ दें। ऐसा करने पर जो फल प्राप्त होगा वह इष्टकालिक साम्पातिक काल होगा। इसी साम्पातिक काल से लग्न स्पष्ट किया जाएगा।

5. जो एफेमेरीज (लाहिरी) में 12 बजे का साम्पातिक काल दिया है वह जैसे दिया है वैसे ही उपयोग किया जा सकता है। क्योंकि उस साम्पातिक काल का शोधन संस्कार करने की इतनी आवश्यकता नहीं है क्योंकि भारत के सभी स्थानों के लिए यह संस्कार 1 से 10 सैकण्ड तक ही है परन्तु यदि यह शोधन संस्कार भी करना हो तो यह एफेमेरीज में दिया होता है और यह संस्कार जो कुछ सैकण्डों का ही है, 12 बजे के साम्पातिक काल में घटाने/जोड़ने से लग्न निकालने के लिए 12 बजे का सूक्ष्म साम्पातिक काल प्राप्त हो जाएगा। इस साम्पातिक काल से क्रम नं: 3 का योगफल जैसे क्रम नं: 4 में बताया गया है, जोड़ने–घटाने से इष्टकालिक साम्पातिक काल प्राप्त हो जाएगा। इस से तुरन्त सूक्ष्म लग्न जाना जाएगा।

(ख) इष्टाकालिक साम्पातिक काल ज्ञात करने के उपरान्त लग्न सारणी पुस्तक अर्थात् टेबुल्स ऑफ असेन्डेंट्स् (लाहिरी) की सहायता से लग्न प्राप्त किया जाता है। यदि इष्टकालिक सम्पातिक काल के घंटे, मिन्टों, सैकण्डों के राशि अंश कला हों तो वही राशि अंश कला लग्न होगा। यदि इष्कालिक साम्पातिक काल के घंटे मिनट सैकण्ड समान रुप में न मिले तो वहां दी गयी अनुपात सारणी से अपने इष्टकालिक साम्पातिक काल के राशि अंश कला जाने जा सकते है। इनमें से अयनांश घटाने से निरयन लग्न स्पष्ट होगा।

(ग) टेब्लुस्स ऑफ असेन्डेंट्स् की सहायता से लग्न निकाल लेने से पश्चात् उसी इष्टकालिक साम्पातिक काल से दशम लग्न सारणी से दशम भाव ज्ञात कर लिया जाता है। इसमें से अयनांश संस्कार करके दशम लग्न प्राप्त हो जाता है।

(त) लग्न और दशम भाव जान लेने के बाद जिस विधि से पंचांग द्वारा जन्म कुण्डली निर्माण में अन्य भाव स्पष्ट किए थे, अन्य भाव स्पष्ट कर लेने चाहिए।

(थ) भाव स्पष्ट कर लेने के उपरान्त सभी ग्रह जैसे ''पंचांग द्वारा जन्म कुण्डली निर्माण'' में स्पष्ट किए थे, कर लेने चाहिए।

(द) ग्रह स्पष्ट कर लेने के पश्चात् जन्म लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली, चलित चक्र व अन्य सभी या जितने चक्र चाहें बना लेने चाहिए। पंचघा मैत्री चक्र भी बना लें।

(घ) अन्त में दशा–अन्तर्दशा–प्रत्यन्तर्दशा आदि तालिका बनानी चाहिए। जब यह सब जानकारी पूर्ण रूप से तैयार हो जाए तो जन्मपत्री लेकर (प्रायः छपी हुई मिल जाती है, यदि न मिले तो कापी ले लें) जन्मपत्री में पहले पृष्ठों पर सर्वप्रथम जन्म सम्बन्धी पूर्ण विवरण व अन्य जानकारी लिखें। उस के पश्चात् अन्य सभी कुण्डलियां एवं दशा चक्र बना देने चाहिए।

यदि आप शनैःशनैः इस प्रकार आगे बढ़ेंगे तो किसी तरह की कठिनाई नही होगी और थोड़े समय में ही दशवर्गी जन्मपत्री तैयार हो जाएगी। अब साम्पातिक काल द्वारा इष्टकाल बनाने अर्थात् इष्कालिक साम्पातिक काल जानने तथा लग्न व दशम भाव स्पष्ट करने की विधि कुछ उदाहरण लेकर स्पष्ट करेंगे।

उदाहरण—1 किसी बालक का जन्म अमृतसर म दिनांक 20-10-1999, प्रातः 9-15 IST हुआ। इसका लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करना है।

1. जन्म विवरण नोट किया जैसेः—

1.	जन्म तारीख	=	20-10-1999
2.	जन्म समय	=	9-15 प्रातः भारतीय मानक समय
3.	जन्म समय	=	अमृतसर
4.	जन्म स्थान का अक्षांश उतर	=	31^0-38'
	रेखांश पूर्व	=	74^0-53'
5.	स्थानीय समय संस्कार एफेमेरीज से नोट किया	=	30 मिन्ट 28 सैकण्ड
6.	अयनांश नोट किया	=	23^0-51'
7.	एफेमेरीज से 12 बजे दोपहर का साम्पातिक काल नोट किया	=	घंटे 13 मिनट 53 सैकण्ड 09
8.	साम्पातिक काल का शोधन संस्कार नोट किया	=	+ 05 सैकण्ड

2. सर्वप्रथम जन्म समय को स्थानीय समय संस्कार करके स्थानीय मध्यम समय बनाएंगे। स्थानीय समय संस्कार (–) 30-28 नोट किया, अतः ऋण होने से जन्म समय से घटाया।

		घंटे	मिन्ट	सैकण्ड
जन्म समय	=	9	15	00
संस्कार किया	=	–	30	28
स्थानीय मध्यम समय	=	8	44	32

इस तरह स्थानीय मध्यम समय 8 घंटे 44 मिन्ट 32 सैकण्ड प्राप्त हुआ। अब वह देखता है कि इस समय का 12 बजे से कितना अन्तर है अर्थात् कितना कम या अधिक है। हमारा जन्म समय 12 से पहले का है अतः यह देखेंगे कि समय का 12 से कितना अन्तर है।

3. क्योंकि साम्पातिक काल 12 बजे का दिया हुआ है अतः

यह देखेंगे कि स्थानीय मध्यम समय 12 बजे से कितना कम है क्योंकि समय 12 बजे से पहले का है, अतः 12 बजे से घटाना होगा।

			घंटे	मिन्ट	सैकण्ड
1.	साम्पातिक 12 बजे का है अतः दोपहर 12 बजे लिए	=	12	0	0
2.	स्थानीय मध्यम समय घटाया	=	8	44	32
3.	स्थानीय समय और 12 बजे का अन्तर	=	3	15	28

4. अब स्थानीय समय और12 बजे का जो अन्तर अर्थात् 3 घंटे 15 मिन्ट 28 सैकण्ड प्राप्त हुए है, इनका प्रत्येक एक घंटे के लिए 10 सैकण्ड के हिसाब से शोधन संस्कार करना है।

			घंटे	मिनट	सैकण्ड
1.	समय जो प्राप्त हुआ	=	3	15	28
2.	3 घंटे का शोधन संस्कार प्रति एक घंटे का 10 सैकण्ड के हिसाब से।	=			30
3.	15 मिन्ट 28 सैकण्ड के	=			2
	योगफल	=	3	16	00

5. अब हमने शुद्ध अन्तर ज्ञात कर लिया है। इसे 12 बजे के दिनांक 20 अक्तूबार के साम्पातिक काल से घटाना होगा क्योंकि हमारा जन्म समय 12 बजे से पहले का है।

6. 20 अक्तूबर को 12 बजे साम्पातिक काल 13–53–9 है और साम्पातिक काल शोधन संस्कार एफेमेरीज में +05 सैकण्ड लिखा है अतः सूक्ष्म एवं शुद्ध 12 बजे का साम्पातिक काल जानने के लिए यह शोधन संस्कार किया। जैसे पहले बताया है यदि यह शोधन संस्कार न भी करें तो कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता परन्तु हम यहां करेंगे।

			घंटे	मिनट	सैकण्ड
1.	12 बजे दिनांक 20 अक्तूबर को साम्पातिक काल	=	13	53	09
2.	शोधन संस्कार	=		+	05
	योगफल	=	13	53	14

	घंटे	मिन्ट	सैकण्ड
7. अब शुद्ध साम्पातिक काल से जो समय अन्तर प्राप्त किया था घटाया। साम्पातिक काल =	13	53	14
समय अन्तर जो पहले. प्राप्त किया घटाया =	3	16	00
इष्टकालिक साम्पातिक काल =	10	37	14

इस तरह जन्म समय 9–15 प्रातः का इष्टकालिक साम्पातिक काल 10 घंटे 37 मिनट सैकण्ड स्पष्ट हुआ। इससे लग्न एवं दशम लग्न जाना जाएगा।

इष्टकालिक साम्पातिक काल से लग्न स्पष्ट—जो उदाहरण ली गयी है उसका इष्टकालिक साम्पातिक काल अथवा जन्म समय का साम्पातिक काल प्राप्त कर लिया है। अब इस साम्पातिक काल से टेबुल्स ऑफ असेन्डंट्स् लाहिरी की सहायता से लग्न स्पष्ट करेंगे।

1. क्योंकि जन्म समय अमृतसर का है और अमृतसर का अक्षांश 31^0–38' है अतः टेबुल्स ऑफ असेन्डेंट्स् पुस्तक में लग्न सारणी का 31^0–38' बाला या इसके अति नजदीक अक्षांश बाला पृष्ठ देखा। इस पुस्तक में अक्षांश 31^0–38' की लग्न सारणी दी हुई है, अतः हम इसको उपयोग करेंगे।

2. अपना इष्टकालिक साम्पातिक काल 10 घंटे 37 मिनट 14 सैकण्ड है। यह साम्पातिक काल सारणी में ढूंढा। सारणी में 10 घंटे और 36 मिनट का लग्न और 10 घंटे 40 मिनट साम्पातिक काल का लग्न दिया है परन्तु अपना जन्म समय का इष्टकालिक साम्पातिक काल 10 घंटे 37 मिनट 14 सैकण्ड् है जो 10 घंटे 36 मिनट से 1 मिनट 14 सैकण्ड अधिक है। अतः

	रा	अंश	कला
(क) सारणी में 10 घंटे 36 मिन्ट साम्पातिक काल के राश्यंश =	7	5	26
(ख) 1 मिनट 14 सैकण्ड् के अंश कला =			14
(ग) 10 घंटे 37 मिन्ट 14 सैकण्ड के राश्यंश =	7	5	40

इस तरह इष्टकालिक साम्पातिक काल के 7 राशि 5 अंश 40 कला प्राप्त हुए अतः जन्म समय लग्न स्पष्ट हुआ वृश्चिक राशि के 5 अंश 40 कला। इससे अयनांश शोधन जो–51' हैं घटाया। 7^5–5^0–40' (–51) कला = 7^5–4^0–49' इस तरह लग्न स्पष्ट हुआ वृश्चिक रशि के 4 अंश 49 कला पर।

यहां यह बताना उचित रहेगा कि सारणी में 10 घंटे 36 मिनट के राश्यंश दिए हुए है। सारणी में 10 घंटे 40 मिनट के भी राश्यंश दिए हुए है। अपना साम्पातिक काल 10 घंटे 36 मिनट से 1 मिनट 14 सैकण्ड अधिक है। लग्न सारणी के उसी पृष्ठ पर अनुपात के अनुसार कितने अंश कला हो सकते हैं भी दिए हुए है जो साधारण गणित द्वारा निकाल लेने चाहिए जैसे–

1. साम्पातिक काल 10 घंटे 36 मिनट का लग्न $7^5-5^0-26'$
2. साम्पातिक काल 10 घंटे 40 मिनट का लग्न 7–6–16

क्योंकि लग्न बढ़ रहा है अतः देखा कितने समय में कितना बढ़ता है। इसके लिए क्रंम 2 से क्रम 1 घटाया

	घं	मिं				
समय	10	40	राश्यंश	7^5	6^0	16'
	–10	36		–7	5	26
	0	4			0	50

इससे स्पष्ट हो गया कि 4 मिनट साम्पातिक काल में लग्न 50 कला बढ़ता है। यदि 4 मिनट में 50 कला बढ़ता है तो अपना समय 1 मिनट 14 सैकण्ड, 10 घंटे 36 मिनट से अधिक है। अतः 1 मिनट 14 सैकण्ड के अंश कला प्राप्त करके 10 घंटे 36 मिनट के लग्न स्पष्ट में जोड़ देने से इष्टकालिक साम्पातिक काल का लग्न स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा।

उसी पृष्ठ पर जो अनुपातिक सारणी दी है वहां लिखा है कि यदि 4 मिनट में 50 कला लग्न बढ़े तो 1 मिनट में 13 कला बढ़ता है परन्तु अपना समय 1 मिनट 14 सैकण्ड है अतः 14 कला ले लिए और 10 घंटे 36 मिनट के लग्न स्पष्ट में 14 कला और जोड़ कर जन्म समय के साम्पातिक काल का सूक्ष्म लग्न स्पष्ट कर लिया। अतः निरयन लग्न स्पष्ट वृश्चिक $4^0-49'$हुआ।

दशम लग्न स्पष्ट–जो लग्न समय का साम्पातिक काल ज्ञात किया है उसी से अब दशम लग्न जानेंगे। दशम लग्न जानने की भी वही विधि है जो लग्न जानने की थी। टेबुल्स ऑफ असेन्डेट्स् पुस्तक में दशम लग्न सारणी पृष्ठ खोला। दशम लग्न सारणी सभी अक्षांश के लिए एक ही होती है। इस लिए दशंम लग्न के लिए सब स्थानों के लिए इसका ही उपयोग करना होता है। हमारा जन्म समय का इष्टकालिक साम्पातिक काल है–

		घंटे	मिन्ट	सैकण्ड
1.	जन्म समय का साम्पातिक काल	10	37	14
2.	सारणी में 10 घंटे 36 मिनट साम्पातिक काल के दशम लग्न राश्यंश =	4^s	14^0	18'
	सारणी में 10 घंटे 40 मिनट साम्पातिक काल का दशम लग्न राश्यंश =	4^s	15^0	22'
3.	10 घंटे 40 मिनट (–) 10 घंटे 36 मिनट अर्थात् 4 मिनट में लग्न बढ़ा =	4^s	15^0	22'
	=	–4	14	18
	=	0	1	04
4.	1 अंश 4 कला, 4 मिनट में और अपना समय 10 घंटे 36 मिनट से 1 मिनट 14 सैकण्ड अधिक है अतः 1 मिनट 14 सैकण्ड के लिए अनुपातिक सारणी में देखा तो अंशादि प्राप्त हुए =	16 कला		
5.	साम्पातिक काल 10 घंटे 36 मिनट का दशम लग्न स्पष्ट =	4^s	14^0	18'
	1 मिनट 14 सैकण्ड का =		+	16
	10 घंटे 37 मिनट 14 सैकण्ड का =	4	14	34
	अयनांश शोधन संस्कार किया =		–	51
	=	4	13	43

अतः दशम लग्न स्पष्ट हुआ सिंह राशि के 13 अंश 43 कला।

लग्न स्पष्ट और दशम लग्न स्पष्ट को लेकर अन्य भाव स्पष्ट पंचांग द्वारा जन्म कुण्डली रचना में दी गयी विधि अनुसार स्पष्ट करने चाहिए। हमारा परामर्श है भाव स्पष्ट अगले पृष्ठों में दी गयी प्लैसिडस विधि द्वारा करने चाहिए विशेषकर जब जन्मपत्री रचना साम्पातिक काल विधि द्वारा की जाए।

उदाहरण 2—जो पहले उदाहरण ली थी उसका जन्म समय 12 बजे से पहले का था। अब एक और उदाहरण लेते हैं जिसका जन्म समय 12 बजे दोपहर से बाद का है और स्थान भी और है। किसी

बालक का जन्म दिल्ली में 5-12-1999 को 2 बजकर 50 मिनट दोपहर उपरान्त भारतीय मानक समय, दिन रविवार को दिल्ली में हुआ। इसका लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करना है। अतः जन्म विवरण एवं अन्य तथ्य नोट किए-

1. जन्म तारीख = 5-12-1999
2. जन्म समय = 2-50 बाद दोपहर IST
3. जन्म स्थान = दिल्ली
4. जन्म स्थान का
   अक्षांश उतर = 28°-39'
   रेखांश पूर्व = 77°-13'
5. स्थानीय समय संस्कार
   एफेमेरीज से नोट किया = -21 मिं 8 सैं.
6. अयनांश दिनांक
   5-12-99 का = 23°-51'-06"
7. एफेमेरीज से 12 बजे दोपहर का साम्पातिक काल लिया = घंटे 12, मिनट 54, सैकण्ड 30
8. साम्पातिक काल का शोधन संस्कार एफेमेरीज से नोट किया = + 03 सैकण्ड

1. सर्वप्रथम जन्म समय को स्थानीय समय, स्थानीय समय संस्कार करके बनाया।

		घंटे	मिनट	सैकण्ड
1. जन्म समय बाद दोपहर	=	2	50	0
2. शोध संस्कार घटाया	=	–	21	8
3. स्थानीय मध्यम समय	=	2	28	52

2. यह समय 12 बजे दोपहर से 2 घंटे 28 मिनट 52 सैकण्ड अधिक है क्योंकि साम्पातिक काल 12 बजे का है अतः

12 बजे और स्थानीय मध्यम समयान्तर

	=	2	28	52
अर्थात्	=	14	28	52
	=	–12	0	0
	=	2	28	52

2 घंटे 28 मिनट 52 सैकण्ड का प्रति एक घंटे के लिए दस सैकण्ड का शोधन संस्कार, जन्म समय 12 बजे बाद होने कारण जोड़ा = 0 0 24

शुद्ध समयान्तर योगफल = 2 29 16

3. 12 बजे का एफेमेरीज में साम्पातिक काल = 16 54 30

साम्पातिक काल स्थान का शोधन = + 3

12 बजे का साम्पातिक काल योगफल = 16 54 33

4. अपना जन्म समय 12 बजे से अधिक होने से कारण साम्पातिक काल में जन्मसमय अन्तर जोड़ा–

12 बजे साम्पातिक काल	=	16	54	33
समय अन्तर	=	2	29	16
योगफल	=	19	23	49

जन्म समय का इष्टकालिक साम्पातिक काल 19 घंटे 23 मिनट 49 सैकण्ड। इससे लग्न और दशम लग्न स्पष्ट लग्न सारणी की सहायता से किया जाएगा।

(क) सारणी में जो दिल्ली अक्षांश के लिए अर्थात् 28°–39' के लिए है 19 घंटे 20 मिनट के राश्यंश = 0^5 4° 57'

(ख) 3 मिनट 49 सैकण्ड के कलादि = +1 19

= 0 6 16

1–19.24 का लग्न 0^5–6°–17'
19.20 का लग्न 0–4–57
अन्तर बढ़ा 0–1–20

घ. मि. सै.

2–अपना समय स:काल 19–23–49 = अयनांश – 51
सारणी में से 19–20 – 0 शोधन संस्कार
अधिक 3–49 = 0 5 25

3– 4 मिनट में 1 अंश 20 कला बढ़ता है 3 मिनट 49 सैकण्ड में कितना? सारणी में देखा 1 अंश 19 कला

(ग) निरयन लग्न स्पष्ट मेष राशि के 5 अंश 25 कला।

दशम लग्न–जिस इष्टकालिक साम्पातिक काल से लग्न स्पष्ट किया उसी का दशम लग्न स्पष्ट करने में उपयोग करना है जोकि 19 घंटे 23 मिनट 49 सैकण्ड है।

1. सारणी में 19 घंटे 20 मिनट के दशम लग्न सारणी में राश्यंश	=	8^{s}	25^{0}	28'
2. सारणी में 3 मिनट 49 सैकण्ड के कलादि आदि	=		+	55
3. इष्टकालिक साम्पातिक काल 19 घंटे 23 मिनट 49 कला का दशम लग्न स्पष्ट	=	8	26	23

1– 19 घंटें 24 मिंनट के लिए	8^{s}–26^{0}–24	= धनु 26^{0} 23'
2– 19 घंटे 20 मिनट के लिए	8–25–28	= अयनांश शोधन संस्कार –51
3– अन्तर बढ़ता है	0–0–56	दशम 25^{0}–32'
4– अपना समय सं:कः	19–23–49	लग्न धन स्पष्ट
5– 19–20 से अधिक	19–20–0	
6– कितना अधिक ?	0–3–49	

7– 4 मिनट के लिए दशम लग्न 56 कला बढ़ता है तो 3 मिनट 49 के लिए कितना होगा? 55 कला प्राप्त हुआ।

अतः दशम लग्न धनु राशि 25 अंश 32 कला स्पष्ट हुआ। लग्न और दशम लग्न को लेकर पंचांग द्वारा जन्म कुण्डली विधि द्वारा अन्य भाव स्पष्ट करने चाहिए।

पाठकों को चाहिए कि साम्पातिक काल जानकर जन्म समय का साम्पातिक काल जानने अर्थात् इष्टकालिक साम्पातिक काल जाननें, लग्न एवं दशम लग्न जानने का वार–वार अभ्यास करें। यहां उदाहरणों में जो अयनांश जो घटाया गया है वह टेबल्स ऑफ असेन्डेंट्स् के अनुसार है क्योंकि इसमें शेष अयनांश पहले ही घटाया हुआ है। यदि ऐसा संकेत न हो तो उस दिनांक मास, वर्ष का पूर्ण अयनांश घटाना चाहिए।

साम्पातिक काल द्वारा सम्पूर्ण जन्मपत्री निर्माण

उदाहरण 3–इस उदाहरण में यहां उसी बालक का लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करेंगे तथा सम्पूर्ण जन्मपत्री बनाएंगे जिसकी पंचांग द्वारा बनाई थीं ताकि पाठक इस विधि से पूर्णतया परिचित हो सकें और पंचांग द्वारा जन्म कुण्डली निर्माण में और साम्पातिक काल विधि द्वारा

जन्म कुण्डली निर्माण में साथ–साथ अन्तर भी जान सकें। यह हम फिर स्मरण कराते हैं कि साम्पातिक काल विधि सरल एवं प्रामाणिक है।

बालक का जन्म चण्डीगढ़ में दिनांक 15–4–2000, दिन शनिवार को प्रातः 10–30 भारतीय मानक समय पर हुआ था। अब साम्पातिक कल विधि से इस बालक की जन्मपत्री बनाएंगे। जन्म एवं अन्य विवरण नोट किए।

1. जन्म तारीख = 15–5–2000
2. जन्म समय = प्रातः 10 बजकर 30 मिनट
3. ज़न्म स्थान = चण्डीगढ़
4. जन्म स्थान का
   अक्षांश उतर = 30°–44'
   रेखांश पूर्व = 76°–52'
5. स्थानीय समय संस्कार = 22मिनट–32सैकण्ड
6. अयनांश दिनांक
   15–4–2000 शोधन = –52 सैकण्ड
7. 12 बजे का साम्पातिक काल

शोधन सहित दिनांक		घंटे	मिनट	सैकण्ड
15–4–2000	=	1	34	55

1. सर्वप्रथम जन्म समय जो भारतीय मानक समय में है, को स्थानीय सश्यम समय बनाएंगे और फिर स्थानीय समय और 12 बजे का अन्तर जानेंगे क्योंकि साम्पातिक काल 12 बजे का है। प्राप्त अन्तर का 10 सैकण्ड प्रति घंटा शोधन संस्कार करके शुद्ध समयान्तर आ जाएगा क्योंकि अपना जन्म समय 12 बजे से कम हैं, अतः 12 बजे के साम्पातिक काल से उस प्राप्त समयान्तर को घटाएंगे और जो फल प्राप्त होगा, वह इष्टकालिक साम्पातिक काल होगा जिससे लग्न ज्ञात किया जाएगा।

		घंटे	मिनट	सैकण्ड
1. जन्म समम I.S.T प्रातः	=	10	30	0
2. स्थानीय शोधन संस्कार	=	–	22	32
3. स्थानीय मध्यम समय	=	10	7	28

2. 10 घंटे 7 मिनट 28 सैकण्ड का 12 से अन्तर निकाला।

	=	12	0	0
	=	10	7	28
समयान्तर	=	1	52	32
1. 12 बजे और स्थानीय मध्यम समयान्तर	=	1	52	32

2. 10 सैकण्ड प्रति घंटा के हिसाब से 1 घंटा 52 मिनट 30 सैकण्ड का शोधन संस्कार किया अथवा जोड़ा	=		+	18
शुद्ध समयान्तर योगफल	=	1	52	50
3. 1. दिनांक 15–4–2000 का साम्पातिक काल शोधन सहित टेबुल्स ऑफ असेन्डेट्स् से लिया	=	1	34	55
2. शुद्ध समयान्तर घटाया क्योंकि अपना जन्म समय 12 बजे से कम है। (–)	=	1	52	50
3. प्राप्त इष्टकालिक साम्पातिक काल	=	23	42	5
4. 1. लग्न सारणी जो 31 अक्षांश की है से 23 घंटे 40 मिनट के राश्यंश	=	2^{s}	16°	5°
2. दो मिनट 5 सैकण्ड का मान अनुपातिक तालिका से प्राप्त	=		+	26
3. इष्टकालिक साम्पातिक काल 23 घंटे 42 मिनट 5 सैकण्ड के राश्यंश	=	2	16	31
4. लग्न सारणी से अयानांश शोधन संस्कार नोट कर घटाया	=		–	52
5. 23 घंटें 42 मिनट 5 सैकण्ड इष्टकालिक	=	2	15	39
साम्पातिक काल का लग्न स्पष्ट	=	मिथुन	15°	39

अतःनिरयन लग्न स्पष्ट हुआ मिथुन राशि 15 अंश 39 कला

दशम लग्न स्पष्टः– जिस इष्टकालकि साम्पातिक काल से लग्न स्पष्ट किया है उसी से दशम लग्न स्पष्ट करना होता है।

अतः इष्टकालिक सं: क:		23–	42–	5
1. दशम लग्न सारणी से 23 घंटे 40 मिनट के राश्यंश	=	11	1°	33

2. दो मिनट 5 सैकण्ड का मान अनुपातिक तालिका द्वारा प्राप्त किया और जोड़ा	=		+	32
3. इष्टकालिक साम्पातिक काल अर्थात् 23 घंटे 42 मिनट 5 सैकण्ड के राश्यंश	=	11	2	5
4. लग्न सारणी से अयनांश शोधन	=		−	52
दशम निरयन लग्न स्पष्ट	=	11	1	13

अतः दशम लग्न स्पष्ट हुआ मीन $1^{0}-13'$

भाव स्पष्ट—लग्न जिसे प्रथम भाव कहा जाता है तथा दशम भाव स्पष्ट कर दिए गए है। अब अन्य भाव जैसे पंचांग द्वारा लग्न कुण्डली में स्पष्ट किए थे, उसी विधि अनुसार भाव स्पष्ट करने होते हैं।

		राशि	अंश	कला	बिकला
1. सर्वप्रथम लग्न अर्थात् प्रथम भाव	=	2	15	39	−
2. 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
3. सप्तम भाव स्पष्ट	=	8	15	39	−
4. दशम लग्न अर्थात् दशम भाव स्पष्ट	=	11	1	13	−
5. 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
6. चतुर्थ भाव स्पष्ट	=	17	1	13	0
(यदि योग फल 12 से अधिक हो तो 12 घटा देने चाहिए)	=−	12	0	0	0
चतुर्थ भाव स्पष्ट	=	5	1	13	0

अन्य भाव—अन्य भाव स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम षष्ठांश निकाला जाता है षष्ठांश इस तरह निकाला गया –

		राशि	अंश	कला	विकला
1. दशम भाव स्पष्ट	=	11	1	13	0
2. 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
3. चातुर्थ भाव	=	5	1	13	0
में से लग्न घटाया	(−)	2	15	39	0
	=	2	15	34	0

4. षष्ठांश बनाने के लिए 6 का भाग किया

```
6 ) 2-15-34-0 ( 0
    0
    ----
    2
    30
    ----
    60
    15

6 ) 75 ( 12
    72
    ----
    3
    60
    ----
    180
    34

6 ) 214 ( 35
    18
    ----
    34
    30
    ----
     4
    60

6 ) 240 ( 40
    240
    ----
     ×
```

इस तरह षष्ठांश प्राप्त हुआ $0^s-12^\circ-35'-40''$ अर्थात् 0 राशि 12 अंश 35 कला 40 बिकला।

		राशि	अंश	कला	विकला
अब लग्न में	=	2	15	39	0
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	35	40
लग्न सन्धि	=	2	28	14	40
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	35	40
द्वितीय भाव	=	3	10	50	20
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	35	40

		राशि	अंश	कला	विकला
द्वितीय भाव सन्धि	=	3	23	26	00
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	35	40
तृतीय भाव	=	4	6	01	40
षष्ठाश जोड़ा	=	0	12	35	40
तृतीय भाव सन्धि	=	4	18	37	20
षष्ठांश जोड़ा	=	0	12	35	40
चतुर्थ भाव स्पष्ट	=	5	1	13	00
अब 30 अंश से					
पष्ठांश घटाया	=	0	30	0	0
षष्ठांश (–)	=	0	12	35	40
शेष	=	0	17	24	20
चतुर्थ भाव में	=	5	1	13	00
शेष को जोड़ा	=	0	17	24	20
चतुर्थ भाव सन्धि	=	5	18	37	20
शेष को जोड़ा	=	0	17	24	20
पंचम भाव	=	6	6	01	40
शेष को जोड़	=	0	17	24	20
पंचम भाव सन्धि	=	6	23	26	00
शेष को जोड़ा	=	0	17	24	20
षष्ठम भाव	=	7	10	50	20
शेष को जोड़ा	=	0	17	24	20
षष्ठम भाव सन्धि	=	7	28	14	40
शेष को जोड़ा	=	0	17	24	20
सप्तम भाव	=	8	15	39	00
लग्न सन्धि में	=	2	28	14	40
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
सप्तम भाव सन्धि	=	8	28	14	40

		राशि	अंश	कला	विकला
द्वितीय भाव में	=	3	10	50	20
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
अष्टम भाव	=	9	10	50	20
द्वितीय भाव सन्धि में	=	3	23	26	00
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
अष्टम भाव सन्धि	=	9	23	26	00
तृतीय भाव में	=	4	6	01	40
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
नवम भाव	=	10	6	01	40
तृतीय भाव सन्धि में	=	4	18	37	20
6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
नवम भाव सन्धि	=	10	18	37	20
चतुर्थ भाव	=	5	1	13	00
में 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
दशम भाव	=	11	1	13	00
चतुर्थ भाव सन्धि	=	5	18	37	20
में 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
दशम भाव सन्धि	=	11	18	37	20
पंचम भाव	=	6	6	01	40
में 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
एकादश भाव	=	0	6	1	40
पंचम भाव सन्धि	=	6	23	26	00
में 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
एकादश भाव सन्धि	=	0	23	26	00
षष्ठ भाव	=	7	10	50	20
में 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
द्वादश भाव	=	1	10	50	20
षष्ठ भाव सन्धि	=	7	28	14	40
में 6 राशि जोड़ी	=	6	0	0	0
द्वादश भाव सन्धि	=	1	28	14	40
शेष जोड़ा	=	0	17	24	20
लग्न स्पष्ट	=	2	15	39	00

लग्न स्पष्ट वही प्राप्त हुआ जो लिया गया था अतः हमारी गणना ठीक है।

सभी भाव स्पष्ट कर दिए गए है। अब द्वादश भाव स्पष्ट चक्र बनाया गया

द्वादश भाव स्पष्ट चक्र

भाव → राशि	1	सन्धि	2	सन्धि	3	सन्धि	4	सन्धि	5	सन्धि	6	सन्धि
राशि	2	2	3	3	4	4	5	5	6	6	7	7
अंश	15	28	10	23	6	18	1	18	6	23	10	28
कला	39	14	50	26	01	37	13	37	01	26	50	14
विकला	0	40	20	00	40	20	00	20	40	00	20	40
भाव	7	सन्धि	8	सन्धि	9	सन्धि	10	सन्धि	11	सन्धि	12	सन्धि
राशि	8	8	9	9	10	10	11	11	0	0	1	1
अंश	15	28	10	23	6	18	1	18	6	23	10	28
कला	39	14	50	26	01	37	13	37	1	26	50	14
विकला	00	40	20	00	40	20	00	20	40	00	20	40

ग्रह स्पष्ट–द्वादश भाव स्पष्ट कर लिए है। जन्म कुण्डली व अन्य कुण्डलियां बनाने के पूर्व जन्मपत्री रचना के लिए सभी प्रकार की जानकारी बना लेनी चाहिए। अब ग्रह स्पष्ट किए जाएंगे। सर्व प्रथम चन्द्रमा स्पष्ट करना होगा क्योंकि चन्द्रमा स्पष्ट से ही नक्षत्रादि व दशादि का ज्ञान होता है। सभी ग्रह जिस विधि अनुसार "पंचांग द्वारा जन्म कुण्डली" में स्पष्ट किए गए हैं उसी विधि द्वारा ग्रह स्पष्ट किए जाने चाहिए। उन पृष्ठों में ग्रह स्पष्ट की दो–तीन विधियां दी है। तीसरी विधि सब से सरल है अतः तीसरी विधि का उपयोग करना चाहिए। ग्रह स्पष्ट करने की यहां आवश्यकता नहीं है परन्तु फिर भी यहां चन्द्र सूर्य, स्पष्ट किए जाएंगे और यहां यह भी बताया जाएगा कि जब चन्द्र, सर्य, लग्न स्पष्ट हो जाए तो आप पंचांग के बगैर ही जन्म समय का नक्षत्र, चरण, तिथि, करण, योग आदि जान सकते हैं। अब सर्वप्रथम चन्द्र स्पष्ट किया जाएगा और तीसरी विधि जो पंचांग द्वारा जन्म कुण्डली कैसे बनाएं में दिया है का उपयोग करेंगे।

1. चन्द्र स्पष्ट–ग्रहादि स्पष्ट भारतीय मानक समय को लेकर करने चाहिए और लग्न स्पष्ट करने के लिए भारतीय मानक समय को स्थानीय मध्यम समय बनाकर उपयोग करना चाहिए। अतः हम यहां जन्म समय 10–30 प्रातः जो भारतीय मानक समय हैं, लेंगे। एफेमेरीज अथवा पंचांग में किसी निश्चित समय के ग्रह स्पष्ट (आमतौर पर 5.30 बजे प्रात) या 5.30 बजे सायंकाल के) दिए होते हैं। प्रत्येक ग्रह की दैनिक गति अर्थात् 24 घंटे की गति भी दी होती है, यदि गति न दी हो तो अभीष्ट तारीख व समय के ग्रह स्पष्ट के राश्यंश को अगली तारीख के समय व तारीख से घटाने पर 24 घंटे की गति प्राप्त की जा सकती है। अब सरल विधि द्वारा चन्द्र, सूर्य स्पष्ट किया जाएगा।

(क)		रा	अं	क	वि
1. दिनांक 16–4–2000 को 5.30 बजे प्रातः चन्द्र स्पष्ट	=	4	29	6	55
2. दिनांक 15–4–2000 को 5.30 बजे प्रातः चन्द्र स्पष्ट घटाया	=	4	15	36	47
3. चन्द्र की 24 घंटे की गति	=	0	13	30	8

(ख)		
1. जन्म समय भारतीय मानक समय	=	10 घंटे 30 मिनट
2. ग्रह स्पष्ट अथवा चन्द्र स्पष्ट समय जो एफेमेरी में दिया है घटाया	=	5 घंटे 30 मिनट
3. जिस समय के राश्यंश कला प्राप्त करने हैं।	=	5 00

5.30 बजे प्रातः का चन्द्र स्पष्ट दिया हुआ है और अपना समय 10–30 बजे का है अतः 5 घंटे के राश्यंश कलादि प्राप्त करके दिनांक 15–4–2000 के चन्द्र स्पष्ट में जोड़ देने से दिनांक 15–4–2000 का 10–30 बजे प्रातः का चन्द्र स्पष्ट हो जाएगा।

(ग) चन्द्रमा की गति 24 घंटे की 13 अंश 30 कला 8 विकला है तो 5 घंटे के राश्यंश कलादि कितने होंगे ?

1. दिनांक 15–4–2000 चन्द्र स्पष्ट	=	4	15	36	47
2. 24 घंटे में 13 अंश 30 कला की गति से 5 घंटे की गति ?	=	0	2	48	45
3. दिनांक 15–4–2000 को 10.30 प्रातः चन्द्र स्पष्ट	=	4	18	25	32

चन्द्र स्पष्ट 4 राशि 18 अंश 25 कला 32 बिकला प्राप्त हुआ।

2. सूर्य स्पष्ट—सर्वप्रथम सूर्य की दैनिक गति प्राप्त करेंगे। 24 घंटे की जितनी गति होगी उसके हिसाब से 5 घंटे की कलादि प्राप्त करेंगे, और दिनांक 15 अप्रैल 2000 के 5.30 बजे प्रातः के सूर्य स्पष्ट में जोड़ देने से दिनांक 15–4–2000 को 10–30 बजे प्रातः का सूर्य स्पष्ट प्राप्त हो जाएगा।

(क)

		रा	अं	क	वि
1. दिनांक 16–4–2000 को 5.30 बजे प्रातः सूर्य स्पष्ट	=	0	2	27	7
2. दिनांक 15–4–2000 को 5.30 बजे प्रातः सूर्य स्पष्ट घटाया।	=	0	1	28	24
3. सूर्य की 24 घंटे की गति	=	0	0	58	43

(ख)

1. सूर्य स्पष्ट का समय	=	5.30 प्रातः
2. जन्म समय प्रातः	=	10.30
अन्तर	=	5–00

समयान्तर 5 घंटे है। अतः 24 घंटे में सूर्य 58–43 अर्थात् 59 कला बढ़ता है तो 5 घंटे में कितना ? जो मान प्राप्त होगा, उसे दिनांक 15–4–2000 के 5.30 प्रातः के सूर्य स्पष्ट में जोड़ देने से दिनांक 15–4–2000 को प्रातः 10–30 बजे का सूर्य स्पष्ट हो जाएगा।

(ग)

		रा	अं	क	वि
1. दिनांक 15–4–2000 को 5.30 बजे सूर्य स्पष्ट	=	0	1	28	24
2. 24 घंटे में 59 कला की गति से 5 घंटे का मान	=	0	0	12	17
3. दिनांक 15–4–2000 को 10.30 प्रातः का सूर्य स्पष्ट हुआ	=	0	1	40	41

अतः दिनांक 15–4–2000 को प्रातः 10–30 बजे सूर्य स्पष्ट 0 राशि 1 अंश 40 कला 41 बिकला प्राप्त हुआ।

जब चन्द्र और सूर्य स्पष्ट कर लिए जाएं तो इन से सभी तरह की आवश्यक जानकारी जो जन्म समय की होगी मिनटों में प्राप्त की जा सकती है। अब चन्द्र नक्षत्र, तिथि आदि इन से ही ज्ञात किया जा सकता है।

चन्द्र नक्षत्र अथवा जन्म नक्षत्र—चन्द्र स्पष्ट 4 राशि 18 अंश 25 कला 32 बिकला है। सारणी से देखा (देखे सारणी) तो पता चला कि $4^s-13^\circ-20'$ से $4^s-26^\circ-40'$ तक पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र होता है। अपना चन्द्र स्पष्ट इन राश्यंश के भीतर का है अतः चन्द्र नक्षत्र अथवा जन्म नक्षत्र पूर्वाफाल्गुनी हुआ।

चन्द्र नक्षत्र का चरण—पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र का विस्तार $4^s-13^\circ-20'$ से $4^s-26^\circ-40'$ तक है। नक्षत्र के चार चरण होते है और प्रत्येक चरण $3^\circ-20'$ का होता है।

1. अतः यदि चन्द्र नक्षत्र पू.फा का आरम्भ	=	4^s	13°	$20'$
	+		3	20
2. तो प्रथम चरण तक होगा	=	4	16	40
	+		3	20
3. दूसरा चरण तक रहेगा	=	4	20	00
	+		3	20
4. तीसरा चरण तक होगा	=	4	23	20
	+		3	20
5. चौथा चरण तक होगा	=	4	26	40

अपना चन्द्र स्पष्ट $4^s-18^\circ-25'-32''$ है। यदि ध्यान से देखें तो यह राश्यश $4^s-16^\circ-40'$ और $4^s-20'-00''$ के बीच पड़ते हैं। अर्थात् $4^s-16^\circ-40'$ पर प्रथम चरण समाप्त हो जाता है और द्वितीय आरम्भ होता है जो $4^s-20^\circ-00'$ तक रहता है। अतः हमारे जन्म नक्षत्र का चरण द्वितीय हुआ।

अवकहडा चक्र—जब जन्मनक्षत्र और जन्मनक्षत्र का चरण ज्ञात कर लिया जाता है तो अवकहडा चक्र की आवश्यकता पड़ती है। यह चक्र प्रायः पचांगों में दिया होता है और इस पुस्तक के आखिरी प्रकरण में भी सुविधां के लिए दिया गया है। जन्म नक्षत्र एवं नक्षत्र चरण के अनुसार जातक का चरणाक्षर अथवा जन्माक्षर वर्ग, योनि, गण, नाड़ी आदि प्राप्त करके जन्मपत्री में लिखे जाते हैं।

1. **वर्ण**—अपनी उदाहरण की जन्म राशि सिंह है और नक्षत्र पूः फाल्गुनी का द्वितीय चरण है। अवकहडा चक्र देख तो वर्ण क्षत्रिय हुआ।

2. **जन्माक्षर**—क्योंकि जन्मनक्षत्र पूः फाल्गुनी का द्वितीय चरण है अतः जन्माक्षर 'टा' हुआ।

3. **गण, योनि आदि**—अवकहडा चक्र में सिंह राशि के पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण के अनुसार गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि

मूषक, वर्ग श्वान, और वश्य वनचर प्राप्त किए। इन सभी को जन्मपत्री में उपयुक्त स्थान पर अवश्य लिखना चाहिए।

चन्द्र स्पष्ट से ही जन्म समय की महादशादि निकाली जाती है। जिसकी विधि पिछले प्रकरण ''पंचांग द्वारा कुण्डली'' में दे दी गई है। इससे पूर्व जन्म समय की तिथि, योग आदि कैसे जाने की सरल विधि दी जा रही है।

जन्म तिथि—जब चन्द्र और सूर्य स्पष्ट कर लिया जाए तो सरलता से जन्म समय कौन सी तिथि थी जान सकते है। चन्द्रमा स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाने पर तिथि स्पष्ट हो जाएगी।

		रा	अं	क	वि
1. जन्म समय का चन्द्रमा स्पष्ट	=	4	18	25	32
2. जन्म समय का सूर्य स्पष्ट घटाया	=	0	1	40	41
	=	4	16	44	51

सारणी में (देंखे सारणी) देखा तो $4^{s}-16^{\circ}-44'-51''$ द्वादशी तिथि प्राप्त हुई। अतः जन्म समय द्वादशी शुक्ल पक्ष की थी।

दूसरी विधि—जन्म समय के चन्द्र से जन्म समय के सूर्य स्पष्ट घटाने से जो राश्यंश प्राप्त हों, उनके अंश बना लें तथा फल को 12 का भाग दें जो लब्धि आए, उसमें एक जोड़ देने से तिथि प्राप्त होगी। यदि शेष 6 से कम हों तो तिथि में प्रथम करण होगा और यदि 6 से अधिक हो तो दूसरा करण होगा। यदि 12 का भाग देनें पर 15 से अधिक संख्या हो तो तिथि कृष्ण पक्ष की होगी और 15 घटाने पर तिथि संख्या प्राप्त होगी जैसेः—

1. चन्द्र स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाने पर राश्यंश मिले—

$4^{s}-16^{\circ}-44'-51''$

×30 अंश बनाने के लिए

120

16

भाग दिया 12) 136−44'−51" (

132

$11-4^{\circ}-44'-51''$

एक जोड़ा +1

तिथि 12 शुक्ल पक्ष 1 शेष $4^{\circ}-44'-51''$ बचे हैं।

करण—जैसे पहले लिखा है शेष 4 अंश 44 कला 51 विकला बचे हैं। यह अंश, कला 6 अंश से कम है अतः द्वादशी तिथि में प्रथम करण हुआ जो सारमी में देखा बव है। अतः करण बव हुआ।

योग—जन्म समय का योग जानने के लिए चन्द्रमा और सूर्य के जन्म समय में राश्यंश जोड़ने पड़ते हैं। दोनों को जोड़कर जो योगफल प्राप्त होता है, सारणी से तुरन्त योग जाना जा सकता है। जैसे—

		रा	अं	क	वि
1. अपनी उदाहरण का सूर्य स्पष्ट	=	0	1	40	41
2. अपनी उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट	=	4	18	25	32
योगफल	=	4	20	6	13

सारणी ने देखा तो पता चला कि $4^5-13^0-20'$ से $4^5-26^0-40'$ तक वृद्धि योग होता है। अपनी उदाहरण का योगफल $4^5-20^0-6'-13''$ है और यह योगफल $4^5-13'-20''$ और $4^5-26^0-40'$ के भीतर है, अतः जन्म समय वृद्धि योग था।

यदि नक्षत्र, करण, योग के भुक्त एवं भोग्यांश भी ज्ञात करने हो तो सम्पूर्ण विस्तार के अनुसार तुरन्त जाने जा सकते हैं जैसे यदि योग के भुक्त एवं भोग्यांश जानने हो तो इसी तरह जानेंगे—

1. वृद्धि योग का पूर्ण विस्तार $13^0-20'$
2. वृद्धि योग $4^5-13^0-20'$ से $4^5-26^0-40'$ तक होता है अतः जन्म समय वृद्धि योग के राश्यंश—

$4^5-20^0-6'-13''$	वृद्धि योग
4–13–20–0	वृद्धि योग आरम्भ
0–6–46–13	भुक्तांश वृद्धि योग
0–6–33–47	भोग्यांश वृद्धि योग
13–20–00	पूर्ण वृद्धि योग अंश

इसी तरह तिथि, करण, नक्षत्र आदि के भी भुक्तांश एक भोग्यांश जान लेने चाहिए और पंचांग कैसे देखें में विधि अनुसार समय आरम्भ व समाप्ति भी निकाल सकते हैं।

अन्य ग्रह स्पट—सूर्य, चन्द्र स्पष्ट किया जा चुका है। अन्य ग्रह स्पष्ट भी करने चाहिए। अन्य ग्रह स्पष्ट करने की विधि भी वही है। इस लिए यहां जो हमने ग्रह स्पष्ट किए थे वही लेंगे क्योंकि अन्य ग्रहों के स्पष्ट राशि अंश में से कोई अन्तर नहीं है। इन का यहां ग्रह स्पष्ट चक्र दिया जाता है।

ग्रह स्पष्ट चक्र

ग्रह—राश्यंश	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	राहू	केतू
राशि	4	0	11	11	0	0	0	3	9
अंश	18	1	9	16	22	18	23	5	5
कला	25	40	32	32	57	35	19	28	38
बिकला	32	41	0	36	3	3	56	44	44

चलित चक्र—यह देखने के लिए कि ग्रह किस भाव में है चलित चक्र अवश्य बनाना चाहिए या स्पष्ट तालिका देनी चाहिए कि कौन सा ग्रह किस भाव में है। आमतौर पर यह तालिका ही आजकल दी होती है। जैसे पिछले पृष्ठों में लिखा गया है कि चलित चक्र या तालिका बनाने के लिए भाव स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट सामने रखने चाहिए तभी यह तालिका अथवा चक्र बन सकेगा। जैसे चन्द्रमा स्पष्ट $4^5-18^0-25'-32''$ पर है और तृतीय भाव का विस्तार $3^5-23^0-26'-00''$ से $4^5-18^0-27'-20''$तक है अतः चन्द्रमा तृतीय भाव में रहेगा। सूर्य स्पष्ट $0^5-1^0-40'-41''$ पर है और एकादश भाव का विस्तार $11^5-18^0-37'-20''$ से $0^5-23^0-26'-0''$ तक है अतः सूर्य एकादश भाव में लिखा जाएगा। इसी तरह ही अन्य ग्रह भी देखने चाहिए और एक तालिका बना लेनी चाहिए या चलित चक्र बनाना चाहिए।

भावों में ग्रह तालिका

ग्रह	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरू	शनि	राहू	केतू
किस भाव में	3	11	10	10	11	11	11	2	8

नवांश कुण्डली—साम्पातिक काल विधि द्वारा जो आजकल जन्मपत्र बनाए जाते हैं उनमें अधिकतर नवांश चक्र ही दिया होता है। जो हमने उदाहरण ली है इसका नवांश चक्र ही दिया होता है। जो हमने उदाहरण ली है इसका नवांश चक्र पहले ही बनाया जा चुका है। अतः वही चक्र रहेगा क्योंकि राश्यंश में कोई अन्तर नहीं है।

बालक के जन्म समय के सभी तथ्य जान लिए गए है। इन सब को जन्मपत्री में अंकित कर देना चाहिए। छपी हुई जन्म पत्रियां मिलती है, उनमें सभी जानकारी क्रमानुसार लिख देनी चाहिए। यदि चाहें तो अन्य चक्र अर्थात् सप्तवर्ग या दशवर्ग भी बना सकते हैं। सभी कुण्डलियां व चक्र लिखने से पूर्व जन्म विवरण लिखना चाहिए। यह दो प्रकार से लिखा जा सकता है एक तो पारम्पारिक प्रकार से लिखा जाता है जो प्रायः छपे हुए जन्मपत्र पर लिखा होता है और केवल वहां सम्बन्धित जानकारी अंकित करनी होती है। दूसरी विधि सरल है तथा उसमें सरल प्रकार से सब प्रकार का विवरण लिख दिया जाता है। आज कल यही प्रकार अधिक प्रचलित हो रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि सभी तरह की जानकारी जातक स्वयं जान लेता है और पारम्पारिक प्रकार से लिखा जन्म पत्र जातक को समझना अति कठिन होता है। यहां सर्व प्रथम पारम्पारिक प्रकार से जन्मपत्री लिखने की विधि दी है।

पारम्परिक जन्मपत्री लेखन

।। श्री गणेशाय नमः ।।

सजपति सिन्धुरवदनो देवो,
यत्यादपङ्कजस्माराम्।
वासरमणिखि तमसां
राशिंत्राशायति विघ्नानाम्।।
वक्रतुण्ऽमहाकाय सूर्यकोटि समः प्रभाः।
अविघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।
ललाटपट्टेलिखिता विधाता
ज्योतिष्मतीवस्तुधनान्धवेता।
तज्जन्मपत्रीं लिखितां विधते
दीपोयथावस्तु धनान्धकार।।

अथ शुभे विक्रम सम्वत्सरे 2057 शाके 1922 उतरायणे उतरगोले, वसन्त शुभे चैत्र मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथि द्वादशी शनि वासरे म.स घं 24 मिनट 21, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे घंटा 25 मिनट 7, वृद्धि योगे घंटा 21 मिनट 20 बव करणे घंटा 12 मिनट 53 दिनमानने घंटा 12 मिनट 47 रात्रिमानम् घंटा 11 मिनट 13, अहोरात्रमानम् 24 घंटा। मेषाऽर्कस्य गतांशः। शेषांश 29 तत्र श्री सूर्योदयादिष्टम 11 घटी 17 पल 30 विपल व 4 घंटा 31 मिनट एवं इष्टकालिक साम्पातिक काल 23-42-05 सूर्योदय कालः चण्डीगढ़ नगर 5 घंटा 59 मिनट सूर्यास्त काल 18 घंटे 46 मिनट मः स्टे. टा. तत्समय, मिथुन लग्नस्य स्पष्टोदयो, चणडीगढ़ नगरे श्रीमतः

(बाबा का नाम) तस्यात्मजस्य श्रीमतः (पिता का नाम) गृहे सुलक्षण भार्यायां दक्षिण कुक्षौ पुत्रः (वामकुक्षौ पुत्री) अजायत्।

तत्र होराचक्रानुमारोण भयात्म 9 घंटे 3 मिनट भभोग 23 घंटे 40 मिनट वशात् पूर्वाफाल्गुनी द्वितीय चरणे जनितत्वात् 'टा'काराघक्षर नाम। तस्य राशि सिंह स्वामी सूर्य वर्ण क्षत्रिय वथ्य वनचर गण मनुष्य योनि मूषक नाड़ी मध्य वर्ग श्वान अत्यादि सर्वन्तु विवाहे व्यापारे च चिन्तनीयम्।। शुभम्

दिनांक 15 अप्रैल, 2000 सन्० ई चण्डीगढ़ प्रातः 10–30 भा. स्टैं. टा. इष्टकालिक साम्पातिक काल 23–42–05 अक्षांश 30°–44' रेखांश 76°–52'।

अथ घातादयः ज्येष्ठ मास न्या 3–8–13 तिथ्य शनिवार वारः मूल नक्षत्रम् धृति योग वणिज करणम् कन्या चन्द्रमाः।

विंशोतरी मतानुसारेण शुक्र महादशायाम् तस्याः वर्षाणि 20 मुक्त वर्षादि 7–7–24 भोग्य वर्षादि 12–4–6

दिनांकः जन्म तारीख 15 अप्रैल 2000 ई० चण्डीगढ़ नगरे समय भारतीय मानक समय 10–30 बजे प्रातः इति। इस प्रकार ही पारम्परिक जन्मपत्री लिखी जाती है और इसके उपरान्त जन्मपत्री में लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली और अन्य सभी चक्र दिए जाते हैं, और अन्त में महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा चक्र दिए जाते हैं। यदि साम्पातिक काल विधि द्वारा जन्मपत्री निर्माण किया जाए तो सर्वप्रथम जन्म विवरण अवश्य देना चाहिए। यह अधिक स्पष्ट, सरल और जातक के लिए भी लाभकारी रहता है। यह विवरण इस प्रकार है।

1. नाम	शिशु का नाम
2. पिता का नाम	पिता का नाम लिखें
3. बाबा का नाम	बाबा का नाम लिखें
4. माता का नाम	माता का नाम लिखें
5. जन्म स्थान	जन्म स्थान का नाम चण्डीगढ़
6. जन्म स्थान अक्षांश उतर रखांश पूर्व	 30°–44' 76°–52'
7. जन्म वार	शनिवार
8. जन्म तारीख	15–4–2000

9. जन्म समय	10-30 प्रातः I.S.T.
10. स्थानीय मध्यम समय	10घंटे 7मिनट 28सैकण्ड
11. 12 बजे साम्पातिक काल	1, 34, 55
12. इष्टकालिक साम्पातिक काल	23. 42, 05
13. अयनांश	–52 कला लाहिरी
14. लग्न स्पष्ट	$2^{5}-15^{0}-39'$
15. लग्न राशि	मिथुन
16. चन्द्र स्पष्ट	$4^{5}-18^{0}-25'-32''$
17. चन्द्र/जन्म राशि	सिंह
18. सूर्य स्पष्ट	$0^{5}-1^{0}-40'-41''$
19. सूर्य राशि	मेष
20. जन्म नक्षत्र	पूर्वाफाल्गुनी द्वितीय चरण
21. भाग्य बिन्दु	$7^{5}-2^{0}-24'$
22. सूर्योदय	5-59
23. सूर्यास्त	18-46

ऐसी जानकारी लिखने के उदाहरण लग्न कुण्डली, चन्द्र कुण्डली व अन्य चक्र, जो पहले ही स्पष्ट किए जा चुके हो लिखने अथवा अंकित करने चाहिए। आमतौर पर आजकल नवांश चक्र ही दिया होता है परन्तु यदि चाहें तो सप्तवर्गी व दशवर्गी जन्मपत्री भी बना सकते है। हमने सभी जानकारी बालक के जन्म के सम्बन्ध में दे दी है, अब सभी कुण्डलियां जिस क्रम से जन्मपत्री में दी जा सकती है, यहां देकर बात को स्पष्ट किया जाता है। प्रत्येक तथ्य अथवा जानकारी पिछले पृष्ठों पर से लेकर अब पूर्ण जन्मपत्री बनाएंगे। पिछले पृष्ठों को सामने अथवा ध्यान में रखकर सव कुण्डलियां बनाई जानी चाहिए।

1. जन्म कुण्डली
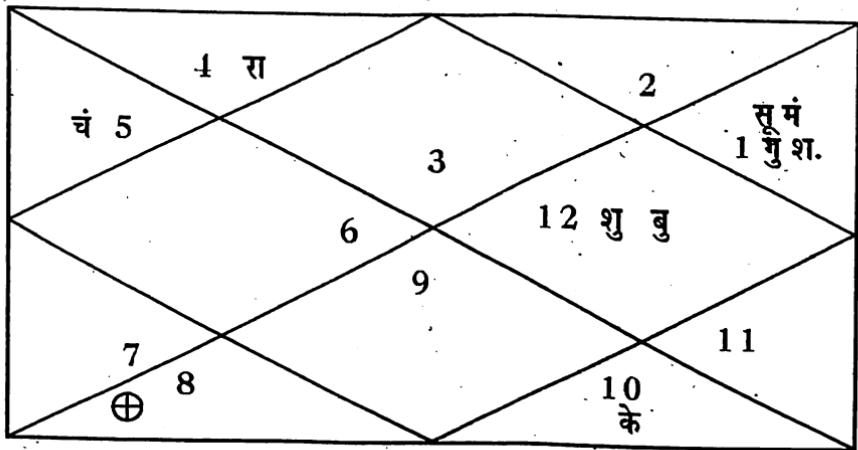
2. चन्द्र कुण्डली
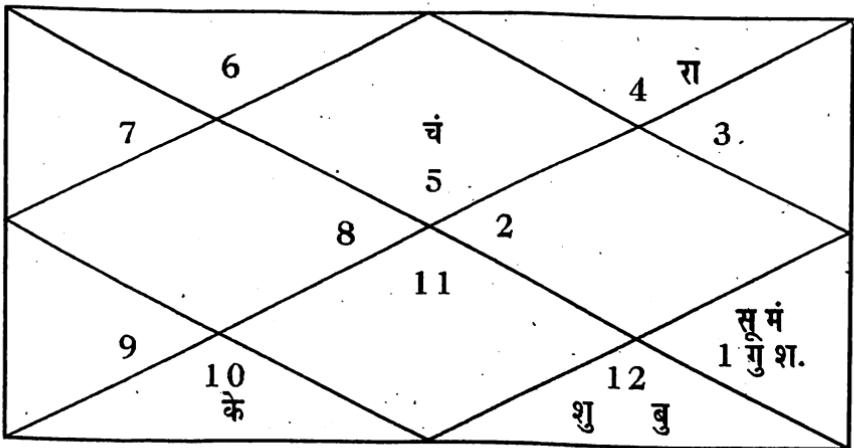
3. भाव स्पष्ट चक्र दें। जो भाव स्पष्ट इसी प्रकरण में किए हैं वही चक्र दें।

4. चलित चक्र अथवा भाव में ग्रह तालिका इसी प्रकरण में जो दी गई है दें।

5. ग्रह स्पष्ट जो इसी प्रकरम में दिया है बनाएं।

6. नवांश चक्र बनाएं क्योंकि हमारी उदाहरण पंचांग द्वारो कुण्डली निर्माण वाली ही है और साम्पातिक काल विधि द्वारा कोई अन्तर नहीं आया है अतः पंचांग द्वार जन्मपत्री निर्माण वाला नवांश चक्र ही रहेगा। पुनः बनाने की आवश्यकता नहीं है अतः वही चक्र बनाएँ।

आजकर आमतौर पर जन्मपत्री में यही चक्र होते हैं और इसके पश्चात् महादशा चक्र दे दिया जाता है परन्तु यदि चाहें तो आप सप्तवर्गी जन्मपत्री बना सकते हैं। विधि "पंचांग द्वारा जन्मपत्री कैसे बनाए" वाले प्रकरण में विस्तार से दे दी गयी है। क्योंकि यहां भी वहीं उदाहरण है और कोई अन्तर नहीं है, अतः यदि सप्तवर्गी जन्मपत्री बनानी हो तो पंचांग द्वारा जन्मपत्री कैसे बनाएं के ये चक्र दें।

7. होरा चक्र अथवा कुण्डली
8. द्रेष्काण कुण्डली
9. दूदशांश कुण्डली
10. त्रिशांश कुण्डली
11. सप्तमांश कुण्डली

यदि दशवर्गी जन्मपत्री बनानी हो तो पंचांग द्वारा जन्मपत्री निर्माण में जो यह चक्र बनाए गए हैं, दें तो जन्मपत्री दशवर्गी बन जाएगी।

12. दशमांश कुण्डली।
13. षोडशांश कुण्डली।
14. षष्ट्यंश कुण्डली।

ये सभी चक्र पंचांग द्वारा जन्म पत्री कैसे बनाएं में पहले ही बनाए गए है। इस तरह दशवर्गी जन्म पत्री तैयार हो जाएगी. अन्त में दशादि चक्र बनाएं।

पंचांग द्वारा जन्मपत्री निर्माण में महादशा अन्तर्दशा भी निकाली गयी है। उसी उदाहरण व यहां भी क्योंकि वही उदाहरण है, महादशा अन्तर्दशा व प्रत्यन्तर्दशा चक्र बनाने की सरल, स्पष्ट विधि देकर जन्मपत्री पूर्ण करेंगे। इस तरह से चण्डीगढ़ में जन्मे बालक जिसकी जन्म तारीख 15–4–2000 और समय 10–30 बजे प्रातः था दशवर्गी जन्मपत्री बन जाएगी।

दशा–अन्तर्दशा जानने की सरल विधि–यहां जो हमने उदाहरण ली है, उसकी महादशा आदि सरल विधि अथवा सारणी की सहायता से निकालेंगे और सरल चक्र बनाएंगे ताकि जातक स्वयं देख सके कि कौन सी दशा अन्तर्दशा चल रही है और किस समय से किस समय तक है। जो पंचांग द्वारा जन्मपत्री निर्माण में दशादि निकालने की विधि है, व दशा, अन्तर्दशा चक्र हैं वह थोड़े समझने में कठिन लगते हैं। अतः यहां हम सरल विधि से महादशादि स्पष्ट करते हैं।

जैसे पहले बताया जा चुका है, दशा निकालने के लिए चन्द्र स्पष्ट के राश्यंश लेने होते हैं। हमारी उदाहरण का चन्द्र स्पष्ट सिंह राशि के 18 अंश 25 कला 32 बिकला है। सरलता के लिए सिंह राशि के 18 अंश 26 कला लिए क्योंकि बिकला का अन्तर तुच्छ ही है। लाहरी एफेमेरीज में दशा, अन्तर्दशा आदि सारणी दी होती है। उसकी

सहायता से कुछ मिनटों में महादशा आदि निकाली जा सकती है। जैसे–

1. चन्द्र स्पष्ट सिंह राशि के 18 अंश 26 कला पर है। सारणी राशि में महादशा निकाले जाने वाला पृष्ठ देखा वहां सिंह राशि के नीचे और 18 अंश 20 कला के दाईं ओर शुक्र 12 वर्ष 6 साल लिखा है। इसके साथ वाले पृष्ठ पर कला का समय है क्योंकि हमारा चन्द्र स्पष्ट 18 अंश 26 कला है अतः 6 कला का समय जानने के लिए इस सारणी को देखा। इसमें 6 कला के दाएं तथा शुक्र के नीचे 1 मास 24 दिन लिखे हैं। इस तरह दोनों को जोड़कर 18 अंश 26 कला का भोग्य महादशा काल प्राप्त हो जाएगा जैसे–

		वर्ष	मास	दिन
1. सारणी में 18 अँश 20 कला के लिए दशा वर्ष मास	=	12	6	0
2. 6 कला के लिए	=		1	24
3. 18 अंश 26 कला के लिए क्योंकि चन्द्र स्पष्ट 18 अंश 26 कला है घटाया	=	12	4	6

4. अतः जन्म समय अर्थात् 15–4–2000 से शुक्र महादशा के 12 वर्ष 4 मास 6 दिन भोगने को रहते हैं। क्योंकि शुक्र महादशा 20 वर्ष की होती है। अतः

वर्ष	मास	दिन	
20	0	0	
– 12	4	6	भोग्य काल
7	7	24	मुक्त काल
20	0	0	कुल समय शुक्र दशा

यदि जन्म तारीख 15–4–2000 से भुक्त काल घटा दें तो शुक्र महादशा का सम्पूर्ण तारीख, मास, वर्ष प्राप्त हो जाएगा।

जन्म तारीख	= 15	4	2000
भुक्त काल घटाया	= 24	7	7
शेष	21	8	1992

इसका अर्थ यह हुआ कि शुक्र महादशा जो 20 वर्ष की होती है जन्म से पहले 21–8–1992 को प्रारम्भ हुई थी और जन्म तक 7 वर्ष 7 मास 24 दिन भुक्त चुकी थी और 12 वर्ष 4 मास 6 दिन भुगतने वाली थी जो दिनांक 21–8–2012 तक रहेगी। इस के आगे ग्रह क्रमानुसार सूर्य–चन्द्र आदि ग्रहों की महादशा चलेगी। अब महादशा चक्र बनाया जाता है ताकि तुरन्त पता चल सके कि कौन सी महादशा चल रही है और कब से कब तक रहेगी।

विंशोतरी महादशा चक्र

ग्रह काल	भोग्य→ मुक्ति	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	गुरु	शनि
वर्ष	7	12	6	10	7	18	16	19
मास	7	4	0	0	0	0	0	0
दिन	24	6	0	0	0	0	0	0
ता. मास सन् ई० से		15-4-2000	21-8-2012	21-8-2018	21-8-2028	21-8-2035	21-8-2053	21-8-2069
ता. मास सन् ई० तक		21-8-2012	21-8-2018	21-8-2028	21-8-2035	21-8-2053	21-8-2069	

इस महादशा चक्र से महादशा जानना अति सरल है और कब से कब तक कोई महादशा रहेगी जानने में कोई कठिनाई नहीं होती। जातक स्वयं महादशा जान सकता है।

अन्तर्दशा—महादशा का समय अधिक होता। अतः प्रत्येक महादशा समय को सूक्ष्म समय में वांटा जाता है जिसे अन्तर्दशा कहा जाता है। प्रत्येक महादशा में सर्वप्रथम उसी ग्रह की अन्तर्दशा होती है जिसकी महादशा होती है। उदाहरण में जन्म समय शुक्र की महादशा चल रही थी अब यह देखना है कि शुक्र की महादशा में जन्म समय कौन सी अन्तर्दशा चल रही थी। इसके लिए सारणी के शुक्र महादशा में देखें कि प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा कितने–कितने समय तक की है। शुक्र महादशा में सर्वप्रथम शुक्र की ही अन्तर्दशा होगी और इसके बाद क्रमानुसार प्रत्येक ग्रह की अन्तर्दशा होगी।

जैसे हमने महादशा में ज्ञात किया कि जन्म से पहले 21-8-1992 को शुक्र महादशा चली थी और उस समय शुक्र की महादशा

में शुक्र की अन्तर्दशा चली। अतः क्रमानुसार आगे ग्रह अन्तर्दशा सभी ग्रहों की चली अतः–

		वर्ष	मास	दिन
1. जन्म से पूर्व महादशा का आरम्भ का समय		1992	8	21
सारणी में शुक्र महादशा में शुक्र का समय	+	3	4	00
	तक	1995	12	21
2. शुक्र महादशा में सूर्य अन्तर्दशा काल	+	1	0	0
	तक	1996	8	21
3. शुक्र महादशा में चन्द्रमा अन्तर्दशा काल	+	1	8	0
	तक	1998	8	21
4. शुक्र महादशा में मंगल अन्तर्दशा काल		1	2	0
	तक	1999	10	21
5. शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा काल		3	0	0
	तक	2002	10	21 ?

जन्म से पूर्व शुक्र महादशा में मंगल अन्तर्दशा का समय 21–8–1998 से 21–10–1999 तक था। इसके उपरान्त जन्म से पूर्व दिनांक 21–10–1999 से शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा चली जो अन्तर्दशा तीन वर्ष की थी। अब यह देखता है कि राहू की अन्तर्दशा जन्म पूर्व कितनी भुक्त चुकी थी और जन्म के उपरान्त कितनी भोग्य अथवा भोगने वाली थी। यदि यहां तक राहू अन्तर्दशा का पूर्ण काल था, जन्म दिनांक आदि अथवा काल घटा दें तो शुक्र महा दशा में राहू अन्तर्दशा का काल प्राप्त हो जाएगा जो भोग्य काल होगा। यदि इस भोग्य काल को राहू अन्तर्दशा के पूर्ण काल जो तीन वर्ष का है घटा दें तो शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा के जन्म से पूर्व भुक्त काल प्राप्त हो जाएगा। अतः

		ता	मास	सन्
1. शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा का पूर्ण काल	=	21	10	2002
2. जन्म काल घटाया	=	15	4	2000
3. शुक्र महादशा में राहू का भोग्य काल	=	6	6	2

अतः शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा का भोग्यकाल 2 वर्ष 6 मास 6 दिन था। अब भुक्ति काल जानने के लिए राहू की अन्तर्दशा के पूर्ण काल 3 वर्ष से घटाने पर भुक्ति काल प्राप्त होगा।

		वर्ष	मास	दिन
1. शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा का सम्पूर्ण समय	=	3	0	0
2. भोग्यकाल जो प्राप्त हुआ	=	2	6	6
3 भुक्त काल	=	0	5	24

अब यह स्पष्ट हो गया है कि जन्म से पूर्व शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा के 5 मास 24 दिन भुक्ति चुके थे और जन्म के समय 2 वर्ष 6 मास 6 दिन भोगने वाले थे। अब यह भोगने वाला काल, जन्म समय में जोड़ने से तुरन्त पता चल जाएगा कि जन्म से कहां तक शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा थी। राहू के उपरान्त क्रमानुसार ग्रह गुरू, गुरु के उपरान्त शनि, शनि के उपरान्त बुध, बुध के पश्चात् केतू की अन्तर्दशा होगी।

इस तरह शुक्र महादशा में सभी ग्रहों की अन्तर्दशा चलेगी। केतू की अन्तर्दशा की समाप्ति के साथ ही शुक्र की महादशा भी समाप्त हो जाएगी और फिर शुक्र के पश्चात् सूर्य की महादशा जलेगी। जैसे–

		तारीख	मास	सन्.ई॰
1. जन्म तारीख	=	15	4	2000
2. शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा का भोग्य काल जो प्राप्त किया जोड़ा	=	6	6	2
शुक्रमहादशा में राहू अन्तर्दशा	=	21	–10–	2002
3. शुक्र महादशा में गुरु अन्तर्दशा	=	0	8	2
तक	=	21	–6–	2005
4. शुक्र महादशा में शनि अन्तर्दशा	=	0	2	3

तक	= 21	8	2008
5. शुक्र महादशा में बुध अन्तर्दशा	= 0	10	2
तक	= 21	6	2011
6. शुक्र महादशा में केतू अन्तर्दशा	= 0	2	1
तक	= 21	8	2012

शुक्र महादशा में अन्तर्दशा काल स्पष्ट हो गया है। अब शुक्र महादशा में अन्तर्दशा चक्र बनाया जाता है।

शुक्र महादशा में अन्तर्दशा चक्र

ग्रह	भुक्ति	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतू
वर्ष	0	2	2	3	2	1
मास	5	6	8	2	10	2
दिन	24	6	0	0	0	0
कहां से	ता मा सन्	15-4-2000	21-10-2002	21-6-2005	21-8-2008	21-6-2011
कहां तक	ता मा सन्	21-10-2002	21-6-2005	21-8-2008	21-6-2011	21-8-2012

इस चक्र से तुरन्त शुक्र महादशा में कौनसी अन्तर्दशा थी और कब से कब तक थी सरलता से पता लगाया जा सकता। जैसे जन्म समय शुक्र की महादशा थी जो 15-4-2000 से 21-8-2012 तक है। जन्म समय शुक्र की महादशा में राहू की अन्तर्दश चर रही थी जो 15-4-2000 से 21-10-2002 तक रहेगी। उसके पश्चात गुरु की अन्तर्दशा 21-6-2005 तक रहेगी इत्यादि।

जैसे शुरू महादशा में अन्तर्दशा का चक्र बनाया है, इसी तरह प्रत्येक महादशा में अन्तर्दशा का चक्र बनाना चाहिए। हम यहां शुक्र

महादशा के पश्चात् सूर्य और फिर चन्द्रमा महादशा में अन्तर्दशा के चक्र बनाएंगे। शेष सभी महादशा में अन्तर्दशा के चक्र स्वयं बनाएं ताकि आपको नियमों का पता चल जाए और अभ्यास भी हो जाएगा। सर्वप्रथम शुक्र के पश्चात् सूर्य महादशा में अन्तर्दशा चक्र दिया जाता है।

सूर्य महादशा में अन्तर्दशा चक्र बनाने के लिए शुक्र महादशा के समाप्ति काल में सारणी से सूर्य महादशा में अन्तर्दशा समय जोड़ते जाएं। इस तरह सभी ग्रहों की अन्तर्दशा ज्ञात हो जाएगी। ध्यान रहे सूर्य महादशा में सर्वप्रथम सूर्य की ही अन्तर्दशा होती है। अतः सारणी की सहायता से सूर्य महादशा में अन्तर्दशा चक्र इस प्रकार बनेगा।

सूर्य महादशा में अन्तर्दशा चक्र

ग्रह →	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0
ता. मास सन् ई० से	21-8-2012	9-12-2012	9-6-2013	15-10-2013	9-9-2014	27-6-2015	9-6-2016	15-4-2017	21-8-2017
ता. मास सन् ई० तक	9-12-2012	9-6-2013	15-10-2013	9-9-2014	27-6-2015	9-6-2016	15-4-2017	21-8-2017	21-8-2018

सूर्य महादशा में शुक्र अन्तर्दशा के साथ ही सूर्य महादशा समाप्त हो गई दशा क्रम से 21–8–2018 से चन्द्र की महादशा आरम्भ हुई। अतः चन्द्र महादशा में अन्तर्दशा का चक्र बना।

चन्द्र महादशा में अन्तर्दशा चक्र

ग्रह	चन्द्र	मंगल	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य
वर्ष	0	0	1	1	1	1	0	1	0
मास	10	7	6	4	7	5	7	8	6
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0	0
ता. मास सन् ई० से	21-8-2018	21-6-2019	21-1-2020	21-7-2021	21-11-2022	21-6-2024	21-11-2025	21-6-2026	21-2-2028
ता. मास सन् ई० तक	21-6-2019	21-1-2020	21-7-2021	21-11-2022	21-6-2024	21-11-2025	21-6-2026	21-2-2028	21-8-2028

चन्द्रमा महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के साथ ही चन्द्र की महादशा समाप्त हो गई। अब ग्रह दशा क्रम से 21–8–2028 से मंगल की महादशा आरम्भ हुई। अतः अब मंगल महादशा में अन्तर्दशा चक्र बनाया।

मंगल महादशा में अन्तर्दशा चक्र

ग्रह	मंगल	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य	चन्द्र
वर्ष मास दिन	0 4 27	1 0 18	0 11 6	1 1 9	0 11 27	0 4 27	1 2 0	0 4 6	0 7 0
ता. मास सन् ई० से	21-8-2028	18-1-2029	6-2-2030	12-1-2031	21-2-2032	18-2-2033	15-7-2033	15-9-2034	21-1-2035
ता. मास सन् ई० तक	18-1-2029	6-2-2030	12-1-2031	21-2-2032	18-2-2033	15-7-2033	15-9-2034	21-1-2035	21-8-2035

मंगल महादशा में चन्द्र अन्तर्दशा के साथ ही मंगल की महादशा समाप्त हो गई। इसके उपरान्त ग्रह दशा क्रम से 21-8-2035 से राहू की महादशा आरम्भ हुई। अतः राहू महादशा में अन्तर्दशा, गुरु महादशा में अन्तर्दशा व शनि महादशा में अन्तर्दशा चक्र पाठक स्वंय बनाएं।

प्रत्यन्तर्दशा—यदि और सूक्ष्म समय जानना हो तो प्रत्यन्तर्दशा निकाली जाती है। प्रत्येक अन्तर्दशा में प्रत्येक ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा होती है। अन्तर्दशा को 9 खंडों में बांटा होता है। इसमें सूक्ष्म समय का पता चलता है। जिस ग्रह की अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चलती है सर्वप्रथम उसी ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा होती है जिस ग्रह की अन्तर्दशा होती है। जैसे यदि शुक्र की महादशा, शुक्र की अन्तर्दशा में सर्वप्रथम शुक्र की ही प्रत्यन्तर्दशा होगी।

जन्म समय शुक्र की महादशा थी। शुक्र की महादशा में राहू की अन्तर्दशा चल रही थी जो दिनांक 15-4-2000 से 21-10-2002 तक थी। अब यह देखना है कि राहू की अन्तर्दशा में जन्म समय प्रत्यन्तर्दशा किस ग्रह की थी और कब से कब तक थी?

शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा का काल 3 वर्ष अथवा 36 मास होता है। जन्म समय राहू का भोग्य काल 2 वर्ष 6 मास 6 दिन था। इस तरह अब यह जानेंगे कि जन्म से पूर्व अथवा भुक्ति और जन्म समय अथवा भोग्य राहू अन्तर्दशा में कितना प्रत्यन्तर्दशा का काल था।

		मास	दिन	घंटे
1. राहू की अन्तर्दशा का कुल समय	=	36	0	0
2. भोग्य काल घटाया	=	–30	6	0
3. राहू अन्तर्दशा का भुक्ति काल	=	5	24	0

जन्म समय राहू की अन्तर्दशा 15–4–2000 से 21–10–2002 तक थी। यदि राहू की अन्तर्दशा के भुक्ति समय को दिनांक 15–4–2000 से घटा दें तो राहू की अन्तर्दशा का शुरु होने का काल ज्ञात हो जाएगा। इस समय राहू की अन्तर्दशा में सर्वप्रथम राहू की ही प्रत्यन्तर्दशा होगी। जैसे–

		तारीख	मास	सन्.ई०
राहू की अन्तर्दशा जन्म समय		15	–4	–2000
भुक्ति काल घटाया	=	24	–5	– 0
	=	21	–10	–1999

अब यह स्पष्ट हुआ कि जन्म से पूर्व दिनांक 21–10–1999 को राहू की अन्तर्दशा आरम्भ हुई और क्योंकि अन्तर्दशा ग्रह की प्रत्यन्तर्दशा भी उसी ग्रह की होती है। अतः दिनांक 21–10–1999 जन्म से पूर्व राहू अन्तर्दशा राहू प्रत्यन्तर्दशा आरम्भ हुई जो 5 मास 12 दिन ही होती है। अतः 21–10–1999 में प्रत्येक ग्रह की प्रत्यन्त का काल जोड़ा–

		वर्ष मास दिन घंटे
1. राहू अन्तर्दशा मे राहू प्रत्यन्तर्दशा का आरम्भ	=	1999–10–21–0
2. राहू अन्तर्दशा में राहू प्रत्यन्तर्दशा	=	+5 – 12 –0
तक		2000– 4 –3 –0
3. राहू अन्तर्दशा में राहू प्रत्यन्र्दशा		+4 –24 –0
तक		2000–8–27–0 ?

राहू अन्तर्दशा में राहू प्रत्यन्तर्दशा 3–4–2000 तक चली।

3–4–2000 के उपरान्त राहू अर्न्दशा में गुरु की प्रत्यन्तर्दशा चली जो 3–4–2000 से 27–8–2000 तक थी। इसका अर्थ यह हुआ कि जन्म समय शुक्र महादशा–राहू अन्तर्दशा में गुरु की प्रत्यन्तर्दशा थी क्योंकि हमारी जन्म तारीख 15–4–2000 है। अब यह देखना है। कि गुरु की प्रत्यन्तर्दशा जो 4 मास 24 दिन होती है जन्म से पूर्व कितनी भुक्त चुकी थी और कितनी भोग्य थी ?

	ता.	मास.	सन् ई०
1. जन्म तारीख	15	– 4	– 2000
2. राहू में राहू प्रत्यन्तर्दशा तक (–)	3	– 4	– 2000
3. राहू प्रत्यन्तर्दशा का भुक्ति काल	12	– 0	– 0

4. राहू प्रत्यन्तर्दशा का सम्पूर्ण काल	4 मास	24 दिन
5. राहू प्रत्यर्न्दशा का भुक्ति काल (–)	0 मास	12 दिन
6. राहू प्रत्यन्तर्दशा का भोग्य काल	4 मास	12 दिन

अब यह स्पष्ट हो गया है कि शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में गुरु प्रत्यर्न्दशा का भुक्ति काल 12 था और भोग्य काल 4 मास 12 दिन था। अब जन्म समय अर्थात् 15–4–2000 में गुरु प्रत्यन्तर्दशा का भोग्यकाल 4 मास 12 दिन जोड़ने से गुरु प्रत्यन्तर्दशा कब तक रहेगी, ज्ञात ही जाएगा, इसके उपरान्त ग्रह दशा क्रम से अन्य ग्रहों का प्रत्यन्तर्दशा काल जोड़ने से शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा का समय ज्ञात हो जाएगा जैसे–

1. जन्म समय		=	15 –4–2000
2. राहू अन्तर्दशा में गुरु प्रत्यन्तर्दशा भोग्य काल		=	12 –4– 0
3. राहू अन्तर्दशा में गुरु प्रत्यन्तर्दशा तक		=	27 –8–2000
4. राहू अन्तर्दशा में शनि प्रत्यन्तर्दशा		=	21 –5
	तक		18 –2–2001
5. राहू अन्तर्दशा में बुध प्रत्यन्तर्दशा		=	3 –5– 0
	तक		21 –7–2001
6. राहू अन्तर्दशा में केतू प्रत्यन्तर्दशा		=	3 –2
	तक		24 –9–2001

7. राहू अन्तर्दशा में शुक्र प्रत्यन्तर्दशा = 0– 6 – 0

तक 24– 3 –2002

8. राहू अन्तर्दशा में सूर्य प्रत्यन्तर्दशा = 24– 1– 00

तक 18– 5 –2002

9. राहू अन्तर्दशा में चन्द्र प्रत्यन्तर्दशा = 0– 3 – 0

तक 18– 8 –2002

10. राहू अन्तर्दशा में मंगल प्रत्यर्न्दशा = 3– 2 – 00

तक 21–10 –2002

शुक्र महादशा में राहू अन्तर्दशा मंगल प्रत्यन्तर्दशा के साथ 21–10–2002 को समाप्त हो जाएगी और इसके उपरान्त अर्थात् 21–10–2002 से शुक्र महादशा गुरु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चलेगी। अब सुविधा के लिए चक्र बनाया जाता है।

शुक्र महादशा-राहू अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र

ग्रह	भुक्ति	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
वर्ष मास दिन	0 0 12	0 4 12	0 5 21	0 5 3	0 2 3	0 6 0	0 1 24	0 3 0	0 2 3
ता. मास सन् ई० से		15–4–2000	27–8–2000	18–2–2001	21–7–2001	24–9–2001	24–3–2002	18–5–2002	18–8–2002
ता. मास सन् ई० तक		27–8–2000	18–2–2001	21–7–2001	24–9–2001	24–3–2002	18–5–2002	18–8–2002	21–10–2002

अतः अब तक वह स्पष्ट हुआ कि जन्म समय शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में गुरु की प्रत्यन्तर्दशा चली जो जन्म समय 15-4-2000 से 27-8-2000 तक रही।

जैसे शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र बनाया है, इसके आगे शुक्र महादशा में गुरु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा, शुक्र महादशा शनि अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा, शुक्र महादशा बुध अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा तथा शुक्र महादशा केतु अन्तर्दशा में प्रत्यन्र्दशा चक्र बनाने चाहिए। इसी तरह सभी महा दशा अन्तर्दशा की प्रत्यन्तर्दशा निकालनी चाहिए। हम यहां केवल शुक्र महादशा गुरु अन्तर्दशा में प्रत्यन्र्दशा और शुक्र महादशा शनि अत्यन्र्दशा में प्रत्यन्र्दशा चक्र ही बनाएंगे। अगले चक्र पाठकों को स्वयं बनाने चाहिए।

शुक्र महादशा में गुरु अन्तर्दशा का पूर्ण समय 2 वर्ष 8 मास का होता है। प्रत्यन्तर्दशा में इसी का विभाजन किया होता है। सर्वप्रथम गुरु की प्रत्यन्तर्दशा होगी।

शुक्र महादशा गुरु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
ता. मास सन् ई० से	21-10-2002	29-2-2003	1-8-2003	17-12-2003	13-2-2004	23-7-2004	11-9-2004	1-12-2004	27-1-2005
ता. मास सन् ई० तक	29-2-2003	1-8-2003	17-12-2003	13-2-2004	23-7-2004	11-9-2004	1-12-2004	27-1-2005	21-6-2005

शुक्र महादशा गुरु अन्तर्दशा में राहू प्रत्यन्तर्दशा के साथ ही शुक्र महादशा में गुरु अन्तर्दशा व गुरु अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा समाप्त हुई। अव 21–6–2005 से शुक्र महादशा शनि अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चलेगी शनि अन्तर्दशा में सर्वप्रथम प्रत्यन्तर्दशा शनि की ही होगी। अतः चक्र इस प्रकार बनेगा।

शुक्र महादशा शनि अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
घंटे ता. मास सन् ई० से	00–21–06–2005	12–21–12–2005	0–3–6–2006	12–9–8–2006	12–19–2–2007	12–16–4–2007	12–21–7–2007	0–28–9–2007	0–19–3–2008
घंटे ता. मास सन् ई० तक	12–21–12–2005	0–3–6–2006	12–9–8–2006	12–19–2–2007	12–16–4–2007	12–21–7–2007	0–28–9–2007	0–19–3–2008	0–21–8–2008

शुक्र महादशा शनि अन्तर्दशा गुरु प्रत्यन्तर्दशा जो 21–8–2008 तक रही के साथ ही शनि अन्तर्दशा की समाप्त हुई। इसके आगे बुध की अन्तर्दशा, बुध के आगे केतू के अन्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा चक्र पाठक स्वयं बनाएं।

सूक्ष्म दशा–सूक्ष्म दशा अत्यन्त कम समय होता है। प्रत्यन्तर्दशा को 9 भागों में विभक्त कर प्रत्येक ग्रह की सूक्ष्म दशा स्पष्ट की जाती है। प्रत्येक ग्रह की प्रत्यर्न्दशा में सर्वप्रथम उसी ग्रह की सूक्ष्म दशा होती

है। अब सर्वप्रथम यह देखेंगे कि जन्म समय किस ग्रह की सूक्ष्म दशा थी और कब से कब तक थी।

जन्म समय शुक्र की महादशा राहू की अन्तर्दशा में गुरु की प्रत्यर्न्दशा 15–4–2000 से 27–8–2000 तक थी।

1. शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा में जन्म समय गुरु की प्रत्यन्तर्दशा चल रही थी जो 15–4–2000 से 27–8–2000 तक थी। जन्म समय गुरु प्रत्यन्तर्दशा का भोग्य काल 4 मास 12 दिन था। उस तरह अब वह देखेंगे कि जन्म से पूर्व और जन्म समय गुरु प्रत्यन्तर्दशा में कितना सूक्ष्म दशा का काल था।

2. 1. गुरु की प्रत्यन्तर्दशा का कुल काल = 144 दिन
2. गुरू की प्रत्यन्तर्दशा का भोग्य काल (–) = 132 दिन
3. गुरु की प्रत्यन्तर्दशा का भुक्ति काल = 12 दिन

जन्म समय गुरु की प्रत्यन्तर्दशा 15–4–2000 से 27–8–2000 तक थी। यदि गुरु की प्रत्यन्तर्दशा के मुक्ति समय की जन्म समय 15–4–200 से घटा दें तो गुरु की प्रत्यन्तर्दशा का आरम्भ होने का काल ज्ञात हो जाएगा। गुरू प्रत्यन्तर्दशा में गुरु सूक्ष्म का ही सर्वप्रथम आरम्भ होगा।

		तारीख	मास	सन् ई०
1. जन्म समय	=	15 –	4 –	2000
2. गुरु प्रत्यन्तर्दशा (–) मुक्ति काल घटाया	=	12 –	0 –	0
3. गुरु की प्रत्यन्तर्दशा में गुरु की सूक्ष्म दशा का आरम्भ	=	3 –	4 –	2000

हमारा जन्म समय अथवा तारीख 15–4–2000 है अतः

		तारीख	मास	सन् ई०
1. जन्म तारीख	=	15 –	4 –	2000
2. गुरु प्रत्यन्तर्दशा में गुरु सूक्ष्म दशा का आरम्भ घटाया	=	3 –	4 –	2000
3. गुरु सूक्ष्म दशा का भुक्ति काल	=	12 –	0 –	0

गुरु प्रत्यन्तर्दशा में गुरू सूक्ष्म दशा के जन्म समय तक 12 दिन भुक्ति चुके थे।

1. गुरु सूक्ष्म दशा का पूर्ण काल 19 दिन 4 घंटे 48 मिनट
2. गुरु सूक्ष्म दशा का भुक्त काल(–) 12 दिन 0 घंटे 0 मिनट

3. गुरु सूक्ष्म दशा का भोग्य काल = 7 दिन 4 घंटे 48 मिनट

जन्म तारीख में गुरु सूक्ष्म दशा का भोग्य काल जोड़ने से गुरु प्रत्यन्तर्दशा में गुरु सूक्ष्म दशा का समय ज्ञात हो जाएगा।

		मिनट	घंटे	दिन	मास	वर्ष
1. जन्म समय	=	0	0	15	4	2000
2. गुरु प्रत्यन्तर्दशा में गुरु सूक्ष्म दशा का भोग्य काल जो प्राप्त किया	=	48	4	7	0	0
3. गुरू प्रत्यन्तर्दशा में गुरू सूक्ष्म दशा तक	=	48	4	22	4	2000
4. गुरु प्रत्यन्तर्दशा में शनि सूक्ष्म दशा	=	12	19	22	0	0
तक	=	0	0	15	5	2000
5. गुरू प्रत्यन्तर्दशा में बुध सूक्ष्म दशा	=	36	9	20	0	0
तक	=	36	9	5	6	2000
6. गुरु प्रत्यन्तर्दशा में केतू सूक्ष्म दशा	=	36	9	8	0	0
तक	=	12	19	13	6	2000
7. गुरू प्रत्यन्तर्दशा में शुक्र सूक्ष्म दशा	=	0	0	24	0	0
तक	=	12	19	7	7	2000
8. गुरु प्रत्यन्तर्दशा में सूर्य सूक्ष्म दशा	=	48	4	7	0	0
तक	=	0	0	15	7	2000
9. गुरू प्रत्यन्तर्दशा में चन्द्र सूक्ष्म दशा	=	0	0	12	0	0
तक	=	0	0	27	7	2000
10. गुरु प्रत्यन्तर्दशा में मंगल सूक्ष्म दशा	=	36	9	8	0	0
तक	=	36	9	5	8	2000

11. गुरु प्रत्यन्तर्दशा में

राहू सूक्ष्म दशा	=	24	14	21 0	0
तक	=	0	0	27 8	2000

अब यह स्पष्ट हुआ कि जन्म समय शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा गुरु प्रत्यन्तर्दशा में गुरु सूक्ष्म दशा चल रही थी जो 15 4 2000 से 48 मिनट 4 घंटे 22–4–2000 तक रही और उसके उपरान्त शनि सूक्ष्म दशा दिनांक 15–5–2000 तक रही। शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा गुरु प्रत्यन्तर्दशा में सूक्ष्म दशा दिनांक 27 8 2000 को समाप्त हुई और उसके पश्चात् शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा शनि प्रयन्तर्दशा में सूक्ष्म दशा आरम्भ हुई। अब सूक्ष्म दसा चक्र दिया जाता है।

शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा गुरु प्रत्यन्तर्दशा में सूक्ष्म दशा चक्र

ग्रह	भुक्ति	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू
वर्ष मास दिन घंटे मिनट	0 0 12 0 0	0 0 7 4 48	0 0 22 19 12	0 0 20 9 36	0 0 8 9 36	0 0 24 0 0	0 0 7 4 48	0 0 12 0 0	0 0 8 9 36	0 0 21 14 24
से	मिनट घंटे ता म सन्	0–0–15–4–2000	48–4–22–4–2000	0–0–15–5–2000	36–9–5–6–2000	12–19–13–6–2000	12–19–7–7–2000	0–0–15–7–2000	0–0–27–7–2000	36–9–5–8–2000
तक	मिनट घंटे ता म सन्	48–4–22–4–2000	0–0–15–5–2000	36–9–5–6–2000	12–19–13–6–2000	12–19–7–7–2000	0–0–15–7–2000	0–0–27–7–2000	36–9–5–8–2000	0–0–27–8–2000

शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा गुरु प्रत्यन्तर्दशा में सूक्ष्म 27–8–2000 तक रही और साथ ही गुरु प्रत्यन्तर्दशा समाप्त हुई। अब शनि प्रत्यन्त्तर्दसा में सूक्ष्म दशा चक्र दिया जाता है। अन्य चक्र पाठकों को स्वयं बनाने चाहिए।

शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा शनि प्रत्यन्तर्दशा में सूक्ष्म दशा चक्र

ग्रह	शनि	बुध	केतू	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहू	गुरु
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	27	24	9	28	8	14	9	25	22
घंटे	1	5	23	12	13	6	23	15	19
मिनट	48	24	24	0	12	0	24	36	12
मिनट घंटे ता म सन् से	0–0–27–8–2000	48–1–24–9–2000	12–7–18–10–2000	36–6–28–10–2000	36–18–26–11–2000	48–7–5–12–2000	48–13–19–12–2000	12–13–29–12–2000	48–4–25–1–2001
मिनट घंटे ता म सन् तक	48–1–24–9–2000	12–7–18–10–2000	36–6–28–10–2000	36–18–26–11–2000	48–7–5–12–2000	48–13–19–12–2000	12–13–29–12–2000	48–4–25–1–2001	0–0–18–2–2001

शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा शनि प्रत्यन्तर्दशा में सूक्ष्म दशा गुरु, सूक्ष्म दशा के साथ 18–2–2001 को समाप्त हुई और साथ ही शनि प्रत्यन्तर्दशा भी समाप्त हुई। इसके आगे ग्रह दशा क्रम अनुसार शुक्र महादशा राहू अन्तर्दशा बुध प्रत्यन्तर्दशा में सूक्ष्म दशा चक्र बनेगा। जो पाठकों को स्वंय बनाने चाहिए ताकि अभ्यास हो जाए।

बालक के जन्म की सर्वप्रथम ग्रह महादशा निकाली गई जो जन्म से आरम्भ होती है। उसके उपरान्त अन्य ग्रहों की महादशा निकाली गई। आमतौर पर जीवन में 6 से 8 ग्रहों तक की ही महा दशा चलती है। अतः आयू निर्णय करके सभी ग्रहों की महादशा का चक्र बनाना चाहिए।

महादशा चक्र बनाने के बाद प्रयेक महादशा ग्रह का अन्तर्दशा चक्र बनाना चाहिए। जब सभी महादशा के ग्रहों के अन्तर्दशा चक्र बन जाएं तो प्रत्येक अन्तर्दशा ग्रह के सूक्ष्म दशा चक्र बनाने चाहिए। जन्म पत्री में आमतौर पर महादशा और अन्तर्दशा चक्र ही होते हैं। यदि पाठक चाहें तो प्रत्यन्तर्दशा एवं सूक्ष्म दशा भी बना सकते हैं। सभी प्रकार की दशा की विधि विस्तार से दे दी गयी है और चक्र भी दे दिए हैं।

निष्कर्ष—पिछले पृष्ठों में पंचांग द्वारा तथा प्राचीन विधि द्वारा जन्म कुण्डली निर्माण एवं नवीन विधि साम्पातिक काल विधि द्वारा जन्म कुण्डली एवं जन्मपत्री निर्माण विस्तार से स्पष्ट किया गया है। प्राचीन एवं पंचांग द्वारा लग्न, भाव स्पष्ट आदि तथा साम्पातिक काल विधि द्वारा लग्न, भाव स्पष्ट एवं ग्रह स्पष्ट में कोई अन्तर नहीं आया केवल कुछ बिकला का ही अन्तर पड़ा जो तुच्छ के बराबर ही है। अतः दोनों विधियों के लग्न, जन्म कुण्डली एवं जन्मपत्री शुद्ध बनी है।

हमारा परामर्श—हमारा परामर्श है कि घटी पल का अब युग नहीं है और पंचांग, एफेमेरीज आदि स्टैण्डर्ड समय में उपलब्ध है। अतः साम्पातिक काल विधि द्वारा ही लग्न व जन्म कुण्डली एवं जन्मपत्री निर्माण किया जाए जिससे लग्न, जन्म कुण्डली अथवा जन्मपत्री बनानी सरल भी है और शुद्ध और प्रामाणिक भी है।

पिछले पृष्ठों में देश में जन्मपत्री बनाने की विधियों पर विस्तृत जानकारी दी है। इस प्रकरण में विदेशों में जन्म लेने वाले बालकों की जन्मपत्री कैसे बनाई जाए पर जानकारी दी जाएगी।

विदेश में जन्म लेने वाले बालकों की जन्मपत्री बनानी भी सरल है। देश में जन्मपत्री बनाने की प्रक्रिया एवं विधियों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और बार-बार अभ्यास करें, जब आपने किसी देश के बालक की जन्म पत्री की रचना प्रारम्भ से अन्त तक कर ली तो विदेश में जन्म लेने वाले बालक की जन्मपत्री बनाने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी क्योंकि सभी नियम, विधियां वही है जो देश में जन्मपत्री बनाने की है अतः किसी विदेश के बालक की जन्मपत्री बनाने से पूर्व देश में जन्मे बालक की जन्मपत्री बनाने का अभ्यास करें।

विदेश की जन्मपत्री—यदि आप विदेश में है और वहां के किसी बालक की जन्मपत्री बनाना चाहते हैं तो कोई कठिनाई नहीं होती और जन्म पत्री बनानी अति सरल है। आपको इन बातों का ध्यान रखना होगा और आपके पास यहां दिए गए उपकरण भी होने चाहिए।

1. पाश्चात्य देशों में प्रायः सायन पद्धाति प्रचलित है और भारत में प्रायः जन्मपत्री निरयन पद्धति से बनाई जाती है। अतः यदि आप विदेश में है और वहां जन्मपत्री बनाना चाहते हैं तो जो विधि वहां प्रचलित हो उसी विधि से जन्मपत्री बनायें। सायन विधि और निरयन विधि जिसे भारतीय पद्धति भी कहा जाता है, का अन्तर केवल इतना है कि पाश्चात्य पद्धति में भाव व ग्रह आदि अयनांश के साथ होते हैं और भारतीय पद्धति में अयनांश के बगैर होते है अर्थात्—

पाश्चात्य मतानुसार + अयनांश

भारतीय मतानुसार − अयनांश

2. इस लिए यदि आप विदेश में पाश्चात्य मतानुसार जन्म पत्री का निर्माण करते हैं तो यदि उसी जन्म पत्री को भारतीय मतानुसार बनाना हो तो भावों व ग्रहों से उस दिनांक, मास वर्ष का अयनांश घटा कर आप वही जन्मपत्री भारतीय मतानुसार तबदील कर सकते है।

3. जैसे पिछले पृष्ठों में भाव स्पष्ट करने की विधि दी गई है वह, प्राचीन भारतीय विधि है। भारतीय ज्योतिषी प्रायः इसी विधि द्वारा भाव स्पष्ट करते हैं और एक भाव का विस्तार सन्धि से दूसरी भाव सन्धि तक होता है। पाश्चात्य मतानुसार भाव स्पष्ट की अलग और अति सरल विधि है। पाश्चात्य मतानुसार भाव का विस्तार भाव के आरम्भ से दूसरे भाव के आरम्भ तक होता है। भावों के विस्तार के सम्बन्ध में पाश्चात्य मत भी कई है, परन्तु अधिकतर विद्वान प्लैसिडस पद्धति को सही व प्रामाणिक मानते हैं। हमारी कसौटी पर भी यही सिद्धान्त ठीक सिद्ध हुआ है अतः भाव का विस्तार भाव के प्रारम्भ के अगले भाव के प्रारम्भ तक माना गया है। इसी विधि द्वारा भाव स्पष्ट करने चाहिए।

4. भारतीय प्राचीन पद्धति में लग्नादि सूर्योदय से स्पष्ट करने का नियम है परन्तु साम्पातिक विधि द्वारा सूर्योदय की लग्न स्पष्ट करने के लिए जरूरत ही नहीं पड़ती अतः पाश्चात्य देशों में लग्नादि स्पष्ट साम्पातिक काल विधि द्वारा किया जाता है जो शुद्ध और प्रामाणिक है, भारत में प्राय आज कल इसी विधि का उपयोग किया जाता है। इस तरह साम्पातिक काल और सायन पद्धति द्वारा जन्मपत्री का निर्माण किया जाता है।

5. जिन वातों का यहां वर्णन किया गया है यह भारतीय और पाश्चात्य पद्धति में कुण्डली निर्माण में अन्तर है। कुण्डली का चित्र भी वहां गोल आकार का होता है और फलकथन में भी कई असमानताएं है जैसे वह अधिकतर दृष्टि व डायरैक्शन पर निर्भर रहते हैं और भारतीय पद्धति में विंशोतरी दशा महत्वपूर्ण मानी गई है। 6. विदेश की जन्मपत्री यदि आप विदेश में है, और वहां जन्मपत्री निर्माण करना चाहते हैं तो आपके पास उस देश की एफेमेरीज होना आवश्यक है। अतः जन्मपत्री रचना के लिए–1 उस देश की एफेमेरीज और वह आपके स्थान के नजदीक की हो 2. राफेल टेवल आप हाऊसस् (TABLE OF HOUSES) 3. यदि स्थानीय एफेमेरीज उपलब्ध न हो तो आप सम्वन्धित वर्ष की राफेल एफेमेरीज जो प्रायः सभी देशों में उपलब्ध होती है, का उपयोग सरलता से कर सकते हैं।

7. यदि आपके पास सम्बन्धित वर्ष की एफेमेरीज व टेबल ऑफ हाऊसस् हैं तो आप किसी भी देश के बालक की जन्मपत्री बना सकते हैं। जैसे साम्पातिक काल विधि द्वारा भारतीय एफेमेरीज की सहायता से जन्मपत्री रचना की थी, ठीक उसी प्रकार प्रक्रिया करके जन्मपत्री बनाई जाती है अतः स्पष्ट हुआ कि यदि आपके पास ऊपर दिए दो मुख्य उपकरण है तो जो पिछले पृष्ठों में नियम दिए गए हैं, उनकी

सहायता से किसी भी देश में जन्म लेने वाले बालक की सरलता से जन्मपत्री बनाई जा सकती है.

इंगलैंड:– यू. के जन्म लेने वाले बालक की इन दोनों उपकरणों की सहायता से जन्मपत्री रचना करेंगे। हमारे पास राफेल की एफेमेरीज वर्ष 1997 की उपलब्ध है और राफेल Table of Houses भी है । इसका उपयोग प्रायः पूरे विश्व में होता है परन्तु यह विशेषकर यू.के के लिए भी है क्योंकि यह एफेमेरीज, ग्रीन विच टाइम के अनुसार तथा वहां के अक्षांश, रेखांश पर अधारित है।

उदाहरण–किसी बालक का जन्म लिवरपूल (यू.के) में दिनांक 25 जून–1997 , दिन बुध बार को दोपहर बाद 2.30 पर हुआ। इसकी जन्मपत्री बनाएंगे। इसके लिए स्थानीय राफेल एफेमेरीज–1997 व राफैल टेबल ऑफ हाऊसस् की आवश्यकता है जो हमारे पास है या यूँ कहें कि स्थानीय अर्थात् यू.के की एफेमेरीज 1997 की सहायता से जन्मपत्री निर्माण करेंगे। सर्वप्रथम जन्म विवरण नोट किया।

1. जन्म स्थान	=	लिवरपूल (यू.के)
2. जन्म का अक्षांश	=	53°–25' उतर
रेखांश		2°–55' पश्चिम
3. जन्म समय	=	2–30' बाद दोपहर G.M.T. जी.एम.टी.
4. जन्म तारीख	=	25–6–1997
5. जन्म दिन	=	बुधवार

		घं.	मि.	सैकण्ड
6. 12 बजे दोपहर का साम्पातिक काल दिनांक 25–6–1997.	=	6	14	40
7. स्थानीय मध्यम समय शोधन संस्कार ऋणात्मक	=	(–)	11	40
8. अयनांश दिनांक 25–6–1997	=	23°	49'	15

सर्वप्रथम जन्म समय क्योंकि जी.एम.टी (G.M.T.) में हैं अतः लिवरपूल का स्थानीय समय जानेगे और उसके उपरान्त जन्म समय का साम्पातिक काल जानेंगे।

	=	घंटे	मिनट	सैकण्ड
1. जन्म समय बाद दोपहर जी.एम.टी(G.M.T.)	=	2	30	00
2. स्थानीय मध्यम समय का शोधन संस्कार घाटाया	=		11	40

3. स्थानीय मध्यम समय	=	2	18	20
4. डे सेविंग का एक घंटा घटाया	=	1	0	0
5. शुद्ध स्थानीय समय	=	1	18	20
6. 10 सैकण्ड का संस्कार जोड़ा	=			13
	=	1	18	33
7. 12 बजे का साम्पातिक काल जोड़ा	=	6	14	40
8. जन्म समय का साम्पातिक काल	=	7	33	13

यदि चाहें तो आप इसे इस तरह भी ज्ञात कर सकते हैं।

1. 12 बजे का साम्पातिक काल	=	6	14	40
2. 12 बजे और जन्म समय का अन्तर समय जोड़ा	=	2	30	0
	=	8	44	40
3. डे सेविंग का एक घंटा घटाया	=	1	0	0
		7	44	40
4. 10 सेकण्ड शोधन संस्कार किया जोड़ा	=		+	13
	=	7	44	53
5. स्थानीय समय शोधन संस्कार घटाया	=		11	40
6. जन्म समय का साम्पातिक काल	=	7	33	13

जो प्रक्रिया सरल लगे उसी के अनुसार जन्म समय का साम्पातिक ज्ञात कर लेना चाहिए।

अब इस साम्पातिक काल से राफेल टेबल आफ हाऊसस् से अक्षांश 53°–25' उतर या इसके अति नजदीक के अक्षांश, यदि यह उपलब्ध न हो लग्न एवं भाव स्पष्ट किए जाएंगे। टेबल आफ हाऊसस में और राफेल एफेमेरीज 1997 में भी अक्षांश 53°–25' के भाव स्पष्ट दिए हुए हैं। अतः इसी सारणी का उपयोग करके आपने जन्म समय के साम्पातिक काल के अनुसार लग्न व भाव ज्ञात करेंगे।

लग्न जानना–टेबल ऑफ हाऊसस् व एफेमेरीज मे अक्षांश 53°–25' उतर की सारणी दी हुई है, उसकी सहायता से जन्म समय के साम्पातिक काल 7 घंटे 33 मिनच 13 सैकण्ड का लग्न व अन्य स्पष्ट किए जाते है।

टेबल ऑफ हाऊसस् अक्षांश 53°–25' का पृष्ठ ढूँढा और इसके उपरान्त जन्म समय का साम्पातिक काल ढूंढा। इष्टकालिक साम्पातिक काल अथवा जन्म समय का साम्पातिक काल 7–33–13 तो नहीं मिला इसके आगे पीछे का साम्पातिक काल है। साम्पातिक काल 7–30–50 और 7–35–5 का लग्न व अन्य भाव दिए हुए हैं। अतः इसके अन्तर का मान ज्ञात करके अपने जन्म समय के राश्यंश ज्ञात करेंगे।

टेबल ऑफ हाऊसस् में 7–35–5 व 7–30–50 साम्पातिक काल का अन्तर निकाला।

स. काल	दशम	एकादश	द्वादश	लग्न	द्वितीय	तृतीय
1. 7-35-5	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
	=22°	27°	25°	16°–20°	12°	14
2. 7-30-50=	21°	26°	24°	15°–36'	11°	13°
3. (–)0-4-15=	1°	1°	1°	0°–44'	1°	1°

इस तरह यह स्पष्ट हुआ कि लग्न 4 मिनट 15 सैकण्ड में 44 कला बढ़ता है और अन्य भाव 1 अंश बढ़ते हैं। हमारा साम्पातिक काल 7–33–13 है जिसका अन्तर निकाला –

		घं.	मि.	सैं.
1. एफेमेरीज में दिया साम्पातिक काल	=	7	30	50
2. इष्टकालिक साम्पातिक काल	=	7	33	13
3. दोनों का अन्तर 7-33-13 (–) 7–30–50 प्राप्त हुआ	=	0	2	23

इससे स्पष्ट हुआ कि 4 मिनट 15 सैकण्ड में लग्न 44 कला व अन्य भाव 1 अंश बढ़ते हैं तो 2 मिनट 23 सैकण्ड के लिए कितना बढ़ेंगे ? सर्वप्रथम लग्न को लेते हैं।

1. 4 मिनट 15 सैकण्ड में लग्न 44 कला बढ़ता है तो 2 मिनट 23 सैकण्ड में कितना बढ़ेगा ? इसके लिए मिनटों के सैकण्ड बनाए।

2. 4 मिनट 15 सैकण्ड के लिए 44 कला तो 2 मिनट 23 सैकण्ड के लिए कितना ?

4 · 15	11 कला	2 23
60		60
240		120
15		23
255 सैकण्ड :	44 कला :	143

143
44
572
572×

255) 6292 (24 कला
510
1192
1020
172 = 24 की 25 कला लीं।

अर्थात् लग्न 2 मिनट 23 सैकण्ड में 25 कला बढ़ा।

1. साम्पातिक काल 7–30–50 का लग्न=तुला = 15°.36'
2. सं.क. 2 मिनट 23 सैकण्ड का जितना बढ़ा + 0–25
3. साम्पातिक काल 7–33–13 का लग्न = तुला 16·01

अतः इष्टकालिक साम्पातिक काल का सायन लग्न तुला 16°–01' हुआ।

2. अन्य भाव 4 मिनट 15 सैकण्ड में 1 अंश बढ़ते है तो 2 मिनट 23 सैकण्ड में कितना बढ़ेंगे ? मिनटों के सैकण्ड बनाए।

4 मिनट 15 सैकण्ड	1 अंश	2 मिनट 23 सैकण्ड
60	60	60
240	60	120
15		23
255 सैकण्ड	60 कला	143 सैकण्ड

143
60

255) 8580 (33 कला
765
930
765
165 शेष अर्थात् 34 कला

इससे स्पष्ट हुआ कि अन्य भाव 2 मिनट 23 सैकण्ड में 34 कला बढ़ते है। प्रत्येतक भाव में 34 कला जोड़ने से इष्टकालिक साम्पातिक काल के भाव स्पष्ट हो जाएंगे।

	दशम	एकादश	द्वादश	द्वितीय	तृतीय
1. साम्पातिक काल 7-30-50 के स्पष्ट भाव =	कर्क 21"-0'	सिंह 26"-0'	कन्या 24"-0'	वृश्चिक 11"-0'	धनु 13"-0'
2. साम्पातिक काल गति 2 मिनट 23 सैकण्ड का जोड़ा =	0-34	0-34	0-34	0-34	0-34
3. इष्टकालिक अथवा जन्म समय के साम्पातिक काल के भाव स्पष्ट =	21-34 कर्क	26-34 सिंह	24-34 कन्या	11-34 वृश्चिक	13-34 धनु
4. 6 राशि जोड़ तो इनसे सातवें भाव स्पष्ट	6	6	6	6	6
	चतुर्थ	पंचम	षष्ठम	अष्ठम	नवम
5. अन्य भाव स्पष्ट हुए =	मकर 21-34	कुम्भ 26-34	मीन 24-34	वृष 11-34	मिथुन 13-34

सभी भाव स्पष्ट हो गए है। स्मरण रहे यह पाश्चात्य पद्धति अथवा सायन मतानुसार भाव स्पष्ट हैं क्योंकि यह अयनांश सहित है। अब भाव स्पष्ट चक्र बनाया जाएगा।

द्वादश भाव स्पष्ट चक्र

भाव	प्रथम I	द्वितीय II	तृतीय III	चतुर्थ IV	पंचम V	षष्ठम VI
राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अंश	16	11	13	21	26	24
काल	01	34	34	34	34	34
भाव	सप्तम VII	अष्टम VIII	नवम IX	दशम X	एकादश XI	द्वादश XII
राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
अंश	16	11	13	21	26	24
कला	01	34	14	34	34	34

पाश्चात्य मतानुसार भाव स्पष्ट इस तरह लिखें जाते है।

सायन भाव स्पष्ट

	राशि	अंश	कला	भाव स्वामी
प्रथम I	6	16	01	शुक्र
द्वितीय II	7	11	34	मंगल
तृतीय III	8	13	34	गुरु
चातुर्थ IV	9	21	34	शनि
पंचम V	10	26	34	शनि
षष्ठम VI	11	24	34	गुरू
सप्तम VII	0	16	01	मंगल
अष्टम VIII	1	11	34	शुक्र
नवम IX	2	13	34	बुध
दशम X	3	21	34	चन्द्र
एकादश XI	4	26	34	सूर्य
द्वादश XII	5	24	34	बुध

जो सायन भाव स्पष्ट किए है इनमें से अयनांश घटा दिया जाए तो निरयन पद्धति के अनुसार अथवा निरयन भाव स्पष्ट हो जाएंगे।

सायन भाव	भाव स्पष्ट राश्यंश				अयनांश घटाया			निरयन भाव	भाव राश्यंश			
	रा	अं	क	वि	अंश	कला	बि.	घ	रा	अं	क	बि
I	6	16	01	0	23	49	15	I	5	22	11	45
II	7	11	34	0	23	49	15	II	6	17	44	45
III	8	13	34	0	23	49	15	III	7	19	44	45
IV	9	21	34	0	23	49	15	IV	8	27	44	45
V	10	26	34	0	23	49	15	V	10	2	44	45

सायन भाव	भाव स्पष्ट राश्यंश				अयनांश घटाया			निरयन भाव	भाव राश्यंश			
	रा	अं	क	वि	अंश	कला	बि.	घ	रा	अं	क	बि
VI	11	24	34	0	23	49	15	VI	11	0	44	45
VII	0	16	01	0	23	49	15	VII	11	22	11	45
VIII	1	11	34	0	23	49	15	VIII	0	17	44	45
IX	2	13	34	0	23	49	15	XI	1	19	44	45
X	3	21	34	0	23	49	15	X	2	27	44	45
XI	4	26	34	0	23	49	15	XI	4	2	44	45
XII	5	24	34	0	23	49	15	XII	5	0	44	45

दोनों मतानुसार अर्थात् सायन व निरयन मतानुसार भाव स्पष्ट हो गए हैं। पाश्चात्य मतानुसार लग्न तुला के 16 अंश 01 कला पर है जब कि निरयन अथवा भारतीय मतानुसार लग्न सप्ष्ट कन्या के 22 अंश 11 कला 45 बिकला पर है। इस तरह अन्य भाव स्पष्ट हुए है। अब जन्म समय के ग्रह स्पष्ट करेंगे। यह सदैव स्मरण रखें कि जन्म समय का इष्टकालिक साम्पातिक काल व लग्नादि स्थानीय समय को लेकर स्पष्ट किए जाते हैं। जबकि ग्रह जन्म समय के अनुसार अर्थात् मानक समय के अनुसार स्पष्ट किए जाते हैं।

ग्रह स्पष्ट–राफेल एफेमेरीज 1997 में दैनिक ग्रह स्थिति सायन मतानुसार 12 बजे दोपहर जी.एम.टी. की दी हुई है। हमारा समय दोपहर बाद 1–30 बजे का है। अतः दी गई ग्रह स्थिति से हमारे जन्म समय का अन्तर 1 घंटे 30 मिनट है। प्रत्येक ग्रह की 24 घंटे की गति लेकर 1 घंटे 30 मिनट का मान प्राप्त कर लेंगे। जो मान जिस ग्रह का आएगा उसको उसकी 12 बजे दोपहर की स्थिति में जोड़ने से जन्म समय अर्थात् 1–30 बाद दोपहर जी.एम.टी की स्थिति प्राप्त हो जाएगी।

राफेल एफेमेरीज 1997 में प्रत्येक ग्रह की दैनिक गति दी हुई है। इसमें केवल शीघ्र गति वाले ग्रहों की दैनिक अर्थात् 24 घंटों की गति दी है। अन्य ग्रहों की गति जैसे पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है, आगे, पीछे की तारीख की ग्रह स्थिति का अन्तर ज्ञात करके जानी जा सकती है। दी गई गति इस प्रकार है।

	दिनांक	गति सूर्य	गति चन्द्र	गति बुध	गति शुक्र	गति मंगल
1.	25 जून 1997	0 -57'-13"	14'-16' 18"	2 11'	1 -13'	28'

	दिनांक	गति गुरु वक्री	गति शनि	गति राहू	गति केतू
2.	25 जून-1997	-3'	4'	-3'	-3

3. जन्म समय 1–30 बाद दोपहर जी.एम.जी. और 12 बजे दोपहर की दी गई स्थिति और जन्म समय अन्तर 1 घंटे 30 मिनट है।

4. अब गति के अनुसार प्रत्येक ग्रह का 1 घंटा 30 मिनट का मान प्राप्त करके 12 बजे बाली ग्रह स्थिति में जोड़ देने से जन्म समय के ग्रह स्पष्ट हो जाएंगे। यह ध्यान रखें कि वक्रीय ग्रह का मान घटाना चाहिए और मार्गी ग्रह का मान जोड़ना चाहिए। यहां गुरु वक्रीय है अतः उसका 1.30 का मान घटाना होगा तब जन्म समय की स्थिति प्राप्त होगी।

5. 24 घंटे की गति व समयान्तर के अनुसार कैसे सारणी व लॉग विधि द्वारा मान प्राप्त किया जाता है, पिछले पृष्ठों में विस्तार से समझा दिया गया है, उसी तरह ग्रह स्पष्ट करें यहां पुनः विधि देने की आवश्यकता नहीं है। जैसे यदि 24 घंटे में चन्द्र की गति 14°–16'–18" हो तो 1 घंटे 30 मिनट में कितनी होगी ? इसी तरह ग्रह का मान प्राप्त करके दिनांक 25–6–1997 की 12 बजे की एफेमेरीज में दी गई स्थिति में जोड़ने से जन्म समय के ग्रह सायन मतानुसार स्पष्ट हो जाएंगे। यदि भारतीय मतानुसार अर्थात् निरयन ग्रह स्थिति जाननी हो तो उनमें से अयनांश घटा देने से निरयन ग्रह स्थिति प्राप्त हो जाएगी।

दिनांक 25–6–1997 को 1–30 बजे बाद दोपहर जी.एम.टी की ग्रह स्थिति इस प्रकार होगी ? दिनांक 25–6–1997 को दोपहर 12 बजे की एफेमेरीज के अनुसर ग्रह स्थिति इस प्रकार है। इसमें 1 घंटा 30 मिनट का (क्योंकि जन्म समय 2–30 बाद दोपहर था, एक घंटा डे सेविंग टाइम घटा कर नारमल समय 1–30 बजे हुआ) गति अनुसार मान जोड़ने व वक्री ग्रह का घटाने से जन्म समय 1–30 बजे बाद दोपहर की ग्रह स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

1. सूर्य 12 बजे दोपहर		राशि	अंश	कला	विकला
एफेमेरीज अनुसार	=	3	3	57	37
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान	+ =			3	33
जन्म समय का सूर्य स्पष्ट	=	3	4	1	10

2. चन्द्र 12 बजे					
एफेमेरीज अनुसार	=	11	7	5	51
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान +	=			53	30
जन्म समय का चन्द्र स्पष्ट	=	11	7	59	21
3. बुध 12 बजे					
एफेमेरीज अनुसार	=	3	3	35	0
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान +	=			8	11
जन्म समय का बुध स्पष्ट	=	3	3	43	11
4. शुक्र 12 बजे					
एफेमेरीज अनुसार	=	3	26	1	0
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान +	=			4	33
जन्म समय का शुक्र स्पष्ट	=	3	26	5	33
5. मंगल 12 बजे का					
एफेमेरीज अनुसार	=	6	2	45	0
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान +	=			1	45
जन्म समय का मंगल स्पष्ट	=	6	2	46	45
6. गुरु 12 बजे का					
एफेमेरीज अनुसार	=	10	21	34	0
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान (–)	=			–	11
गुरु जन्म समय का स्पष्ट	=	10	21	33	49
7. शनि 12 बजे का					
एफेमेरीज अनुसार	=	0	19	12	0
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान +	=				15
जन्म समय का शनि स्पष्ट	=	0	19	12	15
8. राहू 12 बजे का					
एफेमेरीज अनुसार	=	5	23	46	0
1 घंटा 30 मिनट का गति अनुसार मान (–)	=			–	11
जन्म समय का राहू स्पष्ट	=	5	23	45	49

9. केतू 12 बजे का
एफेमेरीज अनुसार = 11 23 46 0
1 घंटा, 30 मिनट का
गति अनुसार मान (–) = – 11

जन्म समय का केतू स्पष्ट = 11 23 45 49

सभी ग्रह स्पष्ट हो गए है। इनका ग्रह स्पष्ट चक्र बनाएंगे ताकि प्रत्येक ग्रह की स्पष्ट स्थिति जानने में सुविधा रहे।

दिनांक 25-6-1997, को 1.30 बजे बाद दोपहर जन्म समय के ग्रह स्पष्ट (सायन)

सायन ग्रह स्पष्ट चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु वक्री	शनि	राहू	केतू
राशि	2	11	3	3	6	10	0	5	11
अंश	4	7	3	26	2	21	19	23	23
कला	1	59	43	5	46	33	12	45	45
बिकला	10	21	11	33	45	49	15	49	49

यदि निरयनमतानुसार ग्रह स्थिति ज्ञात करनी हो तो सायन जन्म समय की ग्रह स्थिति से अयनांश घटाने पर जन्म समय की ग्रह स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। प्रत्येक ग्रह स्पष्ट से अयनांश 23°-49'-15' घटाने से निरयन ग्रह स्थिति जन्म समय की स्पष्ट हुई।

निरयन ग्रह स्पष्ट चक्र

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु वक्री	शनि	राहू	केतू
राशि	2	10	2	3	5	9	11	4	10
अंश	10	14	9	2	8	27	25	29	29
कला	11	10	53	16	57	50	23	56	56
बिकला	55	6	56	18	30	34	0	34	34

सायन व निरयन मतानुसार भाव व ग्रह स्पष्ट किए जा चुके हैं। अब लग्न कुण्डली अथवा जन्म कुण्डली सर्वप्रथम पाश्चात मतानुसार बनाएंगे। आमतौर पर पाश्चात्य देशों में गोल कुण्डली बनाई जाती है।

जन्म कुण्डली (सायन)

जन्म कुण्डली (सायन)

यदि निरयन जन्म कुण्डली बनानी हो तो इस प्रकार बनेगी। भारतीय मतानुसार जन्म कुण्डली के साथ चन्द्र कुण्डली भी बनानी चाहिए।

जन्म कुण्डली (निरयन)
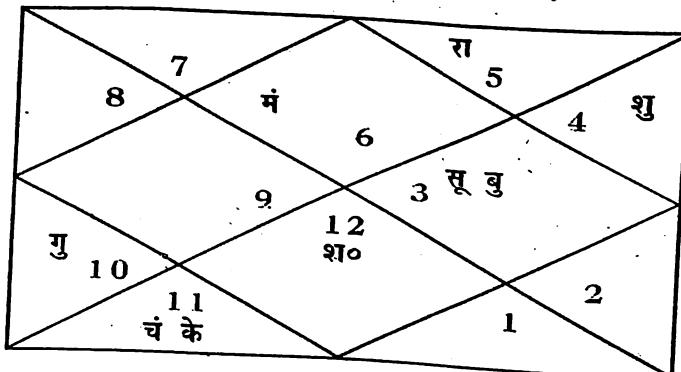
चन्द्र कुण्डली
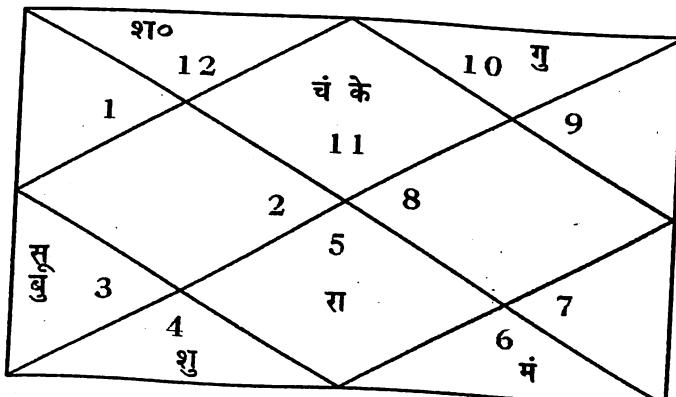
लग्न अर्थात् जन्म कुण्डली सायन और निरयन मतानुसार स्पष्ट कर दी गयी है। पाठक यदि चाहें तो जिस मतानुसार जन्म कुण्डली बनाना चाहें, बना सकते हैं। इसी लिए दोनों मतानुसार भाव व ग्रह स्पष्ट किए गए हैं।

क्योंकि भाव व ग्रह स्पष्ट किए जा चुके हैं, अतः इनकी सहायता से अन्य चक्र सरलता से बनाए जा सकते हैं। हम यहां केवल चलित व नवांश चक्र दोनों मतानुसार देंगे, अन्य चक्र बनाने की विधि पिछले पृष्ठों में दी गयी है अतः अन्य चक्र विधि अनुसार बनाए जाने चाहिए। सर्वप्रथम यहां चलित चक्र दिया जा रहा है। आपकों पुनः स्मरण कराया जाता है कि पाश्चात्य मतानुसार भाव का विस्तार भाव से भाव तक होता है। जिस ग्रह के राश्यंश इस विस्तार के भीतर आते हैं, वह ग्रह उस भाव में माना एवं लिखा जाता है। यदि ग्रह आगे–पिछले भाव के अन्तर्गत आता हो तो ग्रह को उसी भाव में लिखा जाता है। चलित चक्र, ग्रह और भाव स्पष्ट को सामने रखकर बनाना चाहिए। आमतौर पर सायन अथवा पाश्चात्य मतानुसार चलित चक्र की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि जन्मकुण्डली से ही ग्रहों व भावों की स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

चलित चक्र (सायन) **चलित चक्र (निरयन)**

VI 24°-34'	VII 16°-1' श०	VIII 11°-34'	IX 13°-34' सू बु
V 26°-34' चं के	25-6-1997 1-30 P.M.		X 21°-34' शु
IV 21°-34' गु			XI 26°-34' रा
III 13°-34'	II 11°-34'	लग्न 16°-1'	XII 24°-34' मं
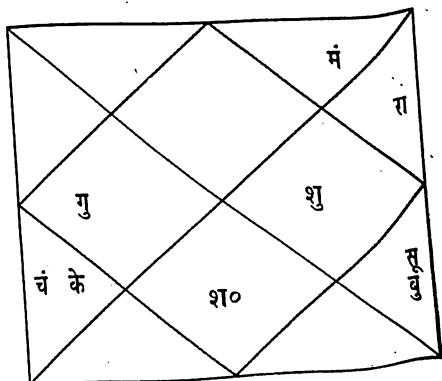
यदि इस जन्म कुण्डली को ध्यान से देखें तो जन्म कुण्डली से ही भाव एवं ग्रह की स्पष्ट स्थिति ज्ञात हो जाती है। पाश्चात्य ज्योतिषी इसी कुण्डली को महत्व देते हैं।

जन्म कुण्डली (सायन)

VI 24'-34' चं 8°-35'-01" के 23°-45'-49"	VII 16°-1' श० 19°-12'-15"	VIII 11°-34'	IX 13°-34'
V 26'-34' गु 21°-33'-49"	25-6-1997 1-30 P.M. लिवरपूल (यू.के.)		X 21°-34' सू 4°-1'-10" बु 3°-43'-11" शु 26°-5'-33"
IV 21°-34'			XI 26°-34'
III 13°-34'	II 11°-34'	लग्न 16°-1' मंगल 2°-46'-45"	XII 24°-34' रा 23°-45'-49"

इस कुण्डली को ध्यानपूर्वक देखने से पता चलता है कि लग्न तुला है और तुला लग्न 16°–01' पर है। मंगल तुला राशि में दिखाया गया है परन्तु मंगल के तुला पर 2 अंश 46 कला 45 बिकला हैं और लग्न अर्थात् प्रथम भाव का प्रारम्भ तुला 16°–01' से होता है। अतः यह तुरन्त स्पष्ट हो जाता है कि मंगल प्रथम से अभी पीछे चल रहा है, अतः मंगल बेशक तुला राशि में है परन्तु मंगल द्वादश भाव में गिना जाएगा। इसी तरह सूर्य बुध शुक्र कर्क राशि में है। दशम भाव कर्क के 21 अंश. 34 कला से प्रारम्भ होता है परन्तु सूर्य, बुध के राश्यंश क्रमशः 4 अंश 1 कला 10 बिकला और बुध के 3 अंश 43 कला 11 बिकला है जो दशम भाव प्रारम्भ होनो से अभी पीछे हैं अतः सूर्य बुध नवम में माने जाएंगे परन्तु शुक्र जो उनके साथ 26 अंश 5 कला 33 बिकला पर है, दशम भाव प्रारम्भ होने के आगे और एकादश भाव प्रारम्भ होने से पीछे हैं, अतः शुक्र दशम भाव में माना जाएगा। अतः इस कुण्डली से ही सभी प्रकार की स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

कई बार भाव स्पष्ट करते समय (प्लेसिड्स पद्धति से) एक से दूसरे भाव तक राशि में वाधा अथवा राशि आलोप हो जाती है और एक राशि में दो या दो राशि में एक भाव का विस्तार आ जाता है, इसे राशि का INTERCEPT होना भी कहा जाता है। सायन पद्धति अ[illegible] भाव स्पष्ट करने पर कई वार ऐसा नहीं भी होता परन्तु जब भावों को अयनांश घटाकर निर[illegible] मतानुसार बनाया जाता है तो बार राशि INTERCEPT हो जाता है। जैसे हमारी उदाहरण में सायन

मतानुसार चतुर्थ भाव का विस्तार मकर राशि के 21 अंश 34 कला से कुम्भ राशि के 26 अँश 34 कला तक है। (देंखें सायन भाव स्पष्ट) परन्तु जब अयनांश घटाकर इसी भाव को स्पष्ट किया गया अर्थात् भारतीय निरयन मतानुसार स्पष्ट किया गया तो चतुर्थ भाव का विस्तार धन राशि के 27 अंश 44 कला 45 बिकला से कुम्भ राशि के 2 अंश 44 कला 45 बिकला तक स्पष्ट हुआ और मकर राशि इस तरह INTERCEPT हो गयी। इस लिए भावों का विस्तार एवं ग्रहों की भावों में स्थिति देखते समय इन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

नवांश कुण्डली—आजकल प्रायः जन्मपत्रियों में अधिकतर नवांश कुण्डली ही दी होती है और अन्य चक्रों व वर्गों को कम ही बनाया जाता है। पाश्चात्य देशों मे भी आज कल नवांश कुण्डली को अधिक महत्व दिया जाता है। अतः नवांश कुण्डली जन्मपत्री में अवश्य बनानी चाहिए। यहां दोनों मतानुसार नवांश कुण्डली दे दी गयी है।

नवांश कुण्डली(सायन)

	गु		
लग्न शु के	नवांश चक्र		
			सू बु रा
		मं	चं श०

नवांश कुण्डली (निरयन)
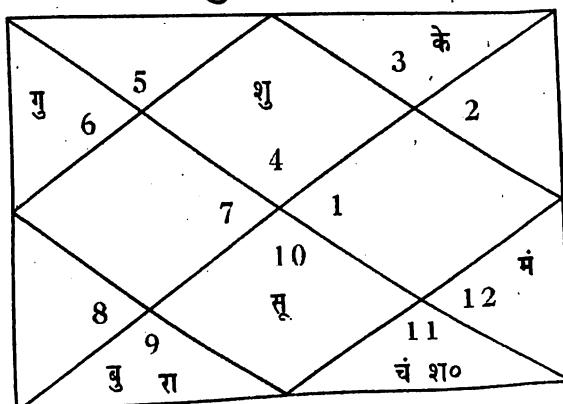
सायन नवांश कुण्डली में सूर्य सिंह राशि और बुध राहू भी सिंह राशि में है और निरयन नवांश कुण्डली में सूर्य मकर राशि में स्थापित है।

आमतौर पर नवांश चक्र आजकल जन्मपत्रियों में दिया होता है। और अन्य चक्र क्रम ही दिए होते है। सामन मतानुसार जन्मपत्र में तो नवांश चक्र ही प्रायः होता है और अन्य चक्र नहीं होते। सप्तवर्गी, दशवर्गी जन्मपत्रियों की आज कल प्रथा कम है, आजकल अधिकतर जन्मपत्रियां पुरातन शैली से न वन कर अधुनिक शैली अर्थात् साम्पातिक काल विधि द्वारा बनाई जाती है जो प्रामाणिक होती है। यदि पाठक अन्य चक्र बनाने चाहें तो सभी चक्रों को बनाने की विधियां पिछले पृष्ठों में समझाई जा चुकी है। पाठक यह सदैव स्मरण रखें कि जब लग्न, द्वादश भाव व ग्रह स्पष्ट कर लिए जाएं तो किसी प्रकार की कुण्डली, चक्र व वर्ग जानने अथवा बनाने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि अन्य सभी चक्र सारिणयों की सहायता से वनाए जाते है और प्राय प्रत्येक पंचांग, एफेमेरीज में सारणीयां होती है। अतः लग्न, अन्य भाव और ग्रह स्पष्ट करने का अभ्यास करना चाहिए।

महादशा–सायन मतानुसार अथवा पाश्चात्य देशों में किसी घटना के घटित होने का समय जानने के लिए बहुत की विधियां प्रचलित हैं और पाश्चात्य देशों में भारतीय दशादि आदि का कम प्रयोग होता था, परन्तु आज कल पाश्चात्य दशों में भी बिंशोतरी दशा को महत्व दिया जाता है। अतः यदि पाठक चाहें तो जब सायन मतानुसार जन्मकुण्डली अथवा जन्मपत्री बनाएं तो महादशा, अन्तर्दसा भी दे दें परन्तु निरयन अथवा भारतीय मतानुसार यदि जन्मपत्री बनाएं तो दशा, अन्तर्दशा चक्र अवश्य बनाना चाहिए। महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा चक्र अवश्य बनाना चाहिए। महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा व सूक्ष्मदशा कैसे ज्ञात की जाती है और कैसे चक्र बनाए जाते हैं पिछले प्रकरणों में स्पष्ट कर दी गई है। फिर भी यहां हम लिवरपूल यू. के में जन्मे बालक का महादशा चक्र स्पष्ट करते हैं।

जन्म समय चन्द्रमा स्पष्ट (निरयन) कुम्भ राशि के 14 अंश 10 कला 06 बिकला पर था। सर्वप्रथम चन्द्रमा स्पष्ट से जन्म नक्षत्र, चरण, अक्षर, अवकहड़ा आदि सभी प्रकार की जानकारी लिख लेनी चाहिए और जन्मपत्र में जैसे पिछले पृष्ठों में बताया गया है लिखनी चाहिएं। हम यहां केवल महादशा ही स्पष्ट करेंगे।

बालक को जन्म समय राहू की महादशा चल रही थी जो निरयन चन्द्र स्पष्ट के राश्यंश के अनुसार सारणी (दशा सारणी) से ज्ञात की गई, जो 7 वर्ष 10 मास 15 दिन शेष अथवा भोग्य दशा थी और 10 वर्ष 1 मास 15 दिन भुगत चुकी थी। अतः बालक को जन्म

समय 25-6-19997 से 10-5-2005 तक राहू की महादशा रहेगी।

विंशोतरी महादशा चक्र

ग्रह	भुक्ति	राहू	गुरु	शनि	बुध	केतू	शुक्र
वर्ष मास दिन	10 1 15	7 10 15	16 0 0	19 0 0	17 0 0	7 0 0	20 0 0
ता. मास सन् ई० से		25-6-1997	10-5-2005	10-5-2021	10-5-2040	10-5-2057	10-5-2064
ता. मास सन् ई० तक		10-5-2005	10-5-2021	10-5-2040	10-5-2057	10-5-2064	

महादशा चक्र से उपरान्त अन्तर्दशा चक्र भी बनाना चाहिए। यहां केवल निरयन चन्द्र स्पष्ट को लेकर महादशा चक्र बनाया गया है, यदि पाठक चाहें तो सायन चन्द्र स्पष्ट को लेकर जो मीन राशि के 7 अंश 59 कला 21 बिकला पर है का जन्म नक्षत्र, चरण, अक्षर, अवकहड़ा आदि ज्ञात करके लिख सकते हैं और महादशा अन्तर्दशा चक्र बना सकते हैं।

पाठकों को ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी जन्मपत्री निर्माण में दोनों मतों का उपयोग नहीं करना चाहिए। जन्मपत्री बनाने के लिए किसी एक मत अथवा या तो निरयन य सायन मतानुसार जन्मपत्री बनानी चाहिए क्योंकि साथ-साथ दोनों मतानुसार जन्मपत्री बनाने से भ्रम पड़ सकता है। यहां दोनों मतों का उपयोग केवल समझाने के लिए किया गया है।

यहां लिवरपूल यू. के में जन्मे बालक का उदाहरण लिया था और यू.के अथवा स्थानीय एफेमेरीज का उपयोग करके जन्मकुण्डली बनाई

थी। अब भारतीय एफेमेरीज की सहायता से विदेश की जन्मपत्री वनाएंगे। भारतीय एफेमेरीज व राफेल टेबल ऑफ हाऊसस् की सहायता से किसी भी देश का लग्न स्पष्ट किया जा सकात है व जन्मपत्री बनाई जा सकती है।

भारत के कई पंचांग अथवा एफेमेरीज प्रकाशित होती है। परन्तु हम लाहिरी एफेमेरीज और राफेल टेबल ऑफ हाऊसस् की सहायता से विदेश का जन्मकुण्डली अथवा जन्मपत्री का निर्माण करेंगें।

भारतीय एफेमेरीज से विदेश की जन्मकुण्डली?—जैसे पहले बताया गया है कि भारतीय एफेमेरीज से किसी भी अन्य देश की लग्न स्पष्ट व जन्म कुण्डली बनायी जा सकती है। हम यहां इसके लिए लाहिरी एफेमेरीज व राफेल टेबल ऑफ हाऊसस् का उपयोग करेंगे। अन्य सारिणीयों बनाने के लिए व ग्रह स्पष्ट करने के लिए अन्य उपयोगी पुस्तकों व तालिकायों का भी उपयोग करेंगे।

कनाडा की जन्मपत्री

उदाहरण—किसी बालक का जन्म 9 दिसम्बर 1998 दिन बुधवार को टोंरटों (कनाडा) में 11–30 प्रातः E.S.T कनाडा मानक समयानुसार हुआ। इसका लग्न व जन्मकुण्डली रचना करनी है। सर्वप्रथम जन्म, जन्म स्थान व अन्य सभी प्रकार के शोधन नोट किए।

1. जन्म स्थान = टोंरटो (कनाडा)
2. जन्म स्थान का
   अक्षांश = 43°–39' उतर
   रेखांश = 79°–23' पश्चिम
3. जन्म तारीख = 9–9–1998
4. जन्म वार = बुधवार
5. जन्म समय = 11.30 प्रातः कनाडा मानक समय
6. स्थानीय मध्यम समय संस्कार ऋणात्ममक = 17 मिनट 32 सैकण्ड
7. कनाडा मानक समय से भारतीय मानक समय संस्कार धनात्मक = + 10 घंटे 30 मिनट
8. भारतीय साम्पातिक काल जन्म स्थान के लिए संस्कार = + 1 मिनट 46 सैकण्ड
9. अयनांश = 23°–50'–12'

यह सभी जानकारी जन्म के साम्बन्ध में व अन्य जानकारी एफेमेरीज 1998 से नोट कर लेनी चाहिए।

1. जन्म समय 11.30 प्रातः है तथा वह 9–9–98 का है। इस समय डे सेविंग समय चल रहा था जो एक घंटा आगे किया होता है। इस लिए एक घंटा घटाने पर जन्म समय 10.30 प्रातः प्राप्त हुआ जो जन्म का साधारण अथवा Normal समय था।

1. जन्म समय	=	11–30 प्रातः
2. डे सेविंग का 1 घंटा घटाया	=	1–00
3. जन्म समय	=	10–30 प्रातः
4. G.M.T. (जी.एम.टी) प्राप्त करने के लिए 5 घंटे जोड़े	=	5–0
जी.एम.टी	=	3.30 बाद दोपहर
5. भारतीय मानक समय बनाया शोधन संस्कार +	=	10–30
6. भारतीय मानक समय	=	9–00 रात्रि दिनांक 9–9–98

(क) लग्न निकालना–सर्वप्रथन मानक समय को स्थानीय समय बनाया जाता है क्योंकि लग्न सदैव स्थानीय समय को लेकर स्पष्ट किया जाता है।

		घंटे	मि.	सै.
1. जन्म समय	=	11	30	0
2. डे सेविंग घटाया	=	1	0	0
3. ठीक जन्म समय	=	10	30	0
4. स्थानीय समय शोधन संस्कार		(–)	17	32
5. स्थानीय समय	=	10	12	28
6. 12 बजे दोपहर से		12	0	0
स्थानीय समय का		10	12	28
अन्तर	=	1	47	32
7. 10 सैकण्ड प्रति घंटा शोधन संस्कार जोड़ा	=	0	0	18
योगफल	=	1	47	50
8. 12 बजे का साम्पातिक काल	=	11	12	27
9. जन्म स्थान के लिए भारतीय साम्पातिक काल का करैक्शन जोड़ा		+	1	46

10. 12 बजे का साम्पातिक काल	=	11	14	13
11. 12 बजे के साम्पातिक काल से अन्तर समय क्रम नं: 7 का घटाया	=	1	47	50
12. जन्म समय 10–30 प्रातः दिनांक 9–9–1998 का साम्पातिक काल	=	9	26	23

इस तरह जन्म समय का अर्थात् इष्टकालिक सम्पातिक काल 9 घंटे 26 मिनट 23 सैकण्ड प्राप्त हुआ। टेबल आफ हाऊसस् में से अक्षांश 43^0–39' उतर में दिए लग्न एवं अन्य भाव स्पष्ट के अनुसार इष्टकालिक साम्पातिक काल का लग्न स्पष्ट किया जाएगा।

टेबल आफ हाऊसस् में अक्षांश 43^0–40 की लग्न एवं अन्य भाव सारणी दी हुई है अतः इष्टकालिक साम्पातिक काल का लग्न इसी से स्पष्ट करेंगे।

1. इष्टकालिक साम्पातिक काल अर्थात् जन्म समय का साम्पातिक काल 9–26–23 है परन्तु सारणी में यह समय नहीं है परन्तु 9–25–41 व 9–29–40 का लग्न व अन्य भाव दिए है। अपना साम्पातिक इसके भीतर का है अतः थोड़ा साधारण गणित करके अपने साम्पातिक काल का लग्न स्पष्ट कर लेंगे।

1 = 9–29–40 के लिए लग्न स्पष्ट वृश्चिक = 10^0–9'

= 9–25–41 के लिए लग्न के राश्यंश वृश्चिक = 9–24

दोनों का अन्तर अर्थात् कितने समय कितना बढ़ा

0–3–59 = 0–45

2. इष्टकालिक साम्पातिक काल 9–26–23 है जो साम्पातिक 9–25–41 से 9–26–23 (–) 9–25–41=42 सैकण्ड का अन्तर है।

3. इस तरह यदि 3–59=239 सैकण्ड पर 45 कला लग्न बढ़ता है तो 42 सैकण्ड पर कितना बढ़ेगा?

$$\frac{45 \times 42}{239} = 8 \text{ कला}$$

4. 9–25–41 साम्पातिक काल के लग्न के राश्यंश वृश्चिक 9^0–24'

5. 42 सैकण्ड का मान जोड़ा 8 कला = +8

6. इष्टकालिक साम्पातिक काल 9 घंटे 26 मिनट 23 सैकण्ड का लग्न स्पष्ट = वृश्चिक 9–32

इस तरह जन्म दिनांक 9-9-98 को प्रातः 11-30 बजे (10-30 बजे) जिस बालक का टोंरटों में जन्म हुआ था उसका सायन लग्न वृश्चिक राशि के 9 अंश 32 कला पर था। इसी तरह अन्य भाव भी स्पष्ट कर लेने चाहिए। यदि सायन लग्न से निरयन अर्थात् भारतीय मतानुसार लग्न स्पष्ट जानना हो तो सायन लग्न स्पष्ट से दिनांक 9-9-1998 का अयनांश 23°-50'-12" घटा दें तो निरयन लग्न स्पष्ट ही जाएगा जैसेः-

1. सायन लग्न स्पष्ट वृश्चिक 9 अंश 32 कला
2. अयनांश 23°-50'-12" घटाया 23-50-12 घटाया
3. निरयन लग्न स्पष्ट तुला 15°-41'-48"

(ख) ग्रह स्पष्ट—जन्म समय 10-30 प्रातः (1 घंटा सेविंग निकाल कर) है। क्योंकि ग्रह स्पष्ट मानक समयानुसार किए जाते हैं और हमने ग्रह स्पष्ट भारतीय एफेमेरीज की सहायता से करने हैं तो कनाडा मानक समय को भारतीय मानक समय बनाना पड़ेगा अतः

		घंटे	मि.	सै.
1. जन्म समय कनाडा मानक समय	=	10	30	0
2. भारतीय मानक समय बनाने के लिए शोधन संस्कार	= +	10	30	0
3. भारतीय मानक समय	=	21	0	0

अतः जब टोरटों में मानक समय दिनांक 9-9-98 को प्रातः 10-30 था तो भारतीय मानक समय दिनांक 9-9-98 की रात्रि 9 बजे का था। लाहिरी एफेमेरीज में प्रातः 5.30 बजे की ग्रह स्थिति दी हुई है। हमें रात्रि 9 बजे की ग्रह स्थिति चाहिए तो 21-0 (-) 5-30 =15-30 अर्थात् प्रत्येक ग्रह की गति के अनुसार 15 घंटे 30 मिनट का मान प्राप्त करके प्रातः 5.30 वाली ग्रह स्थिति में जोड़कर भारतीय मानक समयानुसार रात्रि 9 बजे की ग्रह स्थिति प्राप्त ही जाएगी जो टोरंटों (कनाडा) में जन्म लेने वाले बालक के जन्म समय 10-30 प्रातः दिनांक 9-9-1998 की होगी। यह ग्रह स्थिति भारतीय अथवा निरयन मतानुसार होगी। इस में अयनांश जोड़ देने के सायन ग्रह स्थिति प्राप्त हो जाएगी। यह प्रक्रिया पिछले पृष्ठों में दे दी है अतः उसी अनुसार भाव स्पष्ट, ग्रह स्पष्ट करके पूर्ण जन्मपत्री बना लें। यहां केवल सायन और निरयन लग्न अर्थात् जन्म कुण्डली दी जा रही है।

सायन जन्म कुण्डली **निरयन जन्म कुण्डली**

गु के		चं श०	
			मं
	लग्न 9°-32'		सू. बु शु रा
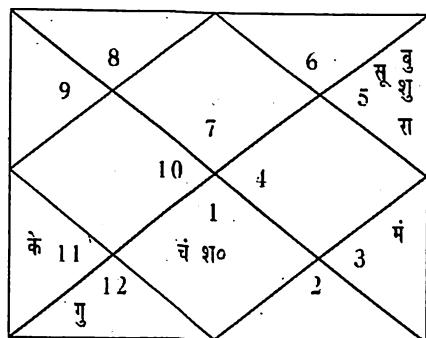
अन्य चक्र व कुण्डलियां बनाने की विधि पिछले पृष्ठों में विस्तार से दी जा चुकी है। इन कुण्डलियों में शनि, गुरु वक्रीय हैं। यह उल्लेख भी ग्रह स्थिति में दे देना चाहिए।

अमेरिका की जन्मपत्री

उदाहरण 2–किसी बालक का जन्म दिनांक 24 जून–1998 बुधवार को प्रातः 7.30 बजे न्यूयार्क (अमेरिका) में न्यूयार्क मानक समय के अनुसार हुआ। इसका लग्न एवं जन्मकुण्डली बनाएंगे।

1. जन्म स्थान = न्यूयार्क (अमेरिका)
2. जन्म स्थान का
   अक्षांश = 40°–43' उतर
   रेखांश = 74–00 पश्चिम
3. जन्म तारीख = 24–6–1998
4. जन्म वार = बुधवार
5. जन्म सयम = 7–30 प्रातः
   (डे सेविंग का 1 घंटा घटाया)

साधारण अथवा आम समय = 6.30 प्रात

6. स्थानीय मध्यन समय
   संस्कार + = 4 मिनट 00 सैकण्ड
7. अमेरिका मानक सयम से
   भारतीय मानक समय
   संस्कार = 10–30
8. भारतीय साम्पातिक काल
   जन्म स्थान के लिए
   संस्कार = + 1मिनट 43 सैकण्ड

9. दिनांक 24-6-1998
का अयनांश = 23°-50'-0"

जन्म सम्बन्धी जानकारी और अन्य जानकारी एफेमेरीज से नोट कर ली गई। सर्व प्रथम स्थानीय समय बनाएंगे।

		घंटे	मिनट	सैकण्ड
1. जन्म समय	=	6	30	0
2. स्थानीय समय संस्कार	=	0	4	0
3. स्थानीय समय	=	6	24	0
4. 12 बजे दोपहर से स्थानीय	=	12	0	0
समयान्तर		6	34	0
		5	26	0
5. 10 सैकण्ड प्रति घंटा संस्कार 5 घंटा 26 मिनट का जोड़ा	=			54
		5	26	54
6. 12 बजे का साम्पातिक काल	=	6	8	52
7. साम्पातिक काल करैक्शन +	=		1	43
8. 12 बजे का साम्पातिक काल	=	6	10	35
9. 12 बजे के साम्पातिक काल से अन्तर समय क्रम नं: 5	=	6	10	35
का जन्म समय पहले दोपहर होने से घटाया (-)	=	5	26	54
		0	43	41

इस तरह जन्म समय प्रातः 6.30 का इष्टकालिक साम्पातिक काल 0 घंटा 43 मिनट 41 सैकण्ड प्राप्त हुआ। अब राफेल टेबल ऑफ हाऊसस् में लग्न व अन्य भाव स्पष्ट सारणी से जो अक्षांश 40°-43' के लिए होगी, लग्न स्पष्ट करेंगे। टेबल ऑफ हाऊसस् में अक्षांश 40°-43' उत्तर की सारणी दी हुई है अतः इसका उपयोग किया जाएगा।

लग्न व अन्य भाव सारणी में 0-40-26 और 0-44-8 का लग्न व अन्य भाव दिए है। हमारा साम्पातिक काल इसके भीतर का है अतः थोड़ा गणित करके अपने साम्पातिक काल का लग्न स्पष्ट किया जाना है।

घं. मि. सै.

1. = 0-44-8 साम्पातिक काल का लग्न = कर्क 27°-50'
2. = 0-40-26 साम्पातिक काल का लग्न = कर्क 27- 5

अन्तर

0-3-42 = 0-55

3. इष्टकालिक साम्पातिक काल 0 घंटा 43 मिनट 41 सैकण्ड और साम्पातिक काल 0 घंटा 40 मिनट 26 सैकण्ड का अन्तर ज्ञात किया =

	0	43	41
(−)	0	40	26
=	0	3	15

अतः यदि 222 सैकण्ड (3 मिन्ट 22 सैकण्ड) पर लग्न 55 कला बढ़ता है तो 3 मिनट 15 सैकण्ड अर्थात् 195 सैकण्ड में कितना बढ़ेगा ?

$$\frac{55 \times 195}{222} = 48 \text{ कला}$$

4. साम्पातिक काल 0 घंटा 40 मिनट 26 सैकण्ड का सायन लग्न	=	कर्क	27°	5'
5. 3 मिनट 15 सैकण्ड का मान जोड़ा	=	+	0	48
6. इष्टकालिक साम्पातिक काल 0 घंटा 43 मिनट 41 सैकण्ड का सायन लग्न स्पष्ट हुआ	=	कर्क	27	53

इस तरह दिनाक 24–6–1998 को प्रातः 7.30 बजे। एक घंटा डे सेविंग का घटाने पर नारमल समय 6.30 बजे न्यूयार्क (अमेरिका) जन्मे बालक का सायन लग्न कर्क के 27 अंश 53 कला स्पष्ट हुआ।

निरयन लग्न स्पष्ट जानने के लिए अयनांश घटा दे तो निरयन लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

1. सायन लग्न स्पष्ट	=	कर्क	27°	53'	0"
2. अयनांश घटाया	=		23	50	0
3. निरयन लग्न स्पष्ट	=	कर्क	4	3	0

(ख) ग्रह स्पष्ट—जैसे पूर्व उदाहरण के ग्रह स्पष्ट किए गए, उसी प्रकार करेंगे। न्यूयार्क समय जन्म का प्रातः 6–30 का है। भारतीय मानक समय जानने के लिए 10 घंटे 30 मिनट जोड़ा तो भारतीय मानक समय प्राप्त हो जाएगा। एफेमेरीज 1998 में 5–30 बजे प्रातः भारतीय मानक समय के अनुसार ग्रह स्पष्ट दिए गए है। जन्म समय और इस दिए गए समय का अन्तर जानकर जन्म समय के ग्रह प्राप्त कर लेंगे।

		घं	मि.
1. जन्म समय	=	6	30
2. भारतीय मानक समय शोधन	=	10	30
3. भारतीय मानक समय	=	17	00

अतः जब न्यूयार्क अमेरिका में प्रातः 6–30 बजे का समय था तो भारत में शाम का 5–00 बजे का समय था।

1. एफेमेरीज में ग्रह स्पष्ट समय प्रातः 5.30 बजे
2. जन्म समय भारतीय मानक समय अनुसार =5–00 शाम
3. समयान्तर 17–00 (–) 5–30 =11 घंटे 30 मिनट

इस तरह ग्रह की गति अनुसार 11 घंटे 30 मिनट का मान निरयन ग्रह स्थिति जो 5.30 बजे प्रातः की है में जोड़ने पर जन्म समय 6.30 प्रातः दिनांक 24–6–98 न्यूयार्क के लिए ग्रह स्पष्ट हो जाएंगे। यह निरयन ग्रह स्थिति होगी। इसमें अयनांश जोड़ देने पर सायन स्थिति प्राप्त हो जाएगी। इस अनुसार लग्न अथवा जन्म कुण्डली बना लें। अन्य भाव, ग्रह व चक्र बनाने की विधियां पिछले पृष्ठों दी गई हैं अतः उसी अनुसार गणित करके पूर्ण जन्मपत्री बना लें। यहां केवल सायन व निरयन जन्म कुण्डली दी जा रही है।

दिनांक 24–6–98
प्रातः 6.30 बजे
सायन जन्म कुण्डली

न्यूयार्क अमेरिका

गु के		श० शु	मं.
	24-6-98 प्रात: 6-30 न्यूयार्क		लग्न 27°-53' सू बु चं
			⊕
			रा

दिनांक 24–6–98
प्रातः 6.30 बजे
न्यूयार्क

जन्मकुण्डली (निरयन)
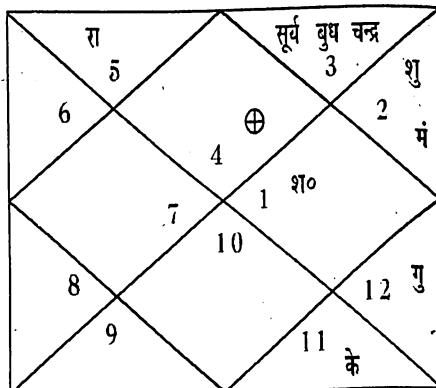
यदि चन्द्र कुण्डली व अन्य चक्र बनाने चाहें तो दी गई विधियों अनुसार बना लें।

पार्टस् [illegible]चूना अथवा भाग्य [illegible] भारती[illegible] जन्मपत्री में यह स्थिति

बहुत कम दी गयी होती है परन्तु पाश्चात्य ज्योतिषी इस स्थिति को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। इस लिए भाग्य बिन्दु ज्ञात करके अवश्य जन्म कुण्डली में अंकित करना चाहिए क्योंकि यह अति महत्वपूर्ण स्थिति हैं, जिससे जातक के भाग्य अर्थात् आर्थिक स्थिति का तुरन्त पता लगाया जा सकता है।

भाग्य बिन्दु कैसे जानें?—भाग्य बिन्दु ज्ञात करने का नियम अत्यन्त सरल है। केवल लग्न,चन्द्र व सूर्य स्पष्ट की आवश्यकता होती है। नियम इस तरह है।

1. लग्न स्पष्ट + जन्म स्पष्ट का चन्द्र स्पष्ट – जन्म समय का सूर्य स्पष्ट = भाग्य बिन्दु।

जैसे जिस बालक का जन्म न्यूयार्क में हुआ था उसका सायन लग्न स्पष्ट कर्क के 27 अंश 53 कला था। जन्म समय का सायन सूर्य स्पष्ट कर्क राशि के 2 अँश 45 कला 34 बिकला और जन्म समय का सायन चन्द्र स्पष्ट कर्क राशि के 6 अंश 53 कला 22 बिकला पर था। अब इस के भाग्य बिन्दु की स्थिति ज्ञात करेंगे।

	राशि	अंश	कला	बिकला
नियमानुसार = लग्न स्पष्ट सायन लग्न	= 3	27	53	32
+				
सायन चन्द्र स्पष्ट	= 3	6	53	22
योगफल	= 7	4	46	22
(–) सायन सूर्य स्पष्ट	= 3	2	45	34
भाग्य बिन्दु स्थिति अथवा स्पष्ट	= 4	2	0	48

जिस बालक का जन्म न्यूयार्क में दिनांक 24–6–1998 को प्रात 6.30 बजे (डे सेविंग टाइस अनुसार 7.30 प्रात) हुआ था इसके भाग्य बिन्दु की स्थिति अथवा भाग्य बिन्दु सिंह राशि के 2 अंश 0 कला 48 बिकला पर स्पष्ट हुआ। कुण्डली में भाग्य बिन्दु का चिन्ह सिंह राशि में अंकित किया जाएगा। परन्तु यदि चलित चक्र अथवा भाव स्पष्ट में यहां इसकी स्थिति होगी लिख दिया जाएगा। इसी तरह निरयन मतानुसार यदि भाग्य बिन्दु की स्थिति स्पष्ट करनी हो तो लग्न, चन्द्र और सूर्य के निरयन स्पष्ट राश्यंश लेने चाहिए।

क्योंकि भाग्य बिन्दु जन्म कुण्डली एक अति महत्वपूर्ण बिन्दु स्थान है और यह जातक की आर्थिक स्थिति का विशेषकर अता–पता बताता है अतः भाग्य बिन्दु का अलग–अलग भाव में क्या प्रभाव हो सकता है, पाठकों की जानकारी के लिए संक्षिप्त रूप में दिया जा रहा है।

पार्टस्-फरचूना अथवा भाग्य बिन्दु परिचय

जन्म कुण्डली में पार्टस्—फरचूना की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण मानी गयी है। भाग्य बिन्दु जन्म क्रुण्डली में ऐसा स्थान है जिससे किसी भी व्यक्ति के भाग्य का तुरन्त ज्ञान प्राप्त होता है। भाग्य बिन्दु यद्यपि कोई ग्रह नहीं है तथा एक बिन्दु स्थान ही है परतु यह व्यक्ति विशेष के मन, मनः वृति, जीवन के झुकाव, जमा धन, सम्पति एवं स्वास्थ्य पर पूरा प्रभाव डालता है। किसी भी व्यक्ति का समूचा भाग्य जानने तथा भाग्य की चमक परखने के लिए भाग्य बिन्दु के झरोखे में से झांकना अत्यावश्यक है। जिस भाव में यह होता है, उस व्यक्ति विशेष अथवा जातक की जन्म कुण्डली के लिए फल इस प्रकार प्रदान करता है। जिस भाव में भाग्य बिन्दु होता है वह आर्थिक स्थिति पर अवश्य प्रभाव डालता है। यहां भावों का फल संक्षेप में दिया गया है।

प्रथम भाव—प्रथम भाव में भाग्य बिन्दु का होना सौभाग्य का संकेत है। आर्थिक स्थिति, विद्या, मान—सम्मान एवं स्वास्थय उतम होता है। उद्यम व स्वयं के प्रयास जीवन में सदैव सफलता देते हैं।

द्वितीय भाव—भाग्य बिन्दु का इस भाव में भी शुभ प्रभाव होता है। जीवन में सुख मिलता है। मत्वाकांक्षा पूर्ण होती है। थोड़े से प्रयास से ही धन प्राप्त होता है। पद प्राप्त होता है एवं धन लाभ होता है। कुटुम्ब का सुख मिलता है।

तृतीय भाव—इस भाव में भाग्य बिन्दु यात्रा का संकेत देता है। जीवन में यात्राएं अधिक होती हैं और लाभ मिलता है आर्थिक स्थिति बेहतर होती है। कोई एजेन्सी मिलती है और पब्लिकेशन, पुस्तकों से लाभ मिलता है।

चतुर्थ भाव—गुप्त धन अथवा अकस्मात् धन प्राप्त होता है। भुमि प्लाट, पैतृक सम्पति एवं गृह सुख की प्राप्ति होती है। जायदाद बनाने के अवसर उपलब्ध होते हैं। विद्या लाभ मिलता है।

पंचम भाव—इस भाव में भाग्य बिन्दु प्रेम सम्बन्ध, प्रेम विवाह के लिए उतम है। सट्टा, लॉटरी, खेल सिनेमा, गाने—बजाने, ऐक्टिंग, पुत्र, सन्तान सुख मिलता है। अकस्मात् लाभ की सम्भावना रहती है। पेट की खराबी की भी सम्भावना होती है।

षष्टम भाव—इस भाव में भाग्य बिन्दु जीवन में संघर्ष का सूचित होता है। जीवन में संघर्ष करने से अवश्य सफलता मिलती है। अधीनस्थ कर्मचारियों, नौकरी से लाभ प्राप्त होता है। बीमारी से परेशानी का भी सामना करना पड़ता है परन्तु शीघ्र ही परेशानी दूर भी हो जाती है। मुकदमे में विजय होती है। पदोन्नति मिलती है।

सप्तम भाव—इस भाव में भाग्य बिन्दु घर् सुख, पत्नी सुख, (स्त्री

जातक की कुण्डली में) पति सुख होता है। प्रायः ग्रहस्थ जीवन सुखी रहता है। विरोधी शान्त रहता है और वाणिज्य लाभ मिलता है। यात्रा सुख मिलता है।

अष्टम भाव—इस भाव में भाग्य बिन्दु पिता, विरासत, वसीअत, बीमा के लिए शुभ होता है। यहां भाग्य बिन्दु दीर्घायु का संकेत हैं। कार्यों में कुछ बाधा का भी सामना करना पड़ता है और परेशानी सूचित करता है।

नवम भाव—इस भाव में भाग्य बिन्दु सौभाग्य का चिन्ह है। पूर्वले शुभ कर्मों का सम्पूर्ण फल मिलता है। अधिकारियों, बुजुर्गों से लाभ प्राप्त होता है। लम्बी यात्राएं व विदेश यात्रा होती है, जो लाभ देती है। उच्च पद प्राप्त होता है।

दशम भाव—व्यापार नौकरी में लाभ होता है। आय लाभ मिलता है और आर्थिक स्थिति उतम होती है। पदोन्नति, मान–सम्मान मिलता है।

एकादश भाव—मित्रों, परिजनों एवं व्यापार द्वारा लाभ प्राप्त होता है। तरक्की मिलती है। आर्थिक स्थिति उतम होती है। सन्तान सुख व पद प्राप्त होता है। मनोकामना पूर्ण होती है। पिता के लिए शुभ फल प्रदान करता है।

द्वादश भाव—इस भाव में भाग्य बिन्दु नए घर जाने का संकेत देता है। पुराना पर छोड़ कर नए घर जाना पड़ता है। विदेश भ्रमण होता है। विदेश में भाग्य बनता है। यहां विरोधियों से परेशानी तथा किसी लांछन का भी संकेत देता है।

यहां भाग्य बिन्दु की स्थिति का साधारण व संक्षिप्त फल दिया गया है। ग्रहों की दृष्टि, राशि आदि के कारण, प्रभाव में परिवर्तन की सम्भावना होती है। अधिक जानकारी के लिए भाग्य दर्पण पुस्तक का अध्ययन करें।

राशि चक्र

राशि हिन्दी नाम	अंग्रेजी नाम	आकृति	रंग	दिशा
मेष	ARIES	भेड़ा	लाल	पूर्व
वृष	TAURUS	बैल	सफेद दही जैसा	दक्षिण
मिथुन	GEMINI	युगल	हरा	पश्चिम
कर्क	CANCER	केकड़ा	दूधिया सफेद	उतर
सिंह	LEO	सिंह नर	सुनहरा	पूर्व
कन्या	VIRGO	लड़की	हरा	दक्षिण
तुला	LIBRA	तराजू	सफेद	पश्चिम
वृश्चिक	SCORPIO	बिच्छू	लाल	उतर
धनु	SAGITTARIUS	दरियाई गाय	पीला	पूर्व
मकर	CAPRICORN	मगरमच्छ	काला	दक्षिण
कुम्भ	AQUARIUS	जल का घड़ा	काला	पश्चिम
मीन	PISCES	मछली	पीला	उतर

पुरुष/स्त्री राशियां

पुरूष राशियां	1-3-5-7-9-11
स्त्री राशियां	2-4-6-8-10-12

राशि तत्व

अग्नि तत्व	1-5-9
पृथ्वी तत्व	2-6-10
वायु तत्व	3-7-11
जल तत्व	4-8-12

राशि गुणादि

1-4-7-10 राशियां	चर
2-5-8-11 राशियां	स्थिर
3-6-9-12 राशियां	द्विस्वभाव

अक्षरानुसार राशि सारणी

राशि	नाम का प्रथम अक्षर								
मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ
वृष	ई	ऊ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फा	ढा	भे
मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
कुम्भ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
मीन	दी	दू	था	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

विशेष—यदि किसी की जन्म राशि मिथुन है तो इसमें कई अक्षर ऐसे हैं जिन अक्षरों पर नाम नहीं रखा जा सकता। यदि ऐसी स्थिति हो तो मिथुन राशि के आगे जो अन्य अक्षर है, इनमें से किसी अक्षर पर नामकरण किया जा सकता है। यदि उ, त्र, ण आदि चरण के अनुसार नाम बनता ही तो न से अथवा किसी अन्य अक्षर से नामकरण किया जा सकता है। ध्यान रहे कि राशि के साथ सामंजस्य देख लेना चाहिए।

राशि चक्र

तारीख/मास	राशि	राशि स्वामी
13 अप्रैल से 13 मई	मेष	मंगल
14 मई से 13 जून	वृष	शुक्र
14 जून से 15 जुलाई	मिथुन	बुध
16 जुलाई से 15 अगस्त	कर्क	चन्द्रमा
16 अगस्त से 15 सितम्बर	सिंह	सूर्य
16 सितम्बर से 16 अक्तूबर	कन्या	बुध
17 अक्तूबर से 15 नवम्बर	तुला	शुक्र
16 नवम्बर से 14 दिसम्बर	वृश्चिक	मंगल
15 दिसम्बर से 12 जनवरी	धनु	गुरू
13 जनवरी से 11 फरवरी	मकर	शनि
12 फरवरी से 14 मार्च	कुम्भ	शनि
15 मार्च से 12 अप्रैल	मीन	गुरू

भावों की विशेष संज्ञा

भाव की क्रम संख्या	संज्ञा	विशेष कथन
1–4–7–10	केन्द्र	भावों में ग्रह बलवान होते हैं।
2–5–8–11	पणफर	कम बलवान होते हैं। प्रभाव धीरे होता है परन्तु स्थाई होता है।
3–6–9–12	आपोक्लिम	पणफर से कम बलवान होते हैं।

भाव की क्रम संख्या	संज्ञा	विशेष कथन
3–6–10–11	उपच्य	यह भाव वृद्धि सूचक कहलाते हैं।
1–2–4–5–7 –8–9–12	अपच्य	ग्रह अच्छा फल देते हैं।
6–8–12	त्रिक	ग्रह अशुभ फल देते हैं।
5–9	त्रिकोण	ग्रह शक्तिशाली होते हैं।

चान्द्रमास बोधक चक्र

मास क्रम	नाम मास	नक्षत्र	अंग्रेजी मास
1	चैत्र	चित्रा	मार्च–अप्रैल
2	वैशाख	विशाखा	अप्रैल–मई
3	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा	मई–जून
4	आषाढ़	पूर्वाषाढ़ा	जून–जुलाई
5	श्रवण	श्रवण	जुलाई–अगस्त
6	भाद्रपद	पूर्व भाद्रपद	अगस्त–सितम्बर
7	आश्विन	अश्विनी	सितम्बर–अक्तूबर
8	कार्तिक	कृतिका	अक्तूबर–नवम्बर
9	मार्गशीर्ष	मृगशिर	नवम्बर–दिसम्बर
10	पोष	पुण्य	दिसम्बर–जनवरी
11	माघ	मघा	जनवरी–फरवरी
12	फाल्गुन	उतरा फाल्गुनी	फरवरी–मार्च

मास के नाम पड़ने का कारण यह है कि इन मासों को पूर्णिमा के लगभग यहां दिए नक्षत्र होते हैं। यदि चैत्र की पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र होगा तो बैशाख की पूर्णिमा को विशाखा नक्षत्र होगा। आज कल सन् ईसवी दिनांक के साथ सरकारी पत्र व्यवहार में राष्ट्रीय दिनांक भी दिया होता है। भारत सरकार ने दिनांक 22 मार्च 1957 से राष्ट्रीय मासादि प्रचलित किया था।

21 मार्च को बसन्त सम्पात के दिन, रात दिन बराबर होता है और सूर्य 6 बजे उदय होता है, अतः उस दिन राष्ट्रीय वर्ष का अन्त मान कर दूसरे दिंन 22 मार्च से राष्ट्रीय चैत्र मास प्रारम्भ होता है। उस दिन राष्ट्रीय चैत्र की पहली तिथि अथवा पहली दिनांक होती है। राष्ट्रीय दिनांक ईसवी सन् दिनांक के तरह ही अर्द्ध रात्रि से अर्द्ध रात्रि तक माना जाता है। लीप वर्ष में चैत्र मास 31 दिनं का होता है। बैशाख मास और उसके आगे के मास आरम्भ होने की तारीख में एक दिन अधिक बढ़ जाता है परन्तु लीप वर्ष में फरवरी भी 29 दिन की होती है, अतः फरवरी 29 दिन की होने से अन्त में फाल्गुन की 30 तिथि, दिनांक 21 मार्च को ही आती है जिससे 22 मार्च से पुनः चैत्र प्रारम्भ हो जाता है।

राष्ट्रीय मास बोधक चक्र

मास क्रम	राष्ट्रीय मास	दिन मास	अंग्रेजी तारीख एवं मास
1	चैत्र	30	22 मार्च से
2	वैशाख	31	21 अप्रैल से
3	ज्येष्ठ	31	22 मई
4	आषाढ़	31	22 जून
5	श्रवण	31	23 जुलाई
6	भाद्रपद	31	23 अगस्त
7	आश्विन	30	23 सितम्बर
8	कार्तिक	30	23 अक्तूबर
9	मार्गशीर्ष	30	22 नवम्बर
10	पौष	30	22 दिसम्बर
11	माघ	30	21 जनवरी
12	फाल्गुन	30	20 फरवरी

वर्ष प्रमाण सारणी

1. ईस्वी सन् = विक्रम सम्वत् −57 वर्ष
2. ईस्वी सन् = विक्रम समवत् −56 वर्ष
3. शाका सम्वत् = सन् ईस्वी −78 वर्ष
4. विक्रम सम्वत् = शक सम्वत् +135 वर्ष
5. सन् ईस्वी = शक +78 वर्ष
6. सम्वत् = सन् ईस्वी +57 वर्ष
7. शाका = सम्वत् −135 वर्ष
8. सन् हिजरी = सन् ईस्वी −583 वर्ष
9. सन् फसली = सन् हिजरी −10 वषी

विक्रम सम्वत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होता हैं। सन् ईस्वी में सम्वत् परिवर्तन करने से सम्वत् मार्च के महीना में बदल जाता है और पौष मास में सन् बदलता है।

तिथि संज्ञा बोधक चक्र

तिथियां	संज्ञा	स्वामी/वर
1−6−11	नन्दा	शुक्र
2−7−12	भद्रा	बुध
3−8−13	जया	मंगल
4−9−14	रिक्ता	शनि
5−10−15	पूर्ण	वृहस्पति

यदि इन तिथियां को तिथि के ग्रह का दिन ही तो वह सिद्धा तिथियां कहलाती हैं।

सरल नवांश सारणी

नवांश क्रम संख्या	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	षष्ठवां	सातवां	आठवां	नौवां
अंशादि	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क	अं क
↓ राशि	0 0 से 3 20	3 20 से 6 40	6 40 से 10 0	10 0 से 13 20	13 20 से 16 40	16 40 से 20 0	20 0 से 23 20	23 20 से 26 40	26 40 से 30 00
मेष	0	1	2	3	4	5	6	7	8
वृष	9	10	11	0	1	2	3	4	5
मिथुन	6	7	8	9	10	11	0	1	2
कर्क	3	4	5	6	7	8	9	10	11
सिंह	0	1	2	3	4	5	6	7	8
कन्या	9	10	11	0	1	2	3	4	5
तुला	6	7	8	9	10	11	0	1	2
वृश्चिक	3	4	5	6	7	8	9	10	11
धनु	0	1	2	3	4	5	6	7	8
मकर	9	10	11	0	1	2	3	4	5
कुम्भ	6	7	8	9	10	11	0	1	2
मीन	3	4	5	6	7	8	9	10	11

तिथि ज्ञान चक्रम्
(चन्द्रमा-सूर्य)

शुक्ल पक्ष								कृष्णा पक्ष						
प्रारम्भ			समाप्ति			तिथि	प्रारम्भ			समाप्ति			तिथि
रा	अं	क	रा	अं	क		रा	अं	क	रा	अं	क	
0	0	0	0	12	0	प्रतिपदा	6	0	0	6	12	0	प्रतिपदा
0	12	0	0	24	0	द्वितीया	6	12	0	6	24	0	द्वितीया
0	24	0	1	6	0	तृतीया	6	24	0	7	6	0	तृतीया
1	6	0	1	18	0	चतुर्थी	7	6	0	7	18	0	चतुर्थी
1	18	0	2	0	0	पंचमी	7	18	0	8	0	0	पंचमी
2	0	0	2	12	0	षष्ठी	8	0	0	8	12	0	षष्ठी
2	12	0	2	24	0	सप्तमी	8	12	0	8	24	0	सप्तमी
2	24	0	3	6	0	अष्टमी	8	24	0	9	6	0	अष्टमी
3	6	0	3	18	0	नवमी	9	6	0	9	18	0	नवमी
3	18	0	4	0	0	दशमी	9	18	0	10	0	0	दशमी
4	0	0	4	12	0	एकादशी	10	0	0	10	12	0	एकादशी
4	12	0	4	24	0	द्वादश	10	12	0	10	24	0	द्वादशी
4	24	0	5	6	0	त्रयोदशी	10	24	0	11	6	0	त्रयोदशी
5	6	0	5	18	0	चतुर्दशी	11	6	0	11	18	0	चतुर्दशी
5	18	0	6	0	0	पूर्णिमा	11	18	0	12	0	0	अमावस्या

चन्द्रमा के राश्यंश में से सूर्य के राश्यंश घटाने से जो फल प्राप्त

होता है, उससे तुरन्त इस चक्र से तिथि जानी जा सकती है। प्रतिपदा (एकम) से 15 तक शुक्ल पक्ष की तिथियां है और प्रतिपदा से 15 तक कृष्ण पक्ष की तिथियां हैं। साधारणतया एक से 15 तक शुक्ल पक्ष की और 16 से 30 तक कृष्ण पक्ष की तिथियां होती है। क्योंकि एक पक्ष में 15 तिथि होती है। शुक्ल पक्षी की 15 वीं तिथी को पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष की 15 वीं अर्थात् 30 वीं तिथी को अमावस्या कहा जाता है। कलपना कीजिए कि दिनांक 21 जनवरी को सूर्य 5.30 प्रातः 9 राशि 6 अंश 38 कला 29 बिकला और चन्द्रमा 10 राशि 17 अंश 37 कला 23 बिकला था। चन्द्रमा के राश्यंश से सूर्य के राश्यंश 10–17–37–23 (–) 9–6–38–29 = 1–10–58–54 प्राप्त हुए। चक्र में देखने से पता चला कि 1–6–0 से 1–18–0 तक शुक्ल पक्ष की चतुर्थी होती है। अतः 21 जनवरी को प्रातः 5.30 चतुर्थी शुक्ल पक्ष की होगी।

योग बोधक चक्र

क्रम	योग	विस्तार						क्रम	योग	विस्तार					
		आरम्भ			समाप्त					आरम्भ			समाप्त		
		रा	अं	क	रा	अं	क			रा	अं	क	रा	अं	क
1	विषकुम्भ	0	0	0	0	13	20	14	हर्षण	5	23	20	6	6	40
2	प्रीति	0	13	20	0	26	40	15	बैर/वज्र	6	6	40	6	20	0
3	आयुष्मान	0	26	40	1	10	0	16	सिद्धि	6	20	0	7	3	20
4	सौभाग्य	1	10	0	1	23	20	17	व्यतीपात	7	3	20	7	16	40
5	शोभन	1	23	20	2	6	40	18	वरीयान	7	16	40	8	0	0
6	अतिगण्ड	2	6	40	2	20	0	19	परिधं	8	0	0	8	13	20
7	सुकर्मा	2	20	0	3	3	20	20	शिव	8	13	20	8	26	40
8	धृति	3	3	20	3	16	40	21	सिद्ध	8	26	40	9	10	0
9	शूल	3	16	40	4	0	0	22	साध्य	9	10	0	9	23	20

क्रम	योग	विस्तार						क्रम	योग	विस्तार					
		आरम्भ			समाप्त					आरम्भ			समाप्त		
		रा	अं	क	रा	अं	क			रा	अं	क	रा	अं	क
10	गण्ड	4	0	0	4	13	20	23	शुभ	9	23	20	10	6	40
11	वृद्धि	4	13	20	4	26	40	24	शुक्ल	10	6	40	10	20	0
12	ध्रुव	4	26	40	5	10	0	25	ब्रह्मा	10	20	0	11	3	20
13	व्याघात	5	10	0	5	23	20	26	ऐन्द्र	11	3	20	11	16	40
योग = चन्द्रमा + सूर्य								27	वैधृति	11	16	40	12	0	0

चन्द्रमा के राश्यंश में सूर्य के राश्यंश जोड़ने से जो योगफल प्राप्त होता है, उसके अनुसार इस चक्र से तुरन्त योग ज्ञात किया जा सकता है। जैसे दिनांक 21 जनवरी 99 को चन्द्रमा 5–30 प्रातः 10 राशि 17 अंश 37 कला 23 विकला और सूर्य 9 राशि 6 अंश 38 कला 29 विकला था। चन्द्रमा के राश्यंश में सूर्य के राश्यंश 10–7–37–23+9–6–38–29 जोड़ने से योगफल 19–24–15–52 प्राप्त हुआ। यदि योगफल 12 राशि से अधिक हो तो 12 घटा देने चाहिए। अतः 12 घटाने से योगफल 7–24–15–52 प्राप्त हुआ। चक्र में 7–16–40 से 8–0–0 तक 18वां योग वरीयान है। अतः दिनांक 21 जनवरी 99 को 5–30 प्रातः मानक समय वरीयान योग था।

करण बोध चक्र

शुक्ल पक्ष			कृष्ण पक्ष		
तिथि	प्रथम करण	द्वितीय करण	तिथि	प्रथम करण	द्वितीय करण
1	किस्तुध्न	बव	1	बालव	कौलव
2	बालव	कौलव	2	तौतिल	गर
3	तौतिल	गर	3	वणिज	विष्टि
4	वणिज	विष्टि	4	बव	बालव
5	बव	बालव	5	कौलव	तैतिल
6	कौलव	तैतिल	6	गर	वणिज
7	गर	वणिज	7	विष्टि	बव
8	विष्टि	बव	8	बालव	कौलव
9	बालव	कौलव	9	तैतिल	गर
10	तैतिल	गर	10	वणिज	विष्टि
11	वणिज	विष्टि	11	बव	बालव
12	बव	बालव	12	कौलव	तैतिल
13	कौलव	तैतिल	13	गर	वणिज
14	गर	वणिज	14	विष्टि	शकुन
15 पूर्णिमा	विष्टि	बव	15 अमावस्या	चतुष्पाद	नाग

इस चक्र से तुरन्त करण ज्ञात किया जा सकता है। एक तिथि 12 अंश की होती है, और एक तिथि में दो करण होते हैं। प्रथम तिथि में करण 6 अंश तक होता है और तिथि में दूसरा करण 6 अंश से 12 अंश तक होता है। चन्द्रमा राश्यंश से सूर्य राश्यंश घटाने पर जो योगफल प्राप्त है, उससे तिथि के साथ–साथ, तिथि में कौन सा करण है भी ज्ञात हो जाता है। यदि योगफल अंशादि को 12 का भाग देने से लब्धि 6 अंश से कम तो प्रथम करण और 6 अंश से अधिक तो तिथि में दूसरा

करण होगा। जैसे 21 जनवरी 99 को प्रातः 5-30 चन्द्र सूर्य घटाने से योगफल 1 राशि 10 अंश 58 कला 54 विकला था। राशि के अंशादि बनाए-

```
      1-10-58-54
      30
      ----
      30
      10
   12|40
     |36
     |--------
      4-4-58-54
```

40 अंश 58 कला 54 विकला प्राप्त हुए। तिथि जानने के लिए 12 का भाग किया तो 4-4-58-54 फल मिला। इस तरह 4+1=पंचम तिथि और लब्धि 4-58-54 है, जो 6 अंश से कम है। अतः पंचमी तिथि शुक्ल में देखा तो बव करण है। अतः बव करण था।

नक्षत्र, योग ग्रह दशा बोधक चक्र

क्रम नक्षत्र	आरम्भ रा अं क	समाप्ति रा अं क	नक्षत्र	योग	ग्रहदशा	वर्ष
1	0 0 0	0 13 20	अश्विनी	विषकुम्भ	केतू	7
2	0 13 20	0 26 40	भरणी	प्रीति	शुक्र	20
3	0 26 40	1 10 0	कृतिका	आयुष्मान	सूर्य	6
4	1 10 0	1 23 20	रोहिणी	सौभाग्य	चन्द्रमा	10
5	1 23 20	2 6 40	मृगशिर	शोभन	मंगल	7
6	2 6 40	2 20 0	आर्द्रा	अतिगण्ड	राहू	18
7	2 20 0	3 3 20	पुनर्वसु	सुकर्मा	गुरु	16
8	3 3 20	3 16 40	पुण्य	घृति	शनि	19
9	3 16 40	4 0 0	आश्लेषा	शूल	बुध	17

क्रम नक्षत्र	आरम्भ			समाप्ति			नक्षत्र	योग	ग्रहदशा	वर्ष
	रा	अं	क	रा	अं	क				
10	4	0	0	4	13	20	मघा	गण्ड	केतू	7
11	4	13	20	4	26	40	पू.फाल्गुनी	वृद्धि	शुक्र	20
12	4	26	40	5	10	0	उ.फाल्गुनी	ध्रुव	सूर्य	6
13	5	10	0	5	23	20	हस्त	व्याघात	चन्द्रमा	10
14	5	23	20	6	6	40	चित्रा	हर्षण	मंगल	7
15	6	6	40	6	20	0	स्वाति	बैर	राहू	18
16	6	20	0	7	3	20	विशाखा	सिद्धि	गुरु	16
17	7	3	20	7	16	40	अनुराधा	व्यतीपात	शनि	19
18	7	16	40	8	0	0	ज्येष्ठा	वरीयान	बुध	17
19	8	0	0	8	13	20	मूल	परिध	केतू	7
20	8	13	20	8	26	40	पू. आषाढ़	शिव	शुक्र	20
21	8	26	40	9	10	0	उ.आषाढ़	सिद्ध	सूर्य	6
22	9	10	0	9	23	20	श्रवण	साध्य	चन्द्रमा	10
23	9	23	20	10	6	40	धनिष्ठा	शुभ	मंगल	7
24	10	6	40	10	20	0	शतभिषा	शुक्ल	राहू	18
25	10	20	0	11	3	20	पू. भाद्रपद	ब्रह्मा	गुरु	16
26	11	3	20	11	16	40	उ. भाद्रपद	ऐन्द्र	शनि	19
27	11	16	40	12	0	0	रेवती	वैधृति	बुध	17

अवकहडा चक्र, गण, नाड़ी, योनि बोधक चक्र

नक्षत्र क्रम	नक्षत्र	गण	नाड़ी	योनि	युंजा	पाया
1	अश्विनी	देव	आध	अश्व	पूर्व	स्वर्ण
2	भरणी	मनुष्य	मध्य	गज	पूर्व	स्वर्ण
3.	कृतिका	राक्षस	अन्त्य	मेष	पूर्व	लौह
4	रोहिणी	मनुष्य	अन्त्य	सर्प	पूर्व	लौह
5	मृगशिर	देव	मध्य	सर्प	पूर्व	लौह
6	आर्द्रा	मनुष्य	आध	श्वान	मध्य	चांदी
7	पुनर्वसु	देव	आध	मार्जार	मध्य	चांदी
8	पुष्य	देव	मध्य	मेष	मध्य	चांदी
9	आश्लेषा	राक्षस	अन्त्य	मार्जार	मध्य	चांदी
10	मघा	राक्षस	अन्त्य	मूषक	मध्य	चांदी
11	पूर्वा फाल्गुनी	मनुष्य	मध्य	मूषक	मध्य	चांदी
12	उतरा फाल्गुनी	मनुष्य	आदि	गौ	मध्य	चांदी
13	हस्त	देव	आदि	महिष	मध्य	चांदी
14	चित्रा	राक्षस	मध्य	व्याघ्र	मध्य	चांदी
15	स्वाति	देव	अन्त्य	महिष	मध्य	चांदी
16	विशाखा	राक्षस	अन्त्य	व्याघ्र	मध्य	चांदी
17	अनुराधा	देव	मध्य	मृग	मध्य	चांदी
18	ज्येष्ठा	राक्षस	आदि	मृग	अन्त्य	तांबा
19	मूल	राक्षस	आध	श्वान	अन्त्य	तांबा
20	पूर्वा आषाढ़	मनुष्य	मध्य	वानर	अन्त्य	तांबा
21	उतरा आषाढ़	मनुष्य	अन्त्य	नकुल	अन्त्य	तांबा
22	श्रवण	देव	अन्त्य	वानर	अन्त्य	तांबा
23	धनिष्ठा	राक्षस	मध्य	सिंह	अन्त्य	तांबा
24	शतभिषा	राक्षस	आध	अश्व	अन्त्म	तांबा
25	पूर्वा भाद्रपद	मनुष्य	आध	सिंह	अन्त्य	तांबा
26	उतरा भाद्रपद	मनुष्य	मध्य	गौ	अन्त्य	तांबा
27	रेवती	देव	अन्त्य	गज	अन्त्य	स्वर्ण

अवकहड़ा चक्र, राशि, नक्षत्र, स्वामी, चरणाक्षर, वर्णा बोधक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
राशि स्वामी	मंगल			शुक्र			बुध			चन्द्रमा		
वर्ण	क्षत्रिय			वैश्य			शूद्र			विप्र		
वश्य	चतुष्पाद			चतुष्पाद			मानव			जलचर		
हंस	अग्नि			भूमि			वायु			जल		
नक्षत्र स्वामी	केतू	शुक्र	सूर्य	सूर्य	चन्द्र	मंगल	मंगल	राहू	गुरू	गुरू	शनि	बुध
नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृतिका	कृतिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम चरण	चू	ली	आ	–	ओ	वे	–	कू	के	–	हू	डी
द्वितीय चरण	चे	लू	–	इ	वा	वो	–	घ	को	–	हे	डू
तृतीय चरण	चो	ले	–	ऊ	वी	–	का	ङ	हा	–	हो	डे
चतुर्थ चरण	ला	लो	–	ए	वू	–	की	छ	–	ही	डा	डो

राशि	सिंह			कन्या		तुला			वृश्चिक			
राशि स्वामी	सूर्य			बुध		शुक्र			मंगल			
वर्ण	क्षत्रिय			वैश्य		शूद्र			विप्र			
वश्य	वनचर			मानव		मानव			कीटक			
हंस	अग्नि			भूमि		वायु			जल			
नक्षत्र स्वामी	केतू	शुक्र	सूर्य	सूर्य	चन्द्र	मंगल	मंगल	राहू	गुरू	गुरू	शनि	बुध
नक्षत्र	मघा	पू० फाल्गुनी	उ० फाल्गुनी	उ० फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथम चरण	मा	मो	टे	–	पू	पे	–	रू	ती	–	ना	नो
द्वितीय चरण	मा	टा	–	टो	ष	पो	–	रे	तू	–	नी	या
तृतीय चरण	मू	टी	–	पा	ण	–	रा	रो	ते	–	नू	यी
चतुर्थ	मे	टू	–	पी	ढ	–	री	ता	–	तो	ने	यू

राशि	धनु			मकर		कुम्भ			मीन			
राशि स्वामी	गुरू			शनि		शनि			गुरू			
वर्ण	क्षत्रिय			वैश्य		शूद्र			विप्र			
वश्य	मानव			जलचर		मानव			जलचर			
हंस	अग्नि			भूमि		वायु			जल			
नक्षत्र स्वामी	केतू	शुक्र	सूर्य	सूर्य	चन्द्र	मंगल	मंगल	राहू	गुरू	गुरू	शनि	बुध
नक्षत्र	मूल	पू० षाढ़ा	उ० षाढ़ा	उ० षाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू० भाद्रपद	पू० भाद्रपद	उ० भाद्रपद	रेवती
प्रथम चरण	ये	भू	भे	–	खी	गा	–	गो	से	–	दू	दे
द्वितीय चरण	यो	ध	–	भो	खू	गी	–	सा	सो	–	था	दो
तृतीय चरण	भा	फा	–	जा	खे	–	गू	सी	दा	–	झ	चा
चतुर्थ चरण	भी	ढ़ा	–	जी	खो	–	गे	सू	–	दी	ञ	ची

राशि तत्व, दिशा, वर्ण वोधक चक्र

राशि	वर्ण	तत्व	दिशा
1–5–9	क्षत्रिय	अग्नि	पूर्व
2–6–10	वैश्य	पृथ्वी	दक्षिण
3–7–11	शूद्र	वायु	पश्चिम
4–8–12	विप्र	जल	उतर

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक

क्रम	वर्ग	अक्षर
1	गरुड़	अ ई उ ए ओ
2	मार्जार	क ख ग घ ङ
3	सिंह	च छ ज झ ञ
4	श्वान	ट ठ ड ढ ण
5	सर्प	त थ द ध न
6	मूषक	प फ ब भ म
7	मृग	य र ल व
8	मेष	श ष स ह

स्वकीय–वर्ग से पंचम वर्ग शत्रु और चतुर्थ मित्र और तृतीय उदासीन है।

वर्ग अनुसार दोस्ती चक्र

क्रम	अक्षर	वर्ग	दोस्त/मित्र	दुश्मन/शत्रु
1	अ ई उ ए ओ	गरुड़	श्वान	सर्प
2	क ख ग घ ङ	मार्जार	सर्प	मूषक
3	च छ ज झ ञ	सिंह	मूषक	मृग
4	ट ठ ड ढ पा	श्वान	मृग	मेष
5	त थ द ध न	सर्प	मेष	गरुड़
6	प फ ब भ म	मूषक	गरुड़	मार्जार
7.	य र ल व मृग	मृग	मार्जार	सिंह
8.	श ष स ह मेष	मेष	सिंह	श्वान

सिंह = शेर, मूषक = चूहा, श्वान = कुत्ता, मेष = मेंढा, मार्जार = बिल्ली

घातचक्र

(जन्मपत्री में प्रायः सर्वघात जानकारी दी होती है। अतः इस चक्र से यह जानकारी ज्ञात की जा सकती है। प्रायः यह मास, तिथि, बार, नक्षत्रादि प्रवास, यात्रा, द्यूत एवं राजदर्शन में वर्जित माने गए हैं परन्तु विवाह और उपनयनादि में विर्जत नहीं माने गए हैं)

घात राशि	मास	तिथि	वार	नक्षत्र	योग	करण	प्रहर	पुरूष घात चन्द्र	स्त्री घात चन्द्र
मेष	कार्तिक	1-6-11	रविवार	मघा	विषकुम्भ	बव	1	मेष	मेष
वृष	मार्गशीर्ष	5-10-15	शनिवार	हस्त	शूल	शकुन	4	सिंह	धनु
मिथुन	आषाढ़	2-7-12	सोमवार	स्वाति	परिध	चतुष्पाद	3	धनु	धनु
कर्क	पौष	2-7-12	बुधवार	अनुराधा	व्याघात	नाग	1	वृष	मीन
सिंह	ज्येष्ठ	3-8-13	शनिवार	मूल	धृति	वणिज	1	कन्या	वृश्चिक
कन्या	भाद्रपद	5-10-15	शनिवार	श्रवण	शूल	कौलव	1	मकर	वृश्चिक
तुला	माघ	4-9-14	गुरूवार	शतभिषा	शूल	तैतिल	4	मिथुन	मीन
वृश्चिक	आश्विन	1-6-11	शुक्रवार	रेवती	व्यतीपात	गर	1	तुला	धनु
धनु	श्रवण	3-8-13	शुक्रवार	भरणी	वरीयान	तैतिल	1	कर्क	कन्या
मकर	वैशाख	4-9-14	मंगलवार	रोहिणी	वज्र	शकुन	4	वृश्चिक	वृश्चिक
कुम्भ	चैत्र	3-8-13	गुरूवार	आर्द्रा	गण्ड	किस्तुघ्न	3	कुम्भ	मिथुन
मीन	फाल्गुन	5-10-15	शुक्रवार	आश्लेषा	वज्र	चतुष्पाद	4	मीन	कुम्भ

बैर = वज्र भी कहते हैं। यदि किसी जातक के जन्म समय चन्द्रमा सिंह राशि का होता तो घातचक्र अनुसार चन्द्र राशि सिंह की जानी इस चक्र से इस प्रकार लिखी जाएगी।

अथ घातादयः ज्येष्ठ मास।। जया 3-8-13 तिथयः।। शनिवार।। मूल नक्षत्रम्।। धृति योग।। वणिज करण।। प्रथम प्रहर।। कन्या चन्द्रमा।।

ग्रह अवस्था चक्र

प्रायः जन्मपत्री में ग्रह स्पष्ट तालिका के नीचे ग्रहों की बाल्यादि एवं जाग्रतादि अवस्था लिखी होती है। ग्रहों की शक्ति युवावस्था में अधिक मानी गयी है और ग्रहों की जाग्रतावस्थां भी इसी तरह अधिक शक्तिशाली होती है। यहां दी गयी सारणी की सहायता से यह जानकारी तुरन्त प्राप्त की जा सकती है। यदि पाठक चाहें तो प्रत्येक ग्रह की अवस्था ज्ञात करके ग्रह स्पष्ट के नीचे जानकारी दे सकते हैं। जैसे पहले लिखा गया है कि आजकल अधिकतर जन्मकुण्डली एवं जन्मपत्री साम्पातिक काल विधि द्वारा बनायी जाती है और इन चक्रों को इतना महत्व नहीं जाता। फिर भी जानकारी हेतु यहां सारणी दी जाती हैं।

ग्रह अवस्था चक्र-1

अंशादि → राशि संज्ञा	0 0 0 — 6	0 0 6 —12	0 0 12—18	0 0 18 — 24	0 0 24—30
सम 2-4-6 8-10-12	मृतावस्था	वृद्धावस्था	युवावस्था	कुमारावस्था	बाल्यावस्था
विषम 1-3-5-7 -9-11	बाल्यावस्था	कुमारावस्था	युवावस्था	वृद्धावस्था	मृतावस्था

ग्रह अवस्था चक्र-2

अंशादि राशि संज्ञा	0 0 0 — 10	0 0 10 — 20	0 0 20 — 30
सम 2-4-6-8-10-12	सुप्तावस्था	सुप्तावस्था	जाग्रतावस्था
विषम 1-3-5-7-9-11	जाग्रतावस्था	सुप्तावस्था	सुप्तावस्था

उदाहरण—जैसे यदि किसी के जन्म समय अर्थात् जन्म कुण्डली में सूर्य सिंह राशि में 25^0 अंश 15 कला पर हो तो सिंह विषम (5वीं) राशि है। अतः सारणी अनुसार सूर्य मृतावस्था तथा सुप्तावस्था में हुआ। इसी तरह सभी ग्रहों की अवस्था देखी जा सकती है।

विंशोतरी दशा ज्ञान सारणी-1

राशि → रेखांश अंश कला	मेष, सिंह, धनु वर्ष मास दिन	वृष, कन्या, मकर वर्ष मास दिन	मिथुन, तुला, कुम्भ वर्ष मास दिन	कर्क, वृश्चिक मीन वर्ष मास दिन
0 0	केतू 7-0-0	सूर्य 4-6-0	मंगल 3-6-0	गुरू 4-0-0
1 0	6-5-21	4-0-18	2-11-21	2-9-18
2 0	5-11-12	3-7-6	2-5-12	1-7-6
3 20	5-5-3	3-1-24	1-11-3	0-4-24
3 0	5-3-0	3-0-0	1-9-0	शनि 19-0-0
4 0	4-10-24	2-8-12	1-4-24	18-0-18
5 0	4-4-15	2-3-0	0-10-15	16-7-15
6 0	3-10-6	1-9-18	0-4-6	15-2-12
6 40	3-6-0	1-6-0	राहू 18-0-0	14-3-0
7 0	3-3-27	1-4-6	17-6-18	13-9-9
8 0	2-9-18	0-10-24	16-2-12	12-4-6
9 0	2-3-9	0-5-12	14-10-6	10-11-3
10 0	1-9-0	चन्द्र 10-0-0	13-6-0	9-6-0
11 0	1-2-21	9-3-0	12-1-24	8-0-27
12 0	0-8-12	8-6-0	10-9-18	6-7-24
13 0	0-2-3	7-9-0	9-5-12	5-2-21
13 20	शुक्र 20-0-0	7-6-0	9-0-0	4-9-0
14 0	19-0-0	7-0-0	8-1-6	3-9-18

राशि रेखांश अंश कला	मेष, सिंह, धनु वर्ष मास दिन	वृष, कन्या, मकर वर्ष मास दिन	मिथुन, तुला, कुम्भ वर्ष मास दिन	कर्क, वृश्चिक मीन वर्ष मास दिन
15 0	17-6-0	6-3-0	6-9-0	2-4-15
16 00	16-0-0	5-6-0	5-4-24	0-11-12
16 40	15-0-0	5-0-0	4-6-0	बुध 17-0-0
17 0	14-6-0	4-9-0	4-0-18	16-6-27
18 0	13-0-0	4-0-0	2-8-12	15-3-18
19 0	11-6-0	3-3-0	1-4-6	14-0-9
20 0	10-0-0	2-6-0	गुरू16-0-0	12-9-0
21 0	8-6-0	1-9-0	14-9-18	11-5-21
22 0	7-0-0	1-0-0	13-7-6	10-2-12
23 0	5-6-0	0-3-0	12-4-24	8-11-3
23 20	5-0-0	मंगल 7-0-0	12-0-0	8-6-0
24 0	4-0-0	6-7-24	11-2-12	7-7-24
25 0	2-6-0	6-1-15	10-0-0	6-4-15
26 0	1-0-0	5-1-6	8-9-18	5-1-6
26 40	सूर्य 6-0-0	5-3-0	8-0-0	4-3-0
27 0	5-10-6	5-0-27	7-7-6	3-9-27
28 0	5-4-24	4-6-18	6-4-24	2-6-18
29 00	5-11-12	4-0-9	5-2-12	1-3-9
29 20	4-9-18	3-10-6	4-9-18	0-10-6
29 40	4-7-24	3-8-3	4-4-24	0-5-3

कला/मिनट हेतु अनुपातिक दशा ज्ञान सारणी-2

रेखांश मिनट/ कला	केतू मा.दि.	शुक्र मा.दि.	सूर्य मा.दि.	चन्द्र मा.दि.	मंगल मा.दि.	राहू मा.दि.	गुरू मा.दि.	शनि मा.दि.	बुध मा.दि.
1	0-3	0-9	0-3	0-5	0-3	0-8	0-7	0-9	0-8
2	0-6	0-18	0-5	0-9	0-6	0-16	0-14	0-17	0-15
3	0-9	0-27	0-8	0-14	0-9	0-24	0-22	0-26	0-23
4	0-13	1-6	0-11	0-18	0-13	1-2	0-29	1-4	1-1
5	0-16	1-13	0-14	0-23	0-16	1-11	1-6	1-13	1-8
6	0-19	1-24	0-16	0-27	0-19	1-19	1-13	1-21	1-16
7	0-22	2-3	0-19	1-27	0-22	1-27	1-20	2-0	1-24
8	0-25	2-12	0-22	1-16	0-25	2-5	2-28	2-8	2-1
9	0-28	2-21	0-24	1-11	0-28	2-13	2-5	2-17	2-9
10	0-1	3-0	0-27	1-15	1-1	2-21	2-12	2-26	2-17
11	1-4	3-9	1-0	1-20	1-4	2-29	2-19	3-5	2-25
12	1-7	3-18	1-2	1-24	1-7	3-7	2-26	3-13	3-2
13	1-10	3-27	1-5	1-29	1-10	3-15	3-4	3-22	3-10
14	1-14	4-6	1-8	2-3	1-14	3-23	3-11	4-0	3-18
15	1-17	4-15	1-11	2-8	1-17	3-2	3-18	4-8	3-25
16	1-20	4-24	1-14	2-13	1-20	4-10	3-25	4-17	4-3
17	1-23	5-3	1-16	2-17	1-23	4-18	4-2	4-25	4-10
18	1-26	5-12	1-19	2-22	1-26	4-26	4-10	5-4	4-18
19	2-0	5-21	1-22	2-26	2-0	5-4	4-17	5-12	4-26
20	2-3	6-0	1-24	3-0	2-3	5-12	4-24	5-21	4-3
21	2-6	6-9	1-27	3-5	2-6	5-20	5-1	6-0	5-11
22	2-9	6-18	1-29	3-9	2-9	5-28	5-8	6-8	5-18
23	2-12	6-27	2-2	3-14	2-12	6-6	5-16	6-19	5-26
24	2-16	7-6	2-5	3-18	2-16	6-14	5-23	6-25	6-4
25	2-19	7-15	2-8	3-23	2-19	6-23	6-0	7-4	6-11
26	2-22	7-24	2-10	3-27	2-22	7-1	6-7	7-12	6-19
27	2-25	8-3	2-13	4-2	2-25	7-9	6-14	7-21	6-27
28	2-28	8-12	2-16	4-6	2-28	7-17	6-22	7-29	7-4
29	3-1	8-21	2-18	4-11	3-1	7-25	6-29	8-8	7-12
30	3-4	9-0	2-21	4-15	3-4	8-3	7-6	8-17	7-20

महादशा में अन्तर्दशा बोधक सारणी

महादशा ग्रह→ ↓अन्तर्दशा	केतू व म द	शुक्र व म द	सूर्य व म द	चन्द्र व म द	मंगल व म द	राहू व म द	गुरू व म द	शनि व म द	बुध व म द
केतू	0-4-27	1-2-0	0-4-6	0-7-0	0-4-27	1-0-18	0-11-6	1-1-9	0-11-27
शुक्र	1-2-0	3-4-0	1-0-0	1-8-0	1-2-0	3-0-0	2-8-0	3-2-0	2-10-0
सूर्य	0-4-6	1-0-0	0-3-18	0-6-0	0-4-6	0-10-24	0-9-18	0-11-12	0-10-6
चन्द्र	0-7-0	1-8-0	0-6-0	0-10-0	0-7-0	1-6-0	1-4-0	1-7-0	1-5-0
मंगल	0-4-27	1-2-0	0-4-6	0-7-0	0-4-27	1-0-18	0-11-6	1-1-9	0-11-37
राहू	1-0-18	3-0-0	0-10-24	1-6-0	1-0-18	2-8-12	2-4-24	2-10-6	2-6-18
गुरू	0-11-6	2-8-0	0-9-18	1-4-0	0-11-6	2-4-24	2-1-18	2-6-12	2-3-6
शनि	1-1-9	3-2-0	0-11-12	1-7-0	1-1-9	2-10-6	2-6-12	3-0-3	2-8-9
बुध	0-11-27	2-10-0	0-10-6	1-5-0	0-11-27	2-6-18	2-3-6	2-8-9	2-4-27
कुल वर्ष	7-0-0	20-0-0	6-0-0	10-0-0	7-0-0	18-0-0	16-0-0	19-0-0	17-0-0

संकेताक्षर . व = वर्ष म= मास दि= दिन

महादशा में अन्तर्दशा देखने के लिए यहां जो सारणी दी गई है, इस की सहायता से आप किसी भी ग्रह की महादशा में अन्तर्दशा ज्ञात कर सकते हैं। ध्यान रहे कि प्रत्येक ग्रह की महा दशा में सर्वप्रथम उसी दशा की अन्तर्दशा होती है और उसके उपरान्त ग्रह दशा क्रम से ग्रहों की अन्तर्दशा होती है। अतः यदि सारणी से चन्द्र की महादशा में अन्तर्दशा जाननी हो तो सर्वप्रथम चन्द्र की ही अन्तरा होगी और उस के पश्चात् चन्द्र –मंगल – राहू – गुरू – शनि – बुध – केतू – शुक्र – सूर्य। किस महादशा में सर्वप्रथम कौनसी अन्तर्दशा चलेगी को तुरन्त जानने के लिए चक्र चिन्ह दे दिया है।

अयनांश सारणी

देश–विदेश में कई अयनांश प्रचलित हैं। भारत में सर्वाधिक लाहिरी का चित्रापक्षीय अयनांश उपयोग किया जाता है। अतः यहां वही अयनांश दिया जा रहा है। यह अयनांश प्रत्येक वर्ष अर्थत् सन् ईस्वी की पहली जनवरी का है। प्रत्येक वर्ष अयनांश लगभग 50 विकला बढ़ता है और एक मास में 4 बिकला बढ़ता है। अतः किसी भी वर्ष का अयनांश जानकर किसी भी मास, दिन का अयनांश इसी अनुपात से जाना जा सकता है। सुविधा के लिए मासिक अयनांश वृद्धि की सारणी भी दे दी गई है ताकि पाठक किसी भी वर्ष में किसी भी मास का अयनांश जान सकें।

वर्ष	अयनांश अं. क बि	वर्ष	अयनांश अं. क बि	वर्ष	अयनांश अं. क बि
1960	23 -17 -54	1974	23 -29 -55	1988	23-41-23
1961	23 -18 -38	1975	23 -30 -44	1989	23-42-19
1962	23 -19 -23	1976	23 -31 -31	1990	23-43-14
1963	23 -20 -10	1977	23 -32 -17	1991	23-44 -8
1964	23 -20 -58	1978	23 -33 - 2	1992	23-45- 0
1965	23 -21 -48	1979	23 -33 -47	1993	23-45-51
1966	23 -22 -40	1980	23 -34 -31	1994	23-46-40
1967	23 -23 -34	1981	23 -15 -17	1995	23-47-26
1968	23 -24 -29	1982	23 -36 - 4	1996	23-48-11
1969	23 -25 -25	1983	23 -36 -53	1997	23-48-56
1970	23 -26 -21	1984	23 -37 -44	1998	23-49-41
1971	23 -27 -17	1985	23 -38 -36	1999	23-50-25
1972	23 -28 -11	1986	23 -39 -32	2000	23-51-12
1973	23 -29 - 4	1987	23 -40 -28	2001	23-52 -0

मासिक अयनांश वृद्धि सारणी

मास तक	वृद्धि बिकला	मास तक	वृद्धि बिकला	मास तक	वृद्धि बिकला
जनवरी	0	मई	17	सितम्बर	34
फरवरी	4	जून	21	अक्तूबर	38
मार्च	8	जुलाई	25	नवम्बर	42
अप्रैल	13	अगस्त	29	दिसम्बर	46

सारणी से स्पष्ट है कि प्रत्येक मास लगभग 4 बिकला अयनांश बढ़ता है। फरवरी में 4 बिकला बढ़ा तो मार्च में 4 बिकला बढ़ा इस तरह मार्च तक 8 बिकला वृद्धि हुई. यदि जून–2000 का अयनांश जानना है तो जून तक की वृद्धि 21 बिकला। सन्2000 का अयनांश 23–51–12 है। इसमें 21 बिकला जोड़े तो जून –2000 का अयनांश 23 अंश 51 कला 33 बिकला प्राप्त हुआ।

समयान्तर की प्रति घंटा 10 सैकण्ड, संशोधन सारणी

समय घंटा	संशोधन मिनट	संशोधन सैकण्ड	समय घंटा	संशोधन मिनट	संशोधन सैकण्ड
1	+0	10	13	+2	8
2	0	20	14	2	18
3	0	30	15	2	28
4	0	39	16	2	38
5	0	49	17	2	48
6	0	59	18	2	57
7	+1	9	19	3	7
8	1	19	20	3	17
9	1	29	21	3	27
10	1	39	22	3	37
11	1	48	23	3	47
12	1	58	24	3	57

समय	संशोधन		समय	संशोधन	
मिनट	मिनट	सैकण्ड	मिनट	मिनट	सैकण्ड
6	+0	1	36	0	6
12	0	2	42	0	7
18	0	3	48	0	8
24	0	4	54	0	9
30	0	5	60	0	10

उदाहरण – कल्पना कीजिए कि 12 बजे और स्थानीय मध्यम समय का अन्तर 10 घंटे 42 मिनट है। अब 10 घंटें 42 मिनट का प्रति घंटा 10 सैकण्ड का संशोधन ज्ञात करना है। सारणी में 10 घंटे का संशोधन 1 मिनट 39 सैकण्ड है और 42 मिनट का संशोधन 7 सैकण्ड है। अतः 10 घंटे 42 मिनट के लिए संशोधन 1 मिनट 46 सैकण्ड हुआ। इसे स्थानीय मध्यम समय में जोड़कर 12 बजे के साम्पातिक काल में जन्म समय के अनुसार यदि जन्म 12 बजे से पूर्व हो तो घटाया और यदि 12 बजे के पश्चात् हो तो जोड़ कर जन्म समय का साम्पातिक काल प्राप्त हो जाएगा।

घंटा, मिनट, सैकण्ड का घटी पल, विपल पारस्परिक परिवर्तन सारणी

घंटा	दिन	घटी	पल	घंटा	दिन	घटी	पल
मिनट	घटी	पल	विपला	मिनट	घटी	पल	विपला
सैकण्ड	पल	विपला	–	सैकण्ड	पल	विपला	–
1	0	2	30	31	1	17	30
2	0	5	0	32	1	20	0
3	0	7	30	33	1	22	30
4	0	10	0	34	1	25	0
5	0	12	30	35	1	27	30
6	0	15	0	36	1	30	0
7	0	17	30	37	1	32	30
8	0	20	0	38	1	35	0
9	0	22	30	39	1	37	30
10	0	25	0	40	1	40	0
11	0	27	30	41	1	42	30
12	0	30	0	42	1	45	0
13	0	32	30	43	1	47	30
14	0	35	0	44	1	50	0
15	0	37	30	45	1	52	30
16	0	40	0	46	1	55	0
17	0	42	30	47	1	57	30
18	0	45	0	48	2	0	0
19	0	47	30	49	2	2	30
20	0	50	0	50	2	5	0
21	0	52	30	51	2	7	30
22	0	55	0	52	2	10	0
23	0	57	30	53	2	12	30
24	1	0	0	54	2	15	0
25	1	2	30	55	2	17	30
26	1	5	0	56	2	20	0
27	1	7	30	57	2	22	30
28	1	10	0	58	2	25	0
29	1	12	30	59	2	27	30
30	1	15	0	60	2	30	0

घटी, पल, विकला का घंटा मिनट, सैकण्ड पारस्परिक परिवर्तन सारणी-1

घटी	घंटा	मिनट	घटी	घंटा	मिनट
पल	मिनट	सैकण्ड	पल	मिनट	सैकण्ड
विकल	सैकण्ड	–	विकल	सैकण्ड	–
1	0	24	31	12	24
2	0	48	32	12	48
3	1	12	33	13	12
4	1	36	34	13	36
5	2	0	35	14	0
6	2	24	36	14	24
7	2	48	37	14	48
8	3	12	38	15	12
9	3	36	39	15	36
10	4	0	40	16	0
11	4	24	41	16	24
12	4	48	42	16	48
13	5	12	43	17	12
14	5	36	44	17	36
15	6	0	45	18	0
16	6	24	46	18	24
17	6	48	47	18	48
18	7	12	48	19	12
19	7	36	49	19	36
20	8	0	50	20	0
21	8	24	51	20	24
22	8	48	52	20	48
23	9	12	53	21	12
24	9	36	54	21	36
25	10	0	55	22	0
26	10	24	56	22	24
27	10	48	57	22	48
28	11	12	58	23	12
29	11	36	59	23	36
30	12	0	60	24	0

कुछ चुने हुए शहरों का अक्षांश, रेखांश

क्रमांक	शहर का नाम	अक्षांश उतर		रेखांश पूर्व		देशान्तर	
		अं	क	अं	क	मिनट	सैकण्ड
1	अमृतसर	31	38	74	53	−30	28
2	अम्बाला	30	23	76	46	−22	56
3	अटारी	31	37	74	36	−31	36
4	आदमपुर दुआबा	31	21	75	26	−28	16
5	आनन्दपुर साहिब	31	15	76	32	−23	52
6	अबोहर	30	08	74	12	−33	12
7	आगरा (यू.पी)	27	11	78	02	−17	52
8	अलीगढ़ (यू.पी)	27	54	78	04	−17	44
9	अलाहाबाद (यू.पी)	25	28	81	52	−2	32
10	अजमेर (राजसः)	26	27	74	38	−31	38
11	ऊजैन (एम.पी)	23	11	75	46	−25	26
12	उदयपुर (राजसः)	24	35	73	44	−35	04
13	इन्दौर (एम.पी)	22	43	75	51	−26	36
14	कपूरथला (पंजाब)	31	23	75	25	−28	20
15	कुराली (पंजाब)	30	50	76	35	−23	40
16	करनाल (हरियाणा)	29	42	77	02	−21	52
17	कालका (,,)	30	49	76	57	−22	12
18	कुरूक्षेत्र (,,)	29	58	76	48	−22	48
19	कटरा (एच.पी)	33	01	74	58	−33	08
20	ऊधमपुर (,,)	32	55	75	07	−29	32
21	कानपुर (यू.पी.)	26	29	80	21	−8	36
22	कटनी (एम.पी.)	23	47	80	27	−8	12
23	कोहलापुर (म.रा)	16	42	74	14	−33	04
24	कोटा (राजः)	25	10	75	52	−26	32
25	खरगपुर (वै.वैंग.)	22	20	87	20	+19	20
26	खपालू (ह.प.)	35	10	76	20	−24	40
27	खेमकरण (पंजाब)	31	08	74	35	−31	40

28	गुड़गाँव (हरियाणा)	28	29	77	04	−21	44
29	गगरेट (ह.प.)	31	41	76	03	−25	48
30	गड़दीबाला (पंजाब)	31	44	75	45	−27	00
31	गुरुदास पुर (पंजाब)	32	03	75	27	−28	12
32	गबालीयर (एम.पी)	26	14	78	10	−17	20
33	चन्डीगढ़ (यू.टी)	30	44	76	52	−22	32
34	चामुण्डा देवी (एच.पी)	32	08	76	20	−24	40
35	चम्बा (एच.पी)	32	30	76	10	−25	20
36	चिनई (तामिलनाडू)	13	04	80	15	−9	00
37	जालन्धर (पंजाब)	31	20	75	34	−27	44
38	जाखल (हरियाणा)	29	49	75	49	−26	44
39	ज्वालामुखी (एच.पी)	31	53	76	20	−24	40
40	जोगिन्दर नगर (,,)	31	58	76	45	−23	00
41	खाजियार (,,)	32	31	76	03	−24	40
42	जयपुर (राजः)	26	55	75	49	−26	44
43	जोधपुर (राजः)	26	18	73	02	−37	52
44	झांसी (एम.पी)	25	27	78	33	−15	48
45	टांडा (पंजाब)	31	40	75	41	−27	16
46	टोहाना (हरियाणा)	29	43	75	53	−26	28
47	दिल्ली	28	39	77	13	−−21	08
48	देहरादून (यू.पी)	30	19	78	03	−17	48
49	दुर्ग (एम.पी)	21	11	81	21	−4	36
50	दवारिका (गुजरात)	22	14	68	58	−54	08
51	धूरी (पंजाब)	30	22	75	52	−26	32
52	नवांशहर (पंजाब)	31	07	76	08	−25	28
53	नाभा (पंजाब)	30	25	76	09	−25	24
54	नकोदर (पंजाब)	31	07	75	29	−28	04
55	नारनौल (हरियाणा)	28	02	76	14	−25	04
56	नीलोखेड़ी (,,)	29	52	76	54	−22	24
57	नैना देवी (एच.पी)	31	19	76	31	−23	56
58	नालागढ़ (एच.पी)	30	57	76	22	−24	32

59	नगरोटा (,,)	32	07	76	23	−24	28
60	नागपुर (महा.रा)	21	09	79	05	−13	40
61	नैनीताल (यू.पी)	29	22	79	27	−12	12
62	नंगल (पंजाब)	31	23	76	23	−24	28
63	नाहन (एच.पी)	30	33	77	21	−20	36
64	नालन्दा (विहार)	25	09	85	25	+11	40
65	नासिक (महा.रा)	20	02	78	50	−34	40
66	पटियाला (पंजाब)	30	19	76	24	−24	24
67	पिंजौर (हरियाणा)	30	49	76	55	−22	20
68	पिहोवा (हरियाणा)	29	56	76	36	−23	36
69	पानीपत (,,)	29	23	77	01	−21	56
70	पठानकोट (पंजाब)	32	17	75	40	−27	20
71	पहलगाँव (एच.पी)	34	01	75	24	−28	24
72	पटना (बिहार)	25	36	85	08	+10	32
73	पालमपुर (ह.प)	32	7	76	35	−23	40
74	फरीदकोट (पंजाब)	30	40	74	57	−30	12
75	फिरोजपुर (,,)	30	55	74	40	−31	20
76	फगवाड़ा (,,)	31	13	75	47	−26	52
77	फरीदाबाद (हरियाणा)	28	25	77	22	−20	32
78	फिरोजाबाद (यू.पी)	27	09	78	24	−16	24
79	बटाला (पंजाब)	31	49	75	14	−29	04
80	बरनाला (पंजाब)	30	23	75	33	−27	48
81	बल्लभगढ़ (हरियाणा)	28	22	77	20	−20	40
82	बरसर (एच.पी)	31	34	76	28	−28	04
83	बिलासपुर (,, ,,)	31	19	76	50	−22	40
84	बनारस (यू पी)	25	20	83	20	+03	20
85	बीकानेर (राजः)	28	01	73	19	−36	44
86	बंगलौर (कर्नाटका)	12	58	77	36	−19	36
87	बम्बई–मुंबई	18	58	72	50	−38	40
88	बदरीनाथ (यू.पी)	30	44	79	32	−11	52
89	बिलासपुर (एम.पी)	22	05	82	13	−1	08

90	बुलन्दपुर शहर (यू.पी)	28	24	77	54	-18	24
91	भठिण्डा (पंजाब)	30	12	74	56	-30	16
92	भूपाल (एम.पी)	23	16	77	25	-10	20
93	भागलपुर (बिहार)	25	15	86	58	+17	52
94	भिवानी (हरियाणा)	28	46	76	18	-24	48
95	भरवाई (एम.पी)	31	47	76	04	-25	44
96	भुंतर (एम.पी)	31	54	77	09	-21	24
97	मेरठ (यू.पी)	29	01	77	45	-19	00
98	मालेरकोटला (पंजाब)	30	31	75	51	-26	04
99	महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)	28	16	76	10	-25	20
100	मण्डी (ह.प)	31	43	76	58	-22	08
101	मनाली (,,)	32	17	77	19	-20	44
102	मनीकरण (,,)	32	01	77	20	-20	40
103	रोपड़ (पंजाब)	30	57	76	30	-24	00
104	रोहतक (हरियाणा)	28	54	76	34	-23	44
105	राजपूरा (पंजाब)	30	29	76	34	-23	44
106	रामपुर बुशैहर (ह.प)	31	28	77	39	-19	24
107	लुधियाना (पंजाब)	30	55	75	52	-26	32
108	लखनऊ (यू.पी)	26	51	80	56	-6	16
109	होशियारपुर (पंजाब)	31	32	75	57	-26	12
110	हिसार (हरियाणा)	29	10	75	44	-27	04
111	हरिद्वार (यू.पी)	29	56	78	08	-17	28
112	हमीर पूर (ह.प)	31	42	76	30	-24	00
113	हैदराबाद (अं.प)	17	26	78	27	-16	12
114	संगरुर (पंजाब)	30	12	75	23	-23	28
115	सिरसा (हरियाणा)	29	32	75	07	-29	32
116	सोलन (ह.प)	30	55	77	09	-21	24
117	सहारनपुर (यू.पी)	29	58	77	23	-20	28
118	सूरत (गुजरात)	21	10	72	51	-38	36
119	शिमला (ह.प)	31	06	77	10	-21	20
120	शामली (यू.पी)	29	27	77	19	-20	44

विश्व के कुछ प्रमुख नगरों का अक्षांश रेखांश

क्रमांक	नाम नगर एवं देश	अक्षांश	रेखांश	स्थानीय देशान्तर मि. सै.
1	न्यूयार्क (अमेरिका)	40–43 उ	74–00 प	+4–00
2	वाशिंगटन डी.सी (अमेरिका)	38–55 उ	77–04 प	–8–16
3	बॉस एन्जलस (अमेरिका)	34–03 उ	118–17 प	+6–52
4	लंदन (इंग्लैण्ड)	51–32 उ	0–05 प	–0–20
5	लिवरपूल (इंगलैण्ड)	53–52 उ	2–55 प	–11–40
6	ग्रीनविच (इंगलैण्ड)	51–29 उ	0–00	–0–00
7	टरोंटो (कनाडा)	43–39 उ	79–23 प	–17–32
8	वैनकोवर (कनाडा)	49–16 उ	123–7 प	–12–28
9	सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)	33–52 द	151–12 पू	+4–48
10	बरिसवेन („)	27–28 द	153–02 पू	+12–08

विश्व के कुछ देशों का भारतीय स्टैंडर्ड समय अन्तर

देश/प्रदेश	भारतीय समय से अन्तर घंटे मिनट	देश/प्रदेश	भारतीय समय से अन्तर घंटे मिनट
अमेरिका पेसिफिक टाईम	–13–30	कनाडा पी.एस.टी	–13–30
„ माउष्टेन टाईम	–12–30	तस्मानीय (अस्ट्रेलिया)	+4–30
इंग्लैण्ड	–5–30	चीन	+2–30
कनाडा ई.एस.सी	–10–30	फ्रांस	–4–30

तिथि बोधक सारणी

जब चन्द्र और सूर्य के अंशादि में 12 अंशों का अन्तर आता है तो एक तिथि बनती है। इस सारणी के चन्द्र सूर्य के अंशादि अन्तर अनुसार तुरन्त विधि ज्ञात की जा सकती है और दी गई विधि द्वारा समाप्ति काल भी जाना जा सकता है।

तिथि क्रमांक	तिथि का नाम	तिथि के समाप्ति अंश
1	प्रतिपदा/एकम	12
2	द्वितीया	24
3	तृतीया	36
4	चतुर्थी	48
5	पंचमी	60
6	षष्ठी	72
7	सप्तमी	84
8	अष्टमी	96
9	नवमी	108
10	दशमी	120
11	एकादशी	132
12	द्वादशी	144
13	त्रयोदशी	156
14	चतुर्दशी	168
15	पूर्णिमा/अमावस्या	180 पूर्णिमा एवं अमावस्या

उदाहरण—दिनांक 21–1–99 को प्रातः 5–30 बजे चन्द्र 317 अंश 37 कला 23 विकला और सूर्य 276 अंश 38 कला 29 विकला था। दोनों का अन्तर 317–37–23(–)276–39–29=40–58–54 हुआ। सारणी में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी 48 अंश पर समाप्त होती है। अतः दिनांक 21–1–99 को प्रातः 5–30 बजे चतुर्थी थी। यह तिथि कब समाप्त होगी, जानने के लिए सूर्य, चन्द्र की गति एवं चन्द्र को सूर्य तक जाने के लिए कितना समय लगेगा, जानकर लॉग सारणी द्वारा ज्ञात की जा सकती है। जैसे–

1. दिनाक 21–1–99 को चन्द्र की गति	=	13^0–41–44
2. दिनांक 21–1–99 को सूर्य की गति	=	1 –1 –4
3. दोनों का अन्तर	=	12–40–40का लॉग=5351
4. दिनांक 21–1–99 को सूर्य	=	276–39–29
5. चतुर्थी के सारणी में समाप्ति अंश	=	48
6. क्रम 4 एवं 5 का योगफल	=	324–39–29
7. 21–1–99 का चन्द्र (घटाया)	=	317–37–23
8. चन्द्र को सूर्य तक की वृद्धि	=	7–1–6 का लॉग 2775

9. लॉग 5351 से लॉग 2775 घटाया तो शेष लॉग 2566 मिला।

लॉग सारणी से 2566 का समय 13 घंटे 18 मिनट प्राप्त हुआ। अतः 5–30 प्रातः के 13 घंटे 18 मिनट पश्चात् चतुर्थी समाप्त होगी अथवा 5–30+13–18=18–48 बजे चतुर्थी समाप्त होगी।

अनपातिक लॉग सारणी

अंश या घंटे

मि.	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	मि.
0	–	1.3802	1.0792	9031	7781	6812	6021	5351	4771	4260	3802	3388	3010	0
1	3.1584	1.3730	1.0756	9007	7763	6798	6009	5341	4762	4252	3795	3382	3004	1
2	2.8573	1.3660	1.0720	8983	7745	6784	5997	5330	4753	4244	3788	3375	2998	2
3	2.6812	1.3590	1.0685	8959	7728	6769	5985	5320	4744	4236	3780	3368	2992	3
4	2.5563	1.3522	1.0649	8935	7710	6755	5973	5310	4735	4228	3773	3362	2986	4
5	2.4594	1.3454	1.0614	8912	7692	6741	5961	5300	4726	4220	3766	3355	2980	5
6	2.3802	1.3388	1.0580	8888	7674	6726	5949	5289	4717	4212	3759	3349	2974	6
7	2.3133	1.3323	1.0546	8865	7657	6712	5937	5279	4708	4204	3752	3342	2968	7
8	2.2553	1.3258	1.0511	8842	7639	6698	5925	5269	4699	4196	3745	3336	2962	9
9	2.2041	1.3195	1.0478	8819	7622	6684	5913	5259	4690	4188	3737	3329	2956	9
10	2.1584	1.3133	1.0444	8796	7604	6670	5902	5249	4682	4180	3730	3323	2950	10
11	2.1170	1.3071	1.0411	8737	7587	6656	5890	5239	4673	4173	3723	3316	2944	11
12	2.0792	1.3010	1.0345	8751	7570	6642	5878	5229	4664	4164	3716	3310	2938	12
13	2.0444	1.2950	1.0313	8728	7552	6628	5866	5219	4655	4156	3710	3303	2933	13
14	2.0122	1.2891	1.0280	8706	7535	6614	5855	5209	4646	4148	3709	3297	2927	14
15	1.9823	1.2833	1.0280	8683	7518	6600	5843	5199	4638	4141	3695	3291	2921	15
16	1.9542	1.2775	1.0248	8661	7501	6587	5832	5189	4629	4133	3688	3284	2915	16
17	1.9279	1.2719	1.0216	8639	7484	6573	5820	5179	4620	4125	3681	3278	2909	17
18	1.9031	1.2663	1.0185	8617	7467	6559	5809	5169	4611	4117	3674	3271	2903	18
19	1.8796	1.2607	1.0153	8595	7451	6546	5797	5159	4603	4109	3667	3265	2897	19
20	1.8573	1.2553	1.0122	8573	7434	6532	5786	5149	4594	4102	3660	3258	2891	20
21	1.8361	1.2499	1.0091	8552	7417	6519	5774	5139	4585	4094	3653	3252	2885	21
22	1.8159	1.2445	1.0061	8530	7401	6505	5763	5129	4577	4086	3646	3246	2880	22
23	1.7966	1.2393	1.0030	8509	7384	6492	5752	5120	4568	4079	3639	3239	2874	23
24	1.7781	1.2341	1.0000	8487	7368	6478	5740	5110	4559	4071	3632	3233	2868	24
25	1.7604	1.2289	1.9970	8499	7351	6465	5729	5100	4551	4063	3625	3227	2862	25
26	1.7434	1.2239	1.9940	8445	7335	6451	5718	5090	4542	4055	3618	3220	2856	26
27	1.7270	1.2188	1.9910	8442	7318	6438	5706	5081	4534	4048	3611	3214	2850	27
28	1.7112	1.2139	1.9881	8403	7302	6425	5695	5071	4525	4040	3604	3208	2845	28
29	1.6960	1.2090	1.9852	8382	7286	6412	5684	5061	4516	4032	3507	3201	2839	29
30	1.6812	1.2041	1.9823	8361	7270	6398	5786	5051	4508	4025	3590	3195	2833	30
31	1.6670	1.1993	1.9794	8341	7254	6385	5774	5042	4499	4017	3583	3189	2827	31
32	1.6532	1.1946	1.9765	8320	7238	6372	5763	5032	4491	4010	3576	3183	2821	32
33	1.6398	1.1899	1.9737	8300	7222	6359	5752	5023	4482	4002	3570	3176	2816	33
34	1.6269	1.1852	1.9708	8279	7206	6346	5740	5013	4474	3994	3563	3170	2810	34
35	1.6143	1.1806	0.9680	8259	7190	6333	5729	5003	4466	3987	3556	3164	2804	35
36	1.6021	1.1761	0.9652	8239	7174	6320	5718	4994	4457	3979	3549	3157	2798	36
37	1.5902	1.1716	0.9625	8219	7159	6307	5706	4984	4449	3972	3542	3151	2793	37
38	1.5786	1.1671	0.9597	8199	7143	6294	5695	4975	4440	3964	3535	3145	2787	38
39	1.5673	1.1627	0.9570	8179	7128	6228	5684	4965	4432	3957	3529	3139	2781	39
40	1.5563	1.1584	0.9542	8159	7112	6269	5563	4956	4424	3949	3522	3133	2775	40
41	1.5456	1.1540	0.9515	8140	7097	6256	5552	4947	4415	3942	3515	3126	2770	41
42	1.5351	1.1498	0.9488	8120	7081	6243	5541	4937	4407	3934	3508	3120	2764	42
43	1.5249	1.1455	0.9462	8101	7066	6231	5531	4928	4399	3927	3501	3114	2758	43
44	1.5149	1.1413	0.9435	8081	7050	6218	5520	4918	4390	3919	3495	3108	2753	44
45	1.5051	1.1372	0.9409	8062	7035	6205	5509	4909	4382	3912	3488	3102	2747	45
46	1.4956	1.1331	0.9383	8043	7020	6193	5498	4900	4374	3905	3481	3096	2741	46
47	1.4863	1.1290	0.9356	8023	7005	6180	5488	4890	4365	3897	3475	3089	2736	47
48	1.4771	1.1249	0.9330	8004	6990	6168	5477	4881	4357	3890	3468	3083	2730	48
49	1.4682	1.1209	0.9305	7985	6975	6155	5466	4872	4349	3882	3461	3077	2724	49
50	1.4594	1.1179	0.9279	7966	6960	6143	5456	4863	4341	3875	3454	3071	2719	50
51	1.4508	1.1130	0.9254	7947	6945	6131	5445	4853	4333	3868	3448	3065	2713	51
52	1.4424	1.1091	0.9228	7929	6930	6118	5435	4844	4324	3860	3441	3059	2707	52
53	1.4341	1.1053	0.9203	7910	6915	6106	5424	4835	4316	3853	3434	3053	2702	53
54	1.4260	1.1015	0.9178	7891	6900	6094	5414	4826	4308	3846	3428	3047	2696	54
55	1.4180	1.0977	0.9153	7873	6885	6081	5403	4817	4300	3838	3421	3041	2691	55
56	1.4102	1.0939	0.9128	7854	6871	6069	5393	4808	4292	3831	3415	3034	2685	56
57	1.4025	1.0902	0.9104	7836	6856	6057	5382	4798	4284	3824	3408	3028	2679	57
58	1.3949	1.0865	0.9079	7818	6841	6045	5372	4789	4276	3817	3401	3022	2674	58
59	1.3875	1.0828	0.9055	7800	6827	6033	5361	4780	4268	3809	3395	3016	2668	59

अनपातिक लॉग सारणी

अंश या घंटे												
मि.	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	मि.
0	2663	2341	2041	1716	1498	1249	1015	0792	0580	0378	0185	1
1	2657	2336	2036	1756	1493	1245	1011	0788	0577	0375	0182	2
2	2652	2330	2032	1752	1489	1241	1007	0785	0573	0371	0179	3
3	2646	2325	2027	1747	1485	1237	1003	0781	0570	0365	0172	4
4	2640	2320	2022	1743	1481	1233	0999	0777	0566	0365	0172	5
5	2635	2315	2017	1738	1476	1229	0996	0774	0559	0355	0163	6
6	2629	2310	2012	1734	1472	1225	0992	0770	0559	0358	0166	7
7	2624	2305	2008	1729	1468	1221	0988	0763	0552	0352	0160	8
9	2613	2295	1998	1720	1459	1213	0980	0759	0549	0348	0157	9
10	2607	2289	1993	1716	1455	1209	0977	0756	0546	0345	0154	10
11	2602	2284	1988	1711	1451	1205	0973	0752	0524	0342	0150	11
12	2596	2279	1984	1707	1447	1201	0969	0749	0539	0339	0147	12
13	2591	2274	1979	1702	1443	1197	0965	0745	0535	0335	0144	13
14	2585	2269	1974	1698	1438	1193	0962	0741	0532	0332	0141	14
15	2580	2264	1969	1694	1434	1190	0958	0738	0529	0329	0138	15
16	2574	2259	1965	1689	1430	1186	0954	0734	0525	036	0135	16
17	2569	2254	1960	1685	1426	1182	0950	0731	0522	0322	0132	17
18	2564	2249	1955	1680	1422	1178	0947	0727	0518	0319	0129	18
19	2558	2244	1950	1676	1417	1174	0943	0724	0515	0316	0126	19
20	2553	2239	1946	1671	1413	1170	0939	0720	0512	0313	0122	20
21	2547	2234	1941	1667	1409	1166	0935	0716	0508	0309	0119	21
22	2542	2229	1936	1662	1405	1162	0932	0713	0505	0306	0116	22
23	2536	2223	1932	1658	1401	1158	0928	0709	0401	0303	0113	23
24	2531	2218	1927	1654	1397	1154	0924	0706	0498	0200	0110	24
25	2526	2213	1922	1649	1392	1150	0920	0602	0495	0296	0107	25
26	2520	2208	1917	1645	1388	1146	0917	0699	0491	0293	0104	26
27	2515	2203	1913	1640	1384	1142	0913	0695	0488	0290	0001	27
28	2509	2198	1908	1636	1380	1138	0909	0692	0484	0287	0098	28
29	2504	2193	1903	1632	1376	1134	0906	0688	0481	0284	0095	29
30	2499	2188	1899	1627	1372	1130	0802	0685	0478	0280	0091	30
31	2493	2183	1894	1623	1368	1127	0898	0681	0474	0277	0088	31
32	2488	2178	1889	1618	1364	1123	0894	0678	0471	0274	0085	32
33	2483	2173	1885	1614	1359	1119	0891	0674	0468	0271	0082	33
34	2477	2168	1880	1610	1355	1115	0887	0671	0464	0267	0079	34
35	2472	2164	1875	1605	1351	1111	0883	0667	0461	0264	0076	35
36	2467	2169	1871	1601	1357	1107	0880	0663	0458	0261	0073	36
37	2461	2154	1866	1597	1343	1103	0876	0660	0454	0258	0070	37
38	2456	2149	1862	1592	1339	1099	0872	0656	0451	0255	0067	38
39	2451	2144	1857	1588	1335	1095	0869	0653	0448	0251	0064	39
40	2445	2139	1852	1584	1331	1091	0865	0649	0444	0248	0061	40
41	2440	2134	1848	1579	1326	1088	0861	0646	0441	0245	0058	41
42	2435	2129	1843	1575	1322	1084	0858	0642	0438	0242	0055	42
43	2430	2124	1838	1571	1318	1080	0854	0639	0434	0239	0052	43
44	2424	2119	1834	1566	1314	1076	0850	0635	0431	0236	0049	44
45	2419	2114	1829	1562	1310	1072	0847	0632	0428	0232	0046	45
46	2414	2109	1825	1558	1306	1068	0843	0628	0426	0229	0042	46
47	2409	2104	1820	1553	1302	1064	0839	0625	0421	0226	0039	47
48	2403	2199	1816	1549	1298	1061	0835	0622	0418	0223	0036	48
49	2398	2095	1811	1545	1294	1057	0832	0618	0414	0220	0033	49
50	2393	2090	1806	1540	1290	1053	0828	0615	0411	0216	0030	50
51	2388	2085	1802	1536	1286	1049	0825	0611	0408	0213	0027	51
52	2382	2080	1797	1532	1282	1045	0821	0608	0404	0210	0024	52
53	2377	2075	1793	1528	1278	1041	0817	0604	0401	0207	0021	53
54	2372	2070	1788	1523	1274	1038	0814	0601	0398	0204	0018	54
55	2367	2065	1784	1519	1270	1034	0810	0597	0394	0201	0015	55
56	2362	2061	1779	1515	1266	1030	0806	0594	0391	0197	0012	56
57	2356	2056	1774	1510	1261	1026	0803	0590	0388	0194	0009	57
58	2351	2051	1770	1506	1257	1022	0799	0587	0384	0191	0006	58
59	2346	2046	1765	1502	1253	1018	0795	0583	0381	0188	0003	59
	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	

अनुपातिक लॉग सारणी की सहायता से ग्रह स्पष्ट करने तथा तिथि, योगादि का समाप्ति काल जानने की विधियां सम्बन्धित प्रकरणों में विस्तार से बताई जा चुकी है।

दैनिक लग्न सारणी-1

(यह लग्न सारणी चण्डीगढ़ के लिए है और लग्न का आरम्भ होने का समय दिया गया है। अन्य शहरों का लग्न आरम्भ होने का समय संशोधन लग्न समय सारणी की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है)

महीना	तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
जनवरी	1	12-44	14-17	16-11	18-26	20-48	23-8	1-30	3-53	6-12	8-16	9-57	11-22
	5	12-28	14-1	15-56	18-10	20-32	22-52	1-14	3-35	5-55	8-0	9-41	11-6
	10	12-9	13-41	15-36	1750	20-13	22-32	0-54	3-15	5-36	7-40	9-21	10-46
	15	11-49	13-22	15-16	17-30	19-53	22-13	0-34	2-56	5-16	7-20	9-1	10-27
	20	11-29	13-2	14-57	17-11	19-33	21-53	0-15	2-36	4-54	7-1	8-42	10-7
	25	11-10	12-42	14-37	16-51	19-13	21-33	23-51	2-16	4-37	6-41	8-22	9-47
फरवरी	1	10-42	12-15	14-9	16-24	18-46	21-6	23-23	1-49	4-9	6-14	7-55	9-20
	5	10-26	11-59	13-54	16-8	18-30	20-50	23-8	1-33	3-53	5-58	7-39	9-4
	10	10-7	11-39	13-34	15-48	18-10	20-30	22-48	1-14	3-34	5-38	7-19	8-44
	15	9-47	11-20	13-14	15-29	17-51	20-11	22-28	0-54	3-14	5-19	7-0	8-25
	20	9-27	11-0	12-55	15-9	17-31	19-51	22-9	0-34	2-54	4-59	6-40	8-5
	25	9-8	10-40	12-35	14-49	17-11	19-31	21-49	0-15	2-25	4-39	6-20	7-45
मार्च	1	8-52	10-35	12-19	1433	16-56	19-16	21-23	23-55	2-19	4-24	6-5	7-30
	5	6-36	10-9	12-4	14-18	16-40	19-0	21-18	23-39	2-3	4-8	5-49	7-14
	10	8-17	9-49	11-44	13-58	16-20	18-40	20-58	23-20	1-44	3-48	5-29	7-14
	15	7-57	9-30	11-24	13-38	16-1	18-21	20-38	23-0	1-24	3-29	5-9	6-35
	20	7-37	9-10	11-5	13-19	15-41	18-1	20-19	22-40	1-4	3-9	4-50	6-15
	25	7-18	8-50	10-45	12-59	15-21	17-41	19-59	22-21	0-45	2-49	4-30	5-55
अप्रैल	1	6-50	8-23	10-17	12-32	14-54	17-14	19-32	21-53	0-17	2-22	4-3	5-28
	5	6-34	8-7	10-3	12-16	14-38	16-58	19-16	21-37	0-1	2-6	3-47	5-12
	10	6-15	7-47	9-42	11-56	14-18	16-38	18-56	21-18	23-38	1-46	3-27	4-52
	15	5-55	7-28	9-22	11-37	13-59	16-19	18-36	20-58	23-18	1-27	3-8	4-33
	20	5-35	7-8	9-3	11-17	13-39	15-59	18-17	20-38	22-58	1-7	2-48	4-13
	25	5-16	6-48	8-43	10-57	13-19	15-39	17-57	20-19	22-39	0-47	2-28	3-53
मई	1	4-52	6-25	8-19	10-34	12-56	15-16	17-34	19-55	22-15	0-24	2-5	3-30
	5	4-36	6-9	8-4	10-18	12-40	15-0	17-18	19-39	21-59	0-8	1-49	3-14
	10	4-17	5-49	7-44	9-58	12-20	14-40	16-58	19-20	21-40	23-44	1-29	2-54
	15	3-57	5-30	7-24	9-39	12-1	14-21	16-39	19-0	21-20	23-25	1-10	2-35
	20	3-37	5-10	7-5	9-19	11-41	14-1	16-19	18-40	21-1	23-5	0-50	2-15
	25	3-18	4-50	6-45	8-59	11-22	13-41	15-59	18-21	20-41	22-45	0-30	1-55
जून	1	2-50	4-23	6-18	8-32	10-54	13-14	15-32	17-53	20-13	22-18	0-3	1-28
	5	2-35	4-7	6-2	8-16	10-38	12-58	15-16	17-37	1958	22-2	23-43	1-12
	10	2-15	3-48	5-42	7-56	10-19	12-39	14-56	17-18	19-38	21-43	23-23	0-52
	15	1-55	3-28	5-23	7-37	9-59	12-19	14-37	16-58	19-18	21-23	23-4	0-33
	20	1-36	3-8	5-3	7-17	9-39	11-59	14-17	16-39	18-59	21-35	22-44	0-13
	25	1-16	2-49	4-43	6-57	9-20	11-40	13-57	16-19	18-39	20-44	22-25	23-50
जुलाई	1	0-52	2-25	4-20	6-34	8-56	11-16	13-34	15-55	18-15	20-20	22-1	23-26
	5	0-37	2-9	4-4	6-18	8-40	11-0	13-18	15-40	18-0	20-4	25-45	23-10
	10	0-17	1-50	3-44	5-58	8-21	10-41	12-58	15-20	17-40	19-45	21-26	22-51
	15	23-53	1-30	3-25	5-39	8-1	10-21	12-39	15-0	17-20	19-25	21-6	22-31
	20	23-34	1-10	3-5	5-19	7-41	10-1	12-19	14-41	17-1	19-5	20-46	22-11
	25	23-14	0-51	2-45	4-59	7-22	9-42	11-59	14-21	16-41	18-46	20-27	21-52

महीना	तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अगस्त	1	22-47	0-23	2-18	4-32	6-54	9-14	11-32	13-53	16-13	18-18	19-59	21-24
	5	22-31	0-7	2-2	4-16	6-38	8-58	11-16	13-38	15-58	18-2	19-43	21-8
	10	22-11	23-44	1-42	3-57	6-19	8-39	10-56	13-18	15-38	17-43	19-24	20-49
	15	21-51	23-24	1-23	3-37	5-59	8-19	10-37	12-58	15-18	17-23	19-4	20-29
	20	21-32	23-4	1-3	3-17	5-39	7-59	10-17	12-39	14-59	17-3	18-44	20-9
	25	21-12	22-45	0-43	2-58	5-20	7-40	9-57	12-19	14-39	16-44	18-25	19-50
सितम्बर	1	20-45	22-17	0-16	2-30	4052	7-17	9-30	11-52	14-12	16-16	17-57	19-22
	5	20-29	22-2	0-0	2-14	4-37	6-57	9-14	11-36	13-56	16-0	17-41	19-6
	10	20-9	21-42	23-37	1-55	4-17	6-37	8-55	11-16	13-36	15-41	17-22	18-47
	15	19-50	21-22	23-17	1-35	3-57	6-17	8-35	10-56	13-17	15-21	17-2	18-27
	20	19-30	21-3	22-57	1-15	3-38	5-58	8-15	10-37	12-57	15-2	16-42	18-8
	25	19-10	20-43	22-38	0-56	3-18	5-38	7-56	10-17	12-37	14-42	16-23	17-48
अक्तूबर	1	18-47	20-19	22-14	0-32	2-54	5-14	7-32	9-54	12-14	14-18	15-59	17-24
	5	18-31	20-4	21-58	0-16	2-39	4-59	7-16	9-38	13-43	14-3	15-43	17-9
	10	18-11	19-44	21-39	23-53	2-19	4-39	6-57	9-18	11-38	13-43	15-24	16-49
	15	17-52	19-24	21-19	23-33	1-59	4-19	6-37	8-59	11-19	13-23	15-4	16-29
	20	17-32	19-5	20-59	23-13	1-40	4-0	6-17	8-39	10-59	13-4	14-45	16-10
	25	17-12	18-45	20-40	22-54	1-20	3-40	5-58	8-19	10-39	12-44	14-25	15-50
नवम्बर	1	16-45	18-17	20-12	22-26	0-52	3-12	5-30	7-52	10-12	12-16	13-57	15-22
	5	16-29	18-2	19-56	22-11	0-37	2-57	5-14	7-36	9-56	12-1	13-42	15-7
	10	16-9	17-42	19-37	21-51	0-17	2-37	4-55	7-16	9-36	11-41	13-22	14-47
	15	15-50	17-22	19-17	21-31	23-53	2-17	4-35	6-57	9-17	11-21	13-2	14-27
	20	15-30	17-3	18-57	21-12	23-34	1-58	4-15	6-37	8-57	11-2	12-43	14-8
	25	15-10	16-43	18-38	20-52	23-14	1-38	3-56	6-17	8-37	10-42	12-23	13-48
दिसम्बर	1	14-47	16-20	18-14	20-28	22-51	1-14	3-32	5-54	8-14	10-18	11-59	13-24
	5	14-31	16-4	17-58	20-13	22-35	0-59	3-16	5-38	7-58	10-3	11-44	13-9
	10	14-11	15-44	17-39	19-53	22-15	0-39	2-57	5-18	7-38	9-43	11-24	12-49
	15	13-52	15-24	17-19	19-33	21-56	0-19	2-37	4-59	7-19	9-23	11-4	12-29
	20	13-32	15-5	16-59	19-14	21-36	0-0	2-17	4-39	6-59	9-4	10-45	12-10
	25	13-12	14-45	16-40	18-54	21-16	23-36	1-58	4-19	6-39	8-44	10-25	11-50

लग्न देखने की विधि—1. यहां जो लग्न सारणी दी गई है वह प्रत्येक तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न आरम्भ होने का समय सूचित करती है। सन् ईस्वी की तारीख रात्रि 12 बजे के उपरान्त प्रारम्भ होती है अतः लग्न भी उसी समय के अनुसार है। यहां जो लग्न आरम्भ होने का समय दिया गया है, वह यहां दी गई तारीख से आरम्भ होने का है। सारांश यह लग्न सारणी केवल उसी तारीख के लिए है।

2. कल्पना कीजिए कि किसी बालक का जन्म पहली जनवरी को 2–15 प्रातः हुआ। लग्न सारणी में 1 जनवरी को तुला लग्न 1–30 आरम्भ होता है और वृश्चिक लग्न 3–53 आरम्भ होता है, अतः बालक का जन्म तुला लग्न में हुआ।

3. किसी बालक का जन्म दिनांक 15 फरवरी को 0–20 पर हुआ। लग्न सारणी में वृश्चिक लग्न 0–54 से आरम्भ होगा अतः लग्न तुला हुआ।

इस तरह सारणी प्रारम्भ होने से लग्न प्रारम्भ होता है और तारीख समाप्त होने पर उस तारीख के लग्न भी समाप्त हो जाते हैं और अगली तारीख के लग्न अगली तारीख के सामने होंगे। अन्य

तारीखों का लग्न प्रति एक दिन 4 मिनट घटा कर प्राप्त किया जा सकता है। जैसे–

1. किसी बालक का जन्म 3 मार्च को 10–30 प्रातः चण्डीगढ़ में हुआ। सारणी में पहली मार्च को 10–25 प्रातः वृष लग्न प्रारम्भ होता है। हमने 3 मार्च का लग्न जानना है। पहली तारीख और तीन तारीख में दो दिन का अन्तर है अतः एक दिन के 4 मिनट (2×4=8) तो 2 दिन के 8 मिनट, सारणी में पहली तारीख के दिए गए लग्न समय से घटाने से दिनांक 3 मार्च का लग्न प्राप्त हो जाएगा। इस तरह 10–25(–)8 मिनट=10–17 प्रातः, दिनांक 3 मार्च को वृष लग्न प्रारम्भ होगा। हमारा समय प्रातः 10–30 का है अतः बालक के जन्म का लग्न वृष हुआ। इस तरह किसी भी तारीख का लग्न आरम्भ होने का समय जाना जा सकता है।

लग्न संशोधन सारणी-2

यहां जो सारणी दी जा रही है, इस की सहायता से चण्डीगढ़ में लग्न आरम्भ होने के समय में संशोधन करके अन्य शहरों का लग्न आरम्भ होने का समय सहज हो जाना जा सकता है। चण्डीगढ़ तथा अन्य शहरों का जो लग्न आरम्भ होने का समय अथवा लग्न संशोधन उपरान्त जो लग्न प्राप्त होता है, इन शहरों के नज़दीक अन्य शहरों का भी वही लग्न अथवा आरम्भ होने का समय समझा जाए। एक लग्न के आरम्भ होने तथा उससे अगले लग्न के आरम्भ होने के 1–2 मिनट का प्रश्न लग्न एवं जन्म लग्न जानना हो तो सावधान रहना चाहिए क्योंकि इस तरह यदि लग्न के आरम्भ एवं समाप्ति काल को 1–2 मिनट भीतर का समय होगा तो लग्न में अन्तर पड़ सकता है।

शहर का नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
जालन्धर	5+	5+	5+	5+	6+	6+	6+	6+	6+	6+	6+	6+
पटियाला	2+	2+	2+	2+	2+	2+	2+	1+	1+	1+	2+	2+
लुधियाना	3+	3+	3+	3+	3+	4+	4+	4+	4+	4+	4+	4+
अमृतसर	7+	7+	6+	6+	7+	8+	9+	10+	10+	10+	9+	8+
फरीदकोट	8+	8+	8+	8+	8+	8+	8+	8+	8+	8+	8+	8+
होशियारपुर	2+	2+	1+	1+	2+	2+	4+	5+	5+	5+	4+	+3
शिमला	–2	2–	2–	2–	2–	1–	1–	1–	1–	1–	1–	1–
करनाल	–	1+	1+	1+	–	–	1–	2–	2–	2–	1–	1–
दिल्ली	–	3+	3+	3+	1+	1+	3–	5–	6–	6–	4–	2–

उदाहरण–किसी बालक का जन्म अमृतसर में दिनांक 10 अप्रैल को 6–30 प्रातः हुआ तो उस का लग्न इस तरह जाना जाएगा।

1. लग्न सारणी में 10 अप्रैल को प्रातः 6–15 मेष लग्न आरम्भ।

2. अमृतसर का लग्न समय संशोधन मेष लग्न के लिए 7+ अर्थात् सात मिनट जोड़ने होंगे। अतः 6–15+7 मिनट=6–22। इस तरह अमृतसर में मेष लग्न प्रातः 6–22 आरम्भ होगा। बालक का जन्म 6–30 प्रातः हुआ, इस तरह मेष लग्न हुआ। चिन्ह के अनुसार घटाने एवं जोड़ने से इस तरह दिए गए अन्य शहरों का लग्न का आरम्भ समय जाना जा सकता है।

संकेत अक्षर, चिन्ह ज्ञान सारणी

संकेत अक्षर/ चिन्ह	किसके लिए	संकेत अक्षर/ चिन्ह	किसके लिए	संकेत अक्षर/ चिन्ह	किसके लिए
0	मेष	पुन०	पुनर्वसु	VIII	8
1	वृष	पु०	पुण्य	IX	9
2	मिथुन	आ०	आश्लेषा	X	10
3	कर्क	म०	मघा	XI	11
4	सिंह	पू०फा०	पूर्वा फाल्गुनी	XII	12
5	कन्या	उ० फ०	उतराफाल्गुनी	⊕	भाग्यबिन्दु
6	तुला	ह०	हस्त	☉	सूर्य
7	वृश्चिक	चि०	स्वाति	D	चन्द्र
8	धनु	स्व०	स्वाति	↗	मंगल
9	मकर	वि०	विशाखा	☿	बुध
10	कुम्भ	अनु०	अनुराधा	♀	शुक्र

संकेत अक्षर/ चिन्ह	किसके लिए	संकेत अक्षर/ चिन्ह	किसके लिए	संकेत अक्षर/ चिन्ह	किसके लिए
11	मीन	ज्ये०	ज्येष्ठा	♃	गुरू
12/0	मेष	मू०	मूला	♄	शनि
सू	सूर्य	पू०षा०	पूर्वाषाढ़ा	☊	राहू
चं	चन्द्र	उ०षा०	उतराषाढ़ा	☋	केतू
मं	मंगल	श्र०	श्रवण	♅	हर्षल
बु	बुध	घ०	धनिष्ठा	♆	नेप्च्न
शु	शुक्र	शत०	शतभिषा	रा	राशि
गु	गुरू	पू०भा०	पूर्वाभाद्रपद	अं	अंश
श०	शनि	उ०भा०	उतराभ्रद्रपद	क	कला
रा	राहू	रे०	रेवती	वि	विकला
के	केतू	I	1	0	अंश
अ०	अश्विनी	II	2	/	कला
भ०	भरणी	III	3	//	बिकला
कृ०	कृतिका	IV	4	S	राशि
रो०	रोहिंणी	V	5	घ. घं	घटी, घंटा
मृ०.	मृगशिरा	VI	6	प, मिं	पल, मिनट
आ०	आर्द्रा	VII	7	वि, सै	विपल, सैकण्ड